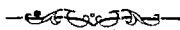


भारत-भ्रमण के तीसरे खंड का सूचीपत्र ।



अध्याय	कसबा इत्यादि	पृष्ठ	अध्याय	कसबा इत्यादि	पृष्ठ
१	आरा	१	६	मालदह और इंगलिस-	
११	दानापुर	५		याजार	११९
११	पटना और बांकीपुर...	६	११	गौड़	१२१
२	गया	१५	११	पांडुआ	१२३
११	बोधगया	४९	११	मुर्शिदाबाद	१२४
११	टिकारी	५६	११	घरहमपुर	१३०
११	विराटनगर	५७	७	पुर्निया	१३०
३	बिहार	६१	११	दीनाजपुर	१३२
११	राजगृह	६२	११	पार्वतीपुर जंक्शन	१३४
११	वाढ़	७४	११	जलपाईगोड़ी	१३५
११	मोकामा जंक्शन	७४	११	दार्जिलिंग	१३६
४	मुजफ्फरपुर	७५	११	शिकम	१४०
११	मोतीहारी	७७	११	भूटान	१४२
११	वेतिया	७९	८	रंगपुर	१४४
११	नैपाल	८०	११	कूचबिहार	१४७
११	मुक्तिनाथ	९०	११	ब्रह्मपुत्र तीर्थ	१५०
५	दरभंगा	९४	११	त्यूरा	१५०
११	गौतमगुण्ड	९७	११	ग्रालपाड़ा	१५२
११	जनकपुर	९८	११	गौहाटी	१५४
११	सीतामढ़ी	१०१	११	कामाक्षा	१५७
११	सिंभेश्वरनाथ	१०२	९	शिलांग	१५९
११	वैराहक्षेत्र	१०४	११	सिलहट	१६३
६	लक्ष्मीनारायण जंक्शन	१०८	११	सिलचर	१६६
११	जमालपुर	१०९	११	मतीपुर	१६७
११	हुंगेर	११०	१३	तेजपुर	१७२
११	अजगवनीनाथ	११४	११	नवगांव	१७४
११	भागलपुर	११८	११	शिवमागर	१७४
११	साहबगंज	११६	११	कोदिमा	१७६
११	राजमहल	११८	११	दिब्रूगढ़	१७८

अध्याय कंसबा इत्यादि	पृष्ठ	अध्याय कंसबा इत्यादि	पृष्ठ
१० परशुरामकुण्ड	... १७९	१४ गंगासागर	... २६४
११ बुगडा	... १८०	१५ कटक	... २७०
११ रामपुर बोलिया	... १८१	११ तप्तकुंड	... २८३
११ कृष्टिया	... १८२	११ भुवनेश्वर	... २८३
११ प्रवना	... १८३	११ उदयगिरि और खंड-	
११ सिरानगंज	... १८४	गिरि	... २९०
११ ग्वालंडो	... १८५	१६ जगन्नाथपुरी	... २९३
११ फरीदपुर	... १८६	११ कोणार्क	... ३२९
११ नोआखाली	... १८७	१७ जाजपुर	... ३३४
११ सीताकुण्ड	... १८८	११ बालेश्वर	... ३३६
११ बलराकुण्ड	... १८९	११ मेदनीपुर	... ३३८
११ चटगांव	... १८९	१८ श्रीरामपुर	... ३४०
११ कोमिला	... १९१	११ तारकेश्वर	... ३४१
११ टिपरा राज्य	... १९३	११ चंदरनगर	... ३४२
११ नारायणगंज	... १९५	११ हुगली	... ३४३
११ ढाका	... १९६	११ बर्धवान	... ३४६
११ मैमनसिंह	... १९९	११ खाना जंक्शन	... ३५०
१२ कृष्णनगर	... २०१	११ सिउड़ी	... ३५२
११ नदिया	... २०१	११ रानीगंज	... ३५४
११ सान्तीपुर	... २०५	११ पुरुलिया	... ३५६
११ जसर	... २०५	११ बांकुड़ा	... ३५७
११ खुलना	... २०६	११ रांघी	... ३५९
११ बैरीसाल	... २०७	११ हजारबाग	... ३६२
११ नइहाटी	... २०८	११ पारसनाथ	... ३६४
११ वारकपुर	... २०९	११ वैद्यनाथ	... ३६५
११ दमदम	... २१०		
११ बारासत	... २११		
१३ कलकत्ता	... २११		
११ हवड़ा	... २६२		

भारत-भ्रमण के तीसरे खंड का शुद्धि पत्र ।



पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
५	२६	शाही साही	शाही	३४	०९	उपरी	उपरि
६	२४	पर	पर	३४	११	चरणांकित	चरण अंकित
८	२१	महंथ	महंत				
८	२५	दसवं	दसवें	३५	१०	करु	करु
१०	१६	१०००	१००००	३५	१५	श्राप	शाप
१२	३	गपा	गया	३५	१६	पर्यत्न	पर्यन्त
१२	२८	संथाल-	संथाल-	३६	८	वांछित	वांछित
		मगना	परंगना	३६	९	सत्तमी	सप्तमी
१५	१८	फाल्गु	फलगू	३६	१४	ज्ञात	ज्ञाति
१८	१३	कहते कि	कहते हैं कि	३६	१५	आमावास्या	अमा-
२१	२	कंआ	कूँआ				वास्या
२१	८	लोम	लोग	३६	१८	फाल्गुण	फाल्गुन
२१	१८	मज	गज	३६	१८	आमावास्या	अमावस्या
२३	१	(७, ८ और ९)	(७, ८ और ९)	३६	१९	फाल्गुण	फाल्गुन
२३	५	रामचन्द्रपद	चन्द्रपद	३६	१९	सत्तमी	सप्तमी
२४	५	काष्ठ	काष्ठ	३६	२०	जेष्ठ	ज्येष्ठ
२५	६	मुण्डपृष्ठा	मुण्डपृष्ठा	३६	२२	गया नाम के	गय-
२८	१७	वनवाया हुआ	वनवाया हुआ रा-				नामक
			धाकृष्ण	३७	१५	छूट	छूट
			का मंदि-	३९	३	स्वपृष्ठ	स्वपृष्ठ
			र है,	३९	२२	श्राद्ध	श्राद्ध
२८	१८	वहनी	वहनी	४०	१४	वाजपेय	वाजपेय
३२	२४	यशस्वी	यशस्वी	४०	२०	गयाशिपि	गयाशीर्ष
३३	२३	श्रेष्ठ	श्रेष्ठ	४१	२४	फाल्गुण	फाल्गुन
				४३	१०	स्नादिक	स्नानादिक

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
४५	१९	च्यवन, वनजी	च्यवनजी	१०८	२	लक्ष्मीराय	लक्ष्मीसराय
४७	१६	होता	होता है	११२	९	वैशाख	वैशाख
४९	४	वरदाग	वरदान	११८	२६	सल्तान	मुल्तान
५१	१४	कदाचित्	कदाचित्	१२०	१६	दिलचस्प	दिलचस्प
५२	१७	०	महाभारत	१२१	१६	इंटे	इंटे
५३	१७	म्लेच्छों	म्लेच्छों	१२१	१७	पुर्वोत्तर	पूर्वोत्तर
६४	१६	वशिष्ठ	वशिष्ठ	१२२	८	दूसरे	दूसरे
७२	२२	वंगी	वंशी	१२३	१	कान्तिबुज	कान्तिबुज
७४	८	म्लेक्ष	म्लेच्छ	१२४	१३	कोड़	छोड़
७५	२४	मोकाम	मोकामा	१३२	६	८७९	६७९
७७	२०	फाल्गुण	फाल्गुन	१३५	११	दीनाजपुर	दीनाजपुर
७९	२८	हरद्विहि	हरद्विहि	१३७	७	धूमती	धूमती
८३	३	चौमूटी	चकूटी	१४०	२	६३५	६३५२
८५	२५	१३००	१३०००	१४०	८	रोगग्रस्त	रोगग्रस्त
८७	९	तेलहन	तेलहन	१४१	२	तिव्व	तीव्र
८७	१६	थारु	थारु	१४६	८	वामरूप	कामरूप
८७	२३	छीटती	छीटती	१५०	२६	जात्रापुर	यात्रापुर
८८	१	मंजुपाटन	मंजुपाटन	१५४	५	कामरूप	कामरूप
८९	४	१६९२	१७९२	१५७	१८	कामरूप	कामरूप
८९	१५	१६१५	१८१५	१५८	२७	ऋषिभरो	ऋषिभरो
८९	२	मिनिष्टर	मिनिष्टरी	१७०	१	फुयोघाटी	फूयोघाटी
९१	१३	झाप	झापदिया	१७६	१६	१५४	११४
९४	६	काठमांडू	काठमांडू	१८८	२१	मील	मील
९६	१३	३८५	३८५	१९१	१०	७६०	१७६०
१०४	१५	उपर	ऊपर	१९२	२०	मुसलमान	मुसलमान
				१९४	११	उदयपुर	उदयपुर
				२०६	१३	राजपूत	राजपूत

पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध	पृष्ठ	पंक्ति	अशुद्ध	शुद्ध
२०६	१७	पुरे	पूरे	२८१	२७	सन् ५६७	सन् १५६७
२०८	१२	सन् १८९१	सन् १८८१	२८४	२	भुवनेश्वर	भुवनेश्वर
२०८	१३	वांकरगंज	वांकरगंज	२८४	१८	१८०	१६०
२०८	१४	२६०७७	२६०७७१	२८८	१८	सूक्ष्म आ-	सूक्ष्म
२१३	१८	यत्किन्द्र	यतीन्द्र			प्रतिमेश्वर-	प्रतिमेश्वर
२१८	१३	तयोदशी	तयोदशी	२८८	२७	स्कंदपुराण	स्कंदपुराण
२१९	४	आमावास्या	अमावास्या	२८८	२७	(उत्कल-	(उत्तर-
२२४	१२	गहड़ी	गहड़ी			खण्ड)	खंड)
२२५	५	फोर्टविलियम	विलियम	३०४	१३	हुंढ	हुंढ
२३१	२१	कीड़े	कीड़े	३१७	१५	यहां	यहां
२३१	२१	नमूने	नमूने	३१९	१६	समय	समय
२४०	८	दारवाजा	दरवाजा	३२५	७	वशाख	वैशाख
२४१	७	१७८०	१८९०	३२५	२७	सारूप्य	सारूप्य
२५७	३३	१०८०३	१००८३	३२६	६	उच्छिष्ट	उच्छिष्ट
२६०	२३	सर्वमस्तनत्	सर्वममृजत्	३३१	२३	क्षेत्र	क्षेत्र
२६०	२३	ज्ञातमनन्तं	ज्ञानमनन्तं	३३९	१६	१२७२६०	१२६२६०
२६०	२४	निरवयवं	निरवयवं	३४१	५	निकला	निकाला
२६०	२६	तदुपा-	तदुपास-	३५१	२२	साहब-	साहब-
		समैव	नमेव			गंज	गंज से
२६१	१३	वक्तृता	वक्तृता	३६०	१८	जिसेमें	जिलेमें
२६८	१	अशुभलङ्के	अशुभसमय	३६०	२०	२६२८१	३६२८१
		के लङ्के	के लङ्के	३६२	४	३७०३३६	२७०३३६
२७०	१	ईशाण	ईशान	३६२	१७	२००	२०००

भारत-भ्रमण ।

तीसरा खण्ड ।



श्रीगणेशायनमः

संभुचरन सिर नाइ कै 'साधुचरनपरसाद' ।
तृतीय खंड 'भारत-भ्रमण' बरनत हैं अविवाद ॥

पहला अध्याय ।

(सूवे बिहार में) आरा, दानापुर,
पटना और बांकीपुर ।

आरा ।

मेरी तीसरी यात्रा सन १८९२ ईस्वी के अक्तूबर (सन्त १९४९ के कार्तिक) में मेरी जन्मभूमि चरजपुरा से प्रारंभ हुई ।

चरजपुरा से १२ मील दक्षिण ' इण्डियन रेलवे ' का बिहिया स्टेशन है ।
में बिहिया में रेलगाड़ी में सवार हो, उससे १४ मील पूर्व आरा के स्टेशन पर
उतरा । बिहार प्रवेश के पटना विभाग में शहाबाद जिले का सदर स्थान
और जिले का प्रधान कस्बा (२५ अंश, ३३ कला, ४६ विकला उत्तर
अक्षांश और ८४ अंश, ४० कला, २२ विकला पूर्व देशांतर में) रेलवे स्टेशन

से एक मील उत्तर और गंगा से ६ मील दक्षिण आरा एक छोटा शहर है । स्टेशन से पश्चिमोत्तर एक सराय है ।

सन १८९१ की जन संख्या के समय आरा में ४६९०५ मनुष्य थे; अर्थात् २३४२६ पुरुष और २३४७९ स्त्रियाँ । इनमें ३३३५३ हिन्दू, १३०८६ मुसलमान, ४०६ जैन, ५६ कुस्तल और ४ बौद्ध थे । मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में २२ वां और बंगाल में १४ वां शहर है ।

शहर सौन्दर्यवान है । इसका चौक भी अच्छा है । मकान इटे और मट्टी के बने हैं । शहर के उत्तर दीवानी और पश्चिम एक तालाब के समीप मैदान में कलकटरी और फौजदारी सुन्दर कचहरियाँ बनी हुई हैं । कलकटरी से पश्चिम दीवार से घेरा हुआ मुसलमानों का बहुत बड़ा मौलाबाग, जिसमें एक उत्तम ताजिया रक्खी हुई है, और पूर्व गवर्नमेंट स्कूल है । स्कूल से पूर्व शहर के मध्य में डील साहव का बड़ा तालाब; दीवानी कचहरी से उत्तर गांगी नदी पर काठ का पुल और शहर के भीतर जेलखाना और अस्पताल है । जज की कोठी के पास वह दो मजिला मकान है, जिसमें सन १८५७ के बलवे के समय कई एक यूरोपियनों ने थोड़े सिक्ख सिपाहियों के साथ बड़ी बहादुरी से आत्मरक्षा की । जजकी कोठी से १ मील दूर एक सुन्दर छोटा गिर्जा है । बाबू बाजार के एक मन्दिर में बुढ़वा महादेव नामक मोटे शिवलिंग हैं । वहाँ सावन मास में प्रति सोमवार की रात्रि में रोशनी, नाच, शिव का शृङ्गार और पूजन होता है । बहुत दर्शक लोग आते हैं । इसके अतिरिक्त आरे में कई एक छोटे देवमन्दिर और जैनमन्दिर हैं । शहर से एक मील से अधिक पूर्व सोन की नहर है, जो देहरीघाट से निकल कर साठ मील पर आरा से पूर्वोत्तर गंगा नदी में मिली है ।

• शाहाबाद जिला—यह पटना विभाग के दक्षिण पश्चिम का जिला है । इसके उत्तर पश्चिमोत्तर प्रदेश के माजीपुर और बलिया जिले और मिर्जापुर और गान्धारी जिला; पश्चिम पश्चिमोत्तर देश में मिर्जापुर बनारस और गान्धारी जिले; दक्षिण लोहरागा जिला और पूर्व पटना जिला है । जिले के उत्तरीय सीमा

पर गंगा और सरजू; पश्चिमी सीमा पर कर्मनाशा और पूर्वी सीमा पर सोन नदी बहती है । जिले के पूर्वोत्तर कोने के पास सोन नदी और चौसा के निकट कर्मनाशा नदी गंगा में मिल गई है । जिले का क्षेत्रफल ४३६५ वर्गमील और सदर स्थान आरा है ।

शाहाबाद जिला स्वभाविक रीति से दो विभागों में बटा है । उत्तरीय भाग में, जो जिले के क्षेत्रफल का तीन चौथाई है, उपजाऊ भूमि में खेती होती है और आम महुआ इत्यादि फलदार वृक्ष बहुत हैं । और दक्षिणीय भाग में विन्ध पहाड़ का सिलसिला, जिनमें से इस जिले में आठ सौ वर्गमील है, फैला है । छेदू की साधारण ऊंचाई समुद्र के जल से १५०० फीट है । वनों में लाही बहुत होती है । सोन के किनारों पर और जहां तहां मैदानों में कंकड़ निकाले जाते हैं । कायमूर पहाड़ियों के पत्थर से इमारतें, चकियां, चाक, ऊख पेरने के कोलहू, इत्यादि चीज बनती हैं और पहाड़ियों में स्लेट आदि कई प्रकार के पत्थर मिलते हैं । जिले के दक्खिनी पहाड़ी भाग में बाघ, तेंदुए, भालू, छर और अनेक प्रकार के हिरण आदि बनेले जीव रहते हैं और उत्तरीय भाग में कई एक नहरें फैली हुई हैं । और जिले में बहुतसी छोटी २ नदियां बहती हैं । सहसराम के पास सूर्यवंशी राजा हरिश्चन्द्र के पुत्र रोहिताश्व के नाम से रोहितासगढ़ नामक पुराना किला है । इसकी वर्तमान इमारत को बंगाल के सूबेदार राजा मानसिंह ने सन १६४४ ई० में बनवाया था । लगभग ४ मील पूर्व से पश्चिम तक और ५ मील उत्तर से दक्खिन तक गढ़ की निशानियां देखने में आती हैं । इस जिले के ब्रह्मपुर, बक्सर, जखनी, धुसरिया, सिनहा, गड़हनी, कस्तरदीनवार, धमार, मसाढ़ और गुप्तेश्वर में समय समय पर मेले होते हैं ।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय २०४२१२२ और सन् १८८१ ई० में १९६४९०९ मनुष्य थे; अर्थात् १८१७८८१ हिन्दू, १४६७३२ मुसलमान, २७६ कृस्तान और २० दूसरे । जातियों के खाने में २१३३०८ ब्राह्मण, २०७१९५ राजपूत, १५२८४६ कोइरी, ११९०१० चमार, ९०१५५

दुसाध, ६८४२७ कांठ, ६६३४१ कुर्मी, ६२८१२ कंहार, ५९०७५ भुईंशोर, ४७८३६ तेली, ४६९९४ कायस्थ, ३४५६८ वनीआं थे; शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे आरा में ४६९०५, सहसराम में २२७१३, डुमरांव में १८३८४, बक्तर में १५५०६, जगदीशपुर में १२४७५, और भमुआ में १०२१६, और भोजपुर, नासरीगंज और भगेन में १०००० से कम मनुष्य थे ।

• **इतिहास**—सन् १८५७ ई० के बलबे के समय ता० २४ जुलाई को लगभग २००० सिपाही वागी होकर दानापुर से आरा को चले । उन्होंने जगदीशपुर के बाबू कुवरसिंह के आधीन लगभग ८००० हथियारबन्द गांव वालों के साथ ता० २७ जुलाई को आरा के जेलखाने के सम्पूर्ण कैदियों को छोड़ दिया, खजाने को लूट लिया और सरकारी फौज पर आक्रमण किया । बहुत से यूरोपियन लड़के और स्त्रियां पहलेही बाहर भेज दी गई थी, केवल १२ अंगरेज और ३ चार दूसरे क़स्तान कसबे में थे । पटने के कमिश्नर ने ८० सिक्खों को सहायता के लिये आरे में भेज दिया था । उसके पश्चात् जो २३० यूरोपियन दानापुर से चले, वे रास्ते में प्रायः सब मारे गए । आरा के यूरोपियन और सिपाहियों ने इस्टर्नइंडियन रेलवे कम्पनी के दो मकानों को, जिनमें का २० गज लम्बा दो मंजिला मकान प्रधान था, तुरतही किलाबन्दी कर उसमें सब सामान रख लिया । जब यूरोपियन और सिक्ख लोग दो मंजिले मकान में चले गये, तब वागी लोग कसबे में लूट पाट करने के पीछे मिष्टर बोली की छोटी गद्दी को चले, किन्तु एक सरकारी तोप की झाड़ू दगने पर वे छितर बितर हो गए । इसके पश्चात् बलबाइयों ने एक सप्ताह तक कई एक प्रकार से कई बार उन पर आक्रमण किया, किन्तु उनके पास तोप नहीं थी, इसलिये ये लोग चक्को मार न सके । अगस्त के आरम्भ में दानापुर से भेजे हुए २६० पैदल ६० गोलन्दाज और ४ तोपों के साथ आरा के पास पहुंचे । ताः २ अगस्त को तोप की सनसनाहट दूर से सुन कर वागी लोग जहां तहां भागने लगे । यूथ्याम्न के पहले ही सब लोग भाग गये । ता० ३ अगस्त को सरकारी पल्टन

घरे हुए लोगों से आमिली । बाघू कुंवरसिंह का वृत्तांत भारत-भ्रमण के पहले खंड में हुमराव और आजमगढ़ के वृत्तांत में लिखा है ।

दानापुर ।

आरा से पूव ८ मील कोइलवर का पुल और २४ मील दानापुर का रेलवे स्टेशन है ।

कोइलवर में सोन नदी पर, जो नर्मदा के निकास के पास अमरकंटक पर्वत से निकल कर ४६४ मील दक्खिन से उत्तर को बहने के उपरांत कोइलवर से कई मील उत्तर हरदी छपरा के निकट गंगा में मिली है, ४८२६ फीट लम्बा रेलवे का पुल है । उसमें १५० फीट लम्बे २८ दरवाजे हैं । पुल के पाये ३२ फीट पानी के नीचे और भूमि में और ३५ फीट पानी से ऊपर हैं । पुल के नीचे की तह में आदमी और गाड़ी चलती हैं और ऊपर रेलवे की दोहरी लाइन है । यह पुल सन् १८६२ ई० में ४३३३३२४ रुपये के खर्च से तैयार हुआ ।

कोइलवर के पुल से १६ मील पूर्व दानापुर का बड़ा रेलवे स्टेशन है । स्टेशन पर गाड़ी बर तक्र ठहरती है । रेलवे से उत्तर बिहार के पटने जिले में फौजी छावनी का स्थान गंगा के दाहिने अर्थात् दक्षिण दानापुर एक कसबा है । जिसको दीनापुर भी कहते हैं ।

सन् १८९१ ई० की मनुष्य गणना के समय दानापुर कसबे और इसकी छावनी में ४४४१९ मनुष्य थे; अर्थात् २१८९३ पुरुष २२५२६ स्त्रियाँ । इनमें ३२२८३ हिन्दू, १०६२४ मुसलमान, १४९१ छत्तान, १७ यहूदी और ४ जैन थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ९१ वां और बंगाल में १७ वां शहर है ।

रेलवे स्टेशन से ३ १/२ मील दूर पटना विभाग की फौजी छावनी फैली हुई है । उसमें एक वैटेलियन अर्थात् पलटन पैदल गोरी की और एक रेजीमेंट बंगाल पैदल की रहती हैं । सन् १८८३ ई० में २ यूरोपियन और एक वेशी पैदल शाही साही आर्टिलरी के २ बैटरियों के साथ था । एक ६ मील की

सड़क दानापुर से वांकीपुर की सिविल कचहरियों तक गई है, उसके किनारों पर लगातार छोटे बड़े मकान बने हैं । वास्तव में गंगा और रेलवे के बीच में दानापुर, वांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर है ।-

सन १८५७ की जुलाई में ३ रेजीमेंट, जो दानापुर में थी, बागी होकर आरा को चली गईं; पीछे दानापुर से यूरोपियन सेना आरा की रक्षा के लिये भेजी गई।

पटना और वांकीपुर ।

दानापुर के रेलवे स्टेशन से पूर्व ६ मील वांकीपुर का रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहर का रेलवे स्टेशन है । बिहारप्रदेश में किस्मत और जिले का सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ विकला, पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर पूर्व जाफर खां के बाग से पश्चिम वांकीपुर की शहरतली तक ९ मील की लंबाई और औसत में दो मील की चौड़ाई में पटना शहर फैला हुआ है । पुरानी किलाबंदी, जो शहर को घेरती थी, अब नहीं है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पटने और वांकीपुर में १६५१९२ मनुष्य थे; अर्थात् ८२००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां । इनमें १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ कृस्तान, ५९ जैन और ९ बौद्ध थे । मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १५ वां, बंगाल में दूसरा और बिहार में पहला शहर है ।

शहर के मकान ईंटे और मट्टी से बने हुए हैं । एक चौड़ी सड़क पूर्व में पटने के पश्चिम दरवाजे होकर वांकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है । दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं । चौक से ५ मील पश्चिम वांकीपुर की सिविलियन कचहरी तक चौड़ी सड़क पर ट्रामगाड़ी चलती है । दीवा, वांकीपुर और पटने के बीच में पटना नहर है, जो सन १८७७ में खुली । प्रधान सड़कों पर रात में लाइटों की रोशनी होती है । एक धर्मशाला पटने के रेलवे स्टेशन से थोड़ा पश्चिम और दूसरी चौक के निकट है । पटने शहर में गोपीनाथ,

बड़ी पटनदेवी, छोटी पटनदेवी और हरिमन्दिर ये ४ मन्दिर प्रधान हैं । गुलजारवाग में अफीम के गोदाम और रोमनकाथेलिक चर्च के सामने एक कबरगाह है, जिसमें मीरकासिम द्वारा मारे हुए लोग दफन किए गए थे । उसके ऊपर पत्थर और ईंटों से बना हुआ एक स्तम्भ खड़ा है । बूसरा यूरोपियन कबरगाह शहर के पश्चिम है । पश्चिम की शहरतली में शाहअरजानी का, जो सन् १०३२ हिजरी (सन् १६२२ ई०) में मरा था, बड़ा दरगाह है । वहाँ प्रति वर्ष एक बड़ा मेला होता है । मेला ३ दिनों तक रहता है । उसमें लगभग ५००० मनुष्य आते हैं । दरगाह के पास के करवले में मुहर्रम के दिन बहुत से लोग एकत्र होते हैं और संपूर्ण शहर के ताजिये दफन किये जाते हैं । करवले के पास एक साधु का बनवाया हुआ एक तालाब है । पटने की मसजिदों में शेरशाह की मसजिद सब से पुरानी है । पीरबहोर की दरगाह भी मुसलमानों की पूजा का स्थान है, जिसको बने हुए २५० वर्ष हुए । शहर के आस पास गुलाब चुलाने के लिये गुलाब के बहुतेरे बाग लगे हुए हैं ।

बांकीपुर में हिन्दुस्तान में सब से बड़ी अफयून की कोठी है, वहाँ बिहार के १२ जिलों से अफयून आता है । पटना कालिज ईंटे से बनी हुई बहुत सुन्दर इमारत है, इसको किसी वाशिन्ध ने अपने रहने के लिये बनवाया था । गवर्नमेन्ट ने इसको खरीद कर कचहरी बनाई । सन् १८५७ ई० में कचहरी दूसरी बनी । सन् १८६२ में इसमें कालिज स्थापित हुआ । इनके अतिरिक्त बांकीपुर में सिविल कचहरियाँ, मेडिकल कालिज, नार्मल स्कूल, बिहार नेशनल कालिज, खैरुती अस्पताल, पब्लिक लाइब्रेरी, इत्यादि दशनीय वस्तु हैं । सिविल कचहरी और अफीम की कोठी के बीच में प्रतिवर्ष सावन मास में प्रति सोमवार को सोमवारी मेला होता है, जिसमें बहुत सी चीज़ें बिकी के लिये आती हैं और महादेव के मन्दिर में बड़ा उत्सव होता है ।

पटने में कारोबार के प्रधान स्थान मारुगंज, मन्धरगंज, किला महल्ला, मिरचागंज के साथ चौक, महाराजगंज, सादिकपुर, अलावकसपुर, गुलजार बाग और कर्नेलगंज हैं । पटना शहर जिले में प्रधान तिजारती बाजार और

सड़क दानापुर से बांकीपुर की सिविल कवहरियों तक गई है, उसके किनारों पर लगातार छोटे बड़े मकान बने हैं। वास्तव में गंगा और रेलवे के बीच में दानापुर, बांकीपुर और पटना लगातार एकही पतला शहर हैं।

सन १८५७ की जुलाई में ३ रेजीमेंट, जो दानापुर में थी, बागी होकर आरा को चली गईं; पीछे दानापुर से यूरोपियन सेना आरा की रक्षा के लिये भेजी गई।

पटना और बांकीपुर ।

दानापुर के रेलवे स्टेशन से पूर्व ६ मील बांकीपुर का रेलवे जंक्शन और १२ मील पटना शहर का रेलवे स्टेशन है। बिहारप्रदेश में किम्मत और जिले का सदर स्थान (२५ अंश, ३७ कला, १५ बिकला, उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, १२ कला, ३१ बिकला, पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर पूर्व जाफर खां के बाग से पश्चिम बांकीपुर की शहरतली तक ९ मील की लंबाई और औसत में दो मील की चौड़ाई में पटना शहर फैला हुआ है। पुरानी किलाबंदी, जो शहर को घेरती थी, अब नहीं है।

सन १८९१ की मनुष्य गणना के समय पटने और बांकीपुर में १६५१९० मनुष्य थे; अर्थात् ८२००८ पुरुष और ८३१८४ स्त्रियां। उनमें १२४५०६ हिन्दू, ४००७७ मुसलमान, ५४१ कुस्तान, ५९ जैन और ९ बौद्ध थे। मनुष्य गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में १५ वां, बंगाल में दूसरा और बिहार में पहला शहर है।

शहर के मकान ईंटों और मट्टी से बने हुए हैं। एक चौड़ी सड़क पूर्व से पटने के पश्चिम दरवाजे होकर बांकीपुर होती हुई पश्चिम दानापुर गई है। दूसरे रास्ते तंग और टेढ़े हैं। चौक से ५ मील पश्चिम बांकीपुर की सिविलियन कवहरी तक चौड़ी सड़क पर ट्रामगाड़ी चलती है। दीघा, बांकीपुर और पटने के बीच में पटना नहर है, जो सन १८७७ में खुली। प्रधान सड़कों पर रात में लाइटों की रोशनी होती है। एक घर्मशाला पटने के रेलवे स्टेशन से थोड़ा पश्चिम और दूसरी चौक के निकट है। पटने शहर में गोपीनाथ,

मंगे; जो किसीको कुछ पूछना होगा, वे उसीमें देख लेंगे । गुरु गोविन्द सिंह के जीवन का बड़ा भाग युद्ध में बीता; उन्होंने ने संवत् १७६५ कार्तिक सुदी पंचमी (सन् १७०८ ई०) को हैदराबाद के राज के नयेद में मुसलमानों से लड़कर संग्राम में अपने प्राण का विसर्जन किया; वहाँ गुरु गोविन्द-सिंह की संगति बनी हुई है ।

पटनदेवी—हरि मन्दिर से दक्षिण ओर एक गली के बगल में छोटी पटनदेवी का मन्दिर है । आंगन के पूर्व ओर पश्चिम दोहरी और उत्तर तथा दक्षिण एकदरी दालान और चारों कोनों पर चार कोठरियाँ हैं । पूर्व के दालान में १२ खम्भे लगे हुए आसन में महाकाली, महालक्ष्मी और महा-सरस्वती की तीन मूर्तियाँ स्थित हैं ।

चौक से ३ मील पश्चिम महाराज गंज में बड़ी पटनदेवी का मन्दिर है । लोग कहते हैं कि पार्वती के पट के गिरने से वहाँ पाटनदेवी हुई और इस शहर का नाम पटना पड़ा ।

गोलघर—बांकीपुर के रेलवे स्टेशन से १ १/२ मील उत्तर ऊँचे गुम्बज की शकल की ईंटे से बनी हुई गोलघर नामक इमारत, जो सन् १७८४ ई० में अकाल के समय गल्ले रखने के लिये बनी थी, देखने लायक है । इसकी दीवार १२ फीट मोटी; गोलाई नेव के पास ४२६ फीट, ऊँचाई मध्य में ९० फीट और भीतर का व्यास १०९ फीट है । चारों ओर चार दरवाजे और सिरे पर १० १/२ फीट गोलाकार चबूतरा है । ऊपर चढ़ने के लिये बाहर से दो सीढ़ियाँ, जिनके बगल में रोकावट के लिये दीवार बनी है, बनी हुई हैं । लोग कहते हैं कि नेपाल के सर जंगबहादुर छोटे घोड़े पर चढ़कर बाहर की सीढ़ियों से इसके सिरे पर चढ़ गए थे। गोलघर में १३७००० टन गल्ला अंट सकता है ।

पटना जिला—इसका क्षेत्रफल २०७९ वर्गमील है । इसके उत्तर गंगा नदी, बाद सारन मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले; पूर्व मुंगेर जिला; दक्षिण गया जिला और पश्चिम सोन नदी, जो झांझाबाद जिले से इसको अलग करती है, बहती है । जिले के दक्षिण भाग में पहाड़ियाँ हैं । जिले में जंगल

नील की तिजारात का प्रसिद्ध स्थान है । तेल के बीज, नमक, सज्जी, चीनी, गुड़, गेहूँ, रहड़, चना, चावल, इत्यादि वस्तु दूसरे शहरों से पटने में आती हैं और कई प्रकार की चीजें शहर से दूसरे शहरों में जाती हैं । मारुगंज सबसे अधिक आमदनी की जगह है । कर्नेलगंज में बहुत सी तिजाराती चीजें बंगाल और बिहार के जिलों से नाव पर आती हैं । सादिकपुर और महराजगंज में तेल के बीज का बाजार है । मिरचाईगंज से सटा हुआ चौक है, जिसमें मारुवाड़ियों की कपड़े आदि की दुकानें देखने में आती हैं । चौक से पूर्व किले के महल्ले में रुई, बांस और लकड़ी की तिजारात होती है । सन् १८८३-८४ में बांकीपुर और दानापुर के साथ पटने की सौदागरी की आमदनी की कीमत ३८९२१८४० रुपए और रफतनी की कीमत ६६०३५७९० रुपए थी ।

• गुरु गोविन्दसिंह का मन्दिर—यह मन्दिर चौक के पास एक गली के बगल में हरिमन्दिर करके प्रसिद्ध है । मन्दिर के फाटक के दालान में मार्बल के ४ जोड़े खम्भे लगे हुए हैं । बड़े आंगन में एक उत्तम वरामदा बना है उसमें पूर्व और पश्चिम दालान और बाहर चारों ओर सुन्दर ओसारे बने हैं । पूर्व के दालान में गुरु गोविन्दसिंह की २ जोड़ी चरणपादुका और पश्चिम वाले में सुन्दर सिंहासन पर ग्रन्थ साहब अर्थात् नानकशाही लोगों की धर्म पुस्तक रखी हुई है । पुस्तकों को दुशाले ओढ़ाये जाते हैं और चंवर डुलाये जाते हैं । मन्दिर से उत्तर बहुत ऊँचा निशान है । पूस सुदी सत्तमी गुरु गोविन्दसिंह का जन्म दिन है, उस दिन वहाँ बड़ा उत्सव होता है । फूल बंगला बनता है और बड़ी रीशनी की जाती है । हरिमन्दिर के मध्य बाग़ा सुमेरसिंह जी हैं जो ब्रजभाषा के अच्छे कवि हैं । उसी स्थान पर शिखरों के नये गुरु तेग बहादुर की पत्नी गुजरीदेवी के गर्भ से संवत् १७२३ (सन् १६६६ ई०) में पूस सुदी सत्तमी को गुरु गोविन्दसिंह का जन्म हुआ था । उन्हो ने अपने मतवालों को सिद्ध की पदवी दी और एक दूसरा ग्रन्थ बनाया, जो दूसरे गुरु का ग्रन्थ कहलाता है । और आशा दी कि हमारे पश्चात अब कोई दूसरा गुरु नहीं होगा, सब लोग अपने ग्रन्थ साहब को गुरु सम-

मंगे; जो किसीकी कुछ पूछना होगा, वे उसीमें देख लेंगे । गुरु गोविन्द सिंह के जीवन का बड़ा भाग युद्ध में बीता; उन्होंने ने संवत् १७६५ कार्तिक सुदी पंचमी (सन् १७०८ ई०) को हैदराबाद के राज के नवेड में मुसलमानों से लड़कर संग्राम में अपने माण का विसर्जन किया। वहां गुरु गोविन्द-सिंह की संगति बनी हुई है ।

पटनदेवी—हरि मन्दिर से दक्षिण ओर एक गली के बगल में छोटी पटनदेवी का मन्दिर है । आंगन के पूर्व ओर पश्चिम दोहरी ओर उत्तर तथा दक्षिण एकदरी दालान और चारों कोनों पर चार कोठरियां हैं । पूर्व के दालान में १२ खम्भे लगे हुए आसन में महाकाली, महालक्ष्मी और महासरस्वती की तीन मूर्तियां स्थित हैं ।

चौक से ३ मील पश्चिम महाराज गंज में बड़ी पटनदेवी का मन्दिर है । लोग कहते हैं कि पार्वती के पट के गिरने से वहां पाटनदेवी हुई और इस शहर का नाम पटना पड़ा ।

गोलघर—बांकीपुर के रेलवे स्टेशन से १ १/२ मील उत्तर ऊंचे गुम्बज की शकल की ईंटे से बनी हुई गोलघर नामक इमारत, जो सन् १७८४ ई० में अकाल के समय गल्ले रखने के लिये बनी थी, देखने लायक है । इसकी दीवार १२ फीट मोटी; गोलाई नेव के पास ४२६ फीट, ऊंचाई मध्य में ९० फीट और भीतर का व्यास १०९ फीट है । चारो ओर चार दरवाजे और सिरे पर १० १/२ फीट गोलाकार चबूतरा है । ऊपर चढ़ने के लिये बाहर से दो सीढ़ियां, जिनके बगल में रोकवट के लिये दीवार बनी है, बनी हुई हैं । लोग कहते हैं कि नेपाल के सर जंगबहादुर छोटे घोड़े पर चढ़कर बाहर की सीढ़ियों से इसके सिरे पर चढ़ गए थे। गोलघर में १३७००० टन गल्ला अंट सकता है ।

पटना जिला—इसका क्षेत्रफल २०७९ वर्गमील है । इसके उत्तर गंगा नदी, बाद सारन मुजफ्फरपुर और दरभंगा जिले; पूर्व मुंगेर जिला; दक्षिण गया जिला और पश्चिम सोन नदी, जो शाहाबाद जिल से इसको अलग करती है, बहती है । जिले के दक्षिण भाग में पहाड़ियां हैं । जिले में जंगल

नहीं है। जिले के दक्षिण पूर्व के भाग में लगभग १००० फीट ऊंची राजपट्ट की पहाड़ियां और अनेक गर्म झरने हैं।

पटना जिले में गंगा और सोन प्रधान नदी हैं। पुनपुन नदी से छोटी २ नहर निकली हैं। पुनपुन नदी नौवतपुर तक पूर्वोत्तर को बढ़कर, वहां से पूर्व झुककर फतुहा के पास गंगा में मिल गई है। उसकी लम्बाई इस जिले में ५४ मील है। बिहार की पहाड़ी में मकान बनाने योग्य पत्थर की खान है।

जिले में सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १७७०२२४ और सन् १८८१ ई० में १७२६८५६ मनुष्य थे; अर्थात् १५४१०६१ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान, २५८८ कृस्तान, २२ जैन, १६ ब्रह्मो, १४ यहूदी, १ पारसी और १३ दूसरे। जातियों के खाने में २१७८४५ अहीर, १९४२२२ कुर्मी, १११३८१ भूमिहार, ९९९७६ दुसाध, ८६७३८ कोइरी, ८५८२४ कंहार, ६४३३२ राजपूत, ५६६८७ चमार, ५२८८० तेली, ४७०४१ ब्राह्मण थे, और शेष में दूसरी जातियां थीं। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय पटना जिले के पटने शहर में १६५१९२, बिहार में ४७७२३, दानापुर में ४४४१९, बाढ़ में १२२६३, और खगौल, मुक्तामा, फतुहा, महम्मदपुर, बंकेटपुर और रखलपुर में १००० से कम मनुष्य थे।

खूबे बिहार—बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये चार खूबे हैं। इनमें से खूबे बिहार का प्रधान शहर पटना है। खूबे बिहार के उत्तर स्वाधीन नेपाल राज्य; पूर्व खूबे बंगाल; दक्षिण छोटा नागपुर के जिले और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश है। खूबे बिहार में पटना और भागलपुर दो विभाग हैं,—पटना विभाग में पटना, गया, झांझाबाद, सारन, चंपारन, मुजफ्फरपुर, और दरभंगा ये ७ जिले और भागलपुर विभाग में भागलपुर, मालदाह, पुर्निया, मुंगेर और संयाल परगना ये ५ जिले हैं।

यह देश साधारण तरह से विपटा है। मुंगेर जिले और देश के दक्षिण-पूर्व, में जहां राजमहल और संयाल सिलसिले हैं, पहाड़ियां हैं। इस खूबे में सबसे

ऊँची पहाड़ी, जिसकी ऊँचाई केवल १६२० फीट है, गया जिले में स्थित है। सूबे के मध्य होकर गंगा नदी बहती है, जिससे इस सूबे के प्रायः बराबर दो भाग हो गए हैं। उत्तर से सरजू, गंडक, कोसी और महानंदा और दक्षिण से सोन नदी आकर गंगा में मिली हैं। इस सूबे में कई एक नहर खेतों को पटाते हैं और नील और अफीम बहुत होती है।

सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सूबे बिहार का क्षेत्रफल ४४१३९ वर्ग मील था। इसमें ७७४०७ कसबे और गाँव, ३५२०८९६ मकान और २३१२७१०४ मनुष्य थे। अर्थात् ११३८५८३६ पुरुष और ११७४१२६८ स्त्रियाँ। इनमें १९१६९३२७ हिन्दू, ३३१२६९७ मुसलमान, ६३३८६६ आदि निवासी इत्यादि, १०९५४ कृस्तान, १३२ बौद्ध, ५४ सिक्ख, ५० यहूदी और २४ जैन। जातियों के खाने में २६४२९५७ ग्वाला, ११६६५९३ राजपूत, ११२४३६१ कोइरी, १०७३६४३ ब्राह्मण, १०५२५६४ दुसाध, ९८५०९८ भूमिहार, ८८२११३ चमार, ७९०५२३ कुर्मी, ६३२०२९ तेली, ५३१४२३ कांदू, ५३१९०४ धानुरु, ४६८३०५ कंहार, ४१९५२१ तांती और तंतवा, ३९३५३७ बनिया, ३९२६२२ मलाह, ३५८०६८ कायस्थ, ३४०७१७ नाई, २८३७४० कुंभार, २५२९१४ लोहार; शेष में दूसरी जातियाँ थीं। आदि निवासियों में ५५९६२० संघाल, ११९९५ कोल थे। बिहार भारतवर्ष में सबसे घनी आवादी का देश है। इसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय प्रति वर्गमील में औसत ५२४ मनुष्य थे।

प्राचीन काल में मगध के राजाओं के आधीन सूबे बिहार था, जो उस समय भारतवर्ष में प्रबल राजा थे। सन ईस्वी की चौथी सदी के पहिले से पाँचवीं सदी के पीछे तक उनकी राज्य था। तेरहवीं सदी के आरंभ में बिहार देश मुसलमानों के आधीन होकर बंगाल के नवाब के अधिकार में हुआ। सन १७६५ में इस्टइंडियन कंपनी ने दीवानी के साथ सूबे बिहार को पाया।

सूबे बिहार के शहर और कसबे, जिनमें सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १०००० से अधिक मनुष्य थे।

नम्बर	शहर और कसबे	जिला	जन-संख्या
१	पटना बांकीपुर	पटना	१६५१९२
२	गया	गया	८०३८३
३	दरभंगा	दरभंगा	७३५६१
४	भागलपुर	भागलपुर	५९१०६
५	छपरा	सारन	५७३५२
६	मुंगेर	मुंगेर	५७०७७
७	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
८	बिहार	पटना	४७७२३
९	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१०	दानापुर	पटना	४४४१९
११	चेतिया	चंपारन	२२७८०
१२	सहसराम	शाहाबाद	२२७१३
१३	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
१४	हुमराव	शाहाबाद	१८३८४
१५	जमालपुर	मुंगेर	१८०८९
१६	सीवान	सारन	१७७०९
१७	मधुबनी	दरभंगा	१७५४४
१८	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
१९	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
२०	इंगलिशवाजार	मालदाह	१३८१८
२१	रिविलगंज	सारन	१३४७३
२२	मोतीहारी	चंपारन	१३१०८
२३	लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
२४	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
२५	बाढ़	पटना	१२३६३
२६	टिकारी	गया	११५६२
२७	साहेबगंज	संथालप्रगना	११२९२
२८	रोसरा	दरभंगा	१०८८७
२९	भभुआ	शाहाबाद	१०२१६

• इतिहास—पुराण के लेखानुसार शिशुनागवंश के राजा अजातशत्रु के पोते उदयश्वने पाटली पुत्र (पटना) को, जिसको कुसुमपुर भी (पुष्पपुर) कहते थे, बसाया । (भारत भ्रमण इसी खंड के तीसरे अध्याय की प्राचीन कथा में देखो) अजातशत्रु बौद्धमत नियत करने वाले गौतमबुद्ध के समय में था । गौतमबुद्ध का देहांत सन ई० के ५४३ वर्ष पहले हुआ था । चन्द्रगुप्त ने मगध या बिहार के नंद खांदान को, जिसकी राजधानी पाटलीपुत्र थी, विजित करके सन ई० से ३१६ वर्ष पहले एक राज्य नियत कर २४ वर्ष तक गंगा के मैदान में राज्य किया । उसी समय चीन के मेगस्थनीज़ ने शहर को देखा था । उसने लिखा था की सिंध नदी से १०००० इसटाडिया (११४९ मील) दूर गंगा और एरानोवो (सोन) के संगम के निकट खाई से घेरा हुआ ६४ फाटकों से सुशोभित हिन्दुस्तान की राजधानी पालीवोयरा (पटना) है । उसके कथनानुसार शहर का घेरा २४ मील का होता है । चीन के दूसरे यात्री हुएत्संग ने सन ६३७ ई० में इस शहर को देख कर लिखा है कि पुराना शहर, जो कुसुमपुर कहलाता है, उजड़ पुजड़ गया है, किन्तु नया शहर पाटलीपुत्र ११ मील के घेरे में है ।

मुसलमानों के राज्य के आरंभ में इस देश का सूबेदार बिहार शहर में रहता था । अकबर ने पटने को अपने अधिकार में किया । औरंगजेब ने अपने पुत्र आजम को पटने का सूबेदार बनाया । तब से पटने का अजीमाबाद नाम पड़ा । सन १७६३ ई० में मुर्शिदाबाद के नवाब मीर कासिम की सेना ने लगभग २०० अंगरेज और २००० सिपाहियों को पटने के पास मार डाला । उनकी यादगार में एक स्तंभ बना हुआ है । सन १८५७ की जुलाई में दानापुर में ७ वीं, ८ वीं और ४० वीं देशी पैदल के सिपाही बागी हो गए । वे लोग जब नावों पर सवार होकर चले, तब अंगरेजों ने स्टीमर के गोलों से उनको मारा, जिससे बहुतेरे मरे और बहुतेरे डूब गए, किन्तु आधे से अधिक बागी सोन पार होकर शाहाबाद जिले में चले गए ।

बाँकीपुर जंक्शन से ' इष्ट इण्डियन रेलवे ' की लाइन ४ तरफ गई है । तीसरे दरजे का महद्वल फी मील २ १ पाई है ।

नम्बर	ग्राम और कस्बे	जिला	जन संख्या
१	पटना बाँकीपुर	पटना	१६५१९२
२	गया	गया	८०३८३
३	दरभंगा	दरभंगा	७३५६१
४	भागलपुर	भागलपुर	५९१०६
५	छपरा	सारन	५७३५२
६	मुंगेर	मुंगेर	५७०७७
७	मुजफ्फरपुर	मुजफ्फरपुर	४९१९२
८	बिहार	पटना	४७७२३
९	आरा	शाहाबाद	४६९०५
१०	दानापुर	पटना	४४४१९
११	चेतिया	चंपारन	२०७८०
१२	सहस्रराम	शाहाबाद	२२७१३
१३	हाजीपुर	मुजफ्फरपुर	२१४८७
१४	हुमराव	शाहाबाद	१८३८४
१५	जमालपुर	मुंगेर	१८०८९
१६	सीवान	सारन	१७७०९
१७	मधुबनी	दरभंगा	१७५४४
१८	बक्सर	शाहाबाद	१५५०६
१९	पुर्निया	पुर्निया	१४५५५
२०	इंगलिशमार्जार	मालदाह	१३८१८
२१	रियिलगंज	सारन	१३४७३
२२	मोतीदारी	चंपारन	१३१०८
२३	लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४९३
२४	जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
२५	वाट	पटना	१२३६३
२६	टिकारी	गया	११५६२
२७	सादंगमंज	मंथालमगना	११२९२
२८	रोमरा	दरभंगा	१०८८७
२९	मधुआ	शाहाबाद	१०२१६

दूसरा अध्याय ।

(सूवे विहार में) गया, बोध गया, टिकारी और विराट नगर ।
गया ।

घांकीपुर से ८ मील दक्षिण पुनपुन गांव का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से १ मील उत्तर पुनपुन नदी बहती है जहां गया के यात्री बालू की एक वेदी बनाकर पिण्डदान करके गया जाते हैं ।

पुनपुन स्टेशन से ४९ मील और घांकीपुर जंक्शन से ५७ मील दक्षिण (२४ अंश ४८ कला ४४ विकला उत्तर अक्षांस और ८५ अंश ३ कला १६ विकला पूर्व देशांतर में) बिहार प्रदेश के पटना विभाग में जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा गया नामक छोटा शहर है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गया में जो साहवगंज के साथ एक म्युनिसिपलिटि बना है, ८०३८३ मनुष्य थे; अर्थात् ४०८९३ पुरुष और ३९४९० स्त्रियां । इनमें ६३०४६ हिन्दू, १७१४७ मुसलमान, १०५ कृस्तान और ८५ जैन थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३६ वां, बंगाल में ५ वां और बिहार में दूसरा शहर है ।

गया २ हिस्सों में विभक्त है, अर्थात् साहवगंज और पुरानी गया । दोनों फाल्गु नदी के बाएं अर्थात् पश्चिम किनारे पर हैं । साहवगंज में रेलवे स्टेशन, यूरोपियन और देशी लोगों की कोठियां और स्टेशन से करीब १ मील दक्षिण-पूर्व सिविल क्वार्टरियां हैं । साहवगंज तिजारती जगह है, वहां की सड़क चौड़ी और मकान दो मंजिले तीन मंजिले बने हैं । उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिरजा, पब्लिक लाइब्रेरी, तैरने का हम्माम, और घोड़दौड़ की सड़क है । गया में काले और सफेद पत्थर के प्याले पथलौटी आदि वस्तु बहुत सुन्दर बनती हैं ।

रेलवे स्टेशन से १ १/२ मील पूर्वोत्तर पुरानी गया के उत्तर का फाटक और २ मील फाल्गु के बाएं विष्णुपद का मन्दिर है । पुरानी गया का खास शहर, जिसमें गया वालों के मकान हैं, फाल्गु नदी के पश्चिम किनारे पर उत्तर से

(१) बाँकीपुर से पश्चिम कुल दक्षिण—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

६ दानापुर ।

२२ कोइलवर-पुल ।

३०. आरा ।

४४ बिहिया ।

५३ रघुनाथपुर ।

६३ डुमराव ।

७३ बक्सर ।

९५ दिलदारनगर जंक्शन ।

१३१ मुगलसराय जंक्शन ।

दिलदार नगर जंक्शन से उत्तर थोड़ा पश्चिम १२ मील गाजीपुर के इस पार तारीघाट; मुगलसराय से पश्चिम २० मील चुनार, ४० मील मिरजापुर, ४५ मील विन्ध्याचल, ९१ मील नयनी जंक्शन और ९५ मील इलाहाबाद और पश्चिमोत्तर 'अवध रुहेलखण्ड रेलवे' के पास ७ मील बनारस, ४६ मील जौनपुर, १२६ मील अयोध्या, १३० मील फैजाबाद जंक्शन, १९२ मील बाराबंकी जंक्शन और २०९ मील लखनऊ जंक्शन है ।

(२) बाँकीपुर से उत्तर, थोड़ा पश्चिम—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

६ दीघाघट ।

दीघाघाट से गंगा के बाएँ किनारे पर पलेजाघाट तक थोटा

जाती आती है । पलेजाघाट से पश्चिम 'बंगाल नार्थवेस्ट रेलवे' पर २९ मील छपरा, ६७ मील सिवान और १४१ मील गोरखपुर जंक्शन और पलेजा से पूर्वोत्तर ६ मील सोनपुर और ७० मील मुजफ्फरपुर जंक्शन है ।

(३) बाँकीपुर से दक्षिण गया ब्रैच—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन ।

८ पुनपुन ।

२८ जहानाबाद ।

५७ गया ।

(४) बाँकीपुर से पूर्व—
मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

६ पटना शहर ।

२८ बख्तियारपुर ।

३९ बाढ़ ।

५६ मोकामा जंक्शन ।

७६ लक्ष्मीसराय जंक्शन ।

लक्ष्मीसराय से कार्ड लाइन पर ६१ मील वैद्यनाथ जंक्शन, १३० मील आसन सोल जंक्शन, १४१ मील रानीगंज और १८७ मील खाना जंक्शन और लुप लाइन होकर २५ मील जपालपुर जंक्शन, ५८ मील भागलपुर, १०४ मील साहेबगंज और २४८ मील खाना जंक्शन है । खाना जंक्शन से दक्षिण ८ मील बर्दवान और ७२ मील कलकत्ते के इस पार हयदा है ।

दूसरा अध्याय ।

(सूवे विहार में) गया, बोध गया, टिकारी और विराट नगर ।
गया ।

वांकीपुर से ८ मील दक्षिण पुनपुन गांव का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से १ मील उत्तर पुनपुन नदी बहती है जहां गया के यात्री बालू की एक वेदी बनाकर पिण्डदान करके गया जाते हैं ।

पुनपुन स्टेशन से ४९ मील और वांकीपुर जंक्शन से ५७ मील दक्षिण (२४ अंश ४८ कला ४४ विकला उत्तर अक्षांस और ८५ अंश ३ कला १६ विकला पूर्व देशांतर में) विहार प्रदेश के पटना विभाग में जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा गया नामक छोटा शहर है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय गया में जो साहवगंज के साथ एक म्युनिसिपलिटि बना है, ८०३८३ मनुष्य थे; अर्थात् ४०८९३ पुरुष और ३९४९० स्त्रियां । इनमें ६३०४६ हिन्दू, १७१४७ मुसलमान, १०५ कृस्तान और ८५ जैन थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३६ वां, बंगाल में ५ वां और विहार में दूसरा शहर है ।

गया २ हिस्सों में विभक्त है, अर्थात् साहवगंज और पुरानी गया । दोनों फाल्गु नदी के बाएँ अर्थात् पश्चिम किनारे पर हैं । साहवगंज में रेलवे स्टेशन, यूरोपियन और वेशी लोगों की कोठियां और स्टेशन से करीब १ मील दक्षिण-पूर्व सिविल कचहरियां हैं । साहवगंज तिजारती जगह है, वहां की सड़क चौड़ी और मकान दो मजिले तीन मजिले बने हैं । उसमें जेलखाना, अस्पताल, गिर्जा, पब्लिक लाइब्रेरी, तैरने का हम्माम, और घोडदौड़ की सड़क है । गया में काले और सफेद पत्थर के व्याले पथलौटी आदि वस्तु बहुत सुन्दर बनती हैं ।

रेलवे स्टेशन से १ १/२ मील पूर्वोत्तर पुरानी गया के उत्तर का फाटक और २ मील फाल्गू के बाएँ विष्णुपद का मन्दिर है । पुरानी गया का खास शहर, जिसमें गया बाली के मकान हैं, फाल्गू नदी के पश्चिम किनारे पर उत्तर से

दक्षिण ; मील लम्बा और पूर्व से पश्चिम ; मील चौड़ा है । उसके चारों दिशाओं में ४ फाटक हैं । मकान पुराने ढाचे के चौमंजिले पंच मंजिले तक बने हैं । उत्तर के फाटक से दक्षिण के फाटक तक गच की हुई एक सड़क है । ऊँची नीची भूमि पर शहर बसा है । जगह जगह पयरीली जमीन है । फलगू के किनारे पर ब्रह्मनी घाट, गायत्री घाट, वेकुआ घाट, सोमर घाट, जिहलोल, गद्धार घाट आदि हैं ।

पश्चिम फाटक से बाहर एक सड़क उत्तर से दक्षिण गई है जिसके पश्चिम बगल पर पश्चिम फाटक से कुछ दक्षिण रामसागर मढ़ल्ले में करीब १८५ गज लम्बा और इससे आधे से अधिक चौड़ा रामसागर नामक तालाब है । जिससे दक्षिण चान्दवौरा बाजार है ।

गया से पूर्व फलगू के दहिने किनारे पर नगकूट पहाड़ी; दक्षिण पश्चिम भस्मकूट (जिसको लोग सुरली पहाड़ी कहते हैं इसके शिर पर एक मन्दिर देख पड़ता है) और ब्रह्मयोनि की पहाड़ी; उत्तर साहवगंज के बाद रामशिला पहाड़ी और पश्चिमोत्तर भेतशिला पहाड़ी देख पड़ती है ।

गया श्राद्ध के लिये भारतवर्ष में प्रधान है । वहाँ प्रतिदिन श्राद्ध करने के लिये यात्री पहुँचते हैं, किन्तु आश्विन मास का कृष्णपक्ष गया श्राद्ध का सर्व प्रधान है । उस समय भारतवर्ष के प्रत्येक विभागों के लाखों यात्री गया में आते हैं । और धनी लोग गयावाल पंडों को बहुत दक्षिणा देते हैं । गया के पंडों में बड़े बड़े धनी हैं । आश्विन के बाद पौष और चैत्र के कृष्ण पक्ष में भी बहुत यात्री गया में पिंडदान करते हैं ।

श्राद्ध के स्थान और विधि—(१) पूर्णिमासी के दिन फलगू नदी में एक वेदी पर खीर का श्राद्ध, तर्पण और पंडा की चरण पूजा होती है । फलगू नदी गया के पूर्व बहती हुई दक्षिण से उत्तर को गई है । फलगू का विशेष माहात्म्य नगकूट और भस्मकूट से उत्तर और उत्तर-मानस से दक्षिण है । नगकूट से दक्षिण फलगू का नाम महाना है । गया से ३ मील दक्षिण नीलांजन नदी दहिने से आकर महाना नदी में मिली है । मगप से करीब १ मील

दक्षिण सरस्वती के मन्दिर तक इस नदी का नाम सरस्वती है । मधुश्रवा नामक एक छोटी नदी दक्षिण-पश्चिम से आकर गया के दक्षिण महाना (फलगू) नदी में मिली है, जिसकी धारा वरसात के बाद फलगू से अलग होकर गदा-धर के मन्दिर के नीचे बहती है । वर्षाकाल के अतिरिक्त दूसरी ऋतुओं में फलगू नदी में पानी नहीं रहता, परन्तु बालू खोदने पर साफ पानी मिल जाता है । नदी में पानी रहने पर भी लोग बालू हटा कर स्वच्छ पानी ले जाते हैं । विष्णुपद के पूरब फलगू के दहिने किनारे पर नगभूट पहाड़ी, बाएँ किनारे पर भस्मभूट पहाड़ी और विष्णुपद से लगभग १ मील उत्तर उत्तरमानस नामक सरोवर है ।

(२) कृष्ण प्रतिपदा के दिन ५ बेदी पर पिंडदान करना होता है,— रामशिला, रामकुंड, प्रेतशिला, ब्रह्मकुंड और कागबलि । रामशिला और रामकुंड—विष्णुपद के मन्दिर से करीब २ मील साहबगंज के पास ही उत्तर फलगू के पश्चिम किनारे पर रामशिला पहाड़ी है, जिसके पूर्व बगल के नीचे टीवार से घेरा हुआ ब्रह्मकुंड से बहुत बड़ा रामकुंड नामक तालाब है । यात्री गण प्रेतशिला से लौटने पर इसके किनारे एक बेदी का पिंडदान करते हैं और पीछे रामशिला के ऊपर पिंडदान होता है । तालाब के दक्षिण एक शिवमन्दिर और पश्चिम रामशिला के बगल पर २० सौड़ी के ऊपर टेकारी की रानी का बनवाया हुआ एक सुन्दर विशाल मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण, जानकी और हनुमान आदि देवता स्थित हैं । मन्दिर के दक्षिण एक धर्मशाला है । ३४० सौड़ी लांघने पर रामशिला के सिर पर आदमी पहुँचता है । उसके मध्य में पत्थर के ढोको से बना हुआ एक शिवमन्दिर है, जिसके जगमोहन में एक चरणचिन्ह बना है । मन्दिर के दक्षिण एक ओसारे और उत्तर एक मन्दिर में ३ पुरानी बौद्धमूर्तियाँ देखने में आती हैं, जिनमें से एक स्त्री और दो चतुर्भुज पुरुष हैं । लोग कहते हैं कि पहले रामशिला का नाम प्रेतशिला था, जब रामचन्द्र यहाँ आये, तबसे इसका नाम रामशिला हुआ है ।

मेतशिला और ब्रह्मकुण्ड—रामशिला से १४ मील पश्चिम मेतशिला एक पहाड़ी है। पत्थर के टुकड़ों की पक्की सड़क बनी है। सवारी के लिये एक और बग्गी और पहाड़ियों पर चढ़ने के लिये खटोली मिलती है। मेतशिला के पासही उत्तर २४ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा ब्रह्मकुण्ड नामक तालाब है। झरने का पानी कुण्ड में गिरता है। चारो बगलों पर पानी तक पक्की सीढ़ियां बनी हैं। कुण्ड के पास एक मन्दिर और दो तीन पंढे के ओसारे हैं, जिन के उत्तर झरने के पानी की बावली है, जिसका जल ब्रह्मकुण्ड में गिरता है। ब्रह्मकुण्ड में स्नान तर्पन करने के उपरांत वहां पिण्डदान करके मेतशिला पर जाना होता है। ब्रह्मकुण्ड से १६० सीढ़ियों के ऊपर चढ़ने पर यात्री मेतशिला के सिर पर पहुंचते हैं, जहां एक आंगन के तीन बगलों पर ओसारे और पूर्व बगल पर आगे की तरफ एक मंडप है। मंडप और पश्चिम के ओसारे में कई पुरानी बौद्ध मूर्तियां हैं। यहां पिण्डदान करना होता है। कहते कि पूर्व समय में मेतशिला का नाम मेत पर्वत था; जब रामचन्द्र के आने पर मेतशिला का नाम रामशिला हुआ। तब मेतपर्वत को मेतशिला लोग कहने लगे।

कागबलि—रामशिला से करीब २०० गज दक्षिण सड़क के पश्चिम बगल पर घेरी हुई जमीन के भीतर एक बट वृक्ष है। वहां एक वेदी के केवल तीन पिंड दिये जाते हैं। कागबलि, यमबलि और श्वानबलि। इस दिन मेतिया ब्राह्मण १) रुपया लेता है और यात्रियों को दूसरे दिनों से अधिक परिश्रम होता है।

(१) कृष्णपक्ष की द्वितीया को उत्तर मानस, ब्दीची, कनखल, दक्षिण मानस और जिहालोल इन ५ वेदियों पर पिण्डदान होता है। इनको पंचतीर्थ कहते हैं।

० उत्तर मानस—विष्णुपद से करीब १ मील उत्तर सिविल कचहरियों से २०० गज पूर्व उत्तर मानस नामक मश्ले में रामशिला वाली सड़क के पूर्व बगल पर करीब ५० गज लम्बा और इतनाही चौड़ा उत्तर मानस नाम का तालाब है। उसके चारो बगलों पर नीचे तक पक्की सीढ़ियां हैं। तालाब के

पूर्व और दक्षिण चहार दीवारी, पश्चिम धर्मशाला और उत्तर एक शिखरदार मन्दिर है, जिसमें उत्तरार्क नामक सूर्य और सीतला आदि देवी की मूर्तियाँ स्थित हैं। मन्दिर के आगे पूर्व लम्बा जगमोहन है, जिससे मन्दिर में अंधेरा रहता है। मन्दिर से उत्तर पीपल की जड़ के पास पितामहेश्वर महादेव का बहुत छोटा मन्दिर है। तालाब के पश्चिमोत्तर कोने के पास सबक के पश्चिम मौनेश्वर महादेव का मन्दिर है। इस में भी लम्बा जगमोहन होने के कारण अंधेरा रहता है। दक्षिण की दीवार में पार्वती जी; पश्चिम की दीवार में सूर्य नारायण और गणेश जी और लक्ष्मी जी की मूर्तियाँ प्रतिष्ठित हैं। लोग कहते हैं कि ब्रह्मा उत्तर मानस में श्राद्ध करके इसी स्थान से मौन व्रत धारण कर सूर्यकुंड तक गए, इसीलिये सम्पूर्ण यात्री उत्तर मानस में पिंडदान करने के पश्चात् मौन होकर सूर्यकुंड पर जाते हैं।

उदीची, कनखल और दक्षिण मानस विष्णुपद के मन्दिर से करीब १७५ गज उत्तर ९५ गज लम्बा और ६० गज चौड़ा दीवार से घेरा हुआ सूर्यकुंड तालाब है। चगलों पर पत्थर की पुरानी सीढ़ियाँ लगी हैं। कुंड के उत्तर का हिस्सा उदीची, मध्य हिस्सा कनखल, और दक्षिण हिस्सा दक्षिण मानस तीर्थ कहा जाता है। तीनों स्थानों पर तीन वेदी के २ पिंडदान होते हैं। सूर्यकुंड के पश्चिम गम्बजदार अन्धेरे मन्दिर में पुराने ढग की सूर्यनारायण की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है जिसको दक्षिणार्क कहते हैं। जगमोहन पुराने ढाचे का आगे की तरफ लम्बा है।

जिह्वालोल—सूर्यकुंड से करीब ८० गज दक्षिण फलगू के किनारे पर जिह्वालोल तीर्थ है, वहाँ मैदान में एक पीपल का वृक्ष और एक ओसारा है, जहाँ पिंडदान होता है।

गदाधरजी—विष्णुपद से ३० गज पूर्वोत्तर फलगू के किनारे पर पूर्व मुख का शिखरदार गदाधरजी का मन्दिर है। अन्धेरे में गदाधरजी की चतुर्भुज मूर्ति चबूतरे पर खड़ी है। मन्दिर के आगे तेहरा जगमोहन है। पूर्व वाले जगमोहन में करीब एक गज ऊँची दोनो भुजाओं को नीचे लटकाए हुए

एक मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग रामचन्द्र कहते हैं । इसके दहिने हाथ के नीचे एक पुरुष की और बाएँ हाथ के नीचे एक स्त्री की छोटी मूर्ति और उसके बाएँ दूसरी जगह तीन मुख वाली एक चतुर्भुज मूर्ति है । पंचतीर्थों के पिंडदान होजाने के पीछे पंचामृत से गदाधरजी को स्नान कराया जाता है । मन्दिर के पूर्व गदाधर घाट पर पत्थर की २९ सीढ़ियाँ बनी हैं गदाधरजी के मन्दिर से उत्तर दिखरदार मन्दिर में करीब २ हाथ ऊँची गयाश्री देवी की अष्टभुजी मूर्ति खड़ी है ।

(४) कृष्ण तृतीया के दिन तीन बेदी पर पिंड दान होता है,—मातंग वापी, धर्मारण्य और बोधगया गया । से ६ मील दक्षिण बोधगया तक पक्की सड़क है; परन्तु सरस्वती, मतंगवापी और धर्मारण्य होकर जाने वाले यात्रियों को ७ मील का रास्ता पड़ता है । गया से करीब ३ मील जाने पर पक्की सड़क छुट जाती है । वहाँ से पैदल अथवा खटौली पर एक मील से अधिक पूर्व दक्षिण जाने पर सरस्वती नदी मिलती है । फल्गू के दोनों तरफ चालू का मैदान है । सरस्वती नदी में स्नान और तर्पण होता है । किनारे पर लगभग ४ मज्जा ऊँचा सरस्वती का मन्दिर है । जिसमें यात्री सरस्वती का दर्शन करते हैं । मन्दिर के भीतर और बाहर कई बौद्धमूर्तियाँ देखने में आती हैं । मन्दिर के उत्तर एक चबूतरे पर एक जोड़ा चरण चिन्ह और १६ शिवलिंग हैं, जिन में से दो में चारों ओर एक एक मूर्तियाँ बनी हैं । ऐसे लिंग बोधगया के मन्दिर के पास बहुत देख पड़ते हैं । पहले सरस्वती के मन्दिर के चारों तरफ मकान थे, अब तक भी एक तरफ खड़ा है । .

मतंगवापी—सरस्वती से १ मील से अधिक दक्षिण मतंगवापी नाम की छोटी बावली है । कुछ दूर चौड़ी राह और कुछ दूर पगडंडी मिलती है । वापी के उत्तर पगल में सीढ़ियाँ और पश्चिमोत्तर दीवार के भीतर ४ मन्दिर खड़े हैं, जिनमें से दो मामूली कद के नए शिव मन्दिर और दो छोटे पुराने मन्दिर हैं । जिन में से एक में मतंगेश्वर शिवलिंग प्रतिष्ठित हैं । वहाँ कई बौद्धमूर्तियाँ देखने में आती हैं । वहाँ वापी के किनारे पर पिंडदान होता है ।

धर्मारण्य—मर्तंगवापी से १ मील पूर्व-दक्षिण धर्मारण्य स्थान की एक छोटी बारहदरी में गूप कूप नामक एक कूआ है, वहाँ पिंड दान करके पिंडाओं को इसी कूप में लोग डाल देते हैं। मेले के समय में पानी के ऊपर तक पिंड हो जाते हैं। बारहदरी के दक्षिण-पूर्व एक छोटा मन्दिर है, जिसके भीतर की मूर्ति को लोग धर्मराज अर्थात् युराघट्टिर कहते हैं। मन्दिर के दक्षिण 'रहट कूप' नामक कूआ है। कोई कोई पुत्र कामना के लिये वहाँ पिंडदान करता है, और नारियल फूल कूप में डाल कर पूजा करता है। कूप के दक्षिण छोटा मन्दिर है, जिसके भीतर की मूर्ति को लोम भीम कहते हैं। धर्मारण्य में कई बौद्ध मूर्ति देख पड़ती हैं। मर्तंगवापी से वहाँ तक पगडंडी राह है।

बोधगया—धर्मारण्य से १ मील से अधिक पश्चिम बोधगया का मसिद्ध मन्दिर है। फल्गू नदी लांघने के समय दोनों तरफ घाळू मिलती है। मन्दिर के उत्तर एक चवूतरे पर पीपल का पुराना वृक्ष है, जिसके पास पिंडदान होता है। मेतशिला की यात्रा के सिवाय दूसरे दिनों की यात्रा से इस दिन यात्री को अधिक परिश्रम होता है (बोधगया का वृत्तान्त अन्यत्र देखो)

(५) कृष्ण चतुर्थी के दिन दो वेदी पर पिंड दान होता है,—ब्रह्म सरोवर और काग बलि—गया के दक्षिण फाटक से लगभग ३५० गज और वैतरनी तालाब से ६५ गज दक्षिण सबक के पश्चिम किनारे पर १२५ गज लम्बा और ९ गज चौड़ा ब्रह्म सरोवर एक तालाब है। पूर्व और उत्तर बगलों पर सीढ़ियाँ बनी हैं। तालाब के जल में दक्षिण पश्चिम के कोने के पास पूर्व तरफ झुकी हुई पर्तयर की गद्दा खड़ी है। ब्रह्म सरोवर में स्नान तर्पन और पिंडदान करके उसकी परिक्रमा करनी होती है। तालाब के पश्चिमोत्तर कोने से २० गज उत्तर पट्ट वृक्ष के पास कागबलि, यमबलि और स्नानबलि तीन पिंड दिए जाते हैं। वृक्ष के चवूतरे के पूर्वोत्तर कोने के पास एक छोटी बारहदरी में एक चौकोना कुंड है, जिसमें तीनों पिंड डाल दिए जाते हैं। सरोवर के पश्चिमोत्तर कोने से ४८ गज पश्चिम एक छोटे मन्दिर के भीतर की दीवार में पत्थर खोदकर तारक ब्रह्म बनाये गये हैं, जिनका दर्शन करना होता है ब्रह्म

सरोवर से करीब १३० गज पश्चिम एक चतुस्रे के मध्य में एक ऊंची वेदी पर केले की छोटी झाड़ी के बीच एक गज से कम ऊंचा आम्र का वृक्ष है, जिसको योंही खोग पानी में सौंघते हैं। पुराना वृक्ष गिर गया है।

(६) कृष्ण पक्ष की पंचमी को तीन वेदी पर खीर का पिह दान होता है—सोलह वेदी वाले मंडप में रुद्रपद और ब्रह्मपद के पास और विष्णुपद के मन्दिर में विष्णुपद के निकट विष्णुपद के वर्तमान मन्दिर और सोलह वेदी के मंडप को इन्दौर की महारानी अहिल्या बाई ने बनवाया, जिसका राज्य सन १७६५ से सन १७९५ ई० तक था।

विष्णुपद का मन्दिर—गया शहर के दक्षिण पूर्व फल्गू नदी के पास गया के सब मन्दिरों में प्रधान और सर्वो से उत्तम विष्णुपद का विशाल मन्दिर पूर्व मुख से खड़ा है। मन्दिर काले पत्थर से बना हुआ भीतर से आठ पहला है। कलस, ध्वजा और ध्वजा के स्तंभ पर सोने का मुलूमा हुआ है। किवा-कों में चाम्दी के पत्तर लगे हैं। मन्दिर के मध्य में विष्णु का एक चरणचिन्ह शिला पर उखड़ा है। उसके दौरे के चारो तरफ चांदी का पत्तर लगा है। दीवार के ताकों में कई एक बेवर्तियां स्थित हैं। मन्दिर के आगे १८ गज लम्बा और १७ गज चौड़ा ४२ खूब खूब खम्भे लगे हुए काले पत्थर का बना हुआ गुंबजदार उत्तम जगमोहन है। बीच का हिस्सा छोड़कर इसके चारो बगल दो मंजिला हैं। गुम्बज के ऊपर सोनहुला कलस लगा है। नीचे बड़ा घंटा लटकता है। जगमोहन में मन्दिर के दोनों बगलों पर २ छोटी कोठरी हैं। दक्षिण वाली में मन्दिर का खजाना और उत्तर वाली में कनकेश्वर सिरलिंग स्थित हैं। शिव के आगे मार्बुल का नन्दी है। जगमोहन के आगे ४ स्तंभों से बना हुआ छोटे मंडप में बड़ा घंटा लटकता है, जिसके पास एक छोटी कोठरी में काले पत्थर से बनी हुई गरुड की मूर्ति है।

सोलह वेदी नामक मंडप—जगमोहन के पूर्व-दक्षिण के कोन के पास कोन के पूर्व और दक्षिण ३७ चौकोने स्तंभ लगे हुए काले पत्थर से बने हुये सोलह वेदियों का मंडप है। वेदियों के पास या उनके पास के खम्भे पर वेदि-यों के नाम लिखे हुए हैं।

१७, ८ और ९ कृष्णपक्ष की ६ से ८ तक तीन दिन में सोलह बेदी के मंडप में १४ स्थानों पर और उसके पास के छोटे मंडप में दो स्थानों पर कुल १६ बेदी के पिंडदान होते हैं (१) कात्तिक पद (२) दक्षिणाग्रि (३) गार्हपत्याग्रि (४) आषाढ्याग्रि (५) सततर्त्याग्रि (६) अवस्थ्याग्रि (७) सूर्यपद (८) रामचन्द्रपद (९) गणेशपद (१०) दधीचपद (११) कन्वपद (१२) मतंगपद (१३) क्रौंचपद (१४) इन्द्रपद (१५) अगस्त्यपद और (१६) कश्यपपद । अष्टमी के दिन सोलहबेदी के मंडप में एक स्थान पर बृध से गजकर्ण तर्पण होता है । नियंत दिन पर बहुत भीड़ होती है । बहुत लोग मंडप में किसी स्थान पर या उसके आस पास के मैदान और ओसारी में बेदियों के स्थान मान कर पिंडदान करते हैं ।

विष्णुपद के मन्दिर से ३ गज दक्षिण गया के पंडा विहारीलाल मेहरवार का बनवाया हुआ जगन्नाथ जी का मन्दिर है । मन्दिर के दक्षिण-पश्चिम और उत्तर दालान और धर्मशाला बनी हैं । वहां जगह जगह बहुत पुरानी बौद्ध मूर्तियां हैं, जिनको बहुत लोग हिन्दू के देवता जानते हैं । मन्दिर से उत्तर एक छोटे मन्दिर में नारायण के पाएं लक्ष्मी और दहिने अहिल्या घाई की मूर्तियां हैं । तीनों प्रतिमा मार्बुल की बनी हुई हैं ।

(१०) कृष्णपक्ष की ९ को २ बेदियों पर पिंडदान होता है,—रामगया में और सीताकुंड पर । पिछले स्थान पर माता, और वृद्ध ममाता को केवल तीनहों बालू के पिंड दिए जाते हैं । और वहां सोभाष्य दान की विधि है ।

सीताकुंड और रामगया—विष्णु पद के मन्दिर के सामने पूर्व फलगू नदी के दूसरे पार अर्थात् पूर्व किनारे को सीताकुण्ड कहते हैं । नगकूट पहाड़ की नेव के पास चार पांच सीढ़ी के ऊपर एक छोटे मन्दिर में जानकी जी, दशरथ जी को पिंडदान देती हैं । पिंडलेने के लिये दशरथ जी का हाथ निकला है । मन्दिर से पश्चिम इस से लगा हुआ एक दूसरा मन्दिर है, जिसमें राम, लक्ष्मण और जानकी की मूर्ति सुशोभित हैं । मन्दिर के दक्षिण नायकजी गयावाल का बनवाया हुआ शिव मन्दिर है । मन्दिर के ताक में सुकर भगवान

की मूर्ति स्थित है। सीता जी के मन्दिर से करीब २५ गज पूर्व एक छोटे मन्दिर में कोई देवता है, जिसके पूर्व के मन्दिर में मारुल की ३ मूर्ति हैं। मध्य में नृसिंह जी, उनके दहिने महावीर जी और बाएं सूर्य। इस मन्दिर से पूर्व राम, लक्ष्मण और जानकी हैं। इन मन्दिरों के सामने रास्ते के उत्तर एक आंगन के चारो तरफ कई छोटे मन्दिर और कमरे हैं। एक में काष्ठमय जगन्नाथ बलभद्र और सुभद्रा; दूसरे में मारुल के महावीर जी और तीसरे में धातु-विग्रह राम, लक्ष्मण, जानकी, राधा कृष्ण आदि हैं। राम मन्दिर के ईशान कोन पर रास्ते के सामने शिला में खोदा हुआ एक शिवलिंग है, जिसको रामनाथ महादेव कहते हैं। महादेव के पास फल्गू के जल के पास तक २४ सीढ़ी बनी हैं। सीढ़ियों के सिरे के पास करीब १२ गज लम्बा और ८ गज चौड़ा आंगन है, जिसके ३ बगलों पर दीवार और पश्चिम बगल ओसारा है ओसारे में राम जानकी की पुरानी मूर्तियों के आगे भूमि पर शिलो निकली हुई है, जो भरताश्रम की वेदी कही जाती है। उसी स्थान पर रामगया का पिंड दान होता है। आंगन में मग्न ऋषि का बड़ा चरण चिन्ह बनाया गया है। वहां भी बौद्ध मूर्तियों के समान बहुत मूर्तियां देख पड़ती हैं। पर्वत के सिर पर गयावाल के बनवाये हुए एक छोटे मन्दिर में छोटे स्तंभ के समान महावीर जी हैं।

(११) कृष्ण पक्ष की दशमी के दिन गयासिर में और गयाकूप के पास दो वेदी का पिंडदान होता है;—

गयासिर—विष्णु पद के मन्दिर से लगभग ५० गज दक्षिण गयासिर नामक स्थान है, वहां दक्षिण मुख के ओसारे के आगे थोड़ी भूमि है। ओसारे में एक छोटा चौकोना कुंड है, जिसमें बहुतरे लोग पिंडदान के पीछे पिंडों को डाल देते हैं। ओसारे के पश्चिम की दीवार में एक स्त्री और बाला लिये हुए एक पुरुष की मूर्ति बनी है।

गयाकूप—विष्णु पद के मन्दिर से करीब १०० गज दक्षिण पश्चिम और गयासिर से पश्चिम करीब १८ गज लम्बे और १० गज चौड़े एक आंगन में

गयाकूप है । आंगन के तीन दगलों पर दीवार और पश्चिम तरफ भोसारा है । कूप के पश्चिम पीपल का मोटा वृक्ष है । कोई कोई यात्री अकाल-मृत्यु से मरे हुए प्रेतों को एक नारियल पर आवाहन करके इस कूप में छोड़ देते हैं नारियल छोड़ने वाले को ११ रुपया वहां देना पड़ता है । यात्री लोग पिंडदान होने के पीछे पिंडों को गयाकूप के पाटन पर डाल देते हैं ।

(१२) कृष्ण पक्ष की ११ को ३ वेदियों पर पिंडदान होता है—मुंडपृष्ठा, आदिगया और धौतपद । उस दिन खोबे या गुड़ तिल अथवा सिंगशङ्ख के आटे आदि फलाहारी वस्तुओं के पिंड बनाए जाते हैं । कोई कोई आटे का भी पिंडदान करता है ।

मुंडपृष्ठा—गयाकूप से करीब ५० गज पश्चिम ऊंची भूमि पर एक आंगन में पूर्व मुख की छोटी कोठरी है । उसमें १२ भुजावाली मुंडपृष्ठा देवी की मूर्ति स्थित है । मन्दिर के पास चारों तरफ आंगन में पिंडदान होता है ।

आदिगया—मुंडपृष्ठा से दक्षिण-पश्चिम आदिगया है । वहां शिलापर पिंडदान होता है । उससे पश्चिम एक आंगन है, जिससे पश्चिम ५ सीढ़ी नीचे उतरने पर दूसरा आंगन मिलता है । उससे पश्चिम ३ सीढ़ी नीचे उतरने पर एक छोटी कोठरी में प्रवेश करना होता है, जिसमें शिला काटकर ५ बेटौल मूर्ति बनी हैं, जिनमें आदि गदाधर प्रधान हैं ।

धौतपद—आदिगया से दक्षिण पश्चिम और गया के दक्षिण फाटक से दक्षिण पूर्व एक ओसारे में करीब ३ १/२ हाथ लम्बी और एक हाथ चौड़ी उजली शिला भूमि पर निकली हुई है, वही पिंडदान की देवी है । भीड़ होने पर इसके आस पास लोग पिंडदान करते हैं ।

(१३) कृष्णपक्ष की १२ के दिन ३ वेदियों पर पिंडदान होता है,—भीम-गया, गोप्रचार और गदालोल ।

भीमगया—वैतरनी के पश्चिमोत्तर के कोने से करीब ८० गज पश्चिम भीमगया है । वहां एक घेरे के भीतर भी शिला पर पिंडदान करना होता है । घेरे में दक्षिण मुख के ओसारे में ३ हाथ गहड़ा भीम के अंगूठे का चिन्ह है ।

दक्षिण तरफ की कोठरी में भीमसेन की मूर्ति है । भीमगया से लगभग ११५ गज पश्चिम-दक्षिण यस्मकूट नामक ऊँची भूमि पर करीब ४६ सीढ़ियों के ऊपर पुराने ढाँचे के जनार्दन भगवान का गिखरदार मन्दिर है, जिसके आगे पूर्व तरफ प्रकृति द्वार वाला जगमोहन बना है । जगमोहन के भीतर ऊँचे १६ स्तंभ लगे हैं । मन्दिर के भीतर भगवान की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है उसके दोनों हाथों के नीचे एक एक छोटी मूर्ति हैं । जगमोहन के आगे करीब २ गज ऊँचे ३ शिवमन्दिर बने हुए हैं । जनार्दन के मन्दिर से थोड़ी दूर दक्षिण-पश्चिम पुराने ढाँचे का मंगला देवी का छोटा मन्दिर है, जिसमें मंगलेश्वर शिवलिंग और एकही में ५ लिंगस्वरूप मंगला देवी हैं । वहाँ कई बौद्ध मूर्तियाँ बेखने में आती हैं और ओसारानुमा एक धर्मशाला बनी है ।

गोमचार—मंगला देवी के मन्दिर से दक्षिण नीचे की ओर २२ सीढ़ियाँ गई हैं, उसके दहिने बगल पर गोमचार स्थान है । वहाँ एक आंगन के ३ तरफ दीवार और उत्तर ओर दालान के आगे ओसारा है, जिसमें भूमि पर शिला निकली हुई है । शिला पर गौओं के छोटे बड़े खुरों के बहुत चिन्ह हैं । लोग कहते हैं कि इस स्थान पर ब्रह्मा ने गोदान किया था, इस शिला पर और इसके आस पास पिंडदान होता है ।

गदालोल—अक्षयघट से दक्षिण गदालोल नामक कच्चा तालाब है, जिसमें सब जगह पानी नहीं रहता । इसके उत्तर किनारे पर ओसारानुमा दो छोटी धर्मशाला हैं । दक्षिण पश्चिम हिस्से के जल में छोटे पतले त्वंभे के समान गदा खड़ी है । यात्री लोग धर्मशालों में पिंडदान करके गदा का दर्शन करते हैं ।

(१४) कृष्ण पक्ष की १३ को फल्गू में स्नान करके बूध का तर्पण और सन्ध्या समय ४५ वेदियों के ४५ दीपदान फल्गू के किनारे या कुछ किनारे पर और कुछ विष्णुपद आदि प्रख्यात मन्दिरों के पास लोग करते हैं ।

(१५) कृष्ण पक्ष की १४ को चैतरनी में तर्पण होता है । वहाँ गोदान की विधि है । गया के दक्षिण फाटक से १३० गज दक्षिण और ब्रह्म सरोवर से ६५ गज उत्तर सड़क के पश्चिम किनारे पर १३० गज लम्बा और इससे आधा

चौथा बैतरनी नामक तालाब है । पश्चिम और पूर्व बगलों पर जगह-जगह सोढियां बनी हैं ।

(१६ वें दिन) अमावास्या के दिन अक्षयवट के पास पिंडदान होता है और पंडे लोग अपने अपने यज्ञियों को सुफल देते हैं । यहां शय्यादान की विधि है ।

अक्षयवट—ब्रह्म सरोवर से करीब २५० गज पश्चिम मंगला वेदी से २०० गज दक्षिण पश्चिम और गदालोल से उत्तर सड़क के उत्तर बगल पर अक्षयवट नामक घटवृक्ष है । १८ सोढियों को लांघने पर ३० गज लम्बे और २८ गज चौड़े पत्थर के फरस पर अक्षयवट मिलता है जिसके उत्तर पुरानी चाल का पूर्व मुख बटेश्वर शिव का मन्दिर है । उसके आगे की दीवार में नागरी अक्षर का पुराना लेख है । अक्षयवट के पूर्वोत्तर एक दूसरा घटवृक्ष है । फरस के पश्चिमोत्तर कोने के पास दक्षिण मुख की एक खूबसूरत दालान और पूर्व बगल पर एक आंगन के चारों ओर दालान हैं, जिनकी छत फर्श के बराबर है । पूर्व की छत पर एक बैठक और उत्तर वाली पर खूबसूरत दालान बनी है । फर्श से पश्चिम उससे लगा हुआ ३० गज लम्बा और १६ गज चौड़ा दो हिस्से में दूसरा फरस है । उनमें से उत्तर वाले हिस्से के उत्तर तरफ अक्षयवट वाले फरस की दालान से लगी हुई उसी के समान सुन्दर दालान और दक्षिण पश्चिम कोने के पास एक छोटी बैठक है । अक्षयवट से पश्चिम रुक्मिणी तालाब और उत्तर वृद्धप्रपितामहेश्वर का मन्दिर है । मन्दिर पुरानी चाल का है । शिवलिंग अर्ध के साथ करीब १ गज ऊंचा है । लिंग के पूर्व बगल पर एक मुख बना हुआ है ।

गया के पिंडदान की विधि—पूर्णिमा से अमावास्या तक १६ दिनों में ४५ वेदियों के पिंडदान समाप्त हो जाते हैं, जो सीताकुंड की नवीन वेदी के साथ ४६ वीं होती है । नियत दिनों के सिवाय दूसरे दिन भी यात्री वेदियों पर पिंडदान करते हैं । बहुतेरे लोग दो ही चार दिनों में सम्पूर्ण वेदियों पर पिंडदान कर देते हैं । कुछ लोग मुख्य मुख्य वेदियों पर पिंडदान करके

चढ़े जाते हैं । आश्विन आदि भाद्र के मुख्य महीनों में प्रतिदिन बहुतेरे यात्री आते हैं । कृष्ण पक्ष की पंचमी से बहुतेरे लोग छुफ़ल करके जाने पड़ते हैं । प्रत्येक वेदी पर १ पिना, २ पिनामह, ३ प्रपितामह, ४ माता, ५ प्रमाता, ६ वृद्धप्रमाता, ७ मातामह, ८ प्रमातामह, ९ वृद्धप्रमातामह, १० मायामही, ११ प्रमातामही और १२ वृद्धप्रमातामही के नाम से १२ पिंड दिए जाते हैं । जिसका नाम नहीं मालूम रहता, उसके लिये ' यथा नाम ' कहना होता है । उसके पीछे पिता कुल, माता-कुल, श्वशुर-कुल, गुरु कुल, आदि लोगों को और नोरु को भी पिंड दिए जाते हैं ।

(१७ वें दिन) शुक्ल पक्ष की प्रतिपदा के दिन गायत्री घाट पर ठीक अक्षत का पिंडदान होकर गयाश्राद्ध का काम समाप्त होता है । विष्णुपद के मन्दिर से करीब १ मील उत्तर फल्गू नदी में गायत्री घाट है । नीचे से ऊपर तक उसमें ६८ सीढ़ी लगी हैं । ११ सीढ़ियों के ऊपर गायत्री देवी का छोटा मन्दिर है । मन्दिर के आगे स्त्री दीवार पर लेख है, जिससे जान पड़ता है कि सम्मत १८५६ के भादों सुदी १५ को दौलनराय माधव जी सेनिय्या के पोते सेठ खुशहालचन्द्र की स्त्री गया में श्राद्ध करने को आईं, तब उसने गायत्री घाट और इस मन्दिर को बनवाया । गायत्री के मन्दिर से उत्तर एक गया-वाल का बनवाया हुआ उससे उत्तर एक छोटे हाते में लक्ष्मी-नारायण का मन्दिर और गायत्री घाट से उत्तर वभनी घाट पर फल्गेश्वर शिव का मन्दिर है । दक्षिण तरफ एक दूसरे मन्दिर में सूर्य नारायण की चतुर्भुज मूर्ति खड़ी है, जिसको लोग गयादित्य करते हैं ।

सकटा देवी और प्रपितामहेश्वर—विष्णुपद के मन्दिर से करीब ३३० गज दक्षिण लखन पुरा में पूर्व मुख के ओसारे के पीछे २ कोठरी हैं । दक्षिण की कोठरी में भैरव और सिंह के सहित सकटा देवी की चतुर्भुज मूर्ति और उत्तर वाली कोठरी में प्रपितामहेश्वर शिवलिंग हैं । देवी के पास बहुतेरी योद्ध मूर्तियाँ के समान पुरानी मूर्तियाँ और शिवलिंग के पास बहुतेरे नए शिवलिंग हैं ।

• अनेक देवमन्दिर—गया से पश्चिम गृद्धकूट पहाड़ी के पश्चिम छोटे मन्दिरों में गृद्धेश्वर महादेव, ऋणमोचन महादेव और पापमोचन महादेव हैं। पापमोचन से दक्षिण गोदायरी नामक छोटा तालाब है, जिसके उत्तर छोटे मन्दिर में गणेशजी की मूर्ति स्थित है।

ब्रह्मयोनि—अक्षयवट से ३०० गज पश्चिम दक्षिण जाने पर सड़क छुटकर पगढंडी मिलती है, जिससे ३ मील पश्चिम-दक्षिण जाने पर पहाड़ी पर चढ़ने के लिये सीढ़ी मिलती है। उससे उत्तर पहाड़ी की जड़ के पास छोटे मन्दिर में गौपर सवार पंचमुख वाली सावित्री देवी की मूर्ति है। मन्दिर के आगे सावित्रीकुण्ड नामक छोटा पोखरा है। १६३ सीढ़ी लांघने पर खुला हुआ कमरा मिलता है। ३६० सीढ़ियों के ऊपर एक ढोके के नीचे रुद्रयोनि; ५०० सीढ़ियों के ऊपर विष्णुकुण्ड नामक बावली, जिसमें जाने को पतली सीढ़ियाँ हैं और ४५० सीढ़ियों के ऊपर एक चौक है। चौक के मध्य में ऊँचे चबूतरों पर एक शिवलिंग और पश्चिम पत्थर के ढोकों के नीचे ब्रह्मयोनि है, जिससे होकर कोई कोई यात्री निकलते हैं। गवालियर के महाराज जयाजी राव ने इन सीढ़ियों को बनवाया, जिनके ऊपर गव का काम है। चौक से ११ सीढ़ियों के ऊपर दोहरा ओसारा मिलता है, जिसके पीछे के मन्दिर के ताकों में ४ पुरानी बौद्ध मूर्तियाँ हैं। एक के आगे गौ पर सवार पंचमुखी सावित्री की मूर्ति है। ओसारे में २ चरण चिन्ह हैं, जिनके पास महाराज जयाजी राव का नाम खोशा हुआ है वहाँ मेले के समय कोई पुजारी स्त्री या पुरुष रहता है। यात्री बहुत कम जाते हैं।

गया जिला—गया जिले का क्षेत्रफल ४७१२ वर्गमील है। इसके उत्तर पटना जिला; पूर्व मुंगेर जिला; दक्खिन और दक्षिण पूब लोहरदंगा जिला और पश्चिम सोन नदी, बाढ़ शाहाबाद जिला है। गया की दक्षिणी सीमा की पहाड़ियाँ विन्ध्य का एक भाग हैं उनमें जंगल लगे हैं और घने जंगल रहते हैं। बेश साधारण प्रकार से समतल है; किन्तु स्थान २ में पहाड़ियाँ बेल पड़ती हैं। ऊँची पहाड़ियाँ जंगल और घास से छिपी हुई हैं और दूसरी पथ-

रीढ़ी और पौर्वा से रहित हैं । सब से अधिक ऊँची गया कसबे से १२ मील दक्षिण पूर्व माहर पहाड़ी है । उसकी चंचाई समुद्र के जल से १६२० फीट है । गवा जिले का पूर्वी भाग अधिक उपजाऊँ और उत्तर-पश्चिम का कम उपजाऊँ है । शेष भाग में पहाड़ी और जंगल, जिसमें बहुत जंगली जानवर हैं, बेखने में आते हैं । दक्षिणी पहाड़ियों में बाघ और बहुतरे भागों में तेंदुए और भालू रहते हैं । बहुतरे नदियाँ दक्षिण की पहाड़ियों से निकल कर जिले में दक्षिण से उत्तर बहती हैं । पुनपुन नदी जिले के दक्षिणी सीमा से निकलकर पूर्वोत्तर गंगा की ओर बहती है । दो पहाड़ी धाराओं के मेल से फल्गू नदी बनी है । खली ऋतुओं में फल्गू नदी खल जाती है । जिले में कई एक नहर निकली हैं । जिले में सन १८९१ ई० की मनुष्य गणना के समय २१४१०६५ और सन् १८८१ में २१२४६८२ मनुष्य थे; अर्थात् १८९१४८४ हिन्दू, २१३१४१ मुसलमान और २००५७ कृस्तान इत्यादि । जातिओं के खाने में ३०९८७१ ग्वाला, १५२६४६ भुमिहार, ११४४०२ राजपूत, १०८२४९ दुसाध, १४४६७५ कोइरी, ११६९६१ कंहार, ८९७५० ब्राह्मण, ८३४६९ भुइआ ७८५५२ घमार, ५७३७९ तेली, ४९३०४ वनिआ, ४३९६५ कायस्थ, ४३७७१ कुर्मी, ४३७७३ रजवाड और शेष में पासी, हजाम, चढई, इत्यादि थे । जिले में लगभग ३०० घर गयावाल ब्राह्मण हैं । सन् १८९१ ई० में गया जिले के कसबे गया में ८०३८३, टिकारी में ११५३२, और दाउदनगर, सेरघाटी, जहानाबाद और हसुआ में १०००० से कम मनुष्य थे ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अग्निस्मृति—(५५ से ५८ वें श्लोक तक) बहुत पुत्रों में से एक भी यदि गया को जाय अथवा नीले बैल से दृपोत्सर्ग करे तो उसको अश्वमेध यज्ञ का फल होता है । नरकों से डरते हुए पितर यह इच्छा करते हैं कि जो पुत्र गया को जायगा वह हमारा रक्षक होगा । मनुष्य फल्गु तीर्थ में स्नान और गदाधर देव के दर्शन करके और गयाक्षर के सिर पर चरण रख कर ब्रह्मइत्या से भी छूट जाता है । जो मनुष्य महा नदी में स्नान करके पितर और देवताओं का तर्पण करता है वह अक्षय लोकों को प्राप्त

होता है और अपने कुल का उद्धार करता है । (३५६ से ३६० श्लोक)
श्राद्ध के समय बड़े यज्ञ से ब्राह्मण की परीक्षा करनी उचित है । कन्या राशि
पर जन्म सूर्य आते हैं तब पितर अपने उत्तम पुत्र के समीप गमन करते हैं
फिर वृश्चिक की संक्रांति होने पर जन्म पिंड नहीं पाते हैं, तब निरास हो
शाप देकर अपने भजन को चले जाते हैं ।

कात्यायन स्मृति—(२९ वां खंड) कोई २ विद्वान पिंडदान को ही
प्रधान कहते हैं, क्योंकि गया आदि तीर्थों में पिंड ही दिया जाता है इत्यादि ।

वृहस्पति स्मृति—(२० वां श्लोक) नरक के भय से डरते हुए पितर यह
कहते हैं कि जो पुत्र गया में जायगा वही हमारी रक्षा करने वाला होगा ।

शंखस्मृति—(१४ वां अध्याय) गया में जाकर जो कुछ पितरों के
निमित्त दिया जाता है, उसका फल अक्षय होता है । गया के तीर का दान
अनन्त फल देता है

लिखितस्मृति—(१० वें से १३ वें श्लोक तक) जो पुत्र गया को जाय
वा अश्वमेध यज्ञ करे अथवा नील वैल का उत्सर्ग करे वही सुपुत्र है गया में
जिसके नाम से पिंड दान किया जाता है वह यदि नरक में हो तो स्वर्ग में जाता
है और स्वर्ग में होय तो मुक्त होता है ।

याज्ञवल्क्य स्मृति (श्राद्ध प्रकर्ण) गया तीर्थ में और भादो वदी त्रयो-
दशी विशेष करके मघायुक्त त्रयोदशी में पिंड देने से निस्संदेह अनन्त काल
पितरों की तृप्ति रहती है । बसु, रुद्र, अदितिस्त और पितर ये श्राद्ध के
देवता हैं, ये श्राद्ध से तृप्त होकर मनुष्यों के पितरों को तृप्त करते हैं, जब
पितर तृप्त होते हैं तो मनुष्यों को आयु, पुत्र, धन, विद्या, स्वर्ग, मोक्षसुख
और राज्य देते हैं ।

महाभारत—(वनपर्व—८४ वां अध्याय) गया में जाने से अश्वमेध का
फल और कुल का उद्धार होता है । वहां तीन लोक विख्यात अक्षयवट है ।
(८७ वां अध्याय) चाहे अश्वमेध करे, चाहे काले रंग का सांड छोड़े, चाहे
गया को जाय, तीनों कर्मों का यही फल है कि १० अगली और १० पिछली

पीड़ियों का उद्धार हो जाता है । गया में महानदी और गयगिर नामक तीर्थ हैं । उसी जगह ब्राह्मण लोग अक्षयवट पतलाते हैं और उसी जगह पवित्र जल वाली फल्गू नामक मछनदी है ।

(१६ वां अध्याय) पाण्डव लोग गया में पहुँचे, जहाँ धर्मज्ञ राजा गय ने पर्यंत का संस्कार किया है । उसी जगह उसने अपने नाम से गयगिर नामक तीर्थ स्थापन किया है । उसी जगह उत्तम घाटवाली फल्गू नामक महानदी है । जहाँ पवित्र शिखर वाला दिव्य पर्यंत है, उसी जगह ब्रह्मसर नामक उत्तम तीर्थ है, जहाँ से अगस्त्य मुनि सूर्य के पास गए थे । उसके पास ही सब नदियों का एक सोता है । वहाँ महादेव सदा वास करते हैं और अक्षयवट वृक्ष है, जिसका फल अक्षय होता है । वहाँ यज्ञ करने से अत्रय पुण्य लाभ होता है । उसी तीर्थ में राजा अमूर्त्तरयस के पुत्र राजा गय ने तालाब के तट पर बड़े बड़े अनेक यज्ञ किये हैं । (द्रोण पर्व ६४ वां अध्याय) यज्ञ कर्म के प्रभाव से राजा गय जगत में विख्यात हुए थे । उनका कीर्तिस्वरूप अक्षयवट और ब्रह्मसरोवर तीनों लोक में विख्यात होकर जगत में स्थित है । (शल्य पर्व- ३८ वां अध्याय) जब राजा गय गया नामक स्थान में यज्ञ कर रहे थे और अनेक व्रतधारी ब्राह्मणों ने सरस्वती का ध्यान किया तब विशाला नामक सरस्वती गया में पहुँची । वह शीघ्र बहने वाली नदी हिमाचल के शिखर से चली थी ।

(अनुशासन पर्व-२५ वां अध्याय) गया के अन्तर्गत अभ्मपट्ट में स्नान करने से पहली ब्रह्महत्या, निरविन्द पर्वत पर दूसरी ब्रह्महत्या और कौचपदी में स्नान करने से तीसरी ब्रह्महत्या छूट जाती है । (८८ वां अध्याय) बहुत पुत्रों के लिये कामना करनी योग्य है क्योंकि उनमें से एक पुत्र भी तो गया धाम में जायगा जहाँ परलोकविख्यात अक्षयवट है ।

" वाल्मीकि रामायण—(अयोध्याकांड-१०७ वां सर्ग) गय नामक एक यज्ञस्थी पुरुष ने जो गया प्रदेश में यज्ञ करता था, पितर लोगों के पास यह वाक्य कहा कि पुत्रों में से कोई एक भी यदि गया को जायगा तो पितरों का उद्धार होगा ।

लिंगपुराण—(६५ वां अध्याय) सूर्य के पुत्र मनु का सुद्युम्न नामक पुत्र था, जो स्त्री रहने के समय इला कहलाता था । सुद्युम्न के ३ पुत्र हुए,—उत्कल, गय और विनताश्व । उनमें से गय के नाम से गया बसा ।

वामनपुराण—(७६ वां अध्याय) जहां गय राजा ने १०० बार अभ्युषेध यज्ञ और सैकड़ों हजारों बार मनुष्यमेध यज्ञ किया है और मुरारि भगवान गदाधर नाम से प्रसिद्ध हो रहे हैं वही गया तीर्थ है । (९० वां अध्याय) वामन जी बोले कि गया में गोपतिदेव, ईश्वर, त्रैलोक्यनाथ, परद और गदापाणि मेरा रूप है ।

वारहपुराण—(१८३ वां अध्याय) पितर कहने लगे कि गया श्राद्ध कर अक्षयवट के नीचे पिण्डदान करो ।

मत्स्यपुराण—(२२ वां अध्याय) गया नाम से प्रसिद्ध पितृतीर्थ सप्त तीर्थों में उत्तम है ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड-७६ वां अध्याय) जो मनुष्य गया के विष्णुपद में पिण्डदान और विष्णु की पूजा करता है, वह पितृगण और अपने को चढ़ाकर बेटा है ।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड-११ वां अध्याय) गया में विष्णुपद नामक पितरों का सर्वोपरि तीर्थ है, जहां आश्विन मास के कृष्ण पक्ष में पिण्ड या जलदान करने से प्रेतयोनि में प्राप्त भी पिता पितामहादि तुरन्त ब्रह्मलोक को चले जाते हैं । पुनःपुनः नदी के तीर पर गया तीर्थ है । श्राद्ध के विषय में गया के समान कोई भी तीर्थ नहीं है । (स्वर्ग खण्ड-२० वां अध्याय) आपाढ़ी पूर्णिमासी के पीछे जो पांचवां पक्ष होता है (आश्विन का कृष्ण पक्ष) उसमें श्राद्ध करे, चाहे कन्या के सुख्य हों अथवा न हों । कन्या के सुख्य होने पर जो प्रथम के १६ दिन होते हैं वे श्रेष्ठ यज्ञों के समान हैं । महापुण्य काम्य श्राद्ध करने का कन्या के सुख्य होने में मुख्य काल होता है । यदि किसी प्रकार से कन्या के सुख्य में श्राद्ध न कर सके तो तुला के सुख्य में कृष्ण पक्ष के १६ दिन में करे, क्योंकि जब कन्या तुला दोनों राशियों के सुख्यों में कृष्ण पक्ष के १६

दिनों में श्राद्ध नदी हो तो अधिक के सूर्य हो जाने से पितर निराश होकर चले जाते हैं ।

• देवीभागवत (९ पां सूक्त ४४ वां अध्याय) सृष्टि के आदि में ब्रह्माजी ने ७ पितृगणों को उत्पन्न करके श्राद्ध तर्पण उनका आहार बना दिया ।

• सौरपुराण—(३७ वां अध्याय) परमगुप्त गया तीर्थ में भगवान् महादेव के चरण चिन्ह प्रतिष्ठित हैं । वहां पिंडदान करने से पितरों की अक्षय वृत्ति होती है । मनुष्य महानदी में स्नान करके रुद्रपद के स्पर्श करने से अपने पितरों के सहित पिथलोक में निवास करते हैं ।

• कूर्मपुराण—(ऊपरी भाग ३४ वां अध्याय) परम गुप्त गया तीर्थ में श्रद्धादि कर्म करने से पितर लोगों का पृथ्वी में पुनरागमन नहीं होता है । गंगा में ब्रह्माजी ने जगत के हित के लिये तीर्थशिला पर चरणांकित किया है । पितरगण लड़कों के उत्पन्न होने पर प्रसन्न होकर कहते हैं कि हमारे वंश में हम सब को सारन करने वाले ने जन्म लिया यह किसी समय में गया जाकर हम लोगों को परम पद देगा । कोई पुत्र गया में जाकर पिंडदानादि कर्म करे तो पितरगणों का स्वर्गनास होता है ।

अग्निपुराण—(११५ वां अध्याय) पूर्वकाल में देवगण गयासुर की तपस्या से त्रसित होकर विष्णु भगवान् की शरण में गए और उनसे बोले कि हे प्रभो तुम हम लोगो को गयासुर से रक्षा करो । विष्णु ने वैद्य के पास जाकर उससे कहा कि वरदान मागो । गयासुर बोला कि हे भगवान् मैं सम्पूर्ण तीर्थों से पवित्र हो जाऊँ । यह वरदान देकर जब विष्णु चले गए तब स्वर्ग और भूमि में सम्पूर्ण देवता और ब्राह्मण वैद्य के अधिक तेज होने से निस्तेज हो गए । देवताओं ने विष्णु से निवेदन किया कि हे प्रभो सम्पूर्ण देवता ब्राह्मण और तीर्थ शून्य प्राय हो गए हैं तुम इसका उचित उपाय करो । ब्रह्मा ने विष्णु के आदेशानुसार देवताओं के साथ गयासुर के पास जाकर उससे कहा कि मैं अतिपि हूँ तुम यह करने के लिये अपना पवित्र शरीर मुझको दे दो । ऐसा सुन असुर भूमि पर छेड़ गया और बोला कि हे भगवान्, आप हमारे शरीर से

यज्ञ-कीजिये । ब्रह्मा ने असुर के सिर पर यज्ञ किया; किन्तु पूर्णावृत्ति देने के समय यह चलायमान हो गया । तब विष्णु की आज्ञानुसार धर्मराज ने देवमयी शिला को गयासुर के ऊपर रखवा और शिला के, ऊपर विष्णु की गदाधर मूर्ति को स्थापित की और सम्पूर्ण देवताओं के सहित आप भी उस पर निवास करने लगे ।

धर्मणी शिला धर्मराज की पुत्री थी, उसका विवाह ब्रह्मा के पुत्र मरीचि से हुआ । मरीचि ने उससे रमण करने के उपरांत श्रमांतुर होकर उसमें कहा कि मैं शयन करता हूँ तुम मेरा चरण दयाओ । मुनि के शयन करने पर शिला उनके चरण दवाने लगी । उसी समय ब्रह्माजी वहां आगये शिला विचार करने लगी कि ब्रह्मा का पूजन करूं कि स्वामी का चरण दयाऊँ ? अंत में वह ब्रह्माजी को अपने स्वामी का पिता जानकर चरण दवाना छोड़ पुष्पादिक से ब्रह्मा का पूजन करने लगी । मरीचि ने अपने स्त्री को ब्रह्मा की पूजा में निरत देख कर उसको शाप दिया कि तुम शिला अर्थात् पत्थर हो जाओ । शिला ने कहा मैंने तुम्हारी सेवा छोड़ कर तुम्हारे पिता की सेवा की है, तुमने मुझ निरपराधिनी को श्राप दिया है इसलिये तुमको भी शिवजी श्राप देंगे । इसके पश्चात् शिला ने सहस्र वर्ष पर्यन्त तपस्या की । विष्णु आदि देवता वरदान देने के लिये उसके पास आए शिला ने ऐसा वरदान मांगा कि मेरा श्राप निवृत्त हो जावे । देवताओं ने कहा कि मरीचि का श्राप व्यर्थ नहीं होगा; किन्तु सम्पूर्ण देवताओं के चरणों का चिन्ह तुम्हारे ऊपर रहेगा । शिला बोली कि तुम लोग सर्वदा हमारे ऊपर निवास करो । विष्णु आदि देवता उसको वरदान देकर स्वर्ग को चले गए । वही शिला गयासुर के ऊपर रखी गई । उस पर भी जब असुर चलायमान होने लगा, तब देवताओं ने विष्णु का आराधन किया । विष्णु ने जब अपनी गदाधर मूर्ति को शिला पर स्थापित किया, तब असुर स्थिर हो गया । पूर्व समय में विष्णु ने गद नामक एक असुर को मारा; विश्वकर्मा ने उसकी अस्थि से एक गदा बनाई और विष्णु ने उस गदा को स्वीकार किया इस कारण उनका नाम गदाधर पड़ा । वही मूर्ति

गदाधरी कहलाती है । असुर के स्थिर होने पर ब्रह्मा ने अपना यज्ञ समाप्त किया और ब्राह्मणों को बहुत दक्षिणा दी । देवताओं ने गयासुर को धरदान दिया कि तुम्हारा शरीर विष्णुतीर्थ, शिवतीर्थ और ब्रह्मातीर्थ होगा और वह सम्पूर्ण तीर्थों से प्रसिद्ध और पितरगणों को भोजन देने वाला होगा । ऐसा कह देवतागण उसी स्थान पर स्थित हो गए ।

गया में संक्रांति के दिन श्राद्ध कर्म करने का महाफल है । मनुष्य प्रतिपदा में श्राद्ध करने से धनी होता है; द्वितीया में करने से रूपवती भार्या मिलती है; चतुर्थी में करने से धर्म और वांछित फल लाभ होता है; पंचमी में श्राद्ध करने से पुत्र प्राप्त होता है; षष्ठी का श्राद्ध श्रेष्ठ है; सप्तमी में श्राद्ध करने से पुत्रस्थ की लाभ होता है; अष्टमी में श्राद्ध करने से मर्त्य लाभ होता है; नवमी में श्राद्ध करने से एक खुर वाले पशुओं के व्यापार में लाभ होता है; दशमी में श्राद्ध करने से गौ गणों की वृद्धि होती है; एकादशी में श्राद्ध करने से कुटुम्बगणों का कल्याण होता है; द्वादशी में श्राद्ध करने से धन धान्य की वृद्धि होती है; त्रयोदशी और चतुर्दशी में श्राद्ध करने से शत जन आनन्दित होते हैं; और आमावास्या में श्राद्ध करने से सम्पूर्ण मनोरथ प्राप्त होता है । युगादि तिथि में अर्थात् माघ की पूर्णिमा, भाद्र कृष्ण त्रयोदशी, वैशाख शुक्ल तृतीया और कार्तिक शुक्ल नवमी; कार्तिक की द्वादशी, माघ और भाद्र पद की तृतीया, फाल्गुण की आमावास्या, चैत्र की एकादशी, आपाद की द्वादशी, माघ की सप्तमी, श्रावण के कृष्ण पक्ष की अष्टमी, आपाद, कार्तिक, फाल्गुण और जेष्ठ की पूर्णिमा को श्राद्ध करने से अक्षय फल प्राप्त होता है ।

गरुडपुराण—(पूर्व खंड ८२ वां अध्याय) पूर्व काल में सम्पूर्ण प्राणियों को लक्ष देने वाला गया नाम के असुर ने उग्र तपस्या की । उसके तप से पीड़ित होकर देवता लोग विष्णु की शरण में गये । उसके उपरांत किसी दिन गयासुर ने शिव की पूजा के निमित्त समुद्र से कमल का पुष्प लाकर कीकट वेश में शयन किया । विष्णु ने गदा से उसको मारा । इस कारण से वह गदाधर नाम से गया में निवाह करते हैं और उसके पुण्यमय शरीर पर विंगरूपी पिता-

मह; जनार्दन, शिव, प्रपितामह रहने लगे । उसके पश्चात् विष्णु ने कहा कि यह स्थान पुण्यक्षेत्र होगा । यहां श्राद्ध पिंड दान स्नानादि कर्म करने से स्वर्ग में निवास होगा । उसके उपरांत ब्रह्मा ने गया को उत्तम तीर्थ जानकर वहां यज्ञ किया और यज्ञ कराने वाले ब्राह्मणों को बहुत सा धन और पांच कोस का गयाक्षेत्र दिया और रसवती महानदी और तटगणों को वहां रचा । उसने कहा कि ब्रह्मज्ञान, गया में श्राद्ध, गो ग्रह में मृत्यु और कुरुक्षेत्र में निवास ये चार मनुष्यों के मुक्ति लाभ के प्रधान स्थान हैं । गया में श्राद्ध करने से ब्रह्महत्या, सुरापान, चोरी, गुरुपत्नी गमन और पापियों के संसर्ग के पाप का विनाश हो जाता है ।

(८३ वां अध्याय) कीर्ति देश में गयापुरी और राजगृह धन पुण्य स्थान है । गया के चारो ओर अढ़ाई कोस मंडपट्ट और पांच कोस में गयाक्षेत्र और एक कोस में गयासिर है । फल्गु तीर्थ में पिण्डदान करने से पितरगणों की उत्तम गति होती है । मनुष्य गया में जाने से पितृक्रण से मुक्त हो जाते हैं और पितृरूपी जनार्दन के दर्शन करने से पितृक्रण, ऋषि क्रण और वेव-क्रण से छुट जाते हैं । गया में रथमार्ग कालेश्वर और केदार के दर्शन करने से मनुष्य पितृक्रण से उद्धार पाता है और उस स्थान पर ब्रह्मा के दर्शन करने से उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है । प्रपितामह को देखने से अक्षय पद मिलता है और गदाधर पुरुषोत्तम को भक्ति पूर्वक नमस्कार करने से पुनर्जन्म नहीं होता । पौनःदित्य और कलकार्क के दर्शन करने से पितृक्रण से उद्धार होता है और उस जगह ब्रह्मा के पूजन करने से ब्रह्मपद लाभ होता है । जो मनुष्य उस स्थान में प्रातः काल गायत्री का दर्शन करके मयत्र से संध्या करता है वह सम्पूर्ण वेद पढ़ने का फल पाता है । मध्यान्ह में सावित्री के दर्शन करने से यज्ञ करने का फल प्राप्त होता है और संध्या काल में सर-स्वती के दर्शन से सम्पूर्ण दान का फल मिलता है । पर्वतस्थित शिवजी के और धर्मारण्य में धर्म के दर्शन करने से पितरगणों से उद्धार होता है । शृङ्गे-श्वर के दर्शन करने से बंधन से मुक्ति होती है । मभास में मभासेश्वर के दर्शन

करने से उत्तम गति मिलती है। कोटीश्वर और अश्वमेध यज्ञ के स्वान के दर्शन करने से मनुष्य तीनों अर्णों से छूट जाता है और स्वर्गद्वारेश्वर के दर्शन करने से भव बंधन से छूटता है। मनुष्य रामेश्वर और गदालोल के दर्शन करने से स्वर्ग पाते हैं और ब्रह्मेश्वर के दर्शन से ब्रह्मदरया से छूटकारा पाते हैं। मुदृष्ट में मृगचन्दी के दर्शन करने से सम्पूर्ण कामना प्राप्त होता है। फल्गुश, फल्गुचन्दी, मंगला गौरी, गोमक, गोपति, अगारेण, सिद्धेश, गवा-और मार्कण्डेश्वर इनके दर्शन करने से मनुष्य पितृकण से उद्धार होता है। फल्गु तीर्थ में स्नान करके गदाधर के दर्शन करने से मनुष्य सम्पूर्ण प्रकार के पुण्य प्राप्त करता है और उसके २१ पुस्त ब्रह्मलोक में जाते हैं। पृथ्वी में गया और गया में गयासिर श्रेष्ठ है। कनकादिक नदी जो नाभितीर्थ कही जाती है और ब्रह्मसद तीर्थ में स्नान करने से ब्रह्मलोक प्राप्त होता है। कूप में पिबदान देने से पितृगणों से उद्धार होता है। अक्षयवट में श्राद्ध करने वाले मनुष्य पितृगणों को ब्रह्मलोक में भेजते हैं। दंडतीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य सम्पूर्ण पापों से छूट जाता है। कोटितीर्थ, गदालोल, धैतरणी और गोमक इन तीर्थों में श्राद्ध करने से २१ पुस्त ब्रह्मलोक में प्राप्त होते हैं। ब्रह्मतीर्थ, राम-तीर्थ, रामहृद, आग्नेय, और सोमतीर्थ में स्नान करने वाले पितृकुल को ब्रह्मलोक प्राप्त कराते हैं। उत्तर मानस में श्राद्ध करने वाले मनुष्य का पुनर्जन्म नहीं होता। स्वर्गद्वार में श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक मिलता है। भस्म-छूट में तर्पण करने वाला मनुष्य पितृगण को तारता है। शृङ्गेरेश्वर में श्राद्ध करने से पितृकण से उद्धार होता है। घंटुकारण में श्राद्ध करने से पितृगण ब्रह्मलोक में जाते हैं। गायत्री, सावित्री और सरस्वती इन तीर्थों में स्नान, संध्या और तर्पण करने से १०१ पुस्त को ब्रह्मलोक मिलता है। जो मनुष्य पितरों को स्मरण करते हुए ब्रह्मयोनि में प्रवेश करके उससे बाहर निकलते हैं, वे पितर और देवताओं को व्रत करके पुनर्जन्म संकट में नहीं पड़ते। काकप्रया में तर्पण करने से पितरगणों की अक्षय वृत्ति होती है। धमारण्य और मातंगवापी में श्राद्ध करने से स्वर्ग प्राप्त होता है। धर्मरूप और कूप में श्राद्ध

करने से स्वर्ग प्राप्त होता है । धर्मयूप और बूप में श्राद्ध करने वाला मनुष्य पितृऋण से उद्धार हो जाता है । रामतीर्थ में स्नान करके प्रयास में श्राद्ध करने से पितृगण प्रेतत्व छोड़कर मुक्ति पाते हैं । खपृष्ठ में श्राद्ध करने वाला २१ पुत्रों को तारता है । मुण्डपृष्ठादि में श्राद्ध करने से पितृगण ब्रह्मलोक में जाते हैं । गया के पंचकोश के किसी स्थान में पिंडदान देने वाला मनुष्य अक्षय फल को प्राप्त करता है और पितरों को ब्रह्मलोक में भेजता है । गया में धर्मशृष्ठ, ब्रह्मसर, गयासिर और अक्षयवट में जो कुछ पितरों को दिया जाता है उसका अक्षयफल होता है । धर्मारण्य, धर्मपृष्ठ, धेनुकारण्य इनके दर्शन करने से भी २१ पुत्र का तरन हो जाता है । गया नदी के पश्चिम भाग में ब्रह्मारण्य और पूर्व में ब्रह्मसर है । नागाद्री को भरताश्रम कहते हैं । गयासिर से दक्षिण और महानदी से पश्चिम चंपकवन और चंपकवन में पांडुशिला है । उस स्थान पर और कौशिकी हृद में तृतीया को श्राद्ध करने से अक्षय फल मिलता है । वैतरनी से उत्तर तृतीया नामक सरोवर के निकट कौचपद है, उस स्थान में श्राद्ध करने से पितरगण स्वर्ग में निवास करते हैं । कौचपद से उत्तर निश्विराख्य जलाशय है, उस स्थान पर एक बार पिंडदान करने से मनुष्य को कोई पदार्थ दुर्लभ नहीं रहता । जो मनुष्य महानदी के जल स्पर्श करके पितर और देवताओं के तर्पण करते हैं, उनको अक्षय लोक प्राप्त होता है । मुंडपृष्ठ, अरविद-परंत और कौचपद के दर्शन करने से भी संपूर्ण पाप छूट जाता है । माघ मास, चन्द्रग्रहण और सूर्यग्रहण में गया का पिंडदान दुर्लभ है । महाहृद कौशिकी, मूलजेत्र और शृधकूट के गुहे में पिंडदान देना अति उत्तम है । महेश्वरीधार में स्नान करने वाला मनुष्य संपूर्ण ऋण से विमुक्त हो जाता है । विशाला नदी में श्राद्ध करने से अग्निटोम यज्ञ का फल मिलता है । सूर्यपद में पिंडदान देने से पतितों का उद्धार होता है । वैतरनी नदी पितरगणों को तारने के लिये गयी में आई है, उसमें पिंडदान करके गोदान करने से २१ पुत्र का उद्धार हो जाता है । ब्रह्मा के निर्माण किए हुए स्थानों पर पिंडदान करने वाले मनुष्यों को गया प्राप्त होता है । राम तीर्थ और मतंगवापी में स्नान करने वाले मनुष्य

को १०० गो दान करने का फल मिलता है । वशिष्ठ जी के आश्रम पर स्नान करने से वाजपेय यज्ञ का फल; महाकौशी में निवास करने से अश्वमेध यज्ञ का फल, ब्रह्मसर से निकली हुई कपिला में स्नान और श्राद्ध करने से अग्निष्टोम का फल और कुमारधारा में श्राद्ध और कुमार को नमस्कार करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है । सोमकुंड में स्नान करने से सोमलोक में निवास होता है । संवर्तक सर में पिंड दान देने से वांछित फल प्राप्त होता है । मेतकुंड पर पिंड देने से मनुष्य पवित्र होता है ।

(८४ वां अध्याय) मुंडन और उपवास सम्पूर्ण तीर्थों का नियम है; परन्तु कुरुक्षेत्र, विशाला, विरजा और गया में इसकी आवश्यकता नहीं है । गया में दिन और रात्रि में सर्वदा श्राद्ध होता है । मुंडपृष्ठ से उत्तर कनखल तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य स्वर्ग में निवास करते हैं और यहां श्राद्ध करने से अक्षयफल प्राप्त होता है । प्रथम दिन फल्गु तीर्थ में स्नान और गदाधर और पितामह के दर्शन करने से मनुष्य के २१ पुत्र का उद्धार होता है । दूसरे दिन मातंगवापी और धर्मारण्य में श्राद्ध करने से वाजपेय यज्ञ का फल, ब्रह्मतीर्थ में पिंडदान करने से राजसूय और अश्वमेध यज्ञ का फल होता है । रूप यूष में श्राद्ध और तर्पण करने वाले मनुष्य के पितृगणों को अक्षयफल मिलता है । तृतीय दिन ब्रह्मसर में स्नान और तर्पण करके रूप यूष में पिंडदान और ब्रह्मा के कल्पित स्थानों के सेवन करने से मनुष्य के पितृगण मुक्त हो जाते हैं और यूष को प्रदक्षिण करने से वाजपेय यज्ञ का फल होता है । चतुर्थ दिन फल्गु तीर्थ में स्नान, देवतादिकों के तर्पण और गया शिपि, द्रुपदादि, पंचाग्नि, सूर्य, इन्दु, कार्तिकेय इन तीर्थों में श्राद्ध करने से अक्षय फल मिलता है । दशमश्वमेध तीर्थ में स्नान करके पितामह का दर्शन और रुद्रपद का स्पर्श करने से पुनर्जन्म नहीं होता । गयासिर में पिंडदान देने से तीन बार पृथ्वी दान करने का फल लाभ होता है । मुंडपृष्ठ में रुद्रपद के निकट अल्प भी तपस्या करने से महत् फल मिलता है । पंचम दिन गदालोल में स्नान और घटवृक्ष के नीचे श्राद्ध करने से सम्पूर्ण कुल का उद्धार होता है । अक्षयवट के नीचे पिंडदान देने से

मनुष्य को अक्षयलोक प्राप्त होता है और १०० पुस्त का उद्धार हा जाता है।

वायुपुराण—(४३ वां अध्याय) गयाखुर के तप के तेज से देवता और ऋषिगण त्रसित हुए, तब ब्रह्माजी ने याचना करके उसका शरीर मांग लिया और अत्यन्त पवित्र जान कर श्वेतवाराहकल्प में उसके सिर पर यज्ञ किया। पूर्णाहुति के समय जब वैद्य चलायमान हुआ, तब विष्णु की आज्ञा से धर्मराज ने उसके सिर पर शिला स्थापित कर दिया; उस पर भी जब अखुर स्थिर नहीं हुआ, तब भगवान गदाधर उस पर स्थित हुए। ब्रह्मा ने अपना यज्ञ समाप्त करके ब्राह्मणों को बहुत दान दिया। श्वेतवाराहकल्प में जब गय ने ब्रह्मा करके निर्मित क्षेत्र में यज्ञ किया, तब से गय के नाम से वह क्षेत्र गया नाम से प्रसिद्ध हुआ। ब्रह्मज्ञान, गया का श्राद्ध, गोष्ठि की मृत्यु और कुरुक्षेत्र के निवास से मनुष्यों की अधश्रय मुक्ति होती है। गया में श्राद्ध करना सर्वदा विहित है। सिंह राशि में वृहस्पति के होने पर सम्पूर्ण तीर्थ गौतम क्षेत्र में निवास करते हैं, इसलिये सिंहस्थ वृहस्पति में तीर्थादिक कर्म करना निषेध है; परन्तु उस समय में भी गया में पिण्डदान करना विहित है। गया तीर्थ करने वाले मनुष्य को अकाल मृत्यु होने पर भी प्रेतयोनि में निवास नहीं होता। गयाक्षेत्र में मृत्यु होने से विना ब्रह्मज्ञान के मनुष्य की मुक्ति हो जाती है। २ १/२ कोस तक गया, ५ कोस तक गया क्षेत्र और १ कोस गया सिर है। इन्हीं के मध्य में सम्पूर्ण तीर्थ वास करते हैं। गयाशिर पर पिण्डदान करने से १०० कुल का उद्धार होता है। गया में खीर से, सत्तू से, पिसान से, चावल से और फल मूलादिक से भी पिण्डदान करना विहित है। मधु, घृत, तिल, से युक्त हविषान्न के पिण्डदान करने से पितृगणों की अक्षय वृत्ति होती है। वैतरणी नदी में स्नान करके वहां गोदान करने से सात पीढ़ी तक का उद्धार होता है। चैत्र, वैशाख, आश्विन, पौष और फाल्गुण में गया का पिण्डदान दुर्लभ है।

(४४ वां अध्याय) गयाखुर ने कई एक वर्ष तक कोलाहल गिरि पर उग्र तपस्या की, उस तपस्या से देवतागण शोभित हुए। वे लोग ब्रह्मा और

शिव को अपने साथ लेकर क्षीरशायी विष्णु के पास गए । विष्णु भगवान् सब देवताओं के सहित गयासुर के पास आए, उन्होंने असुर से कहा कि तुम कैसे फल के लिये तपस्या करते हो जो इच्छा हो वह वर मांगो । गयासुर ने कहा कि मैं सब देवताओं, ऋषियों, मंत्र, यज्ञ और तीर्थादिकों से पवित्र हो जाऊँ । जब देवतागण उसको यह परदान देकर चल गए, तब सम्पूर्ण तेज गयासुर में निवास करने के कारण से ब्रैलोक्य और यमपुरी तेज से धून्य हो गई ।

यमराज ने इंद्रादि देवतों के सहित ब्रह्मलोक में जाकर ब्रह्मा से कहा कि हे पितामह गयासुर की पवित्रता से हम लोगों का अधिकार नष्ट हो गया । ब्रह्मा ने विष्णु के अवशेषानुसार देवताओं के साथ गयासुर के पास जाकर उससे कहा कि मैंने सम्पूर्ण पृथ्वी पर चारों ओर भ्रमण किया; परन्तु तुम्हारे शरीर के अतिरिक्त कोई स्थान पवित्र नहीं है, इसलिये यज्ञ करने के लिये मैं तुम्हारा शरीर तुम से याचना करता हूँ । गयासुर ब्रह्मा का वचन स्वीकार करके अति प्रसन्न हो कोलाहल गिरि के नैऋत्य कोन पर उत्तर सिर और दक्षिण चरण करके लेट गया । ब्रह्मा ने श्वेतवाराहकल्प में महर्षियों के सहित गयासुर के शरीर पर यज्ञ किया । अग्निशर्मा नामक ऋषीश्वर ने अपने मुँह से दक्षिणामि, गार्हपत्य, हवनीय, सत्य और आवसथ से पंचअग्नि का निर्माण किया । हवन के अन्त में जब ब्रह्मा पूर्णाहुति देने लगे, तब गयासुर अपनी वेह को संचालन करने लगा । ब्रह्मा की आज्ञा से यमराज ने अपने शृङ्ख से शिला लाकर गयासुर के शरीर पर रक्खा । जब असुर फिर नहीं हुआ, तब ब्रह्मा की मर्त्यना से सब देवता उस वैत्य के शरीर पर स्थित हुए । उस पर भी जब वैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा व्याकुल हो विष्णु भगवान् के पास गये । विष्णु ने एक मूर्ति अपने शरीर से निकाल कर ब्रह्मा को दिया । ब्रह्मा ने विष्णु के अवशेषानुसार उस मूर्ति को गयासुर के ऊपर स्थापित किया, उस पर भी जब वैत्य स्थिर न हुआ, तब ब्रह्मा ने विष्णु को पुकारा । विष्णु साक्षात् आकर उसके शरीर पर स्थित हुए । ब्रह्मा, पितामह, फल्ग्वीश, वेदार, कनकेश्वर

और ब्रह्मा इन पांच मूर्तियों करके विराजे । सूर्य, गयादित्य, उत्तरार्क और दक्षिणार्क इन तीन मूर्ति से स्थित हुए । इनके अलावे गणेश, लक्ष्मी, सीता, गौरी, मंगला, गायत्री, सावित्री, सरस्वती, इन्द्र, वृहस्पति, पूषा, अष्टवसु, विश्वेदेवा, अश्वनी कुमार, इत्यादि देवता अपनी २ शक्तियों के साथ असुर के शरीर पर विद्यमान हुए । तब असुर बोला कि हे आर्यगण इतने छल करने की आवश्यकता नहीं थी, हम केवल विष्णु के वचन से निश्चल हो जाते । गदाधर आदिक देवतों के प्रसन्न होने पर गयासुर ने ऐसा वरदान मांगा कि, जब तक आप लोग मेरे ऊपर निवास करें, हमारे नाम से यह तीर्थ विख्यात हो, पंचकोस गयाक्षेत्र और एक कोस गयासिर कहा जावे, इसी के भीतर सम्पूर्ण तीर्थों का निवास हो, यज्ञ स्नादिक करके पिंडदान करने से १०० कुल का तारन हो जावे, पिंडदा नादिक करने वाले को ब्रह्मलोक मिले, इस जगह वास करने से ब्रह्म हत्यादिक पापों का नाश हो जावे और नैमिष, पुष्कर, गंगा, मयाग, अविमुक्त, इत्यादि तीर्थ आकर यहां निवास करें । विष्णु आदि देवताओं ने गयासुर को एवमस्तु कहा । गयासुर प्रसन्न चित्त से स्थिर हो गया । ब्रह्मा ने यज्ञ की पूर्णाहुति दी और ब्राह्मणों को बहुत सा दान दिया ।

(४५ वां अध्याय) सनतकुमारजी नारद से शिला की उत्पत्ति की कथा कहने लगे कि धर्म की विश्वरूपा नामक पत्नी से धर्मव्रता नामक कन्या उत्पन्न हुई । धर्मराज ने अपनी पुत्री का विवाह ब्रह्मा के पुत्र महर्षि मरीचि से कर दिया । मरीचि को १०० पुत्र उत्पन्न हुए । एक समय महर्षि सो गए और धर्मव्रता उनकी आज्ञानुसार उनके पावों को दवाने लगी । उसी समय ब्रह्मा जी आ पहुंचे । धर्मव्रता ने विचार किया कि ये हमारे पति के पिता हैं, इसलिये पति की सेवा छोड़कर इनका सत्कार करना उचित है । ऐसा विचार वह फलादिक से ब्रह्मा का सत्कार करने लगी । इसके पश्चात् मरीचि ने उठकर धर्मव्रता को शाप दिया कि तू पतल होना । धर्मव्रता बोली कि हे महर्षि तुमने क्या मुझे शाप दिया है, इसलिये तुमको भी शिवजी शाप देंगे । धर्मव्रता और मरीचि

दोनों धन में जाकर घोर तपस्या करने लगे ।" विष्णु ने देवताओं के साथ धर्मव्रता के समीप जाकर उससे कहा कि वरदान मांगो । धर्मव्रता बोली कि स्वामी के शाप से निवृत्त हो जाऊं । देवताओं ने कहा कि मरीचि का शाप हम से निवृत्त नहीं होगा, तुम दूसरा वरदान मांगो । तब धर्मव्रता ने कहा कि मैं अति पवित्र शिला होऊं; उस पर सम्पूर्ण देवता, सर्व तीर्थ और सम्पूर्ण पवित्र वस्तु आकर निवास करें । ब्रह्मा, विष्णु, महेश, इत्यादि देवताओं के चरण चिन्ह हमारे पर विद्यमान रहें । जो मनुष्य हमारे ऊपर तर्पण और श्राद्धादि कर्म करें उनको ब्रह्मलोक प्राप्ति होय । गदाधर की मूर्ति हमारे ऊपर स्थित रहे, फल्गु नदी में वाराणसी, प्रयाग, पुरुषोत्तम, गंगासगर, इत्यादि नित्य विद्यमान रहे, चारों प्रसार के जीव शिला पर प्राण छोड़ने से विष्णुपद को पाये और श्राद्धादिक कर्म करने वाला मनुष्य सहस्र कुल के सहित विष्णु लोक में निवास करें । देवतागण बोले कि धर्मव्रता जो तुमने वर मांगा वह सच सत्य होगा । जब गयासुर के शिर पर तुम्हारा वास होगा, तब हम सब चरण चिन्ह होकर तुम्हारे ऊपर वास करेंगे । ऐसा वरदान देकर देवगण अन्तर्धान हो गए ।

(४६ वां अध्याय) जन धर्मव्रता शिलारूपिणी हुई, तब उसके स्पर्श करने से सम्पूर्ण ब्रह्मांड निवासियों को वैकुण्ठ मिलने लगा । तीनों लोक और यमपुरी शून्य होगई । यमराज ने ब्रह्मलोक में जाकर ब्रह्मा से कहा कि महाराज हमारी पुरी शून्य होगई । आप अपना अधिकार मुझ से ले लीजिये । ब्रह्मा ने कहा कि तुम शिला को लाकर अपने गृह में रखो । जब यमराज शिला को अपने घर लाया, तब सब जन लोग यमपुरी में आने लगे । उसके पश्चात् यमराज ने ब्रह्मा के यज्ञ के समय उस शिला को अपने गृह से लाकर गयासुर के शरीर पर रखदिया । देवताओं ने कोई २ मूर्ति रूप से, कोई २ पद रूप से और कोई २ शिलारूप से उसपर निवास किया । गया में रामचन्द्र ने स्नान किया था, इस कारण उस स्थान का नाम रामतीर्थ पड़ा, जिसमें स्नान करने से मनुष्य को विष्णुपद प्राप्त होता है । और वहां पिण्डदान करने से

पितरगणों की मुक्ति होती है । रामचन्द्र के वनवास होने पर भरतजी ने गया में आकर शिलापर पितरगणों को पिण्डदान दिया और राम लक्ष्मण सीता को वहां स्थापन किया । वह भरत का स्थान अत्यन्त पवित्र है । उस स्थान में मर्तगपद का दर्शन होता है । भरताश्रम में चतुर्गुण के स्वरूप, सूर्य की मूर्ति, वामनजी और ब्रह्मा हैं । इनके दर्शन करने से मनुष्य पितरगणों के साथ विष्णुपद को प्राप्त करते हैं । शिला के दामस्त पर ऊर्ध्वक गिरि है । उसपर पिण्डदान करने से पितरगणों को ब्रह्मलोक मिलता है । उर्ध्वतक गिरि पर अगस्त्य जी ने उग्र तपस्या की थी । उस गिरि पर मध्यान्ह में सावित्री के पूजन करने से मनुष्य धनाढ्य और वेदपारग ब्राह्मण होता है । जो मनुष्य ब्रह्मयोनि में प्रवेश करके बाहर निकलता है, उसकी मुक्ति होजाती है । सोमकुंड में स्नातन करने से पितरगणों को सोमलोक मिलता है । स्वर्गद्वारेश्वर को नमस्कार करने से स्वर्ग प्राप्त होता है । व्योमगंगा में पिण्डदान करने से पितरगणों का स्वर्ग में निवास होता है । शिला के दक्षिण हस्त पर भस्मकूट गिरि है, जहां धर्मराज और कुम्भजजी शोभित हैं और दक्षिण पर्वत पर वटेश्वर और प्रपितामह हैं । मातंगपद पर पिण्डदान करने से पितरों का स्वर्ग मिलता है । मन्गकुंड से आगे रुक्मिणीकुंड और उससे पश्चिम कपिला नदी है । भस्मकूट पर जनार्दन के हाथ में पिण्डदान करने से मनुष्य का विष्णुलोक मिलता है । शिला के दक्षिण पाद पर प्रेतकूट पर्वत है, वहां पिण्डदान करने से पितरों का प्रेतत्व छूट जाता है । कीकट वेश में गया, वही पवित्र भूमि है, वहां राजशुद्ध्यवन, वनजी का आश्रम और पुनगुना नदी है । इन स्थानों में श्राद्ध करने से पितरों को ब्रह्मलोक मिलता है । शिला के दक्षिण पाद पर धर्मराज ने शुद्धकूट पर्वत स्थापित किया, उसपर पूर्व समय में महर्षियों ने शुद्धरूप धारण करके तप किया था । उस गिरि पर शुद्धेश्वर को नमस्कार करने से और उस स्थान की गुहा के समीप पिण्डदान देने से मनुष्य को शिवलोक मिलता है । वहां के शुद्धकूटवट को नमस्कार करने से कामना सिद्ध होती है, और महेश्वरी धारा पर पिण्डदान देने से पितर लोगों को स्वर्ग मिलता है । शिला के उदर में आदि-

पाल गिरि पर थाढ़ करने से पितर लोग ब्रह्मलोक में जाते हैं । शिवा के चामुण्डा पर उद्यंतक गिरि है, जिसको अगस्तजी ले आय थे, वहां ही अगस्त का कुंड है । शिला के दक्षिण इस्त पर भस्मशूट गिरि पर धर्मराज और अगस्त जी रहते हैं । वहां अगस्तेश्वर और ब्रह्मा का दर्शन करने से ब्रह्मइत्या नष्ट हो जाती है और लोपामुद्रा के साथ अगस्तजी के पूजन करने से पितर लोग ब्रह्मलोक में जाते हैं । सीताद्वि के दक्षिण गिरि पर वट, वटेश्वर, और त्रपिता-महं रहते हैं, उससे दक्षिण रुक्मिणीकुंड और पश्चिम कपिला नदी है, उस नदी में सोमवती अमावास्या को स्नान और पिंडदान करने से पितृगणों की मोक्ष होती है । उस स्थान में अग्निपारा है । उद्यंतक गिरि के पीछे सारस्वत कुंड है । क्रौंचपद पर पिंडदान देने से पितरों की स्वर्ग मिलता है ।

(४७ वां अध्याय) सनत्कुमार महर्षि नारद से विष्णु के गदाधर नाम पड़ने की कथा कहने लगे कि ब्रह्मा ने गदा नामक अस्त्र से जिसने उग्र तपस्या करके वर लाभ किया था, गदा बनाने के लिये उसका शरीर मांग लिया । विश्वकर्मा ने ब्रह्मा की आज्ञा से उसके अस्थि से गदा बनाई; वह गदा स्वर्ग में रखी गई । ब्रह्मा के पुत्र हेती नामक अस्त्र ने ब्रह्मा से वरदान पाकर इंद्रादिक देवताओं को जीत लिया, तब देवगण विष्णु की शरण में गये । विष्णु ने गदास्त्र के अस्थि से निर्मित गदा को देवताओं से लेकर उससे अस्त्र का विनाश किया और गयास्त्र के सिर पर गदा को घोवा, तभी से 'उस कुंड का नाम गदालोल हुआ और विष्णु का गदाधर नाम पड़ा, जिसको देवताओं ने गयास्त्र की वेह पर स्थापित किया । मुंडपृष्ठ गिरि, शृङ्गशूट, मेतकूट, अरविंदक, पंचलोक, सप्तलोक, बैकुण्ठ, लोहवन्दक, क्रौंचपद, अक्षयवट, फल्गुतीर्थ मधुश्रवा, दधिकुल्या, मधुकुल्या, देविका, वैतरणी इन स्थानों पर आदि गदाधर प्रगट होकर निवास करते हैं और विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद, काम्यपद, पंचामि, इन्द्रपद, अगस्तपद, सूर्यपद, कार्तिकेयपद, क्रौंचपद, मार्त-गपद इन मुख्य स्थानों पर विष्णु भगवान, व्यक्त और अव्यक्त रूप से विद्यमान हैं । गायत्री, सावित्री, सरस्वती, गयादित्य, उत्तरार्क, दक्षिणार्क, नैमिष,

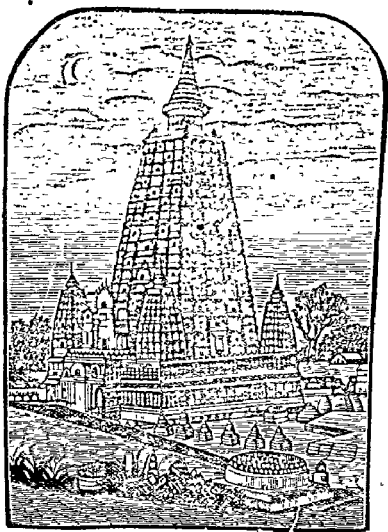
श्वेताक्ष, गणनाथ, अष्टवसु, एकादश रुद्र, सप्तर्षि, सोमनाथ, सिद्धेश, कपर्दीश, नारायण, महालक्ष्मी, ब्रह्मा, पुरुषोत्तम, मार्कण्डेय, अंगिरेश, पितामह, जर्नादन, मंगला, पुंडरीकाक्ष इन स्थानों पर भी गुदाधर भगवान रहते हैं । गुदाधर भगवान के समीप श्राद्धादिक कर्म करने से पितरों की मोक्ष होती है । आदि गुदाधर की स्तुति और पूजा करने से मनुष्य को पृथ्वी में कोई वस्तु दुर्लभ नहीं रहती ।

(४८ वां अध्याय) मनुष्य को उचित है कि यात्रा के समय अपने गृह में श्राद्ध करके गुप्त होकर ग्राम प्रदक्षिणा करे, उसके उपरांत प्रतिग्रह से निवृत्त होकर यात्रा करे । गया के समीप महानदी में स्नान कर देवताओं को तर्पण करके पितरों का श्राद्ध करे । *

(४९ अध्याय) उत्तर मानस में स्नान करके श्राद्धादिक कर्म करने से पितरों की मुक्ति होती है, और सूर्य को नमस्कार करने से पितृगणों को सूर्यलोक प्राप्त होता है । दक्षिण मानस के उदीची तीर्थ में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्ग मिलता है, और उस स्थान के कनखल तीर्थ में स्नान करने से सुवर्ण के समान शरीर की चमक हो जाती है और श्राद्धादिक कर्म करने से ब्रह्महत्या आदि पाप विनाश होता । फल्गुतीर्थ में स्नान करने से अश्वमेधादिक यज्ञ के फल से अधिक लाभ होता है । जो मनुष्य गया में जाकर गुदाधर भगवान का दर्शन नहीं करता है, उसके श्राद्ध करने का फल निष्फल हो जाता है ।

गया के यात्री को उचित है कि प्रथम दिन फल्गु तीर्थ में स्नान तर्पण और श्राद्धादि कर्म करके ब्रह्मा, गुदाधर और शिव जी को नमस्कार करे, दूसरे दिन धर्मारण्य के मार्तण्डापी में स्नान तर्पणादि कर्म करके मर्तण्डेश को नमस्कार करे । ब्रह्मतीर्थ पर श्राद्ध करे । कूप में पिंडदानादिक कर्म करने से सम्पूर्ण पितरों की वृत्ति होती है । पितरों को तारने के लिये धर्म, धर्मेश्वर और महाबोधी अर्थात् पीपल के वृक्ष को नमस्कार और महाबोधी की स्तुति करनी चाहिये । तीसरे दिन ब्रह्मसर में स्नान और श्राद्धादिक कर्म; ब्रह्मा

के निर्माण किए हुए घुप की मूर्तिस्था; ब्रह्मर में उत्पन्न आत्मा तदो की सीचना; यमवलिदान; स्थान वलिदान और काक वलिदान वेना उचित है। चौथे दिन फल्गु तीर्थ में स्नान, गयाशिर पर श्राद्ध और पाद पर सर्पिष्ठ श्राद्ध करना उचित है। नगरूट जनार्दन, ब्रह्मरूप से लेकर उत्तर मानस और पितामहेश्वर तक गयाशिर कहा जाता है। पितामह से लेकर उत्तर मानस पर्यन्त फल्गु तीर्थ है। कौवपद से फल्गु तीर्थ तक गयाशिर का मुख है, इसलिये उस स्थान पर पिंडदान करने से पितरों की अक्षय दृष्टि होती है। मुंडपृष्ठ से गिरि के नीचे तक फल्गु तीर्थ में आदि गदाधर का स्थान है, उस स्थान में पिंडदान और गदाधर के दर्शन और पूजन करने से सहस्र कुल को विष्णुपद प्राप्त होता है। शिवजी को नमस्कार करके उनके स्थान पर श्राद्ध करने से सौ कुल को रुद्रपद मिलता है। ब्रह्मा को नमस्कार करके वहां पिंडदान करने से १०० कुल को ब्रह्मलोक मिलता है। काश्यप के स्थान पर पिंडदान करने से ब्रह्मपद, दक्षिणाग्नि पद पर पिंडदान करने से वाजपय यज्ञ का फल, गार्हपत्यपद पर श्राद्ध करने से राजसूय यज्ञ का फल आवाहनीयपद पर श्राद्ध करने से अश्वमेध का फल, सत्यपद पर श्राद्ध करने से ज्योतिष्टोम यज्ञ का फल, आवसथ के स्थान पर श्राद्ध करने से पितृगणों को सोमलोक, इन्द्रपद पर श्राद्ध करने से इन्द्रलोक, अगस्त्यपद पर श्राद्ध करने से पितृगणों को ब्रह्मलोक, कौवपद और मातंगपद पर श्राद्ध करने से ब्रह्मलोक, सूर्यपद में श्राद्ध करने से सूर्यलोक, कार्तिकपद में श्राद्ध करने से शिवलोक, गणेशपद में श्राद्ध करने से रुद्रलोक, गजकर्ण में तर्पण करने से पितृगणों को स्वर्ग मिलता है। सम्पूर्ण स्थानों में विष्णुपद, रुद्रपद, ब्रह्मपद और काश्यपपद श्रेष्ठ हैं। किसी समय में श्रीरामचन्द्र ने गया में आकर रुद्रपद पर पिंडदान दिया। राजा दशरथ ने स्वर्ग से आकर पिंडदान ग्रहण किया। मुंडपृष्ठ पर्वत देवताओं के पद से सर्वत्र चिह्नित है, वहां पिंडदान करने से पितृगणों की मोक्ष होती है। गदाछोल तीर्थ में स्नान करने से पितरों की मुक्ति हो जाती है। अक्षयवट के नीचे भस्म से श्राद्ध करने से पितरों की मोक्ष होती है।



बुद्ध गयाका मन्दिर ।

(५० अध्याय) राजा गया ने गया में यज्ञ किया और बहुत अन्न द्रव्य दान दिया । विष्णु आदि देवता प्रसन्न होकर राजा गया से बोले कि तुम मनो-याँच्छित कर माँगो । राजा गया ने कहा कि यह पुत्री हमारे नाम से विख्यात होजाय । देवताओं ने बरदाग दिया कि ऐसाही होगा ।

बोधगया ।

गया के विष्णुपद के मन्दिर से ६ मील दक्षिण, बिहार के गया जिले में फलगू नदी के बाएँ अर्थात् पश्चिम किनारे पर फलगू और मोहन नदी के संगम से ऊपर बोधगया एक गांव है । गया से बोधगया तक पक्की सड़क गई है । बोधगया बौद्ध लोगों के लिये संसार में सबसे अधिक पवित्र स्थान है । हजारों यात्री बोधगया में आते हैं और पवित्र पीपल के वृक्ष के नीचे और बुद्धदेव के विख्यात पुराने मन्दिर में पूजा चढ़ाते हैं । वहाँ ८० फीट लम्बी, ७८ फीट चौड़ी और ३० फीट ऊंची छत के ऊपर ४७ फीट लम्बी और इतनी ही चौड़ी बुद्ध के मन्दिर की नेव है । नीचे के सतह से मन्दिर की ऊँचाई १७० फीट है । उसके पूर्व वगल पर दो मजिला जगमोहन और ३ वगलो पर लगभग १६ फीट चौड़ी छत है । मन्दिर अत्यन्त पके हुए ईंटों से बना है । ईंटों पर गच्च का काम है । केवल दरवाजे का चौकट और फर्श पत्थर का बना है । मन्दिर शिखर के चारों वगलो पर नीचे से ऊपर तक सर्वत्र छोटे बड़े ताक हैं, जिनमें से बहुतेरे में बौद्धमूर्तियां बनी हुई हैं । मन्दिर पुराने होने पर भी इसकी बनावट उत्तम है । म.ग. वातो. को. ख्याल करने पर टी.क. जान. परना. है कि यह मन्दिर बहुत दिन ठहरा है । कोई कोई कहते हैं कि इस मन्दिर को मगध देश के बौद्ध राजा अशोक ने बनवाया, जिसका राज्य सन ईस्वी के २६४ वर्ष पहले से २२३ वर्ष पहले तक था । पीछे वह कई बार मरम्मत हुआ । सन १८७६ ई० में ब्रह्मा के राजा ने मन्दिर की मरम्मत के लिये ३ अकसरी को बोधगया में भेजा, जिन्होंने मन्दिर के चारों तरफ बहुत जमीन साफ की ।

० मन्दिर के पीछे भूमि पर इसकी दीवार में लगा हुआ बौद्ध सिंहासन नामक पत्थर का चबूतरा है, जिसपर बैठकर बुद्ध सिद्ध हुए थे । चबूतरे से दो तीन गज पश्चिम पीपल का वृक्ष है । मन्दिर-के उत्तर रुई बड़ चबूतरो पर बहुत लिंगाकार बौद्धमूर्तियां रखी हैं, जिनसे उत्तर वाले पीपल के वृक्ष के नीचे गया के यात्री पिंडदान करते हैं । मन्दिर के दक्षिण-के मैदान में बहुत बौद्धमूर्ति रखी हुई हैं, जो भूमि खोदने पर मिली थी । मन्दिर के आगे दक्षिण बगल पर उत्तर मुख की कई कोठरी हैं, जिनमें से पश्चिम वाली में गया के दूसरे महन्त बाबा महादेव नाथ का चोरा है । उसके पूर्व का कमरा खाली है, जिसके पूर्व की कोठरी में बोधगया के पहले महन्त बाबा चेतननाथ का चोरा है । उनके ३ चेले थे; महादेवनाथ, विभूतनाथ और घमडनाथ । उनमें से महादेवनाथ बोधगया में रहते थे । लाग कहते हैं कि उनकी ग्यारहवीं गद्दी पर बोधगया के वर्तमान महन्त हैं । विभूतनाथ फल्गु के उस पार और घमडनाथ सरस्वती के पास घमडी बाग में रहते थे । पिछल दोनों के चेले भी सिल-सिले से चले आते हैं । चेतननाथ के चोरे के पूर्व की कोठरी में बहुत मूर्तियां और कोठरी के पूर्व की अन्तवाली कोठरी में एक बौद्धमूर्ति है । कोठरी के आगे एक नाद के ऊपर १ हाथ लम्बा बुद्ध का चरण चिन्ह देख पड़ता है । बौद्ध तप्राहियां, जिसके उत्तर भाग में मन्दिर है, १५०० फीट लम्बी और १००० फीट चौड़ी भूमि पर फैली हुई है । कदादित राजा अशोक और उसके उत्तराधिकारियों के रहने की यह जगह थी ।

बुद्धमन्दिर के हाते के पूर्वोत्तर के कोन के पास तारा देवी का शिखरदार पुराना मन्दिर हीन दशा में खड़ा है । हाते के पूर्व एक घेरे के भीतर ५ शिखरदार बड़े मन्दिरों में बोधगया के महंतों की समाधि हैं । हाते के उत्तर मूर्ति गोदाम में बहुत बौद्धमूर्तियां रखी हुई हैं । मूर्ति गोदाम के उत्तर जगन्नाथ का दो मंजिला पुराना मन्दिर है, जिससे लगे हुए उत्तर अद्वित्या घाई के बनवाए हुए दो मंजिले मन्दिर में राम, लक्ष्मण, जानकी, हनुमान, आदि की मूर्ति प्रतिष्ठित हैं । दोनो मन्दिरों की मूर्तियां दो मंजिले पर स्थापित हैं । इनके

उत्तर एक अभियारे मन्दिर में लोकनाथ और ऋणमोचन शिवलिंग हैं। दो कोठरियों को लांघ कर मन्दिर में आदमी पहुँचते हैं। जगन्नाथजी के मन्दिर के पास ही पूर्व दो शिखरदार मन्दिर हैं, जिनमें से एक में नागेश्वर और दूसरे में खगेश्वर शिव का दर्शन होता है।

बुद्ध के मन्दिर के करीब ५० गज पूर्व छोटा बाजार और लगभग १०० गज पूर्वोत्तर बोधगया के महंत का तीन मंजिला मकान और फुलवाड़ी आदि सामान देखने में आते हैं। महंत बड़े धनी हैं, इनको यात्रियों की दी हुई भूमि से करीब ८०००० रुपये सालाना आमदनी होती है। नेपाल, अराकान, ब्रह्मा, शिलोन, जापान, चीन इत्यादि देशों से बौद्ध यात्री आकर बहुत पूजा चढ़ाते हैं।

गया कसबे से लगभग १६ मील उत्तर फल्गू नदी के पास ७ पुरानी बौद्ध गुफा हैं। उनमें से सब से बड़ी गुफा, चन्द्रगुप्त के पोते राजा अशोक के राज्य के समय सन ईस्वी से २५२ वर्ष पहिले की बनी हुई ४६ फीट लंबी और २० फीट चौड़ी है। उनमें से जो सबसे पीछे की बनी हुई है, उसको ईसा से २१५ वर्ष पहले अशोक के पोते ने बनवाया था। भारतवर्ष में राजा अशोक ने पहले पहल गुफाओं को बनवाया था।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—(शान्तिपर्व-३४२ वां अध्याय) अदिती ने इस उद्देश्य से देवताओं के निमित्त अन्न पाक किया था कि वे लोग इस अन्न को खाकर असुरों को मारेंगे। बुद्ध ने व्रत समाप्त होने पर अदिती के निकट जाकर भिक्षा मांगी। देवतालोग पहले इस अन्न को भोजन करेंगे, इसी निमित्त उसने बुद्ध को भिक्षा नहीं दी, तब बुद्ध स्वरूप भगवान ने क्रुद्ध होकर अदिती को शाप दिया कि तुम्हारे उदर में पीड़ा होगी।

मत्स्यपुराण—(४७ वां अध्याय) विष्णु भगवान ने देवताओं के हित के लिये शुक्र की माता का सिर काट डाला। यह देख शुक्र ने विष्णु को शाप दिया कि तुम इस संसार में ७ धार मनुष्य का शरीर धारण करोगे। (दस अवतार में मत्स्य, कूर्म और वाराह ये ३ मनुष्य से बाहर हैं)। तभी

से मनुष्यों के हित के लिये विष्णु बार बार जन्म लेते हैं । उनमें धर्म की स्थिति और असुरों के नाश करने के लिये तप करके कमल सदृश नेत्र वाले और देवता के समान रूपवाले बुद्ध का अवतार हुआ ।

पद्मपुराण—(पाताल खण्ड—६८ वां अध्याय) ज्येष्ठ शुक्ल २ को बुद्ध भगवान ने जन्म लिया ।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्मखण्ड—९ वां अध्याय) बुद्ध अवतार हरि के अंश से है ।

श्रीमद्भगवत—(पहला स्कन्ध—३ रा अध्याय) कलियुग की प्रवृत्ति देख असुरों को मोह देने के लिये बुद्ध ने जन्म लिया ।

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध—७३ वां अध्याय) श्रावण शुक्ल १२ को कलश के ऊपर सुवर्ण की बुद्ध भगवान की प्रतिमा स्थापन करके पूजन कर और पश्चात कलश ब्राह्मण को देदेवे । यह व्रत शुद्धोदन ने किया, जिससे बुद्ध भगवान उसके पुत्र बने और शुद्धादन बहुत काल राज्य सुख भोगकर परम गति को प्राप्त हुआ ।

चाराहपुराण—(प्रथम अध्याय) भगवान ने बुद्ध अवतार धारण कर वेद के विरुद्ध धर्म भाषण करके लोक को माहित किया था ।

शिवपुराण—(५ वां खण्ड—१५ वां अध्याय) पृथ्वी म्लेक्षों से परिपूर्ण हो गई, तब भगवान ने बौद्ध रूप होकर उनसे वेदों को छीन लिया और वेदों की निन्दा करके दैत्यों की बुद्धि भ्रष्ट करदी ।

अग्निपुराण—(१६ वां अध्याय) पूर्व काल के देवासुर-संग्राम में दैत्यों ने देवताओं को परास्त किया, तब देवतागण विष्णु की शरण में गए । विष्णु देवताओं के हित के लिये शुद्धोदन के बुद्ध नामक पुत्र हुए । उनकी माया से दैत्यगण बौद्ध होकर धर्म और वेद से वर्जित हो गए । उसके पश्चात भगवान ने अहित होकर बहुत लोगों को अहित-मत्तावलम्बी बना दिया, जिससे वे लोग वेद धर्म से वर्जित हो गए ।

इतिहास—पश्चिमोत्तर प्रदेश के गोरखपुर जिले की उत्तरीय सीमा के

वाइर नैपाल की तराई में कपिलवस्तु नगर था। उसमें शाक्यजाति का राजा शुद्धोधन रहता था। सन ईस्वी से ६२३ वर्ष पहले गौतम नामक उसका पुत्र जन्मा, जो पीछे अति बुद्धिमान होने के कारण बुद्ध नाम से विख्यात हो गया। गौतम का विवाह एक राजपुत्री से हुआ, जिसमें १ पुत्र जन्मा। ३० वर्ष की अवस्था में गौतम ने घर से चुपचाप निकल कर जंगल में रहना आरंभ किया। उसने बहुत दिनों तक २ ब्राह्मणों से पटने के जिले में शिक्षा पाई कि सिवाय शरीर के दुःख देने के आत्मा के चैन देने का दूसरा उपाय नहीं है। इसलिये उन्होंने ६ वर्ष तक ५ चेलों के साथ गया के तंग और अन्धे जंगल में कठिन तप से अपने शरीर को गला डाला। जहां उन्होंने बहुत दिनों तक तप किया था, उस स्थान पर बुद्ध गया का मन्दिर है।

पीछे बुद्ध का विचार ऐसा हुआ कि आदमियों को अच्छी चाल की शिक्षा दें। तब उन्होंने तपस्या छोड़ दी और बनारस के सारनाथ के पास साधारण शिक्षा देने आरंभ की। उनकी शिक्षा सब के लिये थी। सर्वसाधारण लोगों ने उनका मत स्वीकार किया। ३ महीने के भीतर ६० आदमी उनके चले हुए। साल के ८ महीने तो बुद्ध शिक्षा देते फिरते थे और बाकी ४ महीने बरसात में किसी खास जगह में बैठकर शिक्षा देते थे। छोटे बड़े सब लोग बुद्ध के मत में शामिल हुए। बुद्ध विहार, अवध और पश्चिमोत्तर के आस पास के जिलों में अपनी शिक्षा को फैलाकर घूमते हुए अपने घर आए। बड़े राजा ने उनकी शिक्षा आदर के साथ सुनी। उनका लड़का उन के मत में आया। ३० वर्ष की अवस्था में बुद्ध ने अपने गृह को छोड़ा और ३६ वर्ष की उमर में शिक्षा देने आरंभ की। उसके पश्चात् ४४ वर्ष शिक्षा देने के उपरान्त सन् ई० से ५४३ वर्ष पहले ८० वर्ष की अवस्था में बुद्ध का देहान्त हुआ।

बुद्ध इस बात की शिक्षा देते थे कि हर एक आदमी मोक्ष पा सकता है; परन्तु मोक्ष किसी देवता के प्रसन्न करने से नहीं, किन्तु अपने कर्मों से मिल सकती है। आदमी के वर्तमान, भूत और भविष्य जिन्दगी के हाकात

केवल उन्हीं के कर्म के फल हैं । जो आदमी जोता है, वही काटेगा । दुःख और सुख जो इस जन्म में होता है, उनको पहले जन्म के कर्म का फल जानना चाहिए और वर्तमान जन्म के कर्म से दूसरे जन्म में दुःखसुख भोगना होगा । जब कोई जीवधारी मरता है, तो वह फिर अपने कर्म के अनुसार, बड़े या छोटे शरीर को पाता है । बुद्ध का यह मत है कि प्रत्येक अच्छे आदमी को इस बात का उद्योग करना चाहिये कि किसी प्रकार से जन्म मरण के दुःख से मोक्ष होकर छुटकारा पावे । बुद्ध के मत का धार्मिक आदमी इस संसार में पवित्र ध्यान के मस्तके को पाने का उद्योग करता है और दूसरे जन्म में नित्य की सुस्थिरता की आशा रखता है । यज्ञों के बदले में बुद्ध ने ३ बड़े धर्म बतलाये; अर्थात् अपने को बस में रखना, दूसरों पर दया करना और सब जीवधारियों के प्राण की रक्षा करना ।

सन ई० के लगभग २५७ वर्ष पहले चन्द्रगुप्त का पोता मगध या बिहार का राजा अशोक, जो सन ईस्वी के २६९ वर्ष पहले राजसिंहासन पर बैठा था, बौद्धमत का मानने वाला निहायत सरगर्म था । लोग कहते हैं कि वह ६४००० बौद्ध मत के पुजारियों की परवरिश करता था । उसने बहुत से तपस्थान कायम किए, इसीलिये उसका मुल्क अब तक बिहार प्रदेश कहलाता है ।

कनिष्क पश्चिमोत्तर प्रदेश के सिदिया का राजा था, उसके राज्य के समय सन ४० ई० में बौद्ध मत का अन्तिम और चौथा बड़ा जलसा हुआ । उसने दूसरी बार पवित्र पुस्तकों को सुधारा । उसके समय का तरजुमा उत्तरी मज्झमूल के नाम से तिब्बत, तात्तार और चीन के बौद्धों के लिये दीनी किताब हुआ । उसके समय बौद्ध मत की शिक्षा संपूर्ण एशिया के मुल्कों में दी गई । सन ई० से २४४ वर्ष पहले अशोक का बेटा पवित्र पुस्तकों का दक्खिनी मज्झमूल, जो उसके बाप ने इकट्ठा कर दिया था, लंका को ले गया । वहां से वह ब्रह्मा और पश्चिमी द्वीप समूह में पहुंचा । बौद्ध मत का उत्तरी मज्झमूल सन ६५ ई० में चीन का राजधर्म होगया । अबतक तिब्बत से लेकर जापान तक उत्तर के बौद्ध लोग उसको मानते हैं ।

यद्यपि बौद्ध मत कई शतकों तक शाही मज़हब था; परन्तु ब्राह्मणों का मज़हब नाबूद नहीं हुआ; वह पीछे धीरे धीरे बढ़ गया। शंकराचार्य ने इसमें अधिक सहायता की। सन ईस्वी की नववीं सदी में इस मज़हब के लोग हिन्द से जबरदस्ती निकाल दिये गये। परन्तु परवश में उसको इतनी काम-याबी हासिल हुई कि जन्मभूमि में हासिल होनी कभी संभव न थी। करीब आधी दुनिया के निवासियों के लिये उसने एक नया धर्म और विद्या बना दी और बाक़ी-आधे के विश्वास को भी किसी कदर बढ़ा दिया। दुनिया के निवासियों में ५० करोड़ आदमी अर्थात् फी सदी चालीस मनुष्य बुद्ध की शिक्षा को मानते हैं। समय समय पर उसके विजय का झंडा अफ़ग़ानिस्तान, नेपाल, पूर्वी तुर्किस्तान, तिब्बत, मंगोलिया, मंचूरिया, चीन, जापान, द्वीप समूह, स्याम, ब्रह्मा, सिंहलदीप, लंका और हिन्द में खड़ा हुआ था। उस के मठ और मन्दिर रूस की सल्तनत के वर्तमान हृद से लेकर पसिफिक समुद्र के टापू तक लगातार देखने में आते हैं।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय भारतवर्ष में (जिसमें ब्रह्मा भी है) ७१३१३६१ बौद्ध थे।

टेकारी ।

गया से लगभग १५ मील पश्चिम कुछ उत्तर गया जिले में टेकारी एक न्युनिस्बल कसबा है। जिसमें सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय ११५३२ मनुष्य थे; अर्थात् ८८९३ हिन्दू और २६३९ मुसलमान। कसबे में टेकारी के राजा का गढ़ बना हुआ है। वहां के मृतराजा को सन १८७३ ई० में महाराज का पद मिलता था। राजा भूमिहार ब्राह्मण हैं। राजा खुंदरसिंह के पोते राजा मित्रजीतसिंह के दो पुत्र थे, हितनारायणसिंह और मोदनारायणसिंह। छोटे भाई ने बड़े भाई से जमींदारी में से साढ़े सात आना हिस्सा ले लिया। पीछे हितनारायणसिंह के वारिश उनके शाले के पुत्र रामकिशुनसिंह और मोदनारायणसिंह के वारिश उनके भतीजे रणवहादुरसिंह हुए।

विराटनगर ।

गया से दक्षिण हजारीबाग जिले में कालहुआ नामक एक पर्वत है । महाभारत-प्रख्यात मत्स्यवेश का विराट नगर उसी पहाड़ के समीप था, जहां युार्धाष्ठर आदि पाण्डवों ने १ वर्ष राजा विराट के घर नोकरी की थी और विराट के शाले दुष्कर्म कीचक को भीमसेन ने मारा था ।

पर्वत के मध्य भाग में एक तालाब के पास एक खाली मन्दिर है, जिसके आगे के संहन पर लोग कीचक के नाम पर पत्थर के टुकड़ मारते हैं । उससे थोड़ी दूर पर कोल्हासनी देवी का मन्दिर है, जहां चैत्र और आश्विन की नवरात्र के समय यात्रियों का मेला होता है । एक जगह पाण्डवों का यज्ञ कुण्ड और एक स्थान पर एक गोलाकार पत्थर है, जिसको लोग भीम का गेन्द कहते हैं । पर्वत के ऊपर एक गहरा बिल है, लोग कहते हैं कि भीम ने अपनी बछी से इसको बनाया था । एक जगह एक बड़ी अथाह गुफा है । पर्वत के मध्य भाग में पत्थर पर पाण्डवों की मूर्ति खुदी हुई हैं । इनके अतिरिक्त सूर्यकुण्ड नामक एक गहरा कुण्ड और कई देवता और ऋषियों की प्रतिमा हैं ।

सांक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व १५७ वां अध्याय)
माता कुन्ती के सहित पांडवगण वारणावत नगर से एकचक्रा नगरी को चले पथ में मत्स्य, त्रिगर्त, पंचाल और कीचक देश मिले ।

(सभापर्व ३१ वां अध्याय) पांडुपुत्र सहदेव ने दक्षिण दिशा में जाकर मत्स्यनाथ को जीता ।

(विराटपर्व ५ वां अध्याय) द्रौपदी के सहित पांडवगण द्वैतवन से प्रस्थान करके यमुना नदी के दक्षिण तट पर पैरों से चलने लगे । अनंतर वे लोग पर्वत, गुफा और वनों में निवास करते हुए दशार्ण देश के उत्तर और पंचाव देश की दक्षिण सीमा होकर निकले और सूरसेन और यकुञ्जोभ देश की सीमा को लांघ कर राजा विराट के राज्य में पहुँचे । उन्होंने विराटनगर के पास पहुँचने पर स्मशान के समीप एक बड़े भारी शमी के वृक्ष पर गांधीव आदि धनुष, खड्ग और अन्य शस्त्रों को रख दिया और इस प्रयोजन से

जब वृक्ष पर एक मटे हुए पुरुष का शरीर बांध दिया कि मृतक की दुर्गति से कोई मनुष्य वृक्ष के पास न आवेगा ।

(७ वां अध्याय) राभा युधिष्ठिर बंक नामक ब्राह्मण के नाम से विराट के सभासद हुए । (८ वां अध्याय) भीम विराट के रसोइयां बने । (९ वां अध्याय) द्रौपदी राजा विराट की स्त्री के पास दासी होकर रहने लगी । (१० वां अध्याय) सहदेव राजा की गो के काम में नियुक्त हुए । (११ वां अध्याय) अजुन वृहन्नला नामक नपुंसक स्त्री बन कर गए और राजपुत्री उत्तरा और उसकी सखियों को नाचना गाना और बजाना सिखाने के काम में नियुक्त हुए । (१२) नकुल राजा के घोड़े आदि वाहनों के स्वामी बने ।

(१४ वां अध्याय) द्रौपदी ने अपनी सेवा से रनवास की सब स्त्रियों को प्रसन्न कर लिया । वर्ष समाप्त होने से थोड़े दिन पहले राजा विराट का सेनापति और शाला कीचक रूपवती द्रौपदी को देख काम से व्याकुल होगया । (१६ वां अध्याय) उसने द्रौपदी का दहिना हाथ और पीछे उसका वस्त्र पकड़ा । तब द्रौपदी ने लम्बी सांस लेकर अपना वस्त्र छुड़ा लिया । उस झटके से कीचक पृथ्वी में गिर गया । द्रौपदी कांपती हुई सभा की शरण गई । राजा युधिष्ठिर उसी जगह बैठे थे । कीचक ने भागती हुई द्रौपदी का बाल पकड़ लिया और पृथ्वी में गिरा कर राजा विराट के सामने ही उसको लात से मारा । सूर्य ने द्रौपदी की रक्षा के लिये पहलेही १ राक्षस भेजा था । राक्षस ने बड़े वेग से कीचक को उठा कर दूर फेंक दिया । भीम ने दुष्ट कीचक के मारने की इच्छा की । (२२ वां अध्याय) द्रौपदी रानी के घर में चली गई । प्रातःकाल होतेही कीचक राजा के भवन में पहुंचा और द्रौपदी से बोला कि मुझसे विरोध करने से कोई तेरी रक्षा नहीं कर सकता है । वास्तव में मैंही मत्स्य देश का राजा हूं, तू मेरी सेवा कर । द्रौपदी बोली है कीचक ? मैं यशस्वी गंधर्वों की स्त्री हूं, उनसे बहुत मैं डरती हूं, यह जो राजा विराट ने नाचने के लिये स्थान बनाया है; उसे गंधर्व लोग नहीं जानते । तुम अंधेरे में आधी रात को वहां जाना, मैं तुमसे वही

मिलूंगी । तब कीचक बहुत भस्त्र होकर अपने घर गया । द्रौपदी ने भीमसेन के पास जाकर यह सब वृत्तांत कह सुनाया । भीमसेन आधी रात को छिप कर नाचघर में जा बैठे । उसी समय कीचक भी उसी नाचघर में पहुंचा । वह स्थान अंधेरे से पूर्ण था । कीचक ने द्रौपदी को दूँढते हुए भीमसेन को एकान्त पलंग पर सोते हुए पाया । तब उसने भीमसेन का हाथ पकड़ लिया । पश्चात् वह काम से व्याकुल हो भीम के पास सो गया, तब भीम ने कीचक का बाल पकड़ लिया । कीचक ने भी वेग से अपने को छुड़ाकर भीम का हाथ पकड़ा । दोनों का घोर युद्ध होने लगा, अंत में भीमसेन ने कीचक को मार कर उसके हाथ, पैर और सिर को तोड़ कर उसके पेट में घुसेड़ दिया । द्रौपदी ने आकर-पहरे वालों से कहा कि मेरे गंधर्व पतियों ने कीचक को मार डाला । तब सब पहरे वाले बहुत डरे और कहने लगे कि इसको अवश्य गन्धर्वों ने मारा है ।

(३० वां अध्याय) दुर्योधन ने अपनी सभा में कहा कि पहले समय में मत्स्यराज विराट ने हमारे राज्य में बहुत उपद्रव किया था । उसके बड़े बलवान सेनापति कीचक को गंधर्वों ने मार डाला । उसके मरने से राजा विराट निरुत्साह हो गया होगा । उस राज्य में बहुत अन्न उत्पन्न होता है, इसलिये वह लेने के योग्य है । उसके मिलने से अनेक प्रकार के रत्न और धन मिलेंगे । कर्ण ने इसका अनुमोदन किया । राजा की आज्ञा के अनुसार महासेना कृष्ण पक्ष की सप्तमी को हस्तिनापुर से निकल कर अग्नि कोण को चली । उसके सेनापति निगर्त्त वेश के राजा सुशर्मा हुए । दूसरे दिन सेना का दूसरा भाग भीष्म आदि कौरवों के सहित हस्तिनापुर से चला । (३१ वां अध्याय) उसी दिन कपट वेषधारी पांडवों के वनवास का तेरहवां वर्ष पूर्ण हो गया । तेरहवें वर्ष के अंत के दिन कौरवों की सेना का प्रथम भाग विराट नगर में पहुंचा । राजा सुशर्मा ने विराट के अहीरों से १ लाख गऊ छीन ली । यह खबर पाकर राजा विराट महासेना लेकर पांडवों के साथ नगर के बाहर खड़े हुए । (३२) वां अध्याय दोनों सेना लड़ने लगी । (३३ वां अध्याय) राजा

सुशर्मा ने विराट को विरथ कर उसको बांध लिया, तब राजा युधिष्ठिर की आज्ञा से भीम ने क्षणभर में सट्ठों रथ, हाथी, घोड़े और पदातियों को मारकर गिरा दिया । पांडव लोग दिव्यास्त्र चलाकर सहस्रों वीरों को नाश करने लगे । राजा विराट वधन से छूट युद्ध में प्रवृत्त हुए । सुशर्मा परास्त हुआ ।

(३५ वां अध्याय) जब राजा सुशर्मा द्वार कर चला गया और राजा विराट ने अपने पशुओं को पा लिया, तब उसी दिन कौरवों की सेना का दूसरा भाग विराट नगर में पहुँचा । भीष्म, द्रोण, रर्ण, कृपाचार्य, अश्वत्थामा, शकुनि, दुःशासन आदि महारथियों के संग राजा दुर्योधन विराट नगर में पहुँच गए । उन्होंने दूसरे द्वार पर जाकर साठ हजार गौओं को छीन लिया ।

(३७ वां अध्याय) विराट के पुत्र उत्तर वृद्धाला अर्थात् अर्जुन को सारथी बनाकर रणभूमि में चले । (३८ वां अध्याय) इस सेना के देखते ही भय के मारे उत्तर के रथों खड़े हो गए । वह रथ से उतर कर भागा । अर्जुन ने उसको पकड़ कर रथ पर बैठाया ।

(४१ वां अध्याय) अर्जुन शमी के वृक्ष के पास गए । उनके कहने पर उत्तर ने रथ से उत्तर शमी वृक्ष से पांडवों के शस्त्रों को उतारा । (४५ वां अध्याय) अर्जुन उत्तर को सारथी बनाकर शमी वृक्ष की मदक्षिणा कर शस्त्रों को रथ में रख बग से चले । (५३ वां अध्याय) कौरवों ने गांडीव धनुष का महाशब्द सुनकर अर्जुन को पहचाना । अर्जुन से कौरवों का भयकर युद्ध होने लगा । (६७ वां अध्याय) बड़ी लड़ाई के उपरांत अर्जुन सब कौरवों को जीत और उनका धन छीन कर उसी शमी वृक्ष के नीचे आकर खड़े हुए । उत्तर ने पांडवों के शस्त्रों को फिर वैसे ही शमी वृक्ष पर रख दिया । अर्जुन फिर नपुसक का वेष बना कर उत्तर के सारथी बन जंगल की ओर चले । कौरव लोग द्वार कर हस्तिनापुर चले गए ।

(७२ वां अध्याय) राजा विराट ने कहा कि हे अर्जुन ! तू मेरी कन्या उत्तरा से विवाह करो । अर्जुन बोले कि हे राजन ! हमने गुरु होकर उसको

नाचना और गाना सिखाया है । वह भी पिता के समान हमारा विश्वास करती है । आप अपनी पुत्री का विवाह हमारे पुत्र से कर दीजिए । उसी समय राजा युधिष्ठिर और राजा विराट ने श्रीकृष्ण और अपने २ सम्बन्धियों के पास दूत भेजे । पांडव लोग द्रौपदी के सहित विराटनगर के समीप उपप्लव नामक नगर में रहने लगे । अनन्तर उन्होंने अभिमन्यु और कृष्ण के सहित द्वारिका से सब यादवों को बुला भेजा । वे विराट नगर में आए । उत्तरा का विवाह अभिमन्यु से हुआ ।

तीसरा अध्याय ।

(सूत्रे विहार में) विहार, राजगृह,
वाढ और मोकामा जंकशन ।

विहार ।

पटने के स्टेशन से २२ मील पूर्व बल्लियारपुर रेलवे स्टेशन है, जिससे १८ मील दक्षिण (२५ अंश ११ कला २८ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश ३३ कला ५० विकला पूर्व देशांतर में) पटने जिले में विहार एक एगना शहर है, जिसके नाम से यह प्रदेश सूत्रे विहार कहलाता है । बल्लियारपुर से विहार तक रेल काट अर्थात् डाकगाड़ी चलती हैं, जो तीन घंटे में विहार पहुँच जाती हैं । रास्ते में ६ मील, ९ १/२ मील और १४ मील पर ३ जगह घोड़े बदलते हैं । एक गाड़ी में ६ मोसाफिर बैठते हैं । एक आदमी का महसूल १ रुपया लगता है । पक्की सड़क पर मील के पत्थर लगे हैं । बल्लियापुर से आगे २ मील पर घोवा नामक एक छोटी नदी और १५ मील पर एक तालाब मिलता है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय विहार में ४७७२३ मनुष्य थे; अर्थात् २२९१७ पुरुष और २४८०६ स्त्रियाँ । इनमें ३२५०१ हिन्दू, १५१०६

सुसलमान, ११५ जैन, और १ कृष्णान थे । मनुष्य संख्या के अनुसार यह बंगाल में ११ वां और भारतवर्ष में ७९ वां शहर है ।

• बिहार पटने जिले का सब दिग्विजन है । वहाँ एक मुनसफ, दो दिपोटी मजिस्ट्रेट, एक स्कूल और एक अस्पताल है । शहर में एक छोटी झन्डी पहाड़ी है, जिसके ढालू छोर पर नीचे से ऊपर तक शहर का एक हिस्सा बसा है । बिहार के दक्षिण भाग में सदर सड़क के पास घेली साहब की बगियाँ हुईं घेली सराय नामक उत्तम इमारत है । इसकी सब कोठरियाँ मुँदरेदार और मोरचाना बनी हैं । मत्थेक के चारों तरफ द्वार बने हैं । कोठरियों के दो तरफ उत्तम बरंडे और बड़ा आंगन हैं । इससे दक्षिण दूसरे किनारे में इसी तरह की दूसरी इमारत है । अंगरेजी कायदे के रहने से इस सराय में हिन्दू मोसाफिर कम ठिकते हैं, ये भी किराये के मकान में ठिका या । शहर होकर राजगृह को सड़क गई है । शहर के पास पंचाना नामक छोटी नदी है । बिहार से ४० मील पश्चिम-दक्षिण गया तीर्थ है । बिहार में बड़ी तिजारत होती है । तिजारत की खास चीजें युरोपियन कपड़ा, चावल, कई प्रकार के गल्ले, तंबाकू आदि हैं । रेशमी और रुई के कपड़े की वहां दस्तकारी होती है । घाह मखदूम की कवर के पास एक सालाना मला होता है, जिसमें लगभग २०००० सुसलमान आते हैं । पुराने किले की तमाहियाँ लगभग ३०० एकड़ में फैली हुई हैं । यह अनुमान किया जाता है कि ईस्वी सन् प्रारम्भ होने के थोड़ेही पश्चात् यह मगध की पुरानी बादशाहत की राजधानी था ।

राजगृह ।

बिहार से १४ मील दक्षिण, कुछ पश्चिम औ बल्लियाँपुर के रेलवे स्टेशन से ३२ मील दक्षिण पटने जिले में राजगृह है, जिसको बहुत लोग राजगिर भी कहते हैं । बिहार से २ मील तक पक्की सड़क, आगे कच्ची है । रेल के समय बल्लियाँपुर और बिहार में एके, बैलगाड़ी और डोली सवारी के लिये बहुत मिलती हैं । बल्लियाँपुर से राजगृह तक जगह जगह बस्तियों में टिकान और मोदी हैं । सड़क के किनारे पर मील के पत्थर और दृक्ष लगे हैं ।

बिहार से २ मील आगे बाँके के मैदान में एक छोटी नदी की धारा, ३३ मील आगे दीपनगर में मोदियों के कई एक मकान और ६३ मील आगे महुआ बाग है ।

महुआबाग से करीब २ मील पश्चिम एक दूसरी सड़क बड़गाँवाँ को गई है, जिसको वहाँ के लोग रुक्मिणी के पिता राजा भीष्मक की राजधानी कुण्डिनपुर कहते हैं । परन्तु पुराणों में विदर्भ देश में कुण्डिनपुर लिखा है । (श्रीमद्भागवत, दशमस्कन्ध, ५२ वाँ और ५३ वाँ अध्याय—विदर्भ देश के पालन करने वाला राजा भीष्मक कुण्डिनपुर का राजा था) दक्षिण के हैदराबाद राज्य के बीदर कसबे को लोग विदर्भ देश में कहते हैं । मगध देश में जरासन्ध की राजधानी राजगृह से बड़गाँवाँ केवल ८ मील पर है । बड़गाँवाँ एक छोटी बस्ती है । बस्ती से बाहर एक बौद्ध मन्दिर है, जहाँ किसी नियत समय में बहुत बौद्ध यात्री जाते हैं । बौद्ध लोगों के लिये नालन्द गाँव बहुत पवित्र है । बड़गाँवाँ में पुराने नालन्द के चिन्ह अब तक मिलते हैं । बस्ती के भीतर सूर्य का एक छोटा मन्दिर; बाहर सूर्यकुण्ड नामक एक कच्चा तालाब और बस्ती से थोड़ीही दूर पर जगह जगह चार पाँच टीले हैं ।

बिहार से ९३ मील (महुआबाग से ३ मील) शिलाब नामक एक बड़ी बस्ती, जिसकी खड्डुली खुस्बाद होती है; १२३ मील पण्डितपुर; १३३ मील नया राजगृह बस्ती और १४ मील मेले की जगह है, जहाँ से करीब १ मील आगे ब्रह्मकुण्ड तक मलमास में मेला लगता है । राजगृह सब बिहार के पटने जिले में एक छोटी बस्ती और मगध देश की पुरानी राजधानी का स्थान है, जो पूर्वकाल में जरासन्ध की राजधानी गिरिव्रज नाम से प्रसिद्ध था । चीन के रहने वाले फाहियान ने लगभग सन ४०० ई० में और ह्वेन-त्सांग ने सातवें शताब्दी में राजगृह को देखा था । ह्वेनत्सांग ने लिखा है कि यहाँ गरम पानी के कई झरने हैं ।

राजगृह में सरस्वती नामक नदी दक्षिण-पश्चिम से वैशाली पर्वत के पूर्वोत्तर ब्रह्मकुण्ड के पूर्व आई है और वहाँ से उत्तर की ओर गई है । नदी की

धारा छोटी है । स्नान के प्रसिद्ध घाटों पर केवल डुबकी देने योग्य पानी रहता है । ब्रह्मकुण्ड के पास सरस्वती की प्राची सरस्वतीकुण्ड कहते हैं, जहाँ नदी के दोनों किनारों पर पड़े घाट बने हैं । और यात्रीगण प्रथम स्नान करते हैं ।

सरस्वतीकुण्ड से पश्चिम वैभार पर्वत के पूर्वोत्तर पाँच के पास मार्कण्डे क्षेत्र है । सरस्वतीकुण्ड से क्षेत्र तक पक्की सीढ़ियाँ बनी हैं । वहाँ नीचे लिखे हुए ७ कुण्ड हैं,—जिनमें ब्रह्मकुण्ड प्रधान है,—(१) मार्कण्डेकुण्ड, (२) व्यासकुण्ड, (३) गंगायमुनाकुण्ड, (४) अनन्तनारायणकुण्ड (५) सप्तर्षिधारा, (६) काशीधारा और (७) ब्रह्मकुण्ड । गंगायमुनाकुण्ड में एक ठंढा और दूसरा गरम झरना है । दूसरे सब कुण्डों के झरने गरम हैं । कई झरनों के ऊपर आदमी के बैठने लायक नाले बने हैं, जिनमें वहाँ के चढ़े हुए पैसे लेने वाले आदमी बैठे रहते हैं । (अनन्तनारायणकुण्ड का नाम राजशृङ्ग महात्म्य में नहीं है) इन में सप्तर्षिधारा उत्तर और दक्षिण की लम्बी १ बावली है, जिसके पश्चिम की दीवार में ५ और दक्षिण २ झरने हैं; सातों जगह स्नान होता है । झरने निम्न लिखित सप्तर्षि के नाम से प्रसिद्ध हैं । अत्रि, भरद्वाज, कश्यप, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ और यमदग्नि । परन्तु राजशृङ्ग महात्म्य में यहाँ भरद्वाज, गौतम, विश्वामित्र, वशिष्ठ, यमदग्नि, दुर्वासा और पराशर तीर्थ लिखा है । बावली के पश्चिम की दीवार में शिलालेख है, जिससे जान पड़ता है कि सम्वत् १९०४ में यहाँ से १० कोस पूर्व-दक्षिण के रहने वाले एक आदमी ने इसको बनवाया । बावली के दक्षिण किनारे पर दोना के कायस्थ के बनवाए हुए एक छोटे मन्दिर में सप्तर्षियों की ७ मूर्तियाँ स्थापित हैं । उससे पूर्व और ब्रह्मकुण्ड से दक्षिण एक छोटा शिवमन्दिर और सप्तर्षिधारा के उत्तर किनारे पर एक शिवमन्दिर, एक कन्ययाजी का मन्दिर और गयावाल पण्डे का बनवाया हुआ एक बड़ा पंच मन्दिर है, जिसमें देवताओं की स्थापना कभी नहीं हुई । सप्तर्षि धारा के पास ही पूर्व ब्रह्म कुण्ड है । राजशृङ्ग के सब कुण्डों से इसका जल अधिक गरम रहता है । कुण्ड में पानी के किनारे पर ब्रह्मा, लक्ष्मी और गणेश की मूर्तियाँ हैं । ब्रह्मकुण्ड

से पूर्व एक छोटे मन्दिर में बराहजी की मूर्ति है । और दक्षिण पहाड़ी के ढाल पर सन्धादेवी का छोटा मन्दिर है; जिसके पास केदारकुण्ड है, जिस में पुतकामना के लिये बहुत स्त्री स्नान करती हैं । पश्चिम एक छोटे मन्दिर में विष्णु का चरणचिन्ह देख पड़ता है ।

सरस्वतीकुण्ड से २०० गज पूर्व नीचे लिखे हुए ५ कुण्ड हैं, -(१) सीताकुण्ड, इसके उत्तर हाटकेश्वर महादेव का छोटा पुराना मन्दिर है । लोग कहते हैं कि तीर्थ निर्माण हुआ, तभी का यह मन्दिर है । हाटकेश्वर से उत्तर (२) सूर्य कुण्ड, -(३) चन्द्रकुण्ड, (४) गणेशकुण्ड और पांचवां रामकुण्ड हैं । सब कुण्डों में गरम झरने का पानी गिरता है । रामकुण्ड का एक झरना गरम और दूसरा ठण्डा है । रामकुण्ड के पूर्व दीवार में शिलालेख है, जिसमें इस कुण्ड के बनने का सम्प्रत् और बनाने वाले का नाम लिखा है । राजगृहमाहात्म्य में इस कुण्ड का नाम नहीं है । सीताकुण्ड से पूर्व-दक्षिण विपुलाचल पर्वत की जड़ में ठण्डे जल का झरना है । सीताकुण्ड से पूर्व विपुलाचल की जड़ के पास शृङ्गीकुण्ड है । एक ठण्डे ओर दूसरे गरम झरने का पानी उसमें गिरता है । उस जगह किसी समय मखदूम साहब एक मुसलमान फकीर रहे थे । वह कुण्ड मुसलमानों के कब्जे में है । वे लोग इसको मखदूमकुण्ड कहते हैं ।

सरस्वतीकुण्ड से आधे मील से अधिक उत्तर उसी सरस्वती को लोग वैतरणी कहते हैं । नदी के दोनों किनारों पर पक्के घाट बने हैं । दहिने किनारे पर बहुत लोग पिण्डदान और गोदान करते हैं । वहां बहुत बछियों को लेकर ग्वाले लोग खड़े रहते हैं । एक आने पर भी बछिया संकल्प कराकर वे लोग उसको लौटा लेते हैं । नदी के बाएँ किनारे पर बहुत छोटे एक मन्दिर में माधवजी की एक मूर्ति है । वैतरणी से करीब ४०० गज उत्तर उसी सरस्वती को लोग शालग्रामकुण्ड कहते हैं । उसमें घाट बना है । यात्रीगण स्नान करते हैं । शालग्रामकुण्ड से पूर्व एक छोटे मन्दिर में धर्मेश्वर महादेव और धर्मेश्वर से पूर्व भरतरूप है । कई सीढ़ियों से भीतर जाकर उस रूप में स्नान होता है । उसमें झरने का पानी नहीं है । उस का जल साफ नहीं रहता । उस रूप का नाम राजगृहमाहात्म्य में नहीं है ।

यहुतेरे यात्री एकही दिन में सरस्वती के तीनों घाटों पर अर्थात् सरस्वती-कुण्ड, वैतरणी और शालग्रामकुण्ड में और सम्पूर्ण क्षरों के जल में और भरतक्षेत्र में स्नान करते हैं। कोई कोई २ दिन में स्नान कर्म समाप्त करता है। ब्रह्मकुण्ड और सप्तर्षि धामकुण्ड के अतिरिक्त सय कुण्डों में जाने की एकही रास्ता है। सीढ़ियों पर मलमास में स्नान करनेवालों की बड़ी भीड़ रहती है। पुरुष और स्त्री सभी भोगे हुए कपड़े पहने हुए एक जगह से दूसरी जगह स्नान करते फिरते हैं। उस तीर्थ में स्नान करनेवालों का आश्चर्य दृश्य देखने में आता है। ब्रह्मकुण्ड और सीताकुण्ड के बीच में यहुतेरे लोग एक स्थान से दूसरे स्थान को दौड़ते हैं। कोई अपने लड़के को कंधे पर या गोदी में लेकर स्नान कराता फिरता है। किसी कुण्ड का गरम पानी अस्वस्थ नहीं है। मोरी द्वारा कई कुण्ड मिले हुए हैं।

सरस्वतीकुण्ड से दक्षिण ओर सरस्वती नदी में नदी के बाएँ वानरी-कुण्ड नामक एक बहुत छोटा कुण्ड है, जिसका पानी लोग देह पर छिड़कते हैं। उस स्थान को वानरीतरण क्षेत्र कहते हैं। वानरीकुण्ड से कुछ दूर दक्षिण गोदावरी नामक एक छोटी धारा दक्षिण से आकर सरस्वती में मिली है। संगम से दक्षिण-पूर्व पहाड़ी टीले पर जाला बेवी का छोटा मन्दिर है।

सरस्वती और गोदावरी के संगम से पश्चिम सरस्वतीकुण्ड से १ मील दक्षिण-पश्चिम सरस्वती नदी के बाएँ वैभार पर्वत के दक्षिण बगल में ११ गज लम्बी और ५ गज चौड़ी सोनमण्डार नामक प्रसिद्ध एक गुफा है। उसके भीतर की छत दोनों तरफ ढालुवाँ है, जो मध्य में पृथ्वी से ३१ गज ऊँची है। गुफाके पूर्व भाग में ४ मुखवाली १ बौद्धमूर्ति बैठी है। गुफा के द्वार पर टूटी हुई छोटी छोटी २ बौद्धमूर्तियाँ पड़ी हैं। गुफाके भीतर और द्वार के पास कई अक्षरों का घिसा हुआ लेख है। कोई कोई यात्री गुफा के द्वार के बाहर खड़ी दीवार में अपना नाम लिख देते हैं। बौद्ध लोगों के लिये सोनमण्डार बहुत पवित्र है। उसी स्थान पर सन ई० के ५४४ वर्ष पहले बुद्ध की विद्यमानता में उनके चेह्रों में से ५०० आदमियों ने इकट्ठे होकर धर्मसभा की थी। वही बौद्धों का पहला जलसा कहलाता है।

राजगृह की पहाड़ियां लगभग १००० फीट ऊंची हैं, जिनमें शिलाजीत निकलता है। उनमें वैभार, विपुलाचल, जिसको महाभारत में चैतक लिखा है, रत्नगिरि जिसका नाम महाभारत में ऋषिगिरि लिखा है, उदयगिरि और सोनागिरि ये पांच पहाड़ियां प्रधान हैं। वैभार सरस्वतीकुण्ड से दक्षिण पश्चिम है। उसके सिरे पर एक पुराने जर्जर मन्दिर में सोमनाथ और सिद्धनाथ २ शिवलिंग हैं। एक मील चढ़ाई के पीछे मन्दिर मिलता है, जहां बहुत यात्री जाते हैं। उस मन्दिर के आस पास ६ जैनमन्दिर हैं, जिनमें मलमास के मेले के समय यात्री लोग हिन्दू मन्दिर जान कर दर्शन करते हैं। मन्दिर के नौकर हिन्दू मन्दिर कह कर पैसे चढ़ाते हैं। विपुलाचल सीताकुण्ड से पूर्व है, जिस पर ६ जैनमन्दिर हैं। उस से दक्षिण की पहाड़ी पर गणेशजी का एक छोटा मन्दिर है। रत्नगिरि विपुलाचल के दक्षिण है, जिस पर २ जैनमन्दिर हैं। उदयगिरि रत्नगिरि के दक्षिण है, जिस पर १ जैनमन्दिर है और उसके पश्चिम नीचे नाटकेश्वर महादेव का छोटा मन्दिर है। और सोनागिरि उदयगिरि से पश्चिम है, जिस पर १ जैनमन्दिर है। महाभारत में लिखा है कि इन पांच पहाड़ियों के मध्य में राजा जरासन्ध की गिरिव्रज नामक राजधानी थी। घटुतेरे जैन लोग खोलियों में और पैदल उन पहाड़ों पर अपने तीर्थस्थान को जाते हैं। गयाजी के पर्वत तक पहाड़ियों का तांता लगा है। राजगृह से गया तीर्थ ३२ मील पश्चिम है।

सरस्वती कुण्ड से करीब ६ मील पूर्व गिरिये घस्ती के पास घैंकुण्ड नामक नदी और घैंकुण्ड तीर्थ है, जिससे उत्तर की ओर कण्वेश्वर का मन्दिर है।

राजगृह एक समय मगध देश और जरासन्ध की राजधानी था, जो चारों ओर पहाड़ों से और उत्तर की ओर एक पुराने किले के खंडहर से घेष्टित है। सरस्वतीकुण्ड से करीब ४ मील दक्षिण वाणगंगा पहाड़ी नदी है, जिसके पार की चहार दीवारी जरासन्ध का बान्ध कइलाती है। और वही एक बाहर जाने का रास्ता है। राजगृह के पुराने कसबे की बाहर की दीवार का चिन्ह, जिसका घेरा ४ मील से अधिक है, अब तक देखने में आता है। वाणगंगा से उत्तर कई पुराने शिलालेख हैं, जो पढ़े नहीं जाते। रंगभूमि भी

उसी जंगल है । लोग कहते हैं कि भीमने जरमिध को इसी जंगल की ओर डाला था । सरस्वती कुण्ड से करीब २ मील दक्षिण और वाणगंगा से २ मील उत्तर मणियारमठ (नागमणि) में अशोक महाराज का स्तूप और जैनलिंग हैं । राजगृह में बौद्धों ने हिन्दुओं को निकाल कर अपना अधिकार किया था, परन्तु हिन्दुओं ने फिर उन्हें निकाल कर अपने तीर्थ स्थापित कर लिए ।

सरस्वती कुण्ड से १२ मील पश्चिम तपोवन और गिरिवज नामक दो स्थान हैं, जिनमें लोग जरासन्ध का भजनागार और बैठक कहते हैं । तपोवन में चारों भाई सनकादिकों के नाम से गरम झरने के ४ कुण्ड हैं । पर्वत लांघ कर वहां जाना होता है । मेले के दिनों में दुकान रहती है ।

राजगृह का मेला मलमास में एक महीना रहता है, किंतु शुक्लपक्ष में कृष्णपक्ष में अधिक यात्री जाते हैं । आसपास के जिलों के लोग उस तीर्थ में बहुत जाते हैं । बहुतेरे यात्री पहुंचने के दिन या दूसरे दिन स्नान करके लौट जाते हैं । कुण्डों में स्नान की भीड़ दिन भर रहती है । राजगृह और पण्डितपुर के माक्षण राजगृह के पण्डे हैं, वे लोग यात्रियों के टिकने के लिये बहुत छप्पर लगाते हैं । ब्रह्मकुण्ड और सरस्वती कुण्ड से १ मील पर बाजार बसता है । मेले में कोई पशु बिकने को नहीं आता । नदी और झरनों के सिवाय वहां कुछ फूप है । मेले के आस पास के जंगल मैले से भर जाते हैं । इन्तजाम के लिये बिहार के एक हाकिम टिके रहते हैं । पहाड़ों पर और उनकी तराईयों में छोटे घुस और झाड़ों का जंगल है । खटौली में बैठा कर पहाड़ों पर ले जाने वाले कुली मेले में मिलते हैं । मलमास के अतिरिक्त कार्तिकी पूर्णिमा, माघी अमावास्या और पूर्णिमा, वैशाख की अमावास्या, सोमवारी अमावास्या, ब्रह्म आदि पर्वों में भी आस पास के बहुत लोग स्नान के लिये राजगृह में जाते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीनकथा—महाभारत-(शान्तिपर्व ५९ वां अध्याय)

द्रुपद के पुत्र राजा पृथु के दो बन्दी थे सूत और मागध । प्रतापी पृथु ने उनके ऊपर प्रसन्न होकर सूतको अनूप देश और मागध को मगध देश प्रदान किया ।

(सभापर्व १३ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर ने श्रीकृष्ण से राजसूय यज्ञ करने का प्रयोजन कह सुनाया । (१४ वां अध्याय) कृष्णचंद्र ने कहा कि हे

महाराज जरासंध संपूर्ण राजाओं का सौभाग्य पाकर पृथ्वीनाथ बनकर अपने तेज से सर्वोपर हुआ है । आप उसके जीवित रहते हुए कदापि राजसूय यज्ञ पूरा नहीं कर सकेंगे । (१५ वां अध्याय) उसने सैकड़ों पीछे ८६ भूषों को कैद कर रक्खा है । सौ में छिपल १४ राजा शेष बचे हैं । (१७ वां अध्याय) राजा युधिष्ठिर के पूछने पर श्रीकृष्ण जरासंध का जन्म वृत्तान्त कहने लगे कि मगध देश में अति विक्रमभरे दूसरे इन्द्र के समान वृहद्रथ नामक एक राजा था । उसने काशीराज की दो कन्या से विवाह किया था । राजा की यौवन दशा कट गई, पर एक भी पुत्र नहीं उपजा । तब उसने दोनों रानियों के साथ एक तपस्वी चण्डसौशिक मुनि के पास जाकर उनको प्रसन्न किया और पुत्र के लिये प्रार्थना की । मुनि आम के वृक्ष की छाह में बैठकर जब ध्यान करने लगे, तब उनकी गोद में एक आम्र फल गिरा । मुनिवर ने पुत्र लाभ के लिये वह फल राजा को दिया । राजा ने अपने घर आकर अपनी दोनों पत्नियों को वह फल दे दिया । उन्होंने आपस में बांट कर उस फल को खाया । १० महीने पूरे होने पर दोनों रानियों ने दो खंड शरीर प्रसव किये तब उन की आज्ञा से दो घातियों ने उन दो सुन्दर खण्डों को अन्तःपुर से निकाल कर एक चौराहे पर फेंक दिया । जरा नाम्नी एक राक्षसी ने उन खण्डों को छेलिया और सहज ही में दोनों खण्डों को जोड़ दिया । दो आधी देहों के एक दूसरे से मिलते ही एक वीर कुमार बन गया । अनन्तर राक्षसी बच्चे को उठाने की चेष्टा करने लगी पर वह उठा नहीं सकी । बालक गहरे शब्द से रोने लगा । अनन्तर उस राक्षसी ने मानवी शरीर धर उस कुमार को छे कर सब वृत्तान्त कहने के उपरांत राजा को दे दिया । (१८ वां अध्याय) जरा राक्षसी ने बालक को मंधित किया, अर्थात् जोड़ा इस कारण से राजा वृहद्रथ ने बालक का नाम जरासंध रक्खा । (१९ वां अध्याय) जरासन्ध के बड़े होने पर राजा वृहद्रथ उसको मगध के राजमहिासन पर बैठाकर अपनी दोनों रानियों के साथ वनको पधारे ओर तपोवन में बहुत दिनों तक तप करके स्वर्ग को सिधारे । जरासन्ध ने अपने वीर्य के प्रभाव से सब नरनाथों को अपने बस में कर लिया ।

(२० वां अध्याय) ऐसा कह श्रीकृष्ण बोले कि संपूर्ण सुरासुर भी तूझ खुली लड़ाई में जरासन्ध को परास्त नहीं कर सकेंगे, इसलिये भुजयुद्ध सेही उसको जीतना उचित है । राजा युधिष्ठिर के सहमत होने पर श्रीकृष्णचन्द्र भीम और अर्जुन के सहित स्नातक ब्राह्मणों के वस्त्र पहिर कर इन्द्रप्रस्थ से मगधनग्न के धाम की ओर चले और गङ्गा और सोन के पार उतर कर मगधराज के छोर में आ पहुँचे । अनन्तर उन्होंने गोरय नामक पर्वत से उतर कर मगधनाथ की पुरी देखी । (२१ वां अध्याय) श्रीकृष्ण बोले कि हे अर्जुन देखो मगधराज की राजधानी कैसी सुन्दर शोभा पारही है । ऊँची ऊँची चोटी लिये हुए उठे वृक्षाले एक दूसरे से मिले हुए वैदार, वराह, वृषभ ऋषिगिरि और चैतक ये ५ पर्वत मानो एक गृह बनकर गिरिव्रज नगरी को रखवारी कर रहे हैं । पूर्वकाल में अंग बंगादि के राजा गण यहां के गौतम जी की कुटी में आकर प्रमुदित होते थे । देखो गौतम जी के आश्रम के निकट लोध्र और पीपल के वन कैसी सुन्दर शोभा दे रहे हैं । इसके पश्चात् श्रीकृष्ण, भीम और अर्जुन मगधपुरी की ओर चले और द्वारके निकट न जाकर चैतक पर्वत की चोटी को लांघ कर गिरिव्रज नगर में जाधुमे । वे लोग ३ कक्षाओं को पीछे छोड़ कर राजा जरासन्ध के निकट जा पहुँचे । राजाने इनका बड़ा सत्कार किया । उस काल भीम और अर्जुन मौन साथे थे । श्रीकृष्ण जरासन्ध से बोले कि हे नरनाथ यह दोनों नियम युक्त हैं । इस समय कुछ नहीं बोलेंगे, किंतु आधी रात बीतने पर तुम से वार्तालाप करेंगे । आधी रात बीतने पर राजा उन द्विजों के पास आया और कृष्णादि की निन्दा करके बोला कि स्नातक व्रतधारी ब्राह्मण माला, आदि नहीं धारण करते, पर तुम फूल लगाये हो और तुम्हारी हथेलियों में धनुष के गुण बढ़ाने के चिन्ह बने हैं, सो तुम कहां कौन हो । कृष्ण बोले कि महाराज तुम हम को स्नातक ब्राह्मण कर केही जानो । (२२ वां अध्याय) बहुत बातें करने के पीछे कृष्णचन्द्र ने कहा कि हमने तुमको मारने के लिये ब्राह्मण वेप लिया है । मैं कृष्ण हूँ और ये दोनो पाण्डु के पुत्र हैं । हम तुमको ललकारते हैं, स्थिर होकर लड़ो । अथवा सब भूषो को छोड़ दो । जरासन्ध बोला कि

जो तुम युद्ध की बात कहते हो तो मैं व्यूह युक्त सेनाओं से अथवा अकेले एक से, दो से वा तीनों से एकही बार या अलग अलग, चाहे जैसे हो, लड़ने में सम्मत हूँ । (२३ वां अध्याय) कृष्णचन्द्र के पूछने पर तेजस्वी मगधनाथ ने भीम से लड़ने को कहा, तब जरासन्ध और भीम शस्त्र लिये हुए अति प्रमुदित चित्त से एक दूसरे से भिड़ गए । भीम और जरासन्ध की लड़ाई होने लगी जो कार्तिक मास की प्रथमा तिथि से आरंभ होकर त्रयोदशी तक निश दिन बिना भोजन चली थी । चतुर्दशी की रात को जरासन्ध ने थक कर कुस्ती त्याग दी । (२४ वां अध्याय) भीम ने जरासन्ध को छँचे उठा कर १०० फेरा घुमाने के पश्चात् अपनी जंघे से उसकी पीठ नवा कर तोड़ डाली । अनन्तर कृष्णचन्द्र ने राजाओं को कारागार से छुड़ाया और जरासन्ध के पुत्र सहदेव को राज्यतिलक दिया । उसके पीछे भीम और अर्जुन के साथ वह इन्द्र प्रस्थ में आए ।

(यह कथा श्री मद्भागवत दसमस्कंध के ७२ वें अध्याय में है । उसमें यह लिखा है कि कृष्णचन्द्र ने जरासंध से द्वंद युद्ध करने कहा, तब वह स्वीकार करके नगर से बाहर निकल कर भीमसेन के साथ गदा युद्ध करने लगा । कृष्ण के इसारा बताने पर भीम ने जरासंध के एक पांव को अपने पांव से दाव दूसरे पांव को भुजाओं से पकड़ कर चीर डाला)

(वन पर्व—८४ वां अध्याय) पुलस्त्य बोले कि तीर्थमेवी पुरुष राजगृह तीर्थ को जाय । वहां तीर्थों का स्पर्श करने से पुरुष आनन्दित होता है । वहां यक्षिणी को नैवेद्य लगाकर भोजन करने से यक्षिणी के प्रसाद से पुरुष की ब्रह्महत्या छूट जाती है । मणिनाग तीर्थ में जाने से हजार गोदान का फल होता है । जो पुरुष मणिनाग तीर्थ की उत्पन्न हुई वस्तुओं को खाता है, उसे सर्प काटने का विष नहीं चढ़ता । वहां एक रात रहने से हजार गोदान का फल होता है । वहां से ब्रह्मर्षि गौतम के वन में जाना उचित है । वहां अहल्या-कुण्ड में स्नान करने से मोक्ष मिलती है ।

विष्णुपुराण—(चौथा अंश २३ वां और २४ वां अध्याय) सोमवंश के यल्लव से उत्पन्न मागध वंश में जरासंध आदि प्रतापी राजा हुए, जिनके क्रमिक

नाम ये हैं—(१) अरामंघ, (२) सहदेव, (३) सोमापि, (४) श्रुतवान, (५) अयुनायु, (६) निर्मित, (७) सुसत्त, (८) वृहत्कर्मा, (९) सुश्रुम, (१०) दृढमेन, (११) सुमति, (१२) सुवल, (१३) सुनीत, (१४) सत्यजित्, (१५) विश्वजित् और (१६ वां) रिपुंजय । इतने वृहद्रथवंश के मागध राजा कलियुग के १००० वर्ष बीतने तक होंगे ।

रिपुंजय के मंत्री शुनक रिपुंजय को मार कर अपने पुत्र प्रद्योत को राज-सिंहासन पर बैठावेगा । प्रद्योत वंशी ५ राजा १३८ वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) प्रद्योत, (२) पालक, (३) विशाखयूप, (४) जनक, और (५) नन्दि-वर्द्धन ।

शिशुनाग वंश के १० राजा ६६२ वर्ष राज्य करेंगे;—(१) शिशुनाग, (२) कद्रवर्ण, (३) क्षेमयर्मा, (४) क्षेत्रज्ञ, (५) बिंदुमार, (६) अजातशत्रु, (७) दर्भक, (८) उदयाश्व, (९) नन्दिवर्द्धन और (१० वां) महानंद ।

नंद और उसके पुत्र गण १०० वर्ष तक राज्य करेंगे । महानंद की शूद्रा स्त्री से उत्पन्न नंद नामक पुत्र पृथ्वी का एक राजा होगा । उस के सुमालो इत्यादि ८ पुत्र होंगे । चाणक्य नामक ब्राह्मण छल से नवों को मार कर चंद्रगुप्त को राजसिंहासन पर बैठावेगा । १० मौर्यवंशी राजा १३७ वर्ष तक राज्य करेंगे । (१) चंद्रगुप्त, (२) बिन्दुसार (३) अशोकवर्द्धन, (४) सुयश, (५) दशरथ, (६) मंगत, (७) शालिशुक, (८) सोमशर्मा, (९) शतधन्वा और (१० वां) वृहद्रथ ।

शुंगजाति के १० राजा ११० वर्ष तक राज्य करेंगे;—(१) पुष्पमित्त, (२) अग्निमित्त, (३) सुज्येष्ठ, (४) वसुमित्त, (५) आर्वक, (६) पुलिंदक, (७) घोषवसु, (८) वज्रमित्त, (९) भागवत और (१० वां) देवमूर्ति ।

वसुदेव नामक कण्व वंशी अपने स्वामी देवभूति को मार कर राज्यसिंहासन पर बैठावेगा । ३५ वर्ष तक उस वंश के ४ राजा राज्य करेंगे—(१) वसुदेव, (२) भूमिमित्त, (३) नारायण और (४ था) सुशर्मा ।

क्षिप्रनामक अंध्रक वंशी अपने स्वामी सुशर्मा को मार कर राजा होगा । उस वंश के ३० राजा ४५६ वर्ष तक राज्य करेंगे;—क्षिप्र, कृष्ण, श्रीशान्तकर्ण,

पूणोत्संग, शाककर्णो, लंबोदर, द्विविलक, मेघस्वाती, पटुमान, अरिष्टकर्मा, हालेय, पत्तलक, प्रविललसेन, सुनंदन शातकर्णी, चकोरशातकर्णी, शिवस्वाति गोमती, पुलिमान, शातकर्णी, शिवश्री शिवस्कंध, यज्ञश्री, विजय, चंद्रश्री, और पुलोमच । ये ३४५६ वर्ष राज्य करेंगे ।

उसके पीछे ७९ राजा १३९९ वर्ष तक राज्य करेंगे, ७ आभीर, १० गर्दभिल, १६ शकवंशी, ८ यवन, १४ तुषार अर्थात् गोरा, १३ मुंड और ११ मौनेय । उसके पश्चात् पौर नामक ११ राजा ३०० वर्ष राज्य करेंगे इत्यादि । (श्रीमद्भागवत द्वादश स्कंध के प्रथम अध्याय में भी यह वंशावली है ।)

भविष्यपुराण में (१४वां अध्याय)—कलियुग के राजाओं का वर्णन इस भांति है;—

कुरुवंशी, इक्ष्वाकुवंश के राजा और मागधवंश के राजा एक हजार वर्ष तक कलि में राज्य करेंगे	...	...	...	...	१०००
मद्योतवंशी ५ राजा		...	...	...	१३८
शिशुनाग आदि १० राजा	...			...	३६०
शूद्रों के गर्भ से उत्पन्न नन्द राजा और उसके ८ पुत्र	...		...		१००
चन्द्रगुप्त आदि मौर्यवंशी १० राजा	...	...	...	...	१३७
शुंग जातिके १० राजा	...	...	...	...	११०
कण्ववंशी	...	...		...	३४५
इनके सेवक शूद्र आन्ध्रवंशी ३० राजा	...	...	...	...	४५६
आभीर ७ राजा	...	...	...	...	१००
गर्दभीनामक १० राजा				...	९८
कंक नामक १६ राजा	...	...	...	...	२००
उज्जैनका विक्रमादित्य	...	...	...		१३५
शालिवाहन	...	...		...	१००
८ यवन और १६ तुरुष्क		...	...	...	३५०
गुरण्ड नामक १० राजा	...	...	...	...	११६
मौन नामक ११ राजा	...				३००

भूत नन्द आदि राजा	...	...	...	...	१९५
चक्रवर्त राजा	...	...	...	...	४१२
गोपमुख नामक राजा	...	...	...	...	१८०
हजारों राजा	...	...	...	...	३५०
विजय के वंश में	...	...	...	...	५५०
नागार्जुन वंश	...	...	...	...	१०००
बलि राजा के घराने में	...	...	...	...	११००

उसके पीछे शूद्र म्लेक्ष आदि राजा होंगे, सब जगत् म्लेक्षमय होजायगा ।

वाट ।

वत्तिपारपुर से ११ मील (बाकीपुर जंक्शन से ३९ मील) पूर्व वाट का रेलवे स्टेशन है । सूरेविहार के एटना जिले में गंगा के दहिने किनारे पर वाट एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वाट में १०३६३ मनुष्य थे, अर्थात् ९३०५ हिंदू, २९६५ मुसलमान, ५० जैन और ४३ क्रिस्तान ।

गंगा के किनारे पर देवताओं के कई मन्दिर, जिनमें उमानाथ महादेव का मन्दिर प्रधान है, बने हुए हैं । कसबे में देशी पैदावार की तिजारत होती है ।

मोकामा जंक्शन ।

मोकामा जंक्शन से रेलवे लाइन ३ ओर गई है ।

(१) मोकामा घाट से उत्तर की ओर बगाल नथवेष्ट रेलवे,—

मील—मसिद्धप्लेशन ।

२ मोकामाघाट ।

३२ सेमरियाघाट (घोट द्वारा) ।

६० समस्तीपुर जंक्शन ।

समस्तीपुर से पश्चिमोत्तर ३२

मील मुजफ्फरपुर जंक्शन, ८१

मील मोतीहारी, ९४ मील

सुगौली और १०८ मील बेति

या और समस्तीपुर से २३

मील उत्तर दरभंगा ।

मुजफ्फरपुर जंक्शन से द-

क्षिण कुछ पश्चिम ३१ मील

हाजीपुर ओर ३५ मील सो-
नपुर और ३५ मील सोनपुर।
दरभंगा जंक्शन से पश्चि-
मोत्तर १४ मील कमतौल,
२६ मील जनकपुर रोड,
४२ मील सीतामढ़ी और
६१ मील वैरगिनिया और
दरभंगा से पूर्वोत्तर १२ मील
सकरी, ४३ मील निर्मली,
५३ मील भभटियाही, ६०
मील राघनपुर ६७ मील प्र-
तापगज और ७५ मील कोशी
नदी के दहिने कनवाघाट ।

(२) मोकामा से पूर्व-दक्षिण
इष्टिंडियन रेलवे,—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
२० लक्षीसराय जंक्शन (आगे के
स्टेशन लक्षीसराय में देखो)।
(३) मोकामा से पश्चिम
इष्टिंडियन रेलवे;—
मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।
१७ वाढ़ ।
२८ वावतियारपुर ।
५० पटना शहर ।
५६ वांकीपुर जंक्शन ।
(आगे का स्टेशन पटना और
वांकीपुर में देखो) ।



चौथा अध्याय ।

(सूबे बिहार में) मुजफ्फरपुर,
मोतीहारी, बेतिया (स्वतंत्र)
नैपाल और मुक्तिनाथ ।

मुजफ्फरपुर ।

मोकामा जंक्शन से ६० मील उत्तर, कुछ पश्चिम, समस्तीपुर जंक्शन; और
समस्तीपुर से ३२ मील पश्चिमोत्तर मुजफ्फरपुर रेलवे का जंक्शन है । सूबे
बिहार के पटने विभाग के तिरहुत में (२६ अंश ७ कला २३ विकला उत्तर

अक्षांश और ८५ अंश २६ कला ५२ विकला (पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा, छोटी गंडकी नदी के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर मुजफ्फरपुर है।

सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय मुजफ्फरपुर कसबे में ४९१९२ मनुष्य थे; अर्थात् २७१६५ पुरुष और २२०२७ स्त्रियां। इन में ३५१९६ हिन्दू, १३६३८ मुसलमान, २४९ कृस्तान, ३ पारसी १ यहूदी, और १०५ दूसरे थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ७७ वां, बंगाल में १० वां और बिहार में ७ वां शहर है।

कसबा साफ है; इसकी सड़के, जो खास करके पूर्व से पश्चिम गई हैं, अच्छी बनी हुई हैं। बाजार में एक सीताराम का और दूसरा शिव का बड़ा मन्दिर और कयहरी के निकट एक बड़ा तालाब है। इन के अलावे मुजफ्फरपुर में सिविल कचहरियां जेलखाना, अस्पताल, और कई एक स्कूल हैं और छोटी गंडकी और रेलवे द्वारा बड़ी तिजारत होती है।

मुजफ्फरपुर कसबे से लगभग २० मील पूर्व, लखनदेई नदी के एक मील पश्चिम अंबराई गांव के निकट फागुन और वैशाख की शिवरात्रि के समय भैरवनाथ का मेला होता है और लगभग एक सप्ताह रहता है। मेले में बैल दड्डू और कपड़े बर्तन इत्यादि वस्तु विकती हैं। वहां भैरवनाथ महादेव का मन्दिर है।

मुजफ्फरपुर जिला—यह जिला तिरहुत के, जो सन १८७५ में दरभंगा और मुजफ्फरपुर दो जिले बने थे, पश्चिमी भाग में है। इसके उत्तर नेपाल का स्वाधीन राज्य; पूर्व दरभंगा जिला; दक्षिण गंगा, बाढ़ पटना जिला और पश्चिम चंपारन जिला और बड़ी गंडकी नदी, जो सारन जिले से इसको अलग करती है, है। जिले की सब से अधिक लम्बाई उत्तर से दक्षिण तक ९६ मील और सब से अधिक चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ४८ मील और इसका क्षेत्रफल ३००३ वर्गमील है। छोटी गंडकी नदी मुजफ्फरपुर कसबे के पास बहती है और बागमती, बड़ी गंडकी, लखनदेई और घया जिले की प्रधान नदियां हैं। इस जिले में गाय बहुतायत से पाली जाती हैं, उन के बच्चे दूर-२ के देशों में खरीद होकर जाते हैं।

• जिले में सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय २६४९४९२ और सन १८८१ में २५८२०६० मनुष्य थे; अर्थात् २२६५३८० हिन्दू, ३१६३०८ मुसलमान और ३७२ कृस्तान । जातियों के खाने में २९९१२७ अहीर, १८९८२७ दुसाध, १७१६३७ भूमिहार, १६७५९४ राजपूत १४१५५१ कोइरी, १२२८३७ चमार, ११५११७ कुर्मी, ९६२०६ ब्राह्मण, ८९८६३ माला, ८२१५२ काँदू, ५२७७३ धानुक और शेष में दूसरी जातियां थी । १८९१ में इस जिले के कसबे मुजफ्फरपुर में ४९१९२, हाजीपुर में २१४८७, लालगंज में १२४९३, मनुष्य थे । जिले में महनर, सरसोंधा, सोतामढ़ी, घटारो, बहिलवारा, कंता, शिवहर, मानिकचक, वसंतपुर, धनौली, इत्यादि बड़ी वस्तियां हैं ।

• मोतीहारी ।

मुजफ्फरपुर से ४९ मील (समस्तीपुर जंक्शन से ८१ मील) पश्चिमोत्तर मोतीहारी का रेलवे स्टेशन है । सूबे बिहार के पटना विभाग में चंपारन जिले का सदर स्थान एक झील के पूर्व किनारे पर मोतीहारी एक कसबा है ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मोतीहारी में १३१०८ मनुष्य थे; अर्थात् ९६०८ हिन्दू, ३४६३ मुसलमान, ३५ कृस्तान और २ बौद्ध । मोतीहारी में छोटा बाजार, सिविल आफिस, जेलखाना, नील की कोठी, अफीम का ओफिस, अस्पताल और स्कूल हैं । छपरे के जज दौरे के समय मोतीहारी में जाकर कचहरी करते हैं ।

अरेराज महादेव—मोतीहारी से ४ या ५ मील पश्चिमोत्तर एक पोखरे के पास अरेराज गांव में महादेव का मंदिर है । फाल्गुण की शिवरात्रि को वहां मेला होता है और लग भग १ सप्ताह रहता है । किसान लोग धान की चाल वहां चढ़ाते हैं । वालों की ढेर लग जाती हैं । बहुतेरे लोग शिव को पगड़ी चढ़ाते हैं, अर्थात् शिवके मंदिर से पार्वती के मंदिर तक पगड़ी दगा देते हैं । गांव में एक बहुत पुराना स्तंभ है ।

चंपारन जिला—यह सूबे बिहार के पश्चिमोत्तर कोने में पटना विभाग का जिला ३५३१ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । जिले के उत्तर म्वाधीन

नैपाल राज्य; पूर्व मुजफ्फरपुर जिला; दक्षिण मुजफ्फरपुर और सारन जिला; और पश्चिम पश्चिमोत्तर देश में गोरखपुर जिला और नैपाल राज्य का एक हिस्सा है। जिले का सदर स्थान मोतीहारी और प्रधान कसर्रा बेतिया है। जिले के उत्तरीय भाग में ऊंची नीची भूमि है। गंडकी नदी, जो यहाँ शालिग्रामी कहातो है, और इस जिले के पश्चिमी सीमा पर दूर तक बहती है, नैपाल राज्य में बहती हुई त्रिवेणी घाट के निकट इस जिले में प्रवेश करती है। छोटी गंडकी नदी, जिसका नाम स्थान २ में भिन्न २ है, जिले में बहती है, जिसको बहुत स्थानों में सूखी ऋतुओं में हल कर लोग पार होजाते हैं। वागमती नदी जिले की पूर्वी सीमा पर बहती है। जिले के भीतर १५० वर्गमील के क्षेत्रफल में ४३ झीलों का समूह जंजोर है। छोटी पहाड़ी नदियों की बालू धोकर कुछ सोना निकाला जाता है। लोग कहते हैं कि पहले बहुत सोना निकलता था। सम्पूर्ण जिले में भूमि के नीचे कंकड़ का एक तह है। जंगलों में सोबीता नामक घास, जिसके रस्से बनते हैं; नरकट, जिसकी चटाई बनती है; मधु, मोम, लाही इत्यादि वस्तु होती हैं।

जिले में सन् १८९१ ई० की मनुष्य गणना के समय १८५४०३८ और सन् १८८१ में १७२१६०८ मनुष्य थे; अर्थात् १४७६९८५ हिन्दू, २४२६८७ मुसलमान और १९३६ कृस्तान। जातिओं के खाने में १६९२७४ ग्वाला, ११२७८९ चमार, १०३८९३ कोइरी, ८८७२१ कुमी, ८१९६१ दुसाध ८०७६४ राजपूत, ७६२८४ ब्राह्मण, ६६५६२ काँदू, ५५४११ मल्लाह, ५२८४२ तेली, ४२८० भुंडहार, २८४११ कायस्थ, शेष में दूसरी जातियाँ थीं। सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय चंपारन जिले के कसबे बेतिया में २२७८० और मोतीहारी में १३१०८ मनुष्य थे। जिले में मधुवनी और केसरिया छोटे कसबे हैं और बेतिया, सोताकुंड, अरेराज और त्रिवेणी घाट में सालाना मेला होता है।

इतिहास—चंपारन जिले का कोई खास इतिहास नहीं है। सन् १८६६ ई० में सारन जिले के दो भाग करके चंपारन जिला बनाया गया। अतः सारन के मेशन जन नियत समय पर छपरे से आकर मोतीहारी में

कचहरी करते हैं। जिले के कई एक स्थानों में दिलचस्प पुरानी निशानियाँ हैं। सन् ई० से पहले चंपारन जिला मगध के राज्य का एक भाग था। अरेराज गांव में एक बहुत पुराना स्तम्भ और केसरिया गांव में एक ईंटे का बड़ा टीला, जिसके ऊपर ६२ फीट ऊँचा ६८ फीट व्यास के ईंटे का बहुत पुराना स्तूप है, देखने में आता है।

सन् १८५७ के बल्ले के समय जुलाई में सुगौली में सवारों की १२ वीं पल्टन अचानक बागी हो गई। सवारों ने अपने कमांडर और उसकी स्त्री और लड़को को तथा छावनी के सम्पूर्ण यूरोपियनों को मार डाला।

वेतिया।

मोतीहारी से २७ मील और मुजफ्फरपुर से ७६ मील पश्चिमोत्तर वेतिया का रेलवे स्टेशन है। बिहार के चंपारन जिले में सब से बड़ा कसबा, प्रधान तिजारती जगह और सब डिबीजन का सदर स्थान हबहा नदी के पास वेतिया है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय वेतिया में २२७८० मनुष्य थे, अर्थात् १४६६८ हिन्दू, ६८७८ मुसलमान और १२३४ कृस्तान।

वेतिया में यहां के महाराज का उत्तम महल बना हुआ है और एक रोमन कैथलिक चर्च, जो सन् १७४६ ई० में बना था, और खैराती अस्पताल है। प्रति वर्ष दशहरे के समय वेतिया में काली का बड़ा मेला होता है, जिस में लग भग ३०००० मनुष्य आते हैं और घोड़े, बैल, गाय, भैंस, कपड़ा, घर्तन, मिठाई, किराने की चीजें, आदि वस्तु विकती हैं। मेला १५ दिन तक रहता है। महाराज के महल के पास काली जी के मंदिर में काली की विचित्र प्रतिमा घनाकर रक्खी जाती है। अंत में उसको लोग नदी में बहा देते हैं।

इतिहास—सन् १६५९ ई० में राजा गजसिंह ने वेतिया को बसाया। दिल्ली के बादशाह शाहजहा ने उनको राजा की पदवी दी थी। सन् १८३० में लार्ड विलियम बेंटिग ने उस समय के राजा को महाराज की पदवी दी। वेतिया के महाराज सर हरेंद्रसिंह बहादुर के. सी. आइ. इ. के पिता महाराज इन्द्रकिशोरसिंह बहादुर बड़े दानी थे।

रामनगर—वेतिया से २५ मील पश्चिमोत्तर चंपारन जिले में रामनगर, जो केवल महाराज के रहने से मसिद्ध है, एक वस्ती है। वहाँ के राजा क्षत्री हैं; जिनके पुरुषों को दिल्ली के बादशाह औरंगजेब ने सन् १६७६ ई० में राजा की पदवी दी थी, और अंगरेजी गवर्नमेण्ट ने सन् १८६० ई० में उस पदवी को वृद्ध कर दिया। राज्य की मालगुजारी खास करके रामनगर के जंगलों से आती है।

नेपाल।

मोतीहारी और वेतिया के बीच में मोतीहारी से १३ मील और मुजफ्फरपुर से ६२ मील पश्चिमोत्तर सुगौली में रेलवे का स्टेशन है। यात्री लोग वहाँ रेलगाड़ी से उतर कर नेपाल के काठमांडू में पशुपतिनाथ के दर्शन के लिये जाते हैं। सुगौली से उत्तर पहाड़ी मार्ग से ९० मील काठमांडू है। सुगौली से भीमपदी तक ६६ मील जाने के लिये गाड़ी और पाळकी की सवारी मिलती है। प्रत्येक बंदर का भाडा ३ रुपये से कम लगता है। भीमपदी से उत्तर पहाड़ के ऊपर जाने के लिये छींका (कण्डी) और झूला की सवारी मिलती है। छींका बांस या बेंत का एक टोकड़ा है, जिसको नेपाली लोग वोको कहते हैं। पहाड़ी झूली उसमें आदमी को बैठा कर पीठ पर पीछे लटका लेते हैं और एक लठी हाथ में लेकर उसी के सहारे से चढ़ते हैं।

काठमांडू का मार्ग—सुगौली के रेलवे स्टेशन से १७ मील रक्सौल, ३० मील सिमरावासा, ४० मील बिचकी, ४६ मील चूड़ियाघाटी, ५२ मील हिटाई, ६६ मील भीमपदी, ६८ मील सीसागढ़ी, ७१ मील ताम्बा खानि, ७९ मील चिटंग, ८१ मील यानकोट और ९० मील काठमांडू है। इन सब स्थानों में रहने के लिये मकान और खाने पीने का सब सामान मिलता है।

सुगौली के स्टेशन से हर्दिया कोठी की राह होकर १७ मील उत्तर अंगरेजी और नेपाल राज्य की सीमा पर रक्सौल है। सुगौली से रक्सौल तक रेल बनाने की तजवीज होती है। रक्सौल से आगे १३ मील सिमरा वासा है। सिमरा वासा से नेपाली तराई का जंगल आरंभ होता है और जंगल के

बीच में बालू और कंकड़ की राह से १० मील पर बिचकी नामक स्थान पर पहुँचना होता है। बिचकीसे ६ मील चूबियाघाटी तक पहाड़ी रस्ता है। चूबिया-घाटी से हिटाई तक ६ मील नीचा ऊँचा कठिन रास्ता मिलता है। सम्पूर्ण मार्ग के पास की भूमि बाँस और वृक्षों के घने जंगल से ढकी हुई है। हिटाई से आगे १४ मील भीमपदी तक तीव्रगामिनी नदी के किनारे किनारे मार्ग बहुत सुन्दर है। भीमपदी हिमालय के पाँच पर स्थित है। वहाँ बाजार और गोले हैं। वहाँ तक बैल और टट्टू जाते हैं और हलकी गाड़ी भी जा सकती है। उससे आगे केवल कूली बोझ ले जाते हैं। भीमपदी से करीब २ मील सीसागढ़ी किले तक ऊँची चढ़ाई है, जहाँ नेपाल के महाराज के अफसर रहते हैं। सीसागढ़ी से आगे ३ मील ताम्बाखानि तक पानीनी नामक नदी के किनारे मार्ग क्रमशः नीचाही होता चला गया है। ताम्बाखानि से आगे ८ मील चिटंग तक मार्ग बड़ा दुस्तर है। राहसर्वत्र ढालू है। इस रास्ते से धीरे धीरे पाँच रख कर बड़े भयसे चलना होता है। जगह जगह समतल भूमि है, जहाँ थक जाने से आदमी विश्राम कर लेता है। चिटंग से उलटी सीधी चक्रदार राह से चन्द्रगढ़ी पहुँचना होता है। वहाँसे फिर नीची भूमि मिलती है। ढालू मार्ग से २ मील उतर कर थानकोट में यात्री पहुँचते हैं। थानकोट से आगे ९ मील काठमांडू तक मार्ग सुन्दर और चौड़ा है।

काठमांडू—नेपाल की राजधारी काठमांडू (२७ अंश ४२ कला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश १२ कला पूर्व देशांतर में) हिमालय पहाड़ की एक घाटी में समुद्र के जल से लगभग ४५०० फीट उपर विष्णुमती और बागमती नदों के संगम के निकट, विष्णुमती के पूर्व किनारे पर एक सुन्दर शहर है। विष्णुमती नदी पर दो पुल बने हैं, जिन में से एक पर होकर एक सबक शहर से हथियार खाना और परेड की भूमि तक और दूसरे पर होकर दूसरी सबक सीधी शंभुनाथ के मंदिर को गई है। शहर के मकान जो खास कर ईंटे से बने हुए और खपटों से छाए हुए हैं, २ मंजिले से ४ मंजिले तक बने हैं। उन में से बहुतेरों में बाठ का बहुत काम है और खिचकियाँ तथा बालाखाने बने हैं, जिनमें उत्तम नकाशी का काम है। काठमांडू में कभी मनुष्य

गणना नहीं हुई; किंतु शहर में ५००० मकान और ५०००० मनुष्य अनुमान किए गए हैं। शहर की सड़कें तंग और मैली हैं। महाराज का महल, दरबार स्थूल, वीर अस्पताल इत्यादि मकान देखने योग्य हैं। शहर की सम्पूर्ण सड़क और गलियों के बगलों में देवमंदिर देख पड़ते हैं। शहर के पूर्वोत्तर फाटक से दक्षिण राजा प्रतापमाली और उसकी रानी का बनवाया हुआ रानीपोखरी नामक तालाब के मध्य में एक मंदिर है। तालाब के पश्चिम किनारे पर एक छेवा पुल बना है। परेड की भूमि से पश्चिम पूर्व समय के नेपाल राज्य के प्राइम मिनिस्टर जनरल भीमसेन थापा का बनवाया हुआ एक पत्थर की नेव पर २५० फीट ऊंचा सुन्दर स्तम्भ है। वागमती के किनारे पर नेपाल के प्राइम मिनिस्टर सर जंगबहादुर के बनवाये हुए मंदिर के पास एक ऊंचे स्थान पर सर-जंगबहादुर की प्रतिमा खड़ी है। काठमांडू से लगभग १ मील दक्षिण वाग मती के उत्तर किनारे पर पुल के पास एक बड़ी इमारत है, जिसमें सर जंगबहादुर रहते थे। शहर से १ मील उत्तर अंगरेजी रेजीडेन्ट के रहने की कोठी है। शहर से पूर्वोत्तर गत प्राइम मिनिस्टर सर रणोद्दोर्पासिंह के रहने का स्थान फैला हुआ है। काठमांडू और इसकी शहर तलियों में लगभग १२००० फीज और १५९ तोपें रहती हैं और कई एक मेगजीन बने हैं। काठमांडू के पड़ोस में भातगांव, यादन और थानकोट कसबे हैं। काठमांडू के निवासियों में नेवार जाति के आदमी अधिक हैं। इनमें से लगभग आधे बौद्ध मतावलम्बी हैं।

काठमांडू से २ मील दक्षिण, पूर्व की झुकता हुआ, वागमती नदी के पार ललितपट्टन कसबा और ८ मील पूर्व, अग्निकोन को झुकता हुआ भातगांव कसबा है, जिसमें गुरु दत्तात्रेय का मन्दिर और महाराज का एक महल बना है और ब्राह्मण बहुत घसते हैं। काठमांडू से ४१ मील पश्चिम वायु कोन को झुकता हुआ गोरखा वस्ती है, जिसमें गोरखनाथ का एक मन्दिर बना हुआ है।

महाराज का महल-शहर के मध्य में पत्थर से बना हुआ बहुत बड़ा महाराज का महल है। इसमें उत्तम प्रकार से नकाशी का काम हुआ है। महल के उत्तर तालीजू का मन्दिर; दक्षिण बसन्तपुर और नया दरबार, पूर्व शाहीबाग और अस्तबल, और पश्चिम महल का प्रधान अग्र भाग है। महल

के आगे सुन्दर सड़क और बहुतेरे देवमन्दिर हैं, जिनमें से बहुतेरो के शिखर में एकहरी, दोहरी तथा तेहरी चौकूटी अर्थात् एक प्रकार की छाजनी, जो मुलम्बे-दार तांबे के पत्तर या पीतल के पत्तरो से छाई हुई हैं, बनी हैं । चौकूटियों के चारों बगलों की ओरियानियों में बहुतेरी छोटी घंटियां, जो हवे से घजतो हैं, लगी हैं । मन्दिर उत्तम नकाशी और रंगों से भूषित हैं । कई एक मन्दिरों के द्वार के पास पत्थर के २ बड़े सिंह बने हुए हैं और कई एक के आगे गरुड़ की प्रतिमा है । महल से कुछ दूर पर एक मन्दिर के निकट पत्थर के २ स्तंभों में एक बहुत बड़ा घण्टा लटका है और एक मकान में ८ फीट व्यास वाले २ बड़े नक्कारे रखे हुए हैं । महल के अग्र भाग के आगे सड़क है ।

तालीजू का मन्दिर—राजमहल के पास उत्तर ओर ऊपर लिखे हुए मन्दिरों के ढाँचे का तालीजू का विशाल मन्दिर है । लोग कहते हैं कि सन् १५४९ में राजा महेंद्रमाली ने इसको बनवाया । केवल राजपरिवार के लोग इसमें पूजा करते हैं ।

मुछंदरनाथ का मन्दिर—वागमती नदी के पास मुछंदरनाथ का सुन्दर मन्दिर है । मुछंदरनाथ नेपाल के प्रधान देवता हैं । लोग इनको नेपाल का रक्षक समझते हैं । मेख की संक्रांति के दिन बड़ी धूम धाम से मुछंदरनाथ की रथयात्रा का उत्सव होता है ।

कथा ऐसी है कि एक समय नेपाल में १२ वर्ष निर्वर्षण हुआ । लगभग सन् ४३७ ई० में नरेंद्रदास नामक एक नेपाली राजा एक प्रसिद्ध बौद्ध संत को आसाम से नेपाल में लाया । संत के आने पर बड़ी वर्षा हुई और अकाल जाता रहा । तब नरेंद्रदास ने उस संत के स्मरणार्थ उसके नाम से मुछंदरनाथ का मन्दिर बनवाया और एक सालाना तिहवार नियत किया, जो अब तक होता है और सब तिहवारों से बड़ा समझा जाता है ।

पशुपतिनाथ का मन्दिर—महाराज के महल से १ कोस उत्तर, एक चौगान के भीतर पशुपतिनाथ का मन्दिर है, जिस के चारो ओर दरवाजे और दालान बने हैं । मन्दिर के मध्य में प्रायः ३ हाथ ऊंची पाषाणमयी पंचमुखी पशुपतिजी की मूर्ति है । मूर्ति के चारो ओर छोटे का जंगला बना है ।

मन्दिर के एक तरफ दालान से बाहर सोनहलाभिलम्बोदार बहुत बड़ा नन्दी और एक तरफ दालान में घंटा है। मन्दिर के पूर्य तरफ विष्णुमनी नदी बहती है, जिस में यात्री लोग स्नान करते हैं। नदी पर बड़ा पुल है, जिस से होकर मातगांव जाना होता है। जो लोग गंगाजल लेजाते हैं, वे उसको पंढाओं द्वारा पशुपतिनाथ पर चढ़ाते हैं। मन्दिर के समीप बहुतेरी पक्की दो भंजिली धर्म-शालाएँ बनी हैं, जिनमें यात्री लोग ठिकते हैं।

फाल्गुन में पशुपतिनाथ के दर्शन का मेला होता है। कृष्ण पक्ष की शिव-रात्रि के दिन मन्दिर में बड़ी भीड़ होती है। कभी कभी उस दिन नेपाल के महाराज पशुपतिनाथ के दर्शन के लिये आते हैं। दूसरे तीर्थों के समान नेपाल के पण्डे यात्रियों से कुछ दृढ़ नहीं करते। वे थोड़े ही में प्रसन्न होजाते हैं। मन्दिर के आस पास कई मीलों के बीच में अनेक देव देवियों के मन्दिर हैं, जिन में गुह्येश्वरी, वागीश्वरी और भणेशजी प्रसिद्ध हैं।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—लिंगपुराण—(७ वां अध्याय) पिशाच से देवता पर्यन्त सब जीव पशु कहाते हैं, उन सब का स्वामी होने से शिवजी का नाम पशुपति पड़ा है।

दूसरा शिवपुराण—(८ वां खण्ड—१५ वां अध्याय) नेपालमें पशुपतिनाथ शिवलिंग है, वे महिष भाग अर्थात् मैंसे के शरीर के एक भाग है।

(२७ वां अध्याय) जब राजा पाण्डु के लड़के केदार में गए, कि केदारेश्वर के दर्शन करके अपने पापों से छूटें; तब शिवजी मैंसे का रूप धर कर वहां से भाग चले। उस समय उन्होंने ने अति प्रेम से यह विनय किया कि हे प्रभो जो पाप हम को महामारत के युद्ध में हुआ है, उसको तुम दूर करो और इसी स्थान पर स्थित होजाओ। तब शिवजी अपने पिछले घड़ से उसी स्थान पर स्थित हो गए और अगले घड़ से नेपाल में जा विराजे। वह हरिहर रूप से वहां सब को सुख देते हैं।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-१३९ वां अध्याय) वाराहजी बोले कि नेपाल नामक स्थान में जो पशुपति नामक शिवजी हैं, उनके जटाजूट से श्वेतगंगा नामक तीर्थ प्रकट हुआ, जिससे छोटी छोटी अनेक नदियां निकलकर गङ्गाकी, कृष्णा,

आदि नदियों में मिलीं । और 'त्रिशूलगंगा' नामक एक नदी निकली, जिस में अनेक पवित्र नदियाँ आकर मिल गईं । इन सप्त नदियों का संगम अति पवित्र है ।

(२०९ वां अध्याय) शिवजी ने देवताओं से कहा कि हम हिमवान् पर्वत के तट में नेपाल नामक देश में पृथ्वी को भेदन कर चारमुख धारण कर के उत्पन्न होंगे, तब हमारा नाम शरीरेश होगा । वहाँ हम घोर नागहृद नामक कुण्ड के जल में ३० हजार वर्ष तक निवास करेंगे । जब वृष्णि कुल में उत्पन्न होकर श्रीकृष्णजी इन्द्र की सम्मति से दैत्यों के वध के निमित्त निज चक्र से पर्वत को तोड़ कर दानवों का संहार करेंगे, तब वह देश मुँच्छों करके सेवित होगा, अर्थात् दानवों के मारने के अनन्तर वहाँ मुँच्छ निवास करेंगे । तिस के कुछ काल बीतने पर सूर्यवंश के क्षत्रिय आकर उन मुँच्छों का संहार कर उत्तम उत्तम कुल के ब्राह्मणों को बसावेंगे और चारो वर्णों को स्थापन कर हमारे लिंग की प्रतिष्ठा करेंगे । उस लिंग को पूजने से चारो वर्ण के मनुष्य सब भाँति के सुख को प्राप्त करेंगे ।

नेपालराज्य—तिब्बत और अंगरेजी राज्य के बीच में हिमालय के दक्षिणी सिलसिले पर नेपाल स्वाधीन राज्य है । इस के उत्तर तिब्बत की सीमा पर कुचक्रता; पश्चिम काली नदी, जिसको सारदा भी कहते हैं, बाद अंगरेजी राज्य के कमाऊँ देश, दक्षिण पश्चिम और दक्षिण अंगरेजी राज्य में पोलीमीत, खोरी, बहराइच, गोंडा, बस्ती, मोरखपुर, चंपारन, मुजफ्फरपुर, दरभंगा, भागलपुर और पुर्नियाँ जिले और पूर्व सिमाथारीज और शिकम के पहाड़ी राज्य हैं । नेपाल की सबसे अधिक लम्बाई पूर्व से पश्चिम को लगभग ५०० मील और चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को ७० मील से १५० मील तक और इस का क्षेत्रफल अनुमान से ५४००० वर्गमील है । राज्य की अनुमान की हुई मनुष्य-संख्या ३०००००० और मालगुजारी १००००००० रुपये से अधिक है । राजधानी और उस के आस पास के देश में १७००० और राज्य में १३०० फीज रहती हैं ।

नेपाल राज्य का पहाड़ी सतह अत्यंत ऊँच खायर अर्थात् नीचा ऊँचा है । इस की ऊँची चोटियों में से एवरेस्ट पर्वत समुद्र के जल से २९००० फीट उँचा

है। पृथ्वी के जितने पहाड़ देखने में आते हैं, उन सबों में यह ऊँचा है। उत्तरीय सीमा की सम्पूर्ण चोटियाँ सर्वदा रहने वाली वर्ष की चोटियों के बराबर या उनसे अधिक ऊँची हैं। और राज्य की दक्षिण सीमा का देश, जो तराई कहलाता है, और उस पर खेती की भूमि फैली है, नीचा और तराई। पहाड़ी घाटियाँ, जो बंगाल के मैदान से ३००० से ६००० फीट तक ऊपर हैं, बहुत तंग हैं। काठमांडू की घाटी समुद्र के जल से लगभग ४००० फीट ऊँची; पूर्व से पश्चिम को लगभग २० मील लम्बी और उत्तर से दक्षिण को प्रायः १५ मील चौड़ी है। ऊँची जगहों पर सदी अधिक रहती है।

जंगलों में जंगली जंतु बहुत हैं। निचली और मध्य की पहाड़ियों में अब तक हाथी रहते हैं। तराई में गैंडा, बाघ और तेंदुए बहुत होते हैं। वनों में वेश कीमती लकड़ियाँ, जो दूसरे देशों में जाती हैं, बहुतायत में हैं। पहाड़ियों में लोहा, ताँबा और गंधक की बहुत खानें हैं और मार्बल आदि कई प्रकार के सज्ज पत्थर बहुत होते हैं, किंतु गाड़ी के मार्ग नहीं होने के कारण वे काम में नहीं लाए जाते। पहाड़ियों में स्लेट बहुत है। नेपाल राज्य में बनाई हुई सड़क बहुत कम हैं, किंतु सूखी ऋतुओं में गाड़ी और बैल चलते हैं। नदियों में नाव नहीं चलती हैं, किंतु लोग उन में लकड़ी बहा कर दूर दूर तक ले जाते हैं।

गन्धक, तेल के अनेक प्रकार के बीज, मखसरी, घो, लकड़ी चमड़ा, ममाला इत्यादि नेपाल राज्य से अन्य देशों में जाते हैं और ऊनी और रेशमी असबाब नमक, चीनी, रुई इत्यादि वस्तु दूसरे देशों से नेपाल में आती हैं। तेजपात और बड़ी इलायची बहुत उत्पन्न होती हैं। नेपाल में चाँदी का सिक्का मोहर कहलाता है और दो मोहर का मोहरी रुपया होता है। एक मोहर का दाम अंगरेजी रुपये का ६ आना ८ पाई होता है। ताँबे के पैसे ३ प्रकार के होते हैं, — (१) घुटवालिया, जिस की गोरखपुरी भी कहते हैं (२) लोहिया और (३) गोलपैसा। ये तीनों पैसे उत्तरीय भारत के अंगरेजी राज्य में चलते हैं।

नेपाल के राज्य में पहाड़ों के पादमूल के पास कालीगंगा नामक नदी के किनारे पर मकर की संक्रांति के समय बेंचपाट का मेला होता है। मेला लगभग दो सप्ताह रहता है। उस में कपड़ा, बर्तन, मसाले इत्यादि वस्तु बिकती हैं। नेपाल

और अंगरेजी राज्य के बहुत लोग मेले में जाते हैं। नदी के दूसरे पार पहाड़ी पर देवनाथ महादेव का मन्दिर बना हुआ है। नदी में पार उतारने वाली नाव रहती है। व्यापारी लोग ब्रेतिया से चार पांच दिन में देवघाट पहुंचते हैं।

नेपाल की राजधानी काठमांडू है। गोरखा और ललितापट्टन भी अच्छे कसबे हैं। इस राज्य के मनुष्यों के प्रधान भोजन की वस्तु चावल है। बहुतेरे भागों में वर्ष में ३ फसिल होती है। पहाड़ियों में किसी किसी जगह हल और बैलगाड़ी देखने में आती है। वहां के लोग खेत बोने का काम हाथ से करते हैं। भेड़ और बकरियों पर बोझ लादे जाते हैं। तराई में अफीम, टेलहन और तंबाकू बहुत उत्पन्न होते हैं।

इस राज्य में तातारी और चीनी नसल की बहुत जात हैं। देशी निवासी में नेवारा बहुत बौद्ध मतवाले हैं। राजवंश के लोग, जिनकी संख्या कम है, गोरखा कहलाते हैं। उनको भाषा हिंदी के समान है। वे लोग छोटे कद के होते हैं; परंतु बड़े लड़ाके हैं। सरकार अंगरेज बहादुर की फौज में गोरखों की कई पल्टन हैं। राज्य के पूर्वी भाग में आदि निवासी कोम; पश्चिमी भाग में नागर, सुरंग, नेवार, लेंबू, लेपचा, भूटिया, कासवार, थारु इत्यादि बहुत बसते हैं। राज्य के प्रधान निवासी गोरखाली हैं, उनमें ब्राह्मण तो पांडे और उपाध्याय और राजपूत कुश और थापा कहलाते हैं।

भारत गवर्नमेंट ने सन् १८२९ ई० में सती होने की रीति उठा दी, पश्चात् क्रम क्रम से भारतवर्ष के देशी राज्यों से भी यह चाल उठ गई, किंतु स्वाधीन हिंदू राज्य नेपाल में यह प्रथा अब भी प्रचलित है। जो स्त्री अपने पति के मरने पर सती होने की इच्छा प्रकट करती है, वह अपने पति की रथों के संग एक दूसरी रथी पर चढ़ कर सिन्दूर अपने शरीर में लगा कर अक्षत इत्यादि कई वस्तु छीवती हुई बहुत लोगो के साथ श्मशान में पहुंचती है। वहाँ के लोग एक ही चिता पर मृतक के संग उस स्त्री को सुलाकर जलाते हैं। जलने के समय कई आदमी घास में उस स्त्री को दबाए रहते हैं।

इतिहास-ऐसी कहावत है कि काठमांडू शहर का नाम पहले मंजपा-

टन था, क्योंकि उसकी मंजुश्री ने बसाया । बौद्ध नेवारा लोग कहते हैं कि मंजुश्री की तलवार की शकल में यह शहर बसा हुआ है । लगभग सन् ७२३ ई० में राजा गुनकमधेव ने काठमांडू को नियत किया । इसका वर्तमान नाम एक पुराने काठ के मकान से काठमण्डी हुआ । काठमण्डी का अपभ्रंश काठमांडू है । इस देश में मंदिर और मकान को लोग मंदी कहते हैं ।

• नेपाल का वर्तमान राजवंश गोरखा छती है । राजपूताने-मेवाड़ के चित्तौड़ गढ़ का सिसोदिया राजपूत समरसिंह, जिस का विवाह दिल्ली के राजा पृथ्वीराज की बहन से हुआ था, सन् ११९३ ई० में महम्मदगोरी की लड़ाई में अपने शाले पृथ्वीराज के साथ मारा गया । समरसिंह का बड़ा पुत्र कल्याण अपने पिता के साथ परलोक को सिराया । दूसरा पुत्र कुम्भकर्ण बीदर को चला गया और तीसरा पुत्र कमाऊ में जा बसा । ऐसा प्रसिद्ध है कि उस के वंशधर लोग पीछे पहाड़ी कन्याओं से विवाह करने लगे और गोरखा में, जो नेपाल राज में काठमांडू से पश्चिमोत्तर की ओर एक अच्छा कसबा है, जाकर रहने लगे । वहां वे लोग करीब दोसौ बरस तक रहे, उससे पश्चात् खास नेपाल के साथ उनका संबंध हुआ । गोरखा में रहने के कारण से वे लोग गोरखा जाति कहे जाते हैं ।

नेपाल के प्राचीन काल का इतिहास ठीक तौर से ज्ञात नहीं होता है; किंतु ऐसा जान पड़ता है कि किसी एक राजाने बहुत काल तक राज्य न किया । इस राज्य को कोई दिल्ली के बादशाह या कोई दूसरे एशिया के विजय करने वाले अपने अधिकार में कभी नहीं लाए । ऐसा कहा जाता है कि अवध के राजाओं में से एक राजा हरीसिंह ने, जिसको मुसलमानों ने निकाल दिया था, सन् १३२३ ई० में इस को पूरी तौर से जीता, किंतु उससे पोलें का घनात ज्ञात नहीं होता है कि कब कौन राजा हुआ । भातगांव के सूर्यवंशी राजाओं में, जिन्होंने नेपाल में राज्य किया था, रणजीतमल अन्तिम राजा था । उसने काठमांडू के ब्रह्म पृथ्वीनारायण से मित्रता की । उस मित्रता का फल यह हुआ कि सन् १७६८ ईस्वी में पृथ्वीनारायण ने उसका राज्य ली लिया । गोरखा लोग सन् १७६९ में राजा को पाटन में जीत करके मपूर्ण घाटी

के मालिक बन गए और काठमांडू में अबसे और धीरे धीरे नेपाल की पहाड़ियों और घाटियों को अपने अधिकार में लाए। सन १७७१ में पृथ्वीनारायण मर गए। सन १७७५ में उनके पुत्र सिंहप्रताप अपने बच्चे पुत्र रणवहादुर शाह को छोड़ कर मर गए। लग भग सन १६९२ ई० में भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लार्ड कर्नवालिस ने नेपालियों के साथ एक तिजारती संधि की।

गोरखे लोग कभी पूर्व में शिकम पर, कभी पश्चिम कमाऊं पर और कभी दक्षिण ओर गंगा के मैदानों पर चढ़ाई करते थे। जब गंगा के मैदान में अंगरेजी मजा को उन से दुख पहुंचा, तब अंगरेजी सरकार ने नेपाल पर चढ़ाई की। सन १८१४ की पहली चढ़ाई में अंगरेजी सेना परास्त हुई, किंतु उसी साल गरमी के मौसिम में जनरल अर्क्टरलोनी ने सतलज नदी से फौज उतार कर एक एक कर के नेपालियों के पहाड़ी किले जीत लिए। वह किले हिमालय की रियासतों में पंजाब गवर्नमेंट के आधीन अब तक विद्यमान हैं। दूसरे साल सन १८१५ ई० में अर्क्टरलोनी ने बड़ी तेजी के साथ पटने से काठमांडू की ऊपरी खाड़ी पर चढ़ाई कर दी। जब अंगरेजी फौज राजधानी के निकट पहुंची, तब नेपालियों ने मुलह किया। तारीख २८ नवम्बर सन १८१५ में संधि हुई। और ता० ४ मार्च सन १८१६ में सुगौली में अहदनामा पक्का हुआ। उस के अनुसार पूर्व में शिकम के राजा की भूमि, जो नेपालियों ने दबा ली थी, उस को लौटा दी और पश्चिम में काली नदी नेपाल राज्य की पश्चिम सरहद ठहरी। नैनीताल, मंसूरी और शिमला की मेहत देनेवाली जगहें अंगरेजों के हाथ आईं और काठमांडू में एक रेजीडेंट का रहना करार पाया, परंतु दूसरे देशी राज्यों के समान नेपाल में राज कार्य में हस्तक्षेप करने का अधिकार रेजीडेंट को नहीं है। यह स्वाधीन हिन्दू राज्य है।

सन १८१६ ई० में नेपाल के महाराजधिराज रणवहादुर शाह २१ वर्ष की अवस्था में परमधाम में गए। उनकी स्त्रियों में से १ स्त्री और रखेलिनियों में से १ रखेलिनी ५ लौहियों सहित उनके साथ सती हो गईं। रणवहादुर शाह के पुत्र महाराजाधिराज राजेन्द्र विक्रमशाह उत्तराधिकारी हुए।

एक ऊंचे दरजे के आदमी का भतीजा सर जंगवहादुर हाल के माइम

मिनिष्टर थे, जो रानी के कहने पे अपने घेचा को मार कर फौज का कमाण्डर बने और नई मिनिष्टर कायम हुई। थोड़ेही दिन बाद नया प्रधानमंत्री मारा गया और जंगवहादुर सन् १८४६ ई० में माइम मिनिष्टर हुए। उसके पश्चात् जंगवहादुर को मारने के लिये कपट प्रवन्ध हुआ, किंतु जंगवहादुर ने कपट प्रवन्ध करने वाले के साथियों को मार डाला। रानी अपने दो पुत्रों के साथ देश से निकाली गई, राजा भी उनके साथ गए। राजा के वारिश महाराजाधिराज सुरेन्द्रविक्रमशाह राजसिंघसन पर बैठाए गए। कुछ दिन के बाद पहले राजा राजेन्द्रविक्रमशाह अपना राज्य पाने का उद्योग करने लगे, किंतु जंगवहादुर ने अपनी चातुरता से उनका मनोरथ सफल होने नहीं दिया, राजा कैदी बनाए गए।

“जंगवहादुर सर्वदा अंगरेजी सरकार के मित्र थे। सन् १८५७ के घलबे में उन्होंने अंगरेजों को गोरखों की फौज की सहायता देकर अपनी मित्रता का सच्चा परिचय दिया था। जंगवहादुर सन् १८७७ ई० की तारीख २५ वीं फरवरी को मर गए, उनके साथ एक बड़ी रानी और २ छोटी रानियां सती हो गईं।

जंगवहादुर के बाद उनका भाई रणोद्धीपसिंह माइम मिनिष्टर हुआ। सन् १८८५ के नवम्बर में सर जंगवहादुर के एक भतीजे वीरशमशेरजंग ने रणोद्धीपसिंह और जंगवहादुर के एक लड़के और एक पोते को मार डाला और आप माइममिनिष्टर बन गया। नेपाल के वर्तमान राजा हिज हाईनेस शमशेर-जंगवहादुर युवा अवस्था के हैं।

सुक्तिनाथ ।

काठमांडू से उत्तर गंडकी नदी के घाट किनारे सुक्तिनाथ एक तीर्थ है। दस बारह दिन में काठमांडू से लोग वहां पहुंचते हैं। मार्ग पहाड़ी है। वहां गंडकी नदी में, जिसको शालग्राम के निकलने के कारण लोग शालग्रामी और नारायणी नदी भी कहते हैं, बूढ़ी मारने योग्य जल नहीं है। नदी में विविध भाति के सुन्दर अमंख्य शालग्राम निकलते हैं। यात्रीगण वहां से अनेक शाल-

ग्राम अपने गृह को ले आते हैं । नदी के आस पास छोटे बड़े पन्द्रह बीस देवमन्दिर बने हुए हैं और ७ गर्भ सोतों से पानी निकल कर नारायणी नदी में गिरता है । उनमें से अग्निकुंड का सोता एक मन्दिर के भीतर पहाड़ से निकलता है । उसके पानी पर ज्वालामुखी की गोरखडिब्बी के समान अग्नि की ज्वाला रहती है ।

काठमांडू से ८ मजिल उत्तर बर्किस्तान में नीलकण्ठ महादेव हैं, वहां भी गर्भ पानो का कुंड देखने में आता है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत (९ वां स्कंध -१७ वें अध्याय से २४ वें अध्याय तक) और ब्रह्मवैवर्तपुराण (प्रकृतिखंड के १५ वें अध्याय से २१ वें अध्याय तक) लक्ष्मीजी शाप के कारण से धर्मध्वज की पुत्री हुईं, तब उनका नाम तुलसी पड़ा । तुलसी का विवाह शंखचूड़ से हुआ । जब विष्णु ने ब्राह्मण रूप धर कर शंखचूड़ का कवच मांग लिया और छल से तुलसी से रमण किया, तब शंखचूड़ शिवके हाथ से मारा गया । तुलसी ने विष्णु को शाप कि तुम संसार में पापाण रूप होगे । विष्णुने कहा कि तुलसीको वेद भरतखंड में गंडकी नामक नदी होगी । उसके पश्चात् तुलसी विष्णु लोक में चली गईं । उसका शरीर गंडकी नदी और उसके केशों का समूह तुलसी वृक्ष हुआ । विष्णु शालग्राम शिला हुए (यह कथा शिवपुराण पांचव खंड के ३८ वें और ३९ वें अध्याय में है) ।

धाराहपुराण—(१३८ वां अध्याय) एक समय विष्णु भगवान् तप कर रहे थे, शिवजी वहां प्रकट होकर उन से बोले कि हे भगवन् तप करते समय तुम्हारे गंडस्थान अर्थात् कपोल से स्वेद उत्पन्न हुआ है; इस स्वेदरूपी जल से लोक में गंडकी नामक नदी प्रसिद्ध होगी और तुम उस नदी के गर्भ में सदा निवास करोगे । जो मनुष्य संपूर्ण कार्तिक मास में इस नदी में स्नान करेंगे, वे मुक्तिफल पावेंगे ।

एक समय गंडकी नदी के एक ग्राह ने जलक्रीडा करते हुए एक हाथी का पैर पकड़ लिया, तब दोनों युद्ध करने लगे । उस समय वरुण देवता के निन्दन से विष्णु भगवान् ने वहां आकर सुदर्शन चक्र से ग्राह का मुख फाड़ कर

गङ्गा को जल से बाहर निकाला । उस समय चक्र के वेग से गंडकी की शिला बहुत ही चिन्हित होगई । उन चिन्हों से भावो वस वज्रकीट नामक क्रिमी उत्पन्न हुए और गंडकी में चक्र उत्पन्न होते हैं । विष्णु ने कहा कि भक्त की रक्षा के निमित्त हमारी आज्ञा से सुदर्शनचक्र ने गंडकी नदी में जहां जहां भ्रमण किया है, वहां सर्वत्र पापाणो में सुदर्शनचक्र का चिन्ह होगया है । इस लिये पापाणों का नाम गंडकीचक्र होगा । वह स्थान चक्रतीर्थ वह लावेगा । मनुष्य वहां स्नान करने से अति तेजस्वी होकर सूर्यलोक में निवास करेगा । जिस दिन से शालंकायन के शिष्य नंदी आमुख्यायन को गोपन सहित मथुरा से लाए, उस दिन से उस स्थान का नाम हरिहरक्षेत्र हुआ ।

जिस शालग्रामक्षेत्र में शिवजी ने विष्णु भगवान् को वरदान से निवास किया, उस क्षेत्र में स्नान करके पितरों का तर्पण करने से पितरगणों को स्वर्ग मिलता है । शालग्राम क्षेत्र चारो दिशाओं में बारह बारह योजन है । वहां विष्णु भगवान् शालग्राम रूप से सर्वदा निवास करते हैं (१३९ वां अध्याय) शालग्रामक्षेत्र हरिहरात्मक अर्थात् विष्णु और शिव का रूप है ।

पद्मपुराण—(पातालखण्ड, ७९ वा अध्याय) गण्डकी नदी के एक छोर में शालग्राम का महास्थल है । उसमें से जो पापाण उत्पन्न होते हैं, वे शालग्राम कहते हैं ।

(उत्तरखंड, ७५ वा अध्याय) गण्डकी नदी में शालग्राम शिला बहुत होती है । वह नदी उत्तर में प्रकट हुई है, वहां नारायण सर्वदा स्थित रहते हैं । जो मनुष्य शंख और चक्र के चिन्ह धारण करके वहां निवास करता है, वह मृत्यु के पश्चात् चतुर्भुज रूप धारण करके विष्णु के लोक में जाता है । वहां अनेक प्रकार की बहुत मूर्तियां देख पड़ती हैं । चारो वर्ण के मनुष्य गण्डकी नदी के जल स्पर्श करने से ब्रह्महत्यादि पापों से विमुक्त हो जाते हैं । उस क्षेत्र को विष्णु भगवान् ने रचा था । ब्राह्मण लोगो को आपाद मास में उस स्थान पर जाकर शंख चक्रादि चिन्ह धारण करना उचित है । जो ब्राह्मण अपने बाएं हाथ में शंख और दहिने हाथ में चक्रादि चिन्ह धारण करते हैं वे मुक्ति पाते हैं ।

(१२० वां अध्याय) शालग्रामशिला स्नान का जल पीने से मनुष्य को गर्भ-वास का भय छूट जाता है और नित्य ही शालग्राम के पूजन करने से जन्म मृत्यु का भय नहीं रहता । शालग्राम अनेक प्रकार के होते हैं, वासुदेव, मधुसूदन, अनिरुद्ध, नारायण, हरि, विष्णु, कपिल नृसिंह, वाराह, मत्स्य, कूर्म, हयग्रीव, वैकुण्ठ, श्रीधरदेव, इत्यादि (इन के पहचान के आकार और चिन्ह यहाँ लिखे हुए हैं) ।

(१३१ वां अध्याय) ब्राह्मण को ५ क्षत्रिय को ४ और वैश्य को ३ या १ शालग्राम को पूजना उचित है । शूद्र शालग्राम के दर्शन मात्रही से मुक्ति प्राप्त करते हैं । जो ब्राह्मण शंख चक्रादि से विन्दिता होकर शालग्राम शिला का पूजन करता है, उस पूजन से सब संसार पूजित होजाता है । और पितर कहते हैं कि हमारे कुल में वैष्णव उत्पन्न हुआ, अब वह हमारे कुल को विष्णु लोक में भेजेगा ।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध—६६-वां अध्याय) चक्र करके अंकित शालग्राम-शिला के पूजन करने से बिना चिन्ह की मूर्ति का पूजन करना उत्तम है । एक रेखा वाले शालग्रामशिला को सुदर्शन, २ रेखा वाले को लक्ष्मीनारायण, ३ रेखा वाले को अच्युत, ४ रेखावाले को चतुर्भुज, ५ रेखावाले को वासुदेव, ६ रेखा वाले को मधुसूदन, ७ रेखावाले को संकर्षण, ८ रेखावाले को पुरुषोत्तम, ९ रेखा वाले को व्यूह, १० रेखा वाले को दशात्मक, ११ रेखावाले को अनिरुद्ध और १२ रेखा वाले को द्वादशात्मक कहते हैं । इससे अधिक रेखावाले शालग्राम को अनंत कहना उचित है ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग-३४ वां अध्याय) शालग्राम तीर्थ विष्णु की प्रीति को बढ़ाने वाला है । उस स्थान पर मृत्यु होने से साक्षात् विष्णु का दर्शन होता है ।

वृत्तरा शिवपुराण—(८ वां खण्ड--१५ वां अध्याय) नेपाल में मुक्तनाथ शिवलिंग है ।



पांचवां अध्याय ।

(सूवे विहार में) दरभंगा, गौतमकुण्ड, (नैपाल-राज्य में) जनकपुर. (सूवेविहार में) सोतामढी, सीगे-
इवरनाथ और (नैपाल-राज्य में) वाराहक्षेत्र ।

दरभंगा ।

काठकांडू से ९० मील उत्तर पहाड़ी मार्ग से सुगौली, और सुगौली से दक्षिण-पूर्व रेलवे द्वारा ९४ मील समस्तीपुर जंक्शन को लौट आना चाहिए । समस्तीपुर जंक्शन से २३ मील (और मोकामा जंक्शन से ८३ मील) उत्तर दरभंगा का रेलवे स्टेशन है । सूवेविहार के पटना विभाग में तिरहुत देश के पूर्वी भाग में छोटी बागमनी नदी के बाएँ, अर्थात् पूर्व किनारे पर जिबे का सदर स्थान और प्रधान कसबा दरभंगा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दरभंगा सहर में ७३५६१ मनुष्य थे; अर्थात् ३८२६७ पुरुष और ३५२९४ स्त्रियाँ । इनमें ५३९८७ हिन्दू, १९१८१ मुसलमान, १३२ कुस्तान और २६१ दूसरे थे । मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ४५ वां, बंगाल में ६ वां और विहार में ३ रा शहर है । बहुतेरों का मत है कि दरभंगीखां ने दरभंगा को बसाया, इसमें इसका यह नाम पड़ा । और बहुतेरे लोग कहते हैं कि द्वारधंग अर्थात् बंगाल के दर-वाजे का अपभ्रंश दरभंगा शब्द है ।

दरभंगा में सिविल कचहरियाँ, अनेक स्कूल और अस्पताल, शिवसामर तालाब के किनारे पर माधवेश्वर महादेव का मंदिर, अनेक बड़े बाजार, अस्पताल और महाराज के बाग के बीच में हाल की बनी हुई नई पेठिया और बहुतेरे सरोवर हैं । महाराज का पुराना महल और हाल का बनाहुआ नया राजमहल, बाग, अश्वशाला, और जंतुशाला देखने योग्य हैं । दरभंगा में तिजारत बहुत होती है । अनेक मांति के तेल के बीज घी और मक्कान बनाने

की लकड़ी वहां से दूसरे स्थानों में भेजी जाती है और गल्ला, नमक, घुना लोहा इत्यादि वस्तु दूसरे शहरों से वहां आती है ।

दरभंगा से रेलवे लाइन तीन ओर गई है—पश्चिमोत्तर की लाइन पर २६ मील पर जनकपुर रोड, ४२ मील सीतामढ़ी और ६१ मील वैरागिनिया; पूर्व की लाइन पर १२ मील सकरी, ४३ मील निर्मली, ६७ मील प्रतापगंज और ७५ मील कनवा घाट; और दक्षिण २३ मील समस्तीपुर जंक्शन और ८३ मील मोकामा जंक्शन है ।

दरभंगा के महाराज—सन् १७६२ ई० से दरभंगा शहर यहां के महाराज की राजधानी हुआ है । महाराज के पूर्व पुरुषे तिरहुत के राजाओं के पुरोहित थे । मुसलमानों ने तिरहुत को जीत लिया और वहां के राजा नष्ट होगये, तब उनके पुरोहित मैथिल ब्राह्मण महेश ठाकुर ने दिल्ली में जाकर चादशाह अकबर से राज्य प्राप्त किया; किन्तु सन् १७०० ई० में महेश ठाकुर के वंशज राघोसिंह के राज्य के समय में राजा की पदवी वृद्ध हुई । सन् १७७६ में माधोसिंह राज्य के उत्तराधिकारी हुए । सन् १८०८ में माधोसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र छत्तरसिंह दरभंगा के राज्य सिंहासन पर बैठे । इन्हीं ने महाराज की पुस्तैनी पदवी प्राप्त की थी । सन् १८३९ ई० में महाराज छत्तरसिंह की मृत्यु होने पर उनके पुत्र महाराज रुद्रसिंह उत्तराधिकारी हुए । सन् १८५० में महाराज रुद्रसिंह के देहांत होने पर उनके पुत्र महाराज महेश्वर सिंह राजगढ़ी पर बैठे । सन् १८६० ई० में महाराज महेश्वरसिंह अपने दो बच्चे पुत्र लक्ष्मीश्वरसिंह और रामेश्वरसिंह को छोड़कर मृत्यु को प्राप्त हुए । राज्य कोर्ट आफ वार्डस के अधिकार में हुआ । सन् १८७९ में वर्तमान महाराज लक्ष्मीश्वरसिंह बहादुर के० सी० आई० ई० राज्याधिकारी हुए, जिनकी अवस्था ३६ वर्ष की है ।

महाराज की ज़िम्मेदारी दरभंगा, मुजफ्फरपुर, मुंगेर, पुर्निया और भागलपुर इन पांच जिलों में फैली हुई है, जिससे २४०००००० रुपया माल-गुजारी आती है, जिसमें से लगभग ४००००० रुपया अंगरेजी गवर्नमेंट को देना पड़ता है । महाराज की ओर से १५० मील लम्बी नई सड़क बनाई गई

हैं, नदियों पर बहुतेरे पुल बनाए गए हैं और ७०००० रुपये सिचाई के काम में खर्च किए गए हैं ।

दरभंगा जिला—यह पूर्व समय के तिरहुत जिले का पूर्वी भाग है । सन् १७७५ ई० में तिरहुत जिले में मुजफ्फरपुर और दरभंगा दो जिले बनाए गए । इसके उत्तर स्वाधीन नेपाल राज्य, पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण गंगा नदी और मुँगेर जिला और पश्चिम मुजफ्फरपुर जिला है । यह जिला पश्चिम दक्षिण से पूर्वोत्तर तक ९६ मील लंबा ३६६५ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । जिले की प्रधान नदियाँ बागमा, गंडक, छोटी बागमती, कराई और कमला हैं । तिरहुत में विवाहादि उत्सवों में चिउड़ा दही का भोजन सब भोजन से उत्तम समझा जाता है ।

“ सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय दरभंगा जिले में २७७००५३ और सन् १८८१ में २६३३४४७ मनुष्य थे, अर्थात् २३२३९८५ हिन्दू, ३०८९८५ मुसलमान, ३८५ कृस्तान और १५२ दूसरे, जो प्रायः सब कोल हैं । जातियों के खाने में ३४१११२ ग्वाला, १८९५३४ दुसाध, १७९२६३ ब्राह्मण, १३००७९ घानुक, १२९०२७ कोइरी, ११८५५६ भूमिहार, ११४८९१ मलाह, ९००८३ राजपूत, ८८६४१ चमार, ७९४४९ तली, ६७०९८ कुर्मी, ६६७९३ मुसहर, ६१३१५ ततवा, ४५१२४ कायस्थ, शेष इनमें कम संख्या की जातियाँ थीं । सन् १८९१ की मनुष्यगणना के समय दरभंगा जिले के कसबे दरभंगा में ७३५६१, मधुबनी में १७५४४, रोसरा में १०८८० मनुष्य थे । इनके अलावे जिले में विस्नुपुरा, मुलतानपुर और माधोपुर छोटे कसबे हैं ।

दरभंगा जिले के मधुबनी कसबे से चार पाँच मील पश्चिम सौराठ बस्ती के पास साल में मैथिल ब्राह्मणों का एक मेला होता है । वे लोग उसमें अपने लड़का लड़की के विवाह का लेनदेन पक्का करते हैं । लड़को अपने पिता के घर रहेगी या समुर के घर, बहुतेरों में इस बात का दस्तावेज लिखा जाता है । जो लड़की विवाह होजाने पर अपने पिता के घर रहती है, उसके पुत्र अपने नाना के घर में भाग पाने हैं । बहुतेरे कुलो न ब्राह्मणों में एक के कई विवाह होते हैं । जो स्त्रियाँ अपने पिता के घर रहती हैं, उनके पति अपने समुर के घर जाकर उनमें कुछ रुपया लेकर कई एक दिन वहाँ रहते हैं ।

मैथिल बर्गामाला

[illegible]

गौतमकुण्ड ।

दरभंगा जंक्शन से १४ मील पश्चिमोत्तर सीतामढ़ी ब्रैच पर कमतौल का स्टेशन है, जिसमें २ मील पश्चिमोत्तर छोटी नदी के पास एक छोटे मंदिर में अहिल्या की मूर्ति है, जहां चैत नौमी को एक छोटा मेला होता है, और स्टेशन से करीब १० मील पश्चिम की ओर बिना वृक्षों के धान के मैदान में गौतमकुंड एक सरोवर है । उसके चारों वगलों पर घाट बना है, तल में गव किया हुआ है, पानी में छोटे छोटे ५ कुंड हैं और पासमें एक छोटी नदी है, जिसका जल गौतमकुंड में रहता है । गौतमकुंड के पास पाकड़ का एक वृक्ष और एक कोठरी में नृसिंहजी की मूर्ति है । वस्ती उससे बहुत दूर है । कुंड के पास एक साधु है ।

गौतमकुंड से ३ मील पूर्व अहिल्याकुंड तीर्थ और बट वृक्ष के नीचे अहिल्या का चोरा है, जिसके पास दरभंगा के राजा का बनवाया हुआ रामलक्ष्मण का सुन्दर मन्दिर स्थित है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व—८४ वां अध्याय) गौतम के प्यारे वन में जाकर अहिल्याकुंड में स्नान करने से मोक्ष मिलती है । गौतम के आश्रम में जाने से पुरुष शोभा को प्राप्त करता है । वहां तीनों लोकों में विख्यात एक तडाग है । उसमें स्नान करने से अश्वमेध का फल होता है । उसमें आगे राजर्षि जनक का कुँआ है, जिसमें स्नान करने से विष्णुलोक प्राप्त होता है ।

बालमीकिरामायण—(बालकांड—४८ वां अध्याय) रामचन्द्र ने मिथिला के उपवन में प्राचीन और निर्जन आश्रम को देख महर्षि विश्वामित्र से पूछा कि यह आश्रम किसका है । मुनि बोले कि यह आश्रम गौतम मुनि का था; इस में वह अपनी स्त्री अहिल्या के साथ रहते थे । किसी समय में इन्द्र ने मुनि रहित आश्रम को देख गौतम का वेष धारण कर अहिल्या से कहा कि मैं तुम्हारे संग प्रसंग करूँगा । अहिल्या ने इन्द्र को पहचान करके भी उसका मनोरथ पूर्ण किया, पश्चात् मुनि के घर से शीघ्रता से ज्योंही वह कुटी से निक-

ला, त्योंही पर्णशाला में बैठते हुए ऋषि देख पड़े । गौतम ने इन्द्र को मुनी वेष धारी और वृष्ट कर्म करनेवाला देखा कर शाप दिया कि तू अंडकोप रहित हो जायगा । मुनि के ऐसे कहने पर इन्द्र ने दोनों अंडकोप गिर पड़े । फिर मुनि ने अपनी स्त्री को यह शाप दिया कि तू इसी स्थान में अनेक सहस्र वर्ष पर्यन्त वास करेगी, तेरा भोजन केवल वायु होगा और तू किसी प्राणी को नहीं देख पड़ेगी; जब दशस्थ के पुत्र रामचन्द्र इस वन में आयेगे तब तू उनका सत्कार करके इस शाप से मुक्त हो अपने पूर्व शरीर को धारण कर मेरे पास आवेगी । ऐसा कह मुनि हिमाचल के शिखर पर जाकर तपस्या करने लगे । (४९ वां अध्याय) पितृगणों ने वेष का अंडकोप काट कर इन्द्रको लगा दिया । रामचन्द्र ने विश्वामित्र के ऐसे वचन सुन उनके संग्रहस आश्रम में प्रवेश किया और उस तपस्विनी को, जिसको सुर अमर कोई नहीं देख सकते थे, देखा । उसी क्षण अहिल्या के पाप का अंत हुआ । तब इन को यह देख पड़ी । राम और लक्ष्मण ने हर्ष से उसके चरणों को ग्रहण किया । अहिल्या ने भी गौतम के वचन को स्मरण कर राम के चरणों का स्पर्श किया और अतिथि सत्कार से इनकी पूजा की । इसके पश्चात् अहिल्या शुद्ध होकर गौतम ऋषि से जामिली । रामचन्द्र मिथिला को चले ।

जनकपुर ।

दरभंगा जंक्शन से २६ मील पश्चिमोत्तर जनकपुर रोड का, जिस को पुपुड़ी भी कहते हैं, रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से २४ मील पूर्वोत्तर नेपाल राज्य के अंतर्गत तिरहुत में जनकपुर एक बड़ी यस्ती है । जनकपुर जाने का दूसरा मार्ग सक्ती के रेलवे स्टेशन से है । दरभंगा से १० मील पूर्व कोसी लाइन पर सक्ती रेलवे का स्टेशन है, उससे ३८ मील उत्तर जनकपुर है । दोनों स्टेशनों पर सवारी के लिये वैलगाड़ी मिलती हैं ।

जनकपुर में साधारण लोगों के मकान टट्टी और छप्पर से बने हुए हैं । महंत का मकान पक्का दो मंजिला है । उसके पासही दक्षिण एक विशाल मंदिर में भ्रातागणों के सहित रामचन्द्र का दर्शन होता है । उसके पास एक कोठरी

में महावीर को मूर्ति है । राममन्दिर से पूर्व गंगासागर और धनुषसागर, जिन में साधारण घाट बने हैं, दो तड़ाग; तड़ागों के निकट शिवजी, जानकीजी, रामचन्द्र और जनकजी के एक २ मन्दिर बने हैं । शिव, जानकी, और रामचन्द्र के मन्दिर से दक्षिण रामसागर और एक दूसरा तालाब है । मठ के मकान के पास वाले राममन्दिर से पश्चिम रतनसागर, दशरथतालाब, और अग्निमुण्ड है । जनकपुर के आस पास बहुतेरे कच्चे तड़ाग हैं । लोग कहते हैं कि यहां ७२ तड़ाग और ६२ कुटियां हैं । कुटियों में साधु लोग रहते हैं, उनके पास देवस्थान या देवमंदिर बने हुए हैं ।

चैत्र सुदी नवमी को जनकपुर का प्रधान मेला होता है । नेपाली और भोटिए और भारतवर्ष के अन्य प्रदेशों के बहुतेरे यात्री मेले में आते हैं । माल खूब विकता है । अगहन सुदी पंचमी को सीताराम के व्याह का उत्सव होता है । हाथी घोड़े आदि ठायों से सज्जित होकर राममंदिर से वारात निकलती है और कई सौ गज पश्चिमोत्तर जानकी के मंदिर को जाती है । वहां सबको भोजन मिलता है । उस समय भी बहुत यात्री आते हैं ।

जनकपुर से लगभग ६ मील दक्षिण-पूर्व एक तड़ाग के पास विश्वामित्र का मन्दिर है । जनकपुर से १४ मील दूर जंगल में धनुषा वस्ती के पास एक सरोवर के निकट पत्थर का बड़ा धनुष पड़ा है । यात्री लोग वहां जाकर धनुष का दर्शन करते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(आदिपर्व-११३वां अध्याय) राजा पांडु ने मिथिला में जाकर विदेह नगर को पगस्त किया । (सभापर्व-३० वां अध्याय) भीम ने विदेहपति राजा जनक को अति अल्प युद्ध में जीत लिया ।

बाल्मीकिरामायण —(बालकांड—७१ वां सर्ग) जनक के वंश के राजा ;—
 (१) राजा निमि, (२) मीथि, (३) जनक, (४) उदावसु, (५) नन्दीवर्धन, (६) मुकेतु (७) देवरात, (८) बृहदरथ, (९) महावीर, (१०) सुधृति, (११) धृष्टकेतु, (१२) हर्यश्व, (१३) मरु, (१४) मातीधर, (१५) कीर्तिरथ, (१६) देवमोद, (१७) विबुध, (१८) महीधर, (१९) कीर्तिरात, (२०) महारोमा, (२१) स्वर्णरोमा और (२२) ह्रस्वरोमा हुए । ह्रस्वरोमा के सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र हैं । सीरध्वज की पुत्री सीता है ।

उत्तरकाण्ड—(१७ वां सर्ग) एक समय लंकापति रावण ने हिमालय के वन में बृहस्पति के पुत्र कुशभज की पुत्री वेदवती को तप करती हुई देखा तब उसने विमान से उतर कामातुर हो उसके माथे के केशों पर हाथ लगाया । तब वेदवती ने हाथ से अपने केशों को काटडाला और रावण को शाप दिया कि हे नीच ! मैं तेरे वध के लिये फिर जन्म लेऊंगी । ऐसा कह वह अग्नि में प्रवेश कर गई और पीछे जनकराज के घर में अयोनिजा सीता रूप उत्पन्न हुई ।

(बालकाण्ड—५० वां सर्ग) विश्वामित्र राम और लक्ष्मण के सहित राजा जनक की यज्ञशाला में पहुँचे । राजा ने विश्वामित्र का आगमन सुन सत्कार पूर्वक उनको टिकाया । (६६ वां सर्ग) दूसरे दिन प्रातःकाल विश्वामित्रने राजा जनक से कहा कि ये दोनों राजा दशरथ के पुत्र आपका श्रेष्ठ धनुष देखना चाहते हैं । (६७ वां सर्ग) राजा जनक की आज्ञा से ५ सहस्र मनुष्य उस धनुष की सँदूक को खींच लाए । विश्वामित्र की आज्ञा से रामचन्द्र ने सन्दूक के भीतर से धनुष निकाल कर उसे बीच में थाँभा और लीला से उठाकर प्रत्यंचा से पूर्ण कर उसको दो खंड कर डाला । उसके उपरान्त राजा जनक ने अपने मंत्रियों को राजा दशरथ को बुलाने के लिए अयोध्या में भेजा । (६८ वां सर्ग) जनक के दूत तीन रात्रि मार्ग में टोक कर चौथे दिन अयोध्या में पहुँचे । उन्होंने जनकपुर का सब वृत्तान्त राजा दशरथ से कह सुनाया । (६९ वां सर्ग) राजा दशरथ चतुरंगिणी सेना और ऋषियों के मंग अयोध्या में प्रस्थान कर चार दिन में विदेहनगर पहुँचे । (७३ वां सर्ग) रामचन्द्र का विवाह सीता से, लक्ष्मण का उर्मिला से, भरत का मांडवी से, और शत्रुघ्न का श्रुतिकीर्ति से हुआ । उस समय रामचन्द्र का वय १५ वर्ष का और सीता जी का ६ वर्ष का था । (७७ वां सर्ग) राजा दशरथ सम्पूर्ण सेना और पुत्रगणों के साथ जनकपुर से प्रस्थान करके अयोध्या पहुँचे । (विशेष कथा भारत-भ्रमण दूसरे खंड के तीसरे अध्याय में देखो)

विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पांचवां अध्याय) कम से जनकपुर के राजाओं का नाम—(१) निमि, (२) विदेह, (३) उदावसु, (४) नंदिवर्धन, (५)

मुक्तेतु, (६) देवरात, (७) वृहद्रथ, (८) धृति, (९) विद्युध, (१०) महाधृति, (११) कृतिरात, (१२) महारोमा, (१३) सुवर्णरोमा, (१४) ह्रस्वरोमा, (१५) सीरध्वज अर्थात् जानकी के पिता हुए; यह पुत्र प्राप्ति के लिये सोने के हल से यह भूमि को जोतते थे, उसी समय हल के अग्र भाग से सीता कन्या उत्पन्न हुई। सीरध्वज के भाई कुशध्वज सांकाश्य नगर के राजा हुए। (१६) मानुमान, (१७) शतद्युम्न, (१८) शुचि, (१९) उर्जवह, (२०) सत्यध्वज, (२१) कुणि, (२२) अंजन, (२३) (ऋतुजित, (२४) अरिष्टनेमी, (२५) श्रुतायु, (२६) सुपाश्व, (२७) संजय, (२८) क्षेमारी, (२९) अनेना, (३०) मीनरथ, (३१) सत्यरथ, (३२) सत्यरथी, (३३) उपंगु, (३४) श्रुत, (३५) शाश्वत, (३६) सुधन्वा, (३७) सुभास, (३८) सुश्रुत, (३९) जय, (४०) विजय, (४१) ऋतु, (४२) सुनय, (४३) वीतहव्य, (४४) धृति, (४५) बहुलाश्व और (४६) कृति, यहां तक विदेहवंश चला।

आदित्रयपुराण—(१७ वां अध्याय) श्रीकृष्ण ने मिथिलापुरी के पास झारिका के शतधन्वा को मारा, तब बलदेवजी मिथिलापुरी में चले गये। वहाँ के राजा ने बलदेवजी को सम्मान पूर्वक रक्खा। जब बलदेवजी मिथिलापुरी में रहते थे, तब हस्तिनापुर के राजा दुर्योधन ने उनसे गदा विद्या सीखी थी।

सीतामढ़ी ।

जनकपुर रोड अर्थात् पुपुडी के रेलवे स्टेशन से १६ मील (दरभंगा जंक्शन से ४२ मील) पश्चिमोत्तर सीतामढ़ी का रेलवे स्टेशन है। स्टेशन से १ मील पर लपनदेई नदी के पश्चिम किनारे पर सूबे बिहार के मुजफ्फरपुर जिले में सबदिवीजन का सदर स्थान सीतामढ़ी एक छोटा कसबा और तीर्थ स्थान है। सन् १८८१ ई० की मनुष्य-गणना के समय सीतामढ़ी में ६१२५ मनुष्य थे।

सीतामढ़ी में मुन्सफी कचहरी बाजार, स्कूल और एक अस्पताल है। चावल, ससुआ की लकड़ी, तेल के बीज, चमड़ा और नेपाल के पैदावार को तिजारत होती है। शोरा और जनेऊ बहुत तैयार होते हैं। लखनदेई नदी पर लकड़ी का पुल बना है। चैत्र की रामनवमी के समय एक बड़ा मेला होता

हैं और २ सप्ताह तक रहता है । मेले के समय दूर दूर के यात्री लोग आते हैं । यह मेला बैल की खरीद विक्री के लिये प्रसिद्ध है । इसमें पीतल के वर्तन, मसाला, कपड़ा और हाथी की भी तिजारत होती है । सीतामढ़ी में एक घेरे के भीतर सीता का मन्दिर और चार पांच दूसरे मन्दिर और घेरे के आस पास में तीन चार देवमन्दिर हैं । इनमें सीता, रामचन्द्र, लक्ष्मण, शिव, हनुमान, गणेश, इत्यादि देवताओं की मूर्तियां स्थापित हैं और सीतामढ़ी के मर्दतका समाधिस्थान भी है । सीतामढ़ी कसबे से १ मील पश्चिम पुनउड़ा बस्ती के निकट एक पक्का सरोवर है । लोग कहते हैं कि इसी स्थान पर अयोनिजा सीताजी उत्पन्न हुई थीं । सरोवर के पूर्व एक बड़ी ठाकुरवाड़ी है । यात्री-गण सरोवर में स्नान करते हैं ।

.. संक्षिप्त प्राचीन कथा—विष्णुपुराण—(चौथा अंश-पांचवां अध्याय) जनकपुर के राजा ह्रस्वरोमा के सीरध्वज और कुशध्वज दो पुत्र थे, उनमें सीरध्वज मिथिला के राजा हुए । वह एक समय पुत्र कामना के निमित्त सोने के हल से यज्ञभूमि को जोतते थे, उसी समय हल के अग्र भाग से सीता कन्या उत्पन्न होगई ।

सी'गेश्वरनाथ ।

दरभंगा से ६० मील पूर्व राधोपुर का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से २५ मील दक्षिण भागलपुर जिले में एक छोटी नदी के किनारे पर सी गेश्वर स्थान नामक बस्ती है, वहां नदी के किनारे पर एक घेरे के भीतर सी'गेश्वरनाथ महादेव का, जिनका शुद्ध नाम शृङ्गे श्वरनाथ है, बड़ा मन्दिर स्थित है ।

फाल्गुन की शिवरात्रि के समय सी'गेश्वरनाथ का बड़ा मेला होता है, और दो सप्ताह तक रहता है । मेले में निम्न के लिये हाथी बहुत आते हैं और घोड़े, अङ्गरेजी कपड़ा, जूता नेपालियों की लम्पी छूरी, जिसको वे लोग खायुड़ी कहते हैं और वर्तन इत्यादि की तिजारत होती है । पुर्निया, मुंगेर, तिरहुत और नेपाल के बहुत सीदागर आते हैं । वैशाख की शिवरात्रि को फाल्गुन के मेले से छोटा मेला होता है ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाराहपुराण (उत्तरार्द्ध २०७-वां अध्याय) ।
 एक समय शिवजी मन्दराचल के उत्तर किनारे के मुञ्जवान पर्वत से श्लेष्मा-
 तक वन में चले गए और नंदीश्वर से कह गए कि 'तुम किसी के पूछने पर
 हमारे जाने का स्थान मत कहो । (२०८ वां अध्याय) उसके पश्चात् इन्द्र
 ने ब्रह्मा और विष्णु को साथ ले मुञ्जवान पर्वत पर आकर नंदीश्वर से पूछा
 कि 'भगवान शंकर कहाँ हैं' । (२०९ वां अध्याय) जब नंदीश्वर ने शिवजी
 का पता नहीं बतलाया, तब देवता गण शिवजी को ढूँढ़ते ढूँढ़ते श्लेष्मातक
 वन में पहुँचे । वहाँ शिवजी ने मृग रूप धारण किया था । देवता गण उनको
 पहचान कर पकड़ने के लिए चारों ओर से दौड़े । इन्द्र ने मृग के शृङ्ग का
 अग्रभाग जा पकड़ा, ब्रह्माने विधला भाग पकड़ लिया और शृङ्ग का मूल भाग
 विष्णु के हाथ में आया । जब वह शृङ्ग तीन टुकड़े होकर तीनों के हाथों में
 रह गया और मृग अन्तर्द्धान हो गया, तब आकाशवाणी हुई कि हे देवताओं !
 तुम लोग हमको नहीं पासकोगे; अब शृङ्गमात्र के लाभ से संतुष्ट हो
 जाओ । (२१० वां अध्याय) इन्द्र ने शृङ्गके निज खंड को स्वर्ग में स्था-
 पित किया और ब्रह्मा ने अपने हाथ के शृङ्ग खंड को उसी स्थान में स्थापित
 कर दिया । दोनों खंडों का गोकर्ण नाम प्रसिद्ध हुआ । विष्णु ने अपने हाथ के
 शृङ्ग खंड को लोक के हित के लिए स्थापित किया, उसका नाम शृङ्गेश्वर
 हुआ । जिन स्थानों पर शृङ्ग के खंड स्थापित हुए, उन स्थानों में शिवजी
 निज अंश कला से स्थित होगए । कुछ काल के पश्चात् रावण इन्द्र को जीत
 कर गोकर्णेश्वर को उखाड़ कर अमरावती पुरी से लंका को ले चला और
 कुछ दूर जाकर शिवलिंग को भूमि में रख संध्योपासन करने लगा । जब
 चलने के समय रावण के उठाने पर वह शिवलिंग नहीं उठा, तब रावण
 उसको वहाँही छोड़कर लंका चला गया । उसी लिंग का नाम दक्षिण गोकर्ण
 प्रसिद्ध हुआ और ब्रह्मा के स्थापित शृङ्ग के खंड का नाम उत्तर गोकर्ण
 है । (उत्तर गोकर्ण की कथा दूसरे खंड के गोला गोकर्णनाथ के वृत्तान्त में
 और दक्षिण गोकर्ण की कथा चौथे खंड के गोकर्ण में देखो) ।

वाराहक्षेत्र ।

सक्करी के स्टेशन से ६३ मील और दरभंगा से ७५ मील पूर्व थोड़ा उत्तर बंगाल नर्थवेर्ण रेलवे का खतमी स्टेशन कोशी नदी के दहिने किनारे पर कनराघाट है, जिससे उस धार इर्णबंगाल स्टेटरेलवे का अंचराघाट स्टेशन है। वहाँ से १० कोस उत्तर पैदल या बैल गाड़ी की राह से कोशी नदी के किनारे हिमालय के पादमूल पर चतरागढ़ी स्थान में पहुँचना होता है। चतरागढ़ी से ३ कोस उत्तर वनावंडीनाथ की धूनी है, जहाँ अनेक साधु रहते हैं। धूनी सर्वदा जलती रहती है। वाराहक्षेत्र के यात्री उस धूनी में कुछ लकड़ी फेंक देते हैं। उससे आगे १० कोस उत्तर धवलागिरि का कठिन चढ़ाव है। पहाड़ का रास्ता एक दो हाथ चौड़ा है। कहीं कहीं समयल भूमि मिलती है, जहाँ पहाड़ियों के दो चार घर बने हुए हैं। वहाँ कमला नींबू बहुत होता है। पहाड़ पर खाने के लिये यही मिलते हैं। चतरागढ़ी से मन्दिर तक पैदल अथवा झूली की पीठ पर छींके या झूले में बैठा कर, या नाव में बैठ कोशी नदी के मार्ग से जाना चाहिए। नाव का भाड़ा एक आदमी का ८ आना लगता है। कोशी नदी में नाव को उपर चढ़ना पड़ता है। नदी में अनेक चट्टानें हैं। जल का वेग मजबूत है। कोशी नदी हिमालय से निकल कर करीब २२५ मील दक्षिण घटने के उपरान्त भागलपुर के नीचे गंगा में मिल गई है।

कोशीनदी के किनारे नैपाल राज्य में धवलागिरि शिखर पर वाराहक्षेत्र है, जिस को कोकामुख भी कहते हैं। एक साधारण कद के मन्दिर में छोटी चतुर्भुज वाराह जी की मूर्ति है। मन्दिर के चारों ओर दीवार बना है और आस पास एक विगहा समतल भूमि है। उत्तर ओर कोवरा नदी बहती है, जिस में स्नान करके यात्री लोग उस का जल वाराह जी पर चढ़ाते हैं। कार्तिक पूर्णिमा के दिन स्नान और जल चढ़ाने की बड़ी भीड़ होती है। नैपाल सरकार की ओर से शान्ति रखने की पुलिस रहती है। कमळा निम्बू सस्ता मिलते हैं और चिउड़ा भी मिल जाता है। खाने की सामग्री साथ लेजाना चाहिए। वाराह-क्षेत्र का मेला कार्तिकी पूर्णिमा के ४ रोज पहले से ४ दिन पीछे तक रहता है।

मन्दिर से दो तीन मील दूर पहाड़ी के ऊपर सूर्यकुण्ड नामक पुराना तालाब है। नाव कोशीनदी के मार्ग से वाराहक्षेत्र से चतरागढ़ी शीघ्र पहुँचती है क्योंकि पानी का उतार है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—वाल्मीकिरामायण—(वालकांड ३४ वां सर्ग) विश्वामित्र ने रामचन्द्र से कहा कि सत्यवती नामक मेरी जेठी बहन महर्षि ऋचीक से ब्याही गई थी, वह अपने पति के संग स्वर्ग में गई और पीछे लोक के हित के निमित्त पवित्र जलवाली कौशिकी नदी होकर हिमवान पर्वत से निकली, इसी लिये मैं अपनी बहन के स्नेह से हिमवान के पास निवास करता हूँ।

महाभारत—(वन पर्व-८७ वां अध्याय) गया की ओर कौशिकी नामक नदी है। विश्वामित्र वही ब्राह्मण बने थे। (अनुशासन पर्व २५ वां अध्याय) कौशिकी नदी में वायुभक्षी होकर तिरात्रि उपवास करने से गंधर्वनगर में वास होता है। (वनपर्व ८३ वां अध्याय) वाराह तीर्थ में वाराहरूपधारी विष्णु ने निवास किया था, वहाँ स्नान करने से अग्निस्टोम यज्ञ का फल मिलता है।

वाराहपुराण—(उत्तरार्द्ध-पहला अध्याय) कोकामुखक्षेत्र, जिसको शूकर-क्षेत्र भी कहते हैं, भागीरथी गंगा के निकट है। (२४ वां अध्याय) कोकामुख नामक क्षेत्र को महात्माजन बदरी भी कहते हैं। इस क्षेत्र में जल-विन्दु नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्वत से जलधारा पड़ती है और एक विष्णुधारा नामक तीर्थ है, अर्थात् ऊँचे पर्वत से मूसल के समान धारा पृथ्वी में गिरती है। उसी कोकामुख में विष्णुपद नामक स्थान है, जिसे वाराहशिला भी कहते हैं; सोम तीर्थ नामक स्थान है, जिसमें विष्णुनामांकित पंचशिला नामक भूमि प्रसिद्ध है, अग्निसर नामक तीर्थ है, जहाँ पाँच धारा पर्वत की कन्दरा से निकलती है; ब्रह्मसर नामक गुप्त तीर्थ है, जहाँ ऊँचे से एक धारा शिला के ऊपर गिरती है; सूर्यप्रम नाम अति पवित्र तीर्थ है, जिस में अग्नि समान अति जलती हुई जलकी धारा गिरती है, और कौशिकी नामक पुण्य देने वाली नदी है। कोकामुख के समीप मत्स्यशिला नाम एक पवित्र तीर्थ है, जिस में

पर्वत के ऊपर से एक जल की धारा गिरती है । धाराह जी बोले कि कोकामुख हमारा क्षेत्र पांच योजन विस्तार का है ।

मत्स्यपुराण—(१९२ वां अध्याय) जहां जनार्दन भगवान् बाराहरूप धारण कर सिद्ध होकर पूजित हुये हैं, वह वाराह तीर्थ है । वहां विशेष करके ब्राह्मणों को जाकर स्नान करनेवाला पुरुष विष्णुलोक में प्राप्त होता है ।

पद्मपुराण—(सृष्टिखण्ड—११ वां अध्याय) कोकामुख नाम परमोत्तम तीर्थ है । इस तीर्थ में होकर इन्द्रपुरी जाने का रास्ता दिखाई देता है । पुष्कर के समान ब्रह्माजी की मूर्ति यहां भी निरन्तर रहती है ।

आदिब्रह्मपुराण—(१०५ वां अध्याय) त्रेता और द्वापर की सन्धि में पितर-गण दिव्य मनुष्यरूप होकर मेरुपर्वत की पीठ पर विश्वेदेवों सहित स्थित हुए । चन्द्रमा से उत्पन्न हुई कान्तियुक्त एक दिव्य कन्या उन के आगे हाथ जोड़ कर खड़ी हुई और पितरों से बोली कि मैं चन्द्रमा की कला हूं, तुम से बहूंगी । मैं पहिले ऊर्जा नाम वाली थी; पश्चात् स्वधा हुई और तुम ने मेरा कोका नाम किया है । पितरदेव उसके वचन को सुन कर मोहित होकर उस का मुख देखने लगे । तब विश्वेदेवा पितरों को योग से भ्रष्ट देख उन को त्याग कर स्वर्ग को चले गए । चन्द्रमा ने अपनी आत्मजा ऊर्जा को उस स्थान में न देख मन में ध्यान कर के जाना कि काम से पीड़ित हुई ऊर्जा पितरों को प्राप्त हो रही है । तब उन्होंने ने पितरों को शाप दिया कि तुम योग से भ्रष्ट हो जाओ और इस ने जो तुम पर मोहित हो पतिभाष्य से तुम को बरा है, इस कारण से यह नदी होकर लोक में कोका नाम से प्रसिद्ध हो इस पर्वत के शिखर पर स्थित रहे ।

निदान चन्द्रमा के शाप से पितर योगभ्रष्ट हो हिमवान् पर्वत के नीचे जा पड़े और ऊर्जा भी कोका नाम से रिल्यात नदी होकर वहां पर वेग से बहने लगी । पितर भी योग से हीन हो उस नदी को देखने लगे, तब वह एक उत्तम तीर्थ हो गया । उस पर्वत ने क्षुधा से पीड़ित पितरों को देख कर उनके भोजन के लिये यदरीचन तथा अमृत देने वाली गौ को आह्वा दी और उस

कोका रूपी नदी का जल दुग्ध हो गया । इसी तरह पाप युक्त होकर पितर १०००० वर्ष वास करते रहे । सब लोक स्वधाकार और पितरों से रहित और वैत्य आदि बली हो गए, तब वे सब विश्वेदेवों से रहित पितरों को देख कर चारो तरफ से आए । उन्हें आते देख कोका ने क्रोध से युक्त हो अपने बेग से हिमांचल को डुबा कर पितरों को घेर लिया । पितरों को अन्तर दुष्ट देख राक्षस आदिक भय देने के लिये वहांही स्थित हो गए, पितर जल में दुःखित होकर हरिकी शरण में गए, और उनकी बहुत स्तुति की । तब विष्णु ने दिव्य मूर्ति सूकर रूप धारण कर जल में डूबे हुए पितृगणों का उद्धार किया । सूकर रूप धारण करके पितरों का उद्धार करने से वहां विष्णुतीर्थ स्थापित हुआ । सूकरभगवान ने विष्णु से जल और अपने रोमों से उत्पन्न हुई कुशा को लेकर अपने पसीने से उत्पन्न हुए तिलों सहित उस उत्तम तीर्थ में पितरों का सर्पण किया । वाराहजी ने कहा कि कोका के जल का पान पापों का नाश करता है, उस तीर्थ में स्नान करनेवाला धन्य है । माघ मास के शुक्ल पक्ष में प्रातःकाल कोका में स्नान करे और ५ दिन वहां ठहरे । एकादशी और द्वादशी को वहां रहना योज है ।

नरसिंहपुराण—(३९ वां अध्याय) वाराहजी ने कोका नामक तीर्थ में वाराहरूप छोड़ कर वैष्णवों के हित के लिये उसको उत्तम तीर्थ बना दिया ।

गरुडपुराण—(पूर्वार्द्ध ८१ वां अध्याय) कोकामुख तीर्थ संपूर्ण काम का देने वाला है ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) कोकामुख नामक विष्णु का तीर्थ है, उसके दर्शन करने से सम्पूर्ण पातकों का विनाश हो जाता है और विष्णुलोक मिलता है । (४० वां अध्याय) वाराह तीर्थ में जनार्दन भगवान रहते हैं । वहां स्नानादिक कर्म करने से मनुष्य को विष्णुलोक में निवास होता है ।

छठवां अध्याय ।

(सूबे विहार में) लक्ष्मीराय जंक्शन, जमालपुर, मुंगेर,
अजगयवीनाथ, भागलपुर, साहबगंज, राजमहल,
मालदह और इङ्गलिसबाजार, गौड़, पांडुआ,
मुर्शिदाबाद और बरहमपुर ।

लक्ष्मीसराय जंक्शन ।

इष्ट इण्डियन रेलवे के भोक्रामा जंक्शन से २० मील पूर्व-दक्षिण सूबे विहार के मुंगेर जिले के लक्ष्मीसराय में रेलवे का जंक्शन है, जहां से कार्डलाइन या लूपलाइन से खाना जंक्शन जाकर कलकत्ता के निकट हवड़ा पहुंचना होता है। वैद्यनाथ, आसनसोल, रानीगंज, बर्दवान, हवड़ा, कलकत्ता इत्यादि के जाने-वाले को कार्डलाइन से जाना चाहिए । इष्ट इण्डियन रेलवे का महसूल प्रति मील २१ पाई है ।

(१) लक्ष्मीसराय से पूर्व-दक्षिण कार्ड-
लाइन पर;—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

१८ जमुई ।

२७ गिन्दौर ।

६१ वैद्यनाथ जंक्शन ।

७५ मधुपुर जंक्शन ।

१२४ सीतारामपुर जंक्शन ।

१३० आसनसोल जंक्शन ।

१४१ रानीगंज ।

१४६ अंढाल जंक्शन ।

१८७ खाना जंक्शन ।

वैद्यनाथ जंक्शन से ४ मील
पूर्व-दक्षिण देवघर या वैद्यनाथजी ।

मधुपुर जंक्शन से २३ मील
पश्चिम-दक्षिण गिरिदी ।

सीतारामपुर जंक्शन से प-
श्चिम ५ मील बराकर और १९
मील कटरसगढ़ ।

आसनसोल, जंक्शन से प-

द्विचम-दक्षिण बंगाल नर्मिपुर
रेलवे पर ४७ मील पुरलिया,
२२१ मील वामरा और २४४
मील झारमूगढ़ जंक्शन ।

अंडाल जंक्शन से २४ मील
पश्चिमोत्तर गौरागढ़ी ।

खाना जंक्शन से पूर्व दक्षिण
८ मील बर्दवान, ४६ मील
मगरा, ५१ मील हुगली जंक्शन,
५४ मील चंदरनगर, ६१ मील
सेवड़ाफूली जंक्शन, ६३ मील
श्रीरामपुर और ७५ मील हबड़ा ।

(२) लक्ष्मीसराय से लुपलाइन पर पूर्व
साहवगंज और साहवगंज से द-
क्षिण खाना जंक्शन,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन ।

७ कंजरा ।

२५ जमालपुर जंक्शन ।

४३ मुलतानगंज ।

५८ भागलपुर ।

७८ कहलगांव ।

१०४ साहवगंज ।

१२८ तीम पहाड़ जंक्शन ।

१५४ पकउड़ सबडिबीजन ।

१६८ गुरादोई ।

१७८ नलहाटी जंक्शन ।

१८७ रामपुरहाट सबडिबीजन ।

२०४ साइन्थिया ।

२४८ खाना जंक्शन ।

जमालपुर जंक्शन से ५ मील
पश्चिमोत्तर मुंगेर ।

साहवगंज के मनिहारीघाट से
इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे के स्टे-
शनों की तफसील साहवगंज
में देखो ।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७ मील
पूर्वोत्तर राजमहल ।

नलहाटी जंक्शन से २७
मील पूर्व मुर्शिदाबाद के पास
अजीमगंज ।

जमालपुर ।

लक्ष्मीसराय से ७ मील पूर्व कंजरा का रेलवे स्टेशन है, जहाँ से ११ मील उत्तर
रेलवे लाइन और ओरियन गांव के पास एक पहाड़ी है । कहा जाता है कि
इस पहाड़ी पर कुछ समय तक बुद्धदेव रहे थे और यहाँ एक प्रसिद्ध जलसा
हुआ था । पुराने समय में यह यात्रा के लिए विख्यात था । यहाँ बुद्ध की
निशानियाँ पाई जाती हैं ।

लक्षीसराय जंक्शन से २५ मील पूर्व जमालपुर में रेलवे का जंक्शन है। सूरे विहार के मुंगेर जिले में जमालपुर एक कसबा है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जमालपुर में १८०८९ मनुष्य थे; अर्थात् १४११२ हिंदू, ३२९० मुसलमान और ६८७ कृस्तान।

रेलवे का काम और एंजन बनने का यह हिन्दुस्तान में प्रधान स्थान है। यहां ५५ एकड़ में कारखाने का काम होता है, जिसमें करीब १७ एकड़ जमीन छाई हुई है। यहां ३००० से अधिक हिंदूस्तानी आदमी और सैकड़ों यूरोपियन काम करते हैं। यूरोपियन लोगों के रहने के लिए कारखाने के पास मकान बने हैं। देशी कसबे और यूरोपियन बस्ती के बीच में रेल की लाइन है। यूरोपियन बस्ती के पास गिरजा, हम्माम और कई एक स्कूल बने हुए हैं।

यह कारखाना सन १८६२ ई० में कायम हुआ। सन १८९१ में जो काम तैयार हुए उसकी कीमत १० लाख थी। कारखाने का काम बहुत तरकी पर है। यहां लोहे के असबाब हर तरह के ढाले जाते हैं। सबसे बड़े ३० टन तक होते हैं। यहां के रोलिंग मिले में हर महीने में ४०० टन छर बनते हैं। हिन्दुस्तान में रोलिंगमिले दूसरी जगह नहीं हैं। यहां ३१ टन का एक कल का इयबरा है। हिन्दुस्तान के कुछ हिस्सों के सम्पूर्ण लाइनों के लिये लोहे के रेलवे असबाब यहां से जाते हैं।

जमालपुर के पास पहाड़ फोड़कर रेल की सड़क निकाली गई है।

ऋषिकुण्ड—जमालपुर से २ मील दूर पहाड़ी के ऊपर ऋषिकुण्ड नामक गरम पानी का कुण्ड है। पांच छ कुण्ड होकर पानी निकलता है। यहां मलमांस में मेला होता है।

मुंगेर।

जमालपुर जंक्शन से ५ मील उत्तर थोड़ा पश्चिम और लक्षीसराय जंक्शन से रेलवे द्वारा ३० मील पूर्व मुंगेर का रेलवे स्टेशन है। सूरे विहार के भागलपुर किस्मत में गंगा के दहिने किनारे पर (२५ अंश २२ कला ३२ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश ३० कला २१ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का प्रधान कसबा और सदरस्थान मुंगेर है।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुंगेर में ५७०७७ मनुष्य थे; अर्थात् २७१८८ पुरुष और २९८८९ स्त्रियाँ। इनमें ४४१२१ हिन्दू, १२५७८ मुसलमान, ३२२ कुस्तान, ५२ जैन और ४ बौद्ध थे। मनुष्य संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ६६ वां, बंगाल में ९ वां और मध्यप्रदेश में ६ वां शहर है।

यहाँ के बड़े बाजार में अच्छी अच्छी दुकानें हैं। इसमें बन्दूक, छुरी, पिस्तौल, आदि अच्छे बनते हैं। मुंगेर के पास छोटी छोटी कई पहाड़ी हैं। प्रधान सड़क दो बड़े तालाबों के बीच में उत्तर से दक्षिण गई है। एक तालाब के पास पहाड़ी पर बिजयानगर के महाराज का कर्णचौरा नामक मकान और दूसरे तालाब के निकट की पहाड़ी पर साहब-महल करके प्रसिद्ध एक सुन्दर मकान है। उसके पीछे शाहशुजा के रहने की इमारत है, जो अब जेलखाने के काम में आती है। भागलपुर के जज मुंगेर में आकर दौरे के मुकदमों का विचार करते हैं।

किला—गंगा के दक्षिण किनारे पर एक पहाड़ी के अखीर के पास करीब ४००० फीट लम्बा और ३५०० फीट चौड़ा एक पुराना किला है। किले का ढोल दुरुस्त नहीं है। किले की दीवार में भीतर से मट्टी और बाहर से ईंटें दिए गए हैं। बहुतेरी जगहों में अब ईंटें नहीं हैं। उत्तर ओर गंगा और जमीन की ओर खाई है। किले में उत्तर एक टीला है। लोग कहते हैं कि इस पर राजा कर्ण का गढ़ था, अब गढ़ की कुछ निशानी नहीं है, टीले पर किसी राजा का बंगला बना है। किले में एक तरफ जिले की कचहरियाँ और गंगा की तरफ जगह जगह अंगरेजों के बंगले हैं। किले से पूर्व और दक्षिण शहर बसा है।

घाट—किले के पास गंगाजी का कष्टहरनीघाट है। सीढ़ियाँ पक्की बनी हैं। घाट पर देवताओं के कई मन्दिर बने हैं। माघी पुर्णिमा के दिन इस घाट पर स्नान का मेला होता है। घाट से पश्चिम की ओर गंगा की बीचधारा में एक पत्थर का चट्टान देख पड़ता है।

सीताकुण्ड—शहर से ५ मील दूर सीताकुण्ड है; वहाँ दीवार से घेरी

हुई शुं बीघा जमीन है । घेरे के भीतर राम, लक्ष्मण, भरत, और शत्रुघ्न चारो भाइयों के नाम से अलग अलग ४ कुण्ड अर्थात् बहुत छोटे छोटे पोखरे बने हैं, जिनका जल ठंढा है और सीताकुण्ड नामक एक पांचवां कुण्ड है, जिसका पानी बहुत गरम है; उसमें कोई स्नान नहीं कर सकता है । वहां के ब्राह्मण कुंड का पानी लोटे से निकालकर यात्रियों के ऊपर छिड़कते हैं । कुण्ड के चारो तरफ लोहे का जंगला लगा है । कुण्ड से सर्वदा धुंआ निकलता है । कुण्ड का पानी एक नाला होकर बराबर बाहर गिरता है । घेरे के भीतर दो एक छोटे मन्दिर और एक छोटा मकान है । वहां माघ की पूर्णिमा को मेला होता है । इसके अतिरिक्त वैशाख और कार्तिक की पूर्णिमा और चैत्र की रामनवमी को भी वहां बहुत गाली जाते हैं । वहां के पंडे गरीब हैं ।

चण्डी का मन्दिर—सीताकुण्ड से ५ मील और गंगा से १ मील दूर चण्डी का स्थान है । वहां एकही पत्थर का अर्द्धगोलाकार गुम्बज के समान चण्डी का मन्दिर है । उसमें एक तरफ छोटा द्वार है, भीतर माया ठेकता है, दीवार में चण्डी का आकार है, जिसकी पूजा लोग करते हैं । मन्दिर के ऊपर गव किया हुआ है । लोग कहते थे कि यह मंदिर चंडी का उलटा हुआ कड़ाह है । राजा कर्ण इसी कड़ाह में कूद कर नित्य चंडी से सवामन सोना पाकर कष्टहरनीपाठ पर दान देते थे ।

मुंगेर जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३९२१ वर्ग मील है । इसके

उत्तर भागलपुर और दरभंगा जिला, पूर्व भागलपुर जिला; दक्षिण मध्याल परगना और हजारीबाग जिला और पश्चिम गया, पटना और दरभंगा जिले हैं । गंगानदी जिले के मध्य होकर जिले में ७० मील बहती है । गंगा के उत्तर जिले का छोटा भाग और दक्षिण बड़ा भाग है । उत्तर के भाग में गंडकी और तिस्तुंगा नदियां और उपजाऊ भूमि और दक्षिण भाग में पहाड़ियों का सिलसिला और कम उपजनेवाली भूमि है । गंगा से दक्षिण खानो से लोहा, सीसा, फंकड़ और कोयला निकलते हैं; पत्थर और स्लेट की भी खान हैं । जिले के दक्षिणी भाग में जंगल बहुत हैं, जंगली पेदावारों में महुआ अधिक होता है ।

वृक्षों से गोंद इकट्ठा किया जाता है । जंगली बंवर और घास से रस्सियाँ बनाई जाती हैं । मंथाल लोग बाघ और भालुओं को मार कर सरकार से इनाम लेते हैं ।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय २०२५२१८ और सन् १८८१ में १९६९७७४ मनुष्य थे; अर्थात् १७७४०१३ हिंदू, १८७५६७ मुसलमान, १०९१ कृस्तान, और ७१५३ मंथाल और कोल । जातियों के खाने में २१७६१६ ग्वाला, १७५९९५ भूमिहार, १२३३३७ मुसहर, ११८९४० धानुक, १०८४३३ दुसाध, ९२६५२ कोइरी, ५९८६४ कानू, ५७२९१ ब्राह्मण, ५६०६७ राजपूत, ५६६३२ तेली, ५४०११ तांती, ५२६३४ चमार, ४८६३१ बनियाँ शेष में दूसरी जातियाँ थीं । सन् १८९१ में इस जिले के कसबे मुँगेर में ५७०७७, जमालपुर में १८०८९ और सेखपुरा, बधिया, चरवीघा, खुटिया, और मथुरापुर में दस हजार से कम मनुष्य थे ।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि मुँगेर कसबा पूर्वकाल में मुद्गर मुनी के नाम से मुद्गरपुर या मुद्गराश्रम नाम से प्रसिद्ध था । क्योंकि मुद्गर मुनि यहाँ निवास करते थे । मुद्गर का अपभ्रंश मुँगेर है । कुछ लोगों का मत है कि भगवान् श्रीकृष्ण के पुत्र राजा मुद्गर के नाम से इसका नाम मुँगेर हुआ था । लोग मुँगेर को राजा कर्ण की राजधानी कहते हैं, किंतु महाभारत या पुराणों में मुद्गर को इसका कोई प्रमाण नहीं मिला । जान पड़ता है कि सन् ११९५ ई० में महम्मद खलजियार खिलजी ने मुँगेर को ले लिया था । गोर के अफगान बादशाह हुमेनशाह के पुत्र दनआल ने सन् १४९७ ई० में मुँगेर के किले को सुधारा था ।

बंगाल के नवाब मीरकासिम ने, जो मुर्शिदाबाद में रहता था, अंगरेजों की हुकूमत से छुट जाने का मनसूबा बांधा और मुँगेर में आकर फौज दुरुस्त करके अंगरेजों की भाँति उसे कवाइद सिखाई । उसने सन् १७६३ में अवध के नवाब को मिलाकर लड़ाई आरंभ की, घेरिया और उधानाला की लड़ाइयों में उसकी सेना परास्त हुई । वह भाग कर अवध के नवाब के पास चला गया इत्यादि । अंगरेजी अधिकार होने पर मुँगेर प्रसिद्ध हुआ । सन् १८१२ ई० में मुँगेर में सिविल स्टेशन बना । एक समय मुँगेर के मुसलमानों के पुराने किले में इण्डिअन कंपनी की एक फौज रहती थी ।

अजगंयवीनाथ ।

जमालपुर से १८ मील (लक्षीसराय जंक्शन से ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिले में सुलतानगंज का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से थोड़ी दूर उत्तर जहांगीरा गाँव के पास गंगा के बीच धारा में एक चट्टान पर अजगयवीनाथ महादेव का मन्दिर है । यात्रीगण नाव में सवार हो चट्टान पर जाते हैं । ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँ जड़ुमुनि का आश्रम था और बैजू नामक ग्वाला उसी स्थान से गगाजल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाता था । बहुतेरे लोग वहाँ से जल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाते हैं । अजगयवीनाथ लिंगस्वरूप हैं । उन के पास जड़ुमुनि का स्थान और उनके मन्दिर के आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर हैं । चट्टान के बगल में चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओं की मूर्तियाँ बनी हुई हैं । माघ की पूर्णमासी से फागुन की शिवरात्रि तक चट्टान पर मेला होता है ।

भागलपुर ।

सुलतानगंज से १५ मील (लक्षीसराय जंक्शन से ५८ मील) पूर्व में कहाह पुर का रेलवे स्टेशन है । सूरे विहार में किस्मत और जिले का सदर स्थान, (२५ अंश १५ कला १६ विकला उत्तरअक्षांश और ८७ अंश २ कला २९ विकला पूर्व देशांतरमें) गंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर २ मील लम्बा और लगभग १ मील चौड़ा भागलपुर शहर है ।

सन १८९१ की मनुष्य गणना के समय भागलपुर शहर और इसकी फौजी छावनी में ६९१०६ मनुष्य थे; अर्थात् ३४७०८ पुरुष और ३४३९८ स्त्रियाँ । इन में से ४८९१० हिन्दू, १९६६६ मुसलमान, ३०३ कृस्तान, १४४ जैन, ४३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी, २५ बौद्ध और १५ यहूदी थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ४९ वाँ, बंगाल में ७ वाँ और बिहार में ४ या शहर है ।

शुजागंज, नाथनगर, चंपानगर, समूरगंज, आदि नामों से कई त्वंड होकर भागलपुर शहर बसा है । शुजागंज में रेलवे स्टेशन है । और यह सब महल्लों

से अधिक रचनकदार है। स्टेशन के निकट टोडरमल की उत्तम धर्मशाला बनी हुई है उसी में में टिका था। गंगा के तीर पर वूढ़ानाथ महादेव-का सुन्दर मन्दिर बना है। भागलपुर में वूढ़ानाथ बड़े प्रसिद्ध देवता हैं। एक महंत के आधीन मन्दिर की बड़ी जायदाद है।

चंपानगर, जो पूर्व समय में चौद्ध राजाओं की राजधानी था। 'शुजागंज' से ४ मील पश्चिम है। उसमें रामेश्वरदत्त ठाकुर का सदावर्त जारी है। स्टेशन से करीब २ मील एक पहाड़ी पर अङ्कुरेजों की एक पुरानी कोठी है। स्टेशन से २ मील कमिश्नरी और जिले की कचहरियाँ हैं। स्टेशन से ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन यात्री उत्साह से जाते हैं। मन्दिर के पास एक बड़ी सराय है। शहर में अङ्कुरेजों के २ स्मरण स्तंभ और शहर में तथा इसके आस पास मुसलमानों के कई दरगाह हैं। करनगढ़ पहाड़ी पर देशी पल्टन रहती है।

भागलपुर तिजारत का स्थान है। वहाँ रेशम का बड़ा कार वार होता है और २५५ गंठे के सेर से जिनिस बिकते हैं। शहर में जल कल लगी है। भागलपुर का सेंट्रल जेल, दरी, कम्बल और पर्दा बनने के लिये मशहूर है। भागलपुर में एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना, और कई कि. वि. जमिन्दार हैं।

भागलपुर जिला—जिले का क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है। यह जिला गंगा के दोनों ओर है। इसके उत्तर नैपाल का राज्य; पूर्व ओर गंगा के उत्तर का पूर्निया जिला; पूर्व और दक्षिण गंगा के दक्षिण ओर संथाल परगना जिला और पश्चिम दरभंगा और मुँगेर जिला है।

जिले के पूर्वोत्तर भाग में जंगल है, जिसमें बाघ, भैंसे, और गेंडे रहते हैं। जिले में आम और ताड़ के बाग बहुत हैं। भागलपुर शहर के २० मील दक्षिण से पहाड़ी देस आरंभ होता है। पानी जमीन की सतह से थोड़ेही नीचे है। वृक्ष बड़े बड़े होते हैं। इस जिले में गंगा के दक्षिण चंदन नदी और उत्तर कोशी, तिलगुगा, डिमरा इत्यादि बहुत नदियाँ बहती हैं और रेशम के कीड़े बहुत पाले जाते हैं। अमरपुर, खदबली, बलुआ और मुलतानगंज तिजारती गांव है। गंगा से उत्तर सींगेश्वर स्थान गांव में हाथी का मेला होता है।

अजगंयवीनाथ ।

• जमालपुर से १८ मील (लक्षोत्तराय जंक्शन से ४३ मील) पूर्व भागलपुर जिले में सुलतानगंज का रेलवे स्टेशन है । स्टेशन से थोड़ी दूर उत्तर जहांगीरा गाँव के पास गंगा के बीच धारा में एक चट्टान पर अजगयवीनाथ महादेव का मन्दिर है । यात्रीगण नाव में सवार हो चट्टान पर जाते हैं । ऐसा प्रसिद्ध है कि वहाँ जह्नुमुनि का आश्रम था और वैजू नामक ग्वाला उसी स्थान से गंगाजल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाता था । बहुतेरे लोग वहाँ से जल ले जाकर वैद्यनाथ जी पर चढ़ाते हैं । अजगयवीनाथ लिंगस्वरूप हैं । उन के पास जह्नुमुनि का स्थान और उनके मन्दिर के आस पास कई जीर्ण पुराने मन्दिर हैं । चट्टान के बगल में चट्टान काट कर गणेश, सूर्य, विष्णु, भगवती, महावीर आदि देवताओं की मूर्तियाँ बनी हुई हैं । माघ की पूर्णमासी से फागुन की शिवरात्रि तक चट्टान पर मेला होता है ।

से अधिक रवनकदार है । स्टेशन के निकट थोडरमल की उत्तम धर्मशाला बनी हुई है उसी में में टिका था । गंगा के तीर पर वूढ़ानाथ महादेव का सुन्दर मन्दिर बना है । भागलपुर में वूढ़ानाथ बड़े प्रसिद्ध देवता हैं । एक महंत के आधीन मन्दिर की बड़ी जायदाद है ।

चंपानगर, जो पूर्व समय में चौख राजाओं की राजधानी था । शृङ्गागंज से ४ मील पश्चिम है । उसमें रामेश्वरदत्त ठाकुर का सदावर्त जारी है । स्टेशन से करीब २ मील एक पहाड़ी पर अङ्कुरेजों की एक पुरानी कोठी है । स्टेशन से २ मील कमिश्नरी और जिले की कचहरियाँ हैं । स्टेशन से ३ मील एक जैन मन्दिर है, जहाँ जैन यात्री उत्साह से जाते हैं । मन्दिर के पास एक बड़ी सराय है । शहर में अङ्कुरेजों के २ स्मरण स्तंभ और शहर में तथा इसके आस पास मुसलमानों के कई दरगाह हैं । करनगढ़ पहाड़ी पर देशी पल्टन रहती है ।

भागलपुर तिजारत का स्थान है । वहाँ रेशम का बड़ा कार बार होता है और २५ गंडे के सेर से जिनिंस बिकते हैं । शहर में जल कल लगी है । भागलपुर का सेंट्रल जेल, दरी, कम्बल और पर्दा बनने के लिये मशहूर है । भागलपुर में एक देशी कालिज, सिविल अस्पताल, दवाई खाना, और कई किंवा जमिन्दार हैं ।

भागलपुर जिला—जिले का क्षेत्रफल ४२६८ वर्गमील है । यह जिला गंगा के दोनों ओर है । इसके उत्तर नेपाल का राज्य; पूर्व ओर गंगा के उत्तर का पूर्निया जिला; पूर्व और दक्षिण गंगा के दक्षिण ओर संथाल परगना जिला; और पश्चिम में है ।

१० सांथिया ।

१४४ खाना जंक्शन ।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल ।

नलहाटी जंक्शन से २७ मील पूर्व मुर्शिदाबाद के पास अजीमगंज ।

पूर्वोत्तर ४६ मील और गंडे रहते हैं ।

५७ मील आसनसोल जंक्शन,

१०८ मील मधुपुर जंक्शन,

१२६ मील वैद्यनाथ जंक्शन,

और १८७ मील लक्ष्मीसराय जंक्शन ।

(२) साह्यगंज से उत्तर कुछ पश्चिम

इष्टनंगाल स्टेट रेलवे; मनीहारी
घाट से फासिला ।

• मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

७ मनीहारी ।

२३ कठिहर जंक्शन ।

४० पुर्निया ।

• ४५ कसबा ।

८२ फरिसंगंज ।

९६ अचराघाट (कोसी के किनारे पर)

कठिहर जंक्शन से पूर्व २४

• मील वरसूई जंक्शन, ३७ मील

रायगंज, ७० मील दीनाजपुर

और ८९ मील पार्वतीपुर जंक्शन । और वरसूई जंक्शन से ३५ मील उत्तर किसनगंज ।

(३) साहबगंज से पश्चिम इष्टींडियन रेलवे

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२६ कहलगांव ।

४६ भागलपुर ।

६१ सुलतानगंज ।

७९ जमालपुर जंक्शन ।

१०४ लंघीसराय जंक्शन ।

जमालपुर जंक्शन से

मील पश्चिमोत्तर मुँगेर ।

राजमहल ।

साहबगंज से २६ मील दक्षिण कुछ पूर्व तीनपहाड़ का रेलवे जंक्शन है । तीनपहाड़ से ७ मील पूर्वोत्तर राजमहल तक रेलवे की शाखा गई है । सूबे बिहार के मंथाल परगना जिले में (२५ अंश, २ कला, ५१ विकला, उत्तर अर्धश और ८७ अंश ५२ कला ५१ विकला पूर्व देशांतर में) गंगा के दहिने सब डिवीजन का सदर स्थान राजमहल एक छोटा कसबा है ।

राजमहल एक समय बंगाल की राजधानी था, अब मट्टी के छोटे मकानों का, जिन में चंद अच्छे मकान हैं, एक छोटा कसबा है, जिसमें सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय केवल ३८३९ मनुष्य थे । वर्तमान कसबे के पश्चिम मुसलमानों के पुराने शहर के खंडहर जंगल में ४ मील फैले हुए हैं । रेलवे स्टेशन से कई सी गज दूर उत्तर से दक्षिण को १०० फीट लंबी मंगीदालान नामक एक इमारत हीन दशा में खड़ी है । उसके मध्य में काले पत्थर के ३ दरवाजे हैं । लोग कहते हैं कि दिल्ली के बादशाह जहांगीर के पुत्र बिहार के गवर्नर सल्तान गुजा के महल का यह हिस्सा है । कचहरी से ३ मील पश्चिम

मैनातालाब के दक्षिण एक इंटे' की इमारत और १०० गज दक्षिण मैनामस-जिद है । इनके अलावे राजमहल में बहुतेरी पुरानी मसजिदें और मुसलमानों के स्मारक चिन्ह हैं । स्टेशन के पास सरकारी इमारतें बनी हुई हैं । गल्ला, तसर, पहाड़ी बांस, छोटी लकड़ियां इत्यादि वस्तु राजमहल से दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं ।

इतिहास—प्रथम राजमहल का नाम आगमहल था । बादशाह अकबर का प्रसिद्ध जनरल राजा मानसिंह ने उड़ीसा को जीत कर लौटने पर सन् १५९२ ई० में आगमहल को सूवे बंगाल का सदर स्थान बनाया और उस का नाम राजमहल रख दिया । सन् १६०७ में इसलामखां ने राजमहल को छोड़ कर दाके को सूवे का सदर स्थान बनाया, मितु सन् १६३९ में बादशाह जहांगीर के पुत्र सुल्तान शुजा ने फिर राजमहल को बंगाल का सदर स्थान नियत किया । अठारहवीं शदी के आरम्भ में जब मुर्शिदाबुलीखां ने मुर्शिदाबाद को सूवे का सदर मुकाम बनाया, तब से राजमहल की घटती होने लगी । सन् १८६३ में गंगाजी की प्रधान धारा राजमहल से ३ मील दूर हो गई ।

मालदह और इंगलिस बाजार ।

राजमहल से २४ मील दूर (२५ अंश १४ बिकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ११ कला, २० बिकला पूर्व देशांतर में) महानन्दा के दहिने किनारे पर पुराने मालदह से ४ मील दक्षिण सूवेविहार में भागलपुर विभाग के मालदह जिले का सदर स्थान इंगलिसबाजार कसबा है, जिस को अंगरेजी बाजार भी कहते हैं । राजमहल के समीप आगबोट गंगा के आर पार चलता है आगे बहाती सड़क है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय इंगलिसबाजार में १३८१८ मनुष्य थे; अर्थात् ८०५७ हिन्दू, ५७४६ मुसलमान, ८ कुस्तान, ४ जैन और ३ एनिमिष्टिक ।

कसबे की बाड़ से बचाने के लिये एक छोटा बांध बना है । इण्डियन कंपनी की पुरानी कोठी में जिले की कचहरियां और संपूर्ण सरकारी आफिस हैं । कसबे में गल्ले की बड़ी त्रिजारत होती है ।

इंगलिसबाजार से लग भग ४ मील दूर महानन्दा और कालिंदी के संगम के निकट पुराना मालदह, जिसको मालदा भी कहते हैं, एक छोटा कमवा है। सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय मालदह में ४६९४ मनुष्य थे। मालदह में बहुतरे लोग रेशम के कीड़ों को पाल कर रेशम का काम करते हैं। वहां रेशमी कपड़ा अच्छा बुना जाता है और वहां के आम बहुत प्रसिद्ध हैं। मालदह अठारहवीं शती में रुई और रेशम के काम के लिये बड़ा प्रख्यात था। वहां डक और फरासिसियों की कोठियां थीं। इंगलिसबाजार में सन १६५६ की नियत की हुई अंगरेजों की कोठी थी। मालदह से २५ मील दक्षिण महानन्दा और खादीनदी के संगम के पास रहमपुर तिनारती कमवा है।

मालदह जिला—उस जिले का क्षेत्रफल १८९१ वर्ग मील है। इस के पश्चिम और पश्चिम-दक्षिण गंगा नदी बहती है। यह जिला सन १८७६ ई० में राजशाही विभाग से भागलपुर विभाग में कर दिया गया। महानन्दा नदी जिले के मध्य होकर उत्तर से दक्षिण बहती है। जिले के पूर्व का भाग ऊंचा है। जिले में महानन्दा के अतिरिक्त कालिंदी, पूर्णभागा, कंद नदियां बहती हैं और बंगाल की प्रसिद्ध पुरानी राजधानी गौड़ और पांडुआ की दिलचस्प तराहियां हैं।

जिले में सन १८९१ की मनुष्य गणना के समय ८१२८५५ और सन् १८८१ में ७१०४४८ मनुष्य थे; अर्थात् ३७१,१५३ हिन्दू, ३२९५२५ मुसलमान, १७३४ पहाड़ी संयाल जो अपने पुराने मत में हैं, २६ कृस्तान, ७ यहूदी और ३ ब्राह्मण। पहाड़ी कोमों में से ७००४४ हिन्दू में लिखे गए थे, जिन में ६०७०० कोचवाली और राजवंशी, ७५७८ बीन, ४१८२ खरवार, ८९७ कोल ८३३ संयाल और २५९ भुंडयां थे। खास हिन्दुओं में २३७२६ कैरत ६६८७५ ग्वाला, १५७३६ तियर, १२००१ ब्राह्मण और शेष में दूसरी जातियां थीं। राजपूत केवल ५१०४ थे।

इतिहास—मालदह जिले का प्राचीन इतिहास गौड़ और पांडुआ इतिहास में देखो। सन् १६५६ में इस्टइंडियन कंपनी की कोठी मालदह में निय-

हुई । सन १८१३ में राजशाही, दीनानापुर और पुर्नियां इन ३ जिले से निकाल कर मालदह जिला बना ।

गौड़ ।

इंगलिसबाजार से ८ मील दक्षिण पश्चिम मालदह जिले में (२४ अंश ६२ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १० कला पूर्व देशांतर में) बंगाल की मध्यम राजधानी गौड़ अति हीन अवस्था में विद्यमान है, जिसको लखनवती भी कहते हैं । पुरानी वस्तुओं के प्रेमियों के लिये यह बड़ा हृदयग्राही है । इस के किले और महलों में बड़ा जंगल हो गया था, किंतु निवासीगण जंगल को साफ करके खेती बढ़ाते जाते हैं । शहरतलियों के साथ गौड़ का क्षेत्रफल २० से ३० वर्गमील तक था । खास शहर उत्तर से दक्षिण तक ७१ मील लंबा और १ से २ मील तक चौड़ा अर्थात् लगभग १३ वर्गमील क्षेत्रफल को छिपाता था । महानंदा और गंगा के बीच में गौड़ की तराहियां फैली हुई हैं । गौड़ के पश्चिम भागीरथी के वर्तमान छोटी नाले में पहले गंगा की प्रधान धारा थी । अब गंगा की धारा चार पांच कोस दूर गई है । लगभग ६ मील लंबी किलावदियों की एक लाइन भागीरथी के पुराने नाले से भोलाहाट के पास महानंदा के निकट तक टेढ़ी शकल में फैली हुई है । किले की भीति खास कर डटे से बनी हुई लगभग १०० फीट चौड़ी है । घुमाव के पूर्वोत्तर भाग के समीप एक फाटक है । उसके आस पास अनेक तालाब और एक मुसलमानी फकीर का स्मारक चिन्ह है । उससे पूर्वोत्तर ७१ फीट ऊंचा एक पुराना मीनार खड़ा है । किले की भीति के उत्तर आदिशूर और बलालसेन दो हिंदू राजाओं के महलों की निशानियां हैं और पीछे गौड़ की उत्तरीय शहरतली है । उसके पश्चिमी भाग में भागीरथी के निकट हिंदुओं का बनाया हुआ उत्तर से दक्षिण प्रायः १६०० गज लंबा, और पूर्व से पश्चिम तक ८०० गज से अधिक चौड़ा सागर-दीधी नामक मीठे जल का बड़ा तालाब है । उसके किनारे डटे से बंधे हुए हैं । किनारों पर मुसलमानी इमारतें हैं, जिनमें मखदूमशाह जलाल का मकबरा प्रसिद्ध है । उस शहरतली के सामने शाहबुल्लापूर बाजार के पास गंगा के पुराने वेड़

का एक प्रधान घाट है। उस जगह दूर दूर से मुँह जलाने के लिये लाए जाते हैं। गौड़ में छोटे तालाब प्रत्येक स्थानों में देखे जाते हैं। स्थान स्थान में मकानों की नैव और पूजा के छोटे स्थानों की निगलनियां देख पड़ती हैं। भागीरथी के किनारे पर उत्तर से दक्षिण तक लगभग १ मील लंबा और ६०० से ८०० गज तक चौड़ा मुसलमानों का किला फैला हुआ है। किले की दीवार इंटे से बनी हुई है। प्रत्येक कोनों के पास पाए और दक्षिण के कोने के निकट ४० फीट ऊंची और ८ फीट मोटी इंटे की दीवार से घेरा हुआ महल उजाड़ पड़ा है। महल से थोड़ा उत्तर शाही कबर स्थान है जिसमें हुसेनशाह और बंगाल के दूसरे स्वाधीन बादशाह दफन किए गए थे। वह स्थान निहायत उजड़ गया है। किले के भीतर एक उजड़ी हुई मसजिद और दूसरी कदमरसूल नामक छोटी मसजिद है। किले के पूर्व की दीवार से बाहर इंटे के एक ऊंचे टावर पर एक कमरा है, जिस पर जाने के लिये गोलाकार सीढ़ियां बनी हैं। किले से लगभग १ १/२ मील उत्तर खाई से घेरा हुआ फूलबाग नाम से प्रसिद्ध एक स्थान है। उसके दक्षिण-पूर्व 'प्यास वारी' नामक खारा जल का एक बहुत बड़ा तालाब है। गौड़ शहर की दीवार के भीतर बहुतेरे दूसरे बड़े तालाब हैं। उनमें से कई एक में घड़ियाल रहते हैं। वहां के तालाबों में छोटी सागरदीपी उत्तम है। 'प्यास वारी' और किले के बीच में गौड़ में सब से बड़ी इमारत सुनहली मसजिद खड़ी है। इसकी लंबाई उत्तर से दक्षिण तक १८० फीट, चौड़ाई पूर्व से पश्चिम तक ६० फीट और ऊंचाई कारनिस के सिरो भाग तक २० फीट है। पहले इसके ऊपर ३३ गुंज थे। गौड़ शहर के दक्षिण की दीवार में कोतवाली दरवाजा नामक सुन्दर बनावट का पुराना फाटक खड़ा है।

इतिहास—गौड़ के नियत होने का समय जान नहीं पड़ता है।

ऐसा निश्चय है कि यह पूर्वकाल में हिन्दू राजाओं के आधीन बंगाल की राजधानी थी। इसी गौड़ से पंचगौड़ ब्राह्मण प्रसिद्ध हुए थे। क्या ऐसी है कि गौड़ के राजा आदिशूर ने कन्नौज के राजा से ५ वैदिक ब्राह्मण मांगा। कन्नौज में देश देश के विद्वान ब्राह्मण रहते थे। राजा ने ५ वैदिक ब्राह्मणों को गौड़ में भेज दिया। राजा आदिशूर ने अवध प्रदेश के गोंडा के ब्राह्मण को गौड़

की, मिथिला देश के ब्राह्मण को मैथिल की, कन्नौज के ब्राह्मण को कानकुब्ज की, सरस्वती के निकट के ब्राह्मण को सारस्वत की, और उत्कल देश के ब्राह्मण को उत्कल की पदवी दी । देशी लोग गौड़ को उनड़े पुजड़े महलों में से चंद को आदिशूर बल्लालसेन और लक्ष्मणसेन के कहते हैं । जान पड़ता है कि शहर का पुराना नाम लक्ष्मणावती था, जिसका अपभ्रंश लखनावती है । गौड़ नाम भी बहुत पुराना है किन्तु यह राज्य का नाम ज्ञात होता है ।

गौड़ का ठीक इतिहास मुसलमानों के विजय के समय सन् १२०४ ई० से आरंभ होता है । लगभग ३०० वर्ष तक यह मुसलमानों के बंगाल का प्रधान बैठक था । उस समय के अन्त के भाग में बहुतेरी मसजिदें और मुसलमानों की दूसरी इमारतें बनी थीं, जो अबतक देखने में आती हैं । बंगाल के अफगान बादशाहों ने स्वाधीन बन जाने के पश्चात् गौड़ को छोड़ कर पाण्डुआ को राजधानी बनाया; किन्तु पीछे पाण्डुआ छोड़ दिया गया और फिर गौड़ मुसलमानों की राजधानी हुआ । अफगान वंश के पीछे गौड़ से चंद मील दक्षिण-पश्चिम गंगा के किनारे पर गवर्नमेंट का सदर स्थान बनाया गया । सन् १८३७ में शेरशाह अफगान ने गौड़ को लूटा । उस समय से गौड़ की घटती आरंभ हुई । सन् १८७५ में दिल्ली के मुगल बादशाह अकबर ने गौड़ के सब से पिछले अफगान बादशाह दाउदखां को परास्त किया । शहर बरबाद हुआ ।

पाण्डुआ ।

मालदह से ८ मील, और ईंगलिसबाजार से लगभग १२ मील (गौड़ से २० मील) पूर्वोत्तर मालदह जिले में पाण्डुआ का अदीना मसजिद है । पाण्डुआ को परुआ भी कहते हैं । एक पक्की ६ मील लंबी सड़क पाण्डुआ होकर गई है । मुसलमानों के प्रायः संपूर्ण स्मारकचिन्ह और लगातार शहर की निशानियां उसी सड़क के किनारों पर हैं । सिफंदरशाह ने सन् १३६० ई० में अदीना मसजिद को बनवाया । मसजिद उत्तर से दक्षिण को लगभग ५०० फीट और पूर्व से पश्चिम को ३०० फीट फैली हुई है । यह ऐसे ढब से बनी है कि इसकी दीवारों और खंभों से १२७ मुरब्बे भाग बन गए हैं । प्रत्येक भाग के ऊपर एक गुम्बज है; बाहरी

ओर बहुतेरी छोटी खिड़कियां बनी हुई हैं। खास मसजिद के मध्य का गुम्बज सतह से ६० फीट ऊंचा है। पांडुआ की संपूर्ण इमारतें पत्थर की हैं। गौड़ के समान, पांडुआ में भी अब पहले के समान जंगल नहीं है। वहां के निवासी हल से जीत कर खेत बढ़ाते जाते हैं। किले की निशानी भी दूर तक देखने में आती है। मखदुमशाह जलाल और उसके पोते कुतुबशाह के स्मारक चिन्ह बने हैं। वहां कार्तिक या अगहन में मेला होता है और ५ दिन रहता है। मेले में पांच छः हजार मनुष्य आते हैं।

इतिहास—पांडुआ आरंभ में गौड़ के बाहरी का एक पड़ाव था। पीछे दीहाती लोगों के रहने का प्रिय स्थान हुआ। बंगाल के अफगान बादशाह ने स्वाधीन होजाने के पश्चात् सन् १३५३ ई० में गौड़ को छोड़कर पांडुआ को राजधानी बनाया। जान पड़ता है कि तिजारंती और कारीगर लोगों ने गौड़ को नहीं छोड़ा, केवल सरकारी कचहरियां पांडुआ में बनाई गईं। पीछे पांडुआ को कोड़ कर फिर गौड़ राजधानी बना। किन्तु कुछ दिनों तक पांडुआ बादशाहों का दीहाती महल था। पांडुआ में सुनहली मसजिद, १० गुम्बजवाली लखीमसजिद, अदीना मसजिद, जो इस देश में सब से अधिक प्रसिद्ध इमारत है और बादशाहों का महल प्रधान इमारतें हैं।

मुर्शिदाबाद ।

सीनपहाड़ जंक्शन से ५० मील (साइयगंज से ७४ मील) दक्षिण मुर्शिदाबाद जिले के नलहाटी में रेलवे जंक्शन है। लोग कहते हैं कि राजा नल के नाम से इसका नाम नलहाटी है। नलहाटी वस्ती से कई एक सौ गज दूर पहाड़ी के नीचे पत्थर पर सीताजी का चरण चिन्ह और १ मील दूर पार्वतीजी का बड़ा मंदिर है।

नलहाटी से पूर्व २७ मील की रेलवे शाखा भागीरथी गंगा के दहिने किनारे पर अजीमगंज को गई है। अजीमगंज मुर्शिदाबाद जिले में एक वस्ती है, जिसमें कई एक धनी सौदागर रहते हैं और कई एक सुन्दर जैन मन्दिर बने हुए हैं। बाजार होकर एक पक्की सड़क गई है। अजीमगंज और मुर्शिदाबाद के बीच में नाव चलती है।

अजीमगंज के सामने उस पार अर्थात् भागीरथी के बाँए किनारे पर (२४ अंश ११ कला ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला, ५० विकला पूर्व देशांतर में) सूबे बंगाल के नदिया विभाग में मुर्शिदाबाद जिले में प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय मुर्शिदाबाद में ३५५७६ मनुष्य-अर्थात् १८०४६ पुरुष और १७५३० स्त्रियाँ। इनमें २०७८९ हिंदू, १२६१५ मुसलमान, २१३२ जैन और ४० कृस्तान थे।

मुर्शिदाबाद एक समय बहुत बड़ा शहर था। यद्यपि इसकी मनुष्य-संख्या घट रही है, किंतु अब तक इसमें बहुतेरे धनी जैन सोदागर विद्यमान हैं और चंद वस्तु देखने योग्य हैं; दूर तक इँटे के बहुतेरे मकान बने हुए हैं; मकानों के पास बांस का झाड़ और वृक्ष लगे हुए हैं और कई महलों में सुन्दर देवमन्दिर बने हुए हैं।

निजामत किले से अलग मुबारक मंजिल के निकट मनीवेगम की बनवाई हुई मसजिद; किले के बाहर बरहमपुर जानेवाली सड़क के पास घोड़े गाड़ी के मकान और घोड़े और हाथियों का बड़ा अस्तबल; और सामने कुछ दूर पर निजामत कालिज, जो नवाब के रिस्तेदारों की शिक्षा के लिये ७८००० रुपये के खर्च से बना है, देखने में आते हैं। कसबे के बाहर दक्षिण पूर्व और मोती शील के पूर्वोत्तर के कटे में मक्के की बड़ी मसजिद के ढाँचे की बनी हुई नवाब मुर्शिदकुलीखाना का मकबरा है। इसके ७० फीट ऊँचे दो मीनार हीन-दशा में खड़े हैं। इस अभिप्राय से सीढ़ी के नीचे नवाब की कबर बनी है कि सब लोगों के पांव उस पर पड़ेंगे। उसके पड़ोस में तोपखाना था। सड़क से ६० गज दूर १७ फीट लंबी, जिसकी नल ६ इंच चौड़ी है, एक बड़ी तोप पड़ी है, उसपर सन् १६३७ का पारसी लेख है।

कसबे से २ मील दक्षिण एक मनोरम स्थान में मोतीशील है। शील में बहुतेरे घड़ियाल रहते हैं। पहले शील के घगलों में शिरानुदौला का बनवाया हुआ उत्तम महल था, उसकी चंद मेहराबियाँ अब तक देखने में आती हैं।

भागीरथी के दाहिने किनारे पर मोतीशील के सामने मुर्शिदाबाद के नवाबों

का खुसवाग नामक पुराना कबरगाह है, वहाँ बहुतेरे मकबरो के अतिरिक्त एक मसजिद और अन्य दो इमारतें हैं। एक मकबरे में सिराजुद्दौला और उसकी स्त्री की कबर है।

मुर्शिदाबाद में धनी जैन सौदागर बहुत हैं। बहुत लोग रेशम के कीड़े पालते हैं और कोए को कातनेवालों के पास भेजते हैं। रेशमी कपड़ा और रुमाळ बहुत तैयार होते हैं। सोने चांदी के कारचोवी और हाथीदांत का उत्तम काम बनता है।

कासिमबाजार में एक बंगाली राजा का सुन्दर महल बना है। राजवाड़ी के पास बेवमंदिर के चारों बगलों के मकानों में अनेक देवमूर्तियां स्थापित हैं और वहाँ सदावर्त लमा हुआ है।

“ नवाब का महल—मुर्शिदाबाद में दिखचस्पी की प्रधान वस्तु नवाब का महल है। वह भागीरथी के किनारे पर बहुत बड़ी इमारत इटेलियन ढांचे का बना हुआ है, जो सन् १८३७ ईस्वी में लगभग १७००००० रुपये के खर्च से १० वर्ष में तैयार हुआ था। वह महल ४१५ फीट लंबा, २०० फीट चौड़ा और ८० फीट ऊंचा है। अग्र भाग उत्तर है, मार्बुल का चमकीला फर्श बना है। जेवनार का मकान २९० फीट लंबा, जिसमें आइने जहाँ बहुतेरे दरवाजे हैं, बना हुआ है। इमारत के मध्य में गुंबज के नीचे शाखाओं का एक बड़ा झाड़ लटका है और फर्श पर हाथीदांत का चूण सज्जत है। दीवार में नवाब और उनके वंश के बहुतेरे छोगों की तस्वीरें टंग हुई हैं। प्रधान दरवाजे के दहिने जनाना किता है।

हाते के भीतर उत्तर के प्रधान फाटक के सामने सन् १२६४ हिजरी (सन् १८४७ ईस्वी) का बना हुआ एक सुन्दर इमामबादा खड़ा है।

खास महल को लोग आइनामहल कहते हैं। एकही घेरे के भीतर नवाब की महल, इमामबादा और दूसरी इमारतें हैं। सब पिछाकर निजामत किला कहलाता है।

मुर्शिदाबाद जिला—जिले के उत्तर से दक्षिण-पूर्व के कोन तक सीमा पर गंगा की प्रधान धारा पदमा, जो इस जिले को मालदह और राज-

शाही जिले से अलग करती है; दक्षिण वीरभूमि जिला और पश्चिम संघाल परगना जिला है। जिले का प्रधान कसबा मुर्शिदाबाद और सदर स्थान बरहमपुर है। गंगा की दूसरी धारा भागीरथी जिले के मध्य होकर बहती है। भागीरथी के दाहिने अर्थात् पश्चिम का देश सरद और अंकड़ीला है और उपजाऊ नहीं है, किन्तु पूर्व का देश जो पदमा, भागीरथी और जलांगी नदियों से घेरा हुआ है; बंगाल के सबसे अधिक उपजाऊ देशों में से एक है। गंगा के बाएँ के हिस्से में भगवानगोला और धुलियान प्रधान बाजार और बाएँ किनारे पर जंगीपुर, जियागंज, मुर्शिदाबाद, कासीमबाजार और बरहमपुर प्रधान स्थान है। इस जिले के मालिमापुर में प्रसिद्ध जगतमेठ का घर है। वह सरकार से कुछ पेंशन पाकर अब उसी में गुजारा करते हैं। कई छोटी धारा गंगा की धारा से निकली हैं और कई एक भागीरथी में मिरती हैं। जंगलों से मधुमक्खियों का मोम और लाही बनाई जाती है। जंगली जात संघाल और धांगड़, जूट और बूटी के वृक्षों पर लाह के कीड़े को पालते हैं। गाँव वाले अपने घर पर रेशम के कीड़े को पालते हैं और कोवे को कातने वालों के पास भेजते हैं। साल में लाखों रूपये के रेशमी कपड़े तैयार होते हैं। जल वायु अच्छा नहीं है। जिले में नील की कई बड़ी कोठी हैं। मुर्शिदाबाद के कासिम बाजार से २५ मील दक्षिण सन् १७५७ की लड़ाई का प्रसिद्ध मैदान पलासी है।

सन् १८८१ में जिले का क्षेत्रफल २१४४ वर्ग मील और मनुष्यसंख्या १०२६७९० थी, अर्थात् ६३४७९६ हिन्दू, ५८९९५७ मुसलमान, ८७७ आदि निवासी, ६७५ जैन, ४७० कृस्तान, १४ ब्राह्म, और १ बौद्ध। जातियों के खाने में १००३५५ कैवर्त, ३६५२७ सदगोप, ३५४११ ग्वाला, ३३९३५ ब्राह्मण, ३०५६८ वागड़ी, २२५५० चमार, शेष में तांती, चंडाल, कोच, कायस्थ, वनियाँ, नापित, सूड़ी, कालू, हाड़ी, डोम, मद्रक इत्यादि थे। राजपूत केवल ८९५५ थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जिले के कसबे मुर्शिदाबाद में ३५५७६, बरहमपुर में २३५१५, यमखंडी में १११३१ और जंगीपुर में १०००० से कुछ कम मनुष्य थे।

इतिहास—बंगाल के बड़े नवाब मुर्शिदाकुलीखाने ने सन् १७०४ ई० में ढाका को छोड़ कर मकसुदाबाद को सूबे का सदर स्थान बनाया और मकसुदाबाद का नाम बदल कर अपने नाम के अनुसार मुर्शिदाबाद रखवा। उस समय वह गंगा की सौदागरी का बन्दरगाह था, वहाँ उसने एक महल बनवाया। मुर्शिदाकुलीखाने ने इकबाल के साथ तमाम मुल्क बंगाल पर २१ वर्ष राज्य किया और अपने दामाद और पोते को अपना राज्य छोड़ कर मरा; परन्तु सन् १७४० में अलीवर्दीखाने हकदार वारिसों को निकाल कर खुद नवाब बन बैठा।

अलीवर्दीखाने सन् १७५६ में मर गया और उसकी जगह उसका पोता सिराजुद्दौला, जब उसकी उमर १८ वर्ष की थी, गद्दी पर बैठा। वह दोही महीने के अन्दर अङ्गरेजों से विगड़ कर एक भारी फौज के साथ कलकत्ते पर चढ़ गया। बहुत से अङ्गरेज नदी की राह से समुद्र की तरफ उतर गए और बाकी को उसने पकड़ लिया और काली कोठरी नामक किले के जेलखाने में रात होने पर बन्द करवा दिया। कोठरी बहुत तंग थी, इस किये जब दूसरे दिन सुबह को दरवाजा खोला गया तो १४६ आदमियों में से २३ आदमी जीते निकले। जितनी फौज जमा हो सकी उसको लेकर अंगरेजी अफसर क्लैव और वाटसन ने मंदरास से आकर कुछ ऐसा ही साग्हना करने के पश्चात् कलकत्ते पर फिर अपना अधिकार कर लिया।

क्लैव ने अलीवर्दीखाने के दामाद मीरजाफर को सूबे बंगाल की गद्दी के दावा के लिए तैयार किया और आप १००० गोरे २००० तिलंगे और ८ तोपें लेकर पलासी की, जो मुर्शिदाबाद से लगभग २५ मील दक्षिण है, राह ली। सिराजुद्दौला ३५०००, पैदल, १५००० सवार और ५० तोपें लेकर सामना करने को निकला। सन् १७५७ की तारीख २३ जून को जब नवान की फौज वें फिकरी से खाने पकाने में लगी थी, क्लैव ने दुश्मन के एक आगे के मोर्चे पर हमला किया। उस समय जब नवान के बहुत से अफसर मारे गए तब मीरजाफर ने, जो अङ्गरेजों से मिला था, सिराजुद्दौला को यही सलाह दी कि आज फौज पीछे हटालीजिये कल लड़ेंगे। उसी समय नवाब सिराजुद्दौला

की तमाम फौज छितर बितर हो गई, वह घेरा कर एक साँझिनी पर सवार हो भागा; किंतु राजमहल के पास से पकड़ कर मुर्शिदाबाद में लाया गया । मीरजाफर के लड़का मीरन ने उसको कतल करवा डाला ।

अङ्गरेजों ने मीरजाफर को मुर्शिदाबाद में नायब की गद्दी पर बैठाया; परन्तु सन् १७६१ में उन्होंने मीरजाफर को गद्दी से उतार कर उसकी जगह उसके दामाद मीरकासिम को नवाब बनाया ।

मीरकासिम को नवाब हुये बहुत अरसा न हुआ था कि उसने अङ्गरेजों की हुकूमत से छूटजाने का मनसूबा बाँधा । इस नियत से उसने सन् १७६३ में अपने रहने की जगह मुंगेर में मुकरर की और अवध के नवाब शुजाउद्दौला को मिलाकर अङ्गरेजों के साथ लड़ने का इरादा किया । झगड़ा बहुत बढ़ गया, तमाम सूबे में फसाद फैल गया, अङ्गरेजों के २००० हिन्दुस्तानी सिपाही पटने में टुकड़े कर डाले गए और २०० अङ्गरेज जो वहाँ और सूबे की दूसरी जगहों में मुसलमानों के हाथ पड़े काट डाले गए । घेरियो और उधानाला की २ बड़ी लड़ाइयों में मीरकासिम की फौज ने शिकस्त खाई, वह भाग कर अवध के नवाब के पास चला गया ।

मीरकासिम की जगह पर मीरजाफर फिर नवाब बनाया गया । सन् १७६५ में मीरजाफर के मरने पर उसके भाई नजमुद्दौला को अङ्गरेजों ने गद्दी पर बैठाया, जो ५,००,००० रुपया सालाना पेंशन पाता था । सन् १७६६ में नजमुद्दौला मर गया और उसका भाई सैफुद्दौला उसकी जगह बैठा । सन् १७७० में सैफुद्दौला के मरने पर उसका भाई मुबारकुद्दौला बंगाले का सूबेदार हुआ । वह नाबालिग था, कम्पनी ने उसके लिये केवल १६ लाख रुपया सालाना कबूल किया । सन् १७७२ में अंगरेजी गवर्नमेंट ने दीवानी और फौजदारी कचहरियों को मुर्शिदाबाद से उठाकर कलकत्ते में नियत किया । सन् १७९९ में टकशाल मुर्शिदाबाद से उठा दिया गया । लगभग उसी समय जिले का सदरस्थान बरहमपुर हुआ, जहाँ पहलेही से छावनी थी । मुर्शिदाबाद के नवाब सन् १८८२ ई० तक १६,००,००० रुपया सालाना पेंशन पाते थे; किन्तु अब पेंशन घटा दी गई है ।

वरहमपुर ।

मुर्शिदाबाद कसबे से ५ मील दक्षिण भागीरथी के बाएँ किनारे पर मुर्शिदाबाद जिले का सदर स्थान वरहमपुर एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वरहमपुर में २३५१५ मनुष्य थे; अर्थात् १८७७९ हिन्दू, ४२०२ मुसलमान, २८५ एनिमिष्टिक, २३६ कृस्तान और १३ जैन ।

वरहमपुर में कई एक गिरजा, कबरगाह, कालिज और वारक से लगभग १ मील दक्षिण पश्चिम जिले की कचहरियाँ, खजाना जेलखाना, और पागलखाना हैं ।

इतिहास—मुर्शिदाबाद के नवाब शिराजुद्दौला ने कासिमबाजार की अक्बरेजी कोठी को तोड़ दिया था, इसलिये सन् १७५७ की पलासी की लड़ाई के थोड़ेही पीछे फौजी वारक के लिये वरहमपुर चुना गया । सन् १७६५ में ३०२२७०० रुपये के खर्च से वारक तैयार हुआ ।

सन् १८५७ के बल्ले के समय ता० २५ फरवरी को पहले पहल १९ वीं रेजीमेंट के सिपाहियों ने इसी जगह गोली बारूद लेने से इनकार किया था । उस समय वे वारकपुर भेजे गए और वहाँ उनसे अफसरों ने सम्पूर्ण हथियार छीन लिया । सन् १८७० में वरहमपुर से फौज उठा दी गई ।

सातवा अध्याय ।

(सूत्रे बिहार में) पुर्निया, (सूत्रे बंगाल में)

दीनाजपुर, पार्वतीपुर जंक्शन, जल्पाई-

गोडी, दार्जिलिंग, (देशोराज्य)

शिकम और (स्वतंत्र राज्य)

भूटान ।

पुर्निया ।

साहबगंज से उस पार गंगा के पास मनिहारीघाट पर इष्टर्न बंगाल स्टेट

रेलवे का स्टेशन है । साहबगंज में वहाँ तक आगबोट चलता है । मनिहारी घाट से उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और ४० मील पुर्निया का रेलवे स्टेशन है ।

सूरे विहार के भागलपुर विभाग में संवरा नदी के पूर्व किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले का प्रधान कसबा पुर्निया है । सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय इस में १४५५५ मनुष्य थे; अर्थात् ९५७६ हिन्दु, ४७५७ मुसलमान, १३३ कृस्तान, ८४ जैन, ४ यहूदी और १ दूसरे ।

पुर्निया में जिले की कचहरियाँ दीवानी और फौजदारी एक दूसरी से अलग है । उनके अलावे वहाँ जेलखाना, अस्पताल और कई स्कूल हैं और मामूली सौदागरी होती है तथा कई धनी महाजनों के अच्छे मकान बने हैं । वहाँ का जलवायु अच्छा नहीं है । वहाँ बहुत धोखार हुआ करता है । किसी किसी वर्ष में तो सैकड़ पीछे ९० आदमी धोखार से बीमार हो जाते हैं; किंतु उनमें से बहुत कम आदमी मरते हैं ।

पुर्निया जिला—जिले का क्षेत्रफल ४९५६ वर्गमील है । यह भागलपुर विभाग के पूर्वोत्तर का जिला है । इसके उत्तर नैपाल का राज्य और दार्जिलिंग जिला; पूर्व जलपाई गोड़ी, दीनाजपुर और मालदह जिले; दक्षिण गंगा नदी, बाद भागलपुर और संथाल परगना जिला और पश्चिम भागलपुर जिला है । जिले के आधे पश्चिमीभाग में प्रवेशी और भेड़ के झुंडों के चरागाह हैं और पूर्वी हिस्से के अपेक्षा उस भाग में वस्ती बहुत कम है । जिले की सम्पूर्ण नदियाँ गंगा में गिरती हैं । कोसी नदी नैपाल राज्य से ३ धाराओं से निकली है और अंगरेजी सीमा में पहुँचने पर उसकी चौड़ाई लगभग १ मील हो गई है । उसकी धार बड़ी तेज है । प्रति वर्ष उसका स्थान बदलता है । कालीकोसी दक्षिण ओर साहबगंज के सामने गंगा में गिरती है । महानन्दा नदी शिकम के पहाड़ों से निकल कर जिले के दक्षिण-पूर्व इस जिले में प्रवेश करके जिले के पूर्वी सीमा पर ८ मील तक बहती है । वहाँ से वह पहले पश्चिम को, उसके बाद दक्षिण को और अंत में पूर्व को बहती हुई मालदह जिले में जाकर गंगा में मिल गई है । महानन्दा के किनारे पर कलियागंज, हल्दीवाड़ी, खड़खड़ी,

किशनगंज, दुलारगंज और बरसूई तिजारती गांव हैं। जिले में कोसी के किनारों पर और बाबूदार टापुओं में तथा उत्तरी सीमा के जंगल में बाघ रहते हैं।

जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १९४०६५५ और सन् १९८१ में १८४८८७ मनुष्य थे; अर्थात् १०७६५३१ हिन्दू, ७७११३० मुसलमान, ८७९ कोल, ३२७ कृस्तान और १२ यहूदी। जातियों के खाने में १३१६२९ ग्वाला, ७१८३३ कोच, ४८४६५ राजपूत, ४४२२१ कैवरत, ३८१३१ तेली, ३५५८४ घानुक, ३४८२२ ब्राह्मण, ३१२१० बनियाँ, ३१२०९ मुसहर, १२७६१ कोयस्थ और शेष में दूसरी जातिवां थीं। जिले के कसबे पुर्निया में १५०१६, बसगांव में ६११८, सीतलपुर में ६००२, किसनगंज में ६०००, रानीगंज में ५१७८, भटवाग में ५७२३ और कसबा में ५१२४ मनुष्य थे। किसनगंज और खगड़ा में मुसलमान राजा हैं।

इतिहास—१३ वीं सदी में पुर्निया जिला मुसलमानों के आधीन हुआ। लोग कहते हैं कि उससे पहले जिले का दक्षिणी भाग बंगाल के अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन के राज्य का एक भाग था। १७ वीं शदी में नवाब उस्मालखां पुर्निया का फौजदार था। अबदुल्लाखां उसका उत्तराधिकारी हुआ। सन् १७२२ में बभनारखां के मरने पर सयफखां पुर्निया का सूबेदार हुआ। सन् १७५६ में बंगाल के नवाब अलिबर्दीखां के दामाद सैयद अहमदखां के मरने पर सवकृतजंग उत्तराधिकारी हुआ। नवाबगंज के निकट फौ लड़ाई में सवकृतजंग मारा गया। सन् १७७० में एक अंगरेजी अफसर सुपरिंटेंडेंट नियत हुआ। कालीकोसी के स्थान छोड़ने के कारण क्रम क्रम से सन् १८२० ई० में पुर्निया कसबा रोगवर्द्धक स्थान हो गया। इधर उसकी जन-संख्या बहुत घट गई है। लगभग सन् १८१५ में सरकारी आफिस २ मील पश्चिम ऊंची भूमि पर हटा दिये गए।

दीनाजपुर ।

मनिहारीघाट से उत्तर २३ मील कठिहर जंक्शन और कठिहर से पूर्व

२४ मील घरमुई बाजार, ३७ मील दीनाजपुर जिले में एक सवदिवीजन रायगंज और ७० मील दीनाजपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में (२५ अंश ३८ कला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश ४० कला, ४६ विकला पूर्व देशांतर में) पूर्णभाभा नदी के पूर्व किनारे पर जिले का सदर स्थान दीनाजपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दीनाजपुर कसबे में १२२०४ मनुष्य थे; अर्थात् ६६६६ हिंदू, ५३७३ मुसलमान, ८६ कृस्तान, ७८ जैन और १ बौद्ध।

दीनाजपुर में सिविल कचहरियां, अस्पताल, पुलिसस्टेशन, स्कूल और एक राजा है। राजवाड़ी में कलियाजी का सुंदर मंदिर बना हुआ है।

दीनाजपुर कसबे से १८ या २० मील उत्तर जंगल में कंतजी का विशाल मंदिर स्थित है। मंदिर के सिरो भाग पर ९१ शिखर बने हैं और नीचे से ऊपर तक अनेक भांति की सैकड़ों मूर्तियां बनी हुई हैं। वहां कंतजी के भोगराग का बड़ा प्रबंध रहता है। महापुआ प्रसाद मिलता है। कगलियों को कच्ची रसोई खिलाई जाती है। कंतजी के मंदिर से लगभग २० मील पश्चिम जंगल में गोविंदजी का एक बड़ा मंदिर है।

दीनाजपुर जिला—यह राजशाही विभाग के पश्चिम का जिला है, जो बंगाल के दूसरे जिलों के साथ सन् १७६५ ई० में अंगरेजी अधिकार में आया। जिले का क्षेत्रफल ४११८ वर्गमील है। इसके पूर्व करतोआ नदी और पश्चिम महानंदा नदी है। महानंदा नदी जिले के पश्चिमी सीमा पर लगभग ३० मील बहती है। छोटी नदियां अनेक हैं। जंगली पैदावार मधुमक्खियों का मोम और सिंगहाड़े का फूल, जिससे कपड़े रंगे जाते हैं, इत्यादि और जंगली जानवरों में बाघ, तेंदुआ, भैंसे, सूअर, वारसींगा हरिन और कई प्रकार की बिल्लियां हैं। बाघ सघन वनों में और तेंदुए सर्वत्र मिलते हैं।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ११४०६५५ और सन् १८८१ में १५१४३४६ मनुष्य थे; अर्थात् ७९५८२४ मुसलमान, ७१६६३० हिंदू, १४३६ पहाड़ी मंयाल और ४५७ कृस्तान। जातियों के खाने में ४०७१२३ राजवंशी, पाली और कोच तीनों मिलकर, ३७७८५ कैवरत, ३१३४ हाड़ी,

२११४९ वनियां, १३५६० जलुआ, १२७३५ नाई, ८९१३ 'ब्राह्मण, ६८३४ भूमिज, ६८१३ संधाल, ६०२४ कायस्थ, २८८५ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं ।

पार्वतीपुर जंक्शन ।

दीनाजपुर से १९ मील पूर्व पार्वतीपुर जंक्शन है । पार्वतीपुर से इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे की लाइन ४ ओर गई है । तीसरे दर्जे का महमूल प्रति-मील २१ पाई लगता है । शिली गोड़ी से पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक ५१ मील तक दार्जिलिंग हिमालय रेलवे है, जिसका महमूल प्रतिमील सवा आना है ।

(१) पार्वतीपुर से उत्तर कुछ पश्चिम,

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

६१ जल्पाईगोड़ी ।

८४ सिलीगोड़ी ।

१३५ दार्जिलिंग ।

(२) पार्वतीपुर से पूर्व कुछ उत्तर;

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

२२ रंगपुर ।

३३ कौनिया ।

३९ तिष्टा जंक्शन ।

६३ मगलहाट जंक्शन ।

तिष्टा जंक्शन से २६ मील पूर्व कुछ उत्तर यात्रापुर ।

मगलहाट जंक्शन से उत्तर कुछ पश्चिम ३८ मील कुचबिहार कसबे के पास तोरसा ।

(३) पार्वतीपुर से दक्षिण,—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

४९ नवाबगंज ।

८८ नाटुर ।

११२ रांराघाट (पद्मा के बाएं)

१२४ दामुक दिया घाट ।

(पद्मा के दहिने)

१४१ पोढ़ादह जंक्शन ।

१८६ बगुला ।

१९८ रानाघाट जंक्शन ।

२२० नईहाटी जंक्शन ।

२३० वारकपुर ।

२३४ सोदपुर ।

२३७ बेलघरिया ।

२३९ दमदम जंक्शन ।

२४४ सियालदह (कलकत्ता) ।

पोढ़ादह जंक्शन से पूर्व ५ मील जगती जंक्शन, १० मील कुष्टिया, और ४८ मील ग्वाल्डो ग्वाल्डो से ब्रह्मपुत्र नदी के आगसोट के मार्ग से ७९ मील पूर्व दक्षिण चांदपुर, और

चांदपुर से २५ मील उत्तर नारायणगंज ।

चांदपुर से आसाम बंगाल रेलवे पर ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सम से दक्षिण पूर्व २५ मील फेनी, ५७ मील सीताकुण्ड, ६१ मील बलवाकुण्ड और ८१ मील चटगांव और लक्सम से उत्तर ७ मील लालमाई, १५ मील कुमिल और ४५ मील अखउरा ।

नारायणगंज से उत्तर १० मील ढाका और ८५ मील मैमनसिंह ।

रानाघाट जंक्शन से २१ मील पूर्व वनगांव जंक्शन, वनगांव से २६ मील पूर्वोत्तर जशर और जशर से ३५ मील दक्षिण-पूर्व खुलना और वनगांव से पश्चिम दक्षिण २६ मील बारासत, ३४ मील दमदम छा-

वनी और ३६ मील दमदम जंक्शन ।

नइहाटी जंक्शन से ५ मील पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन ।

दमदम जंक्शन से पूर्वोत्तर २ मील दमदम छावनी, १० मील बारासत और ३६ मील वनगांव जंक्शन ।

(४) पार्वतीपुर जंक्शन से पश्चिम; मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१९ दीनाजपुर ।

५२ रायगंज ।

६५ बरमुंड जंक्शन ।

८९ कठिहर जंक्शन ।

बरमुंड जंक्शन से ३५ मील उत्तर किसनगंज ।

कठिहर जंक्शन से उत्तर १७ मील पुर्निया और दक्षिण १६ मील मनिहारी और २३ मील मनिहारीघाट ।

जल्पाईगोड़ी ।

पार्वतीपुर से ६१ मील उत्तर जल्पाईगोड़ी का रेलवे स्टेशन है । सूबेबंगाल के राजशाही विभाग में तिष्टानदी के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान जल्पाईगोड़ी एक कसबा है ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय जल्पाईगोड़ी में ७९३६ मनुष्य थे; अर्थात् ४२४५ हिन्दू, ३६४७ मुसलमान और ४४ दूसरे ।

वहाँ पहले फौजी छावनी थी । सन् १८६९ ई० में वह जिले का सदर स्थान नियत हुआ । उस समय से वह शसिन्द्र हुआ और उसकी मनुष्य संख्या बढ़ने लगी । उत्तरी बंगाल स्टेट रेलवे के खुलने से उसकी और भी उन्नति हुई है । वहाँ सिविल कचहरियां और सरकारी आफिसें बने हुए हैं ।

जल्पाईगोड़ी जिला—यह राजशाही विभाग के पूर्वोत्तर का जिला २८८४ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर भूटान और दक्षिण कूच-बिहार का राज्य और रंगपुर जिला है ।

मैदानों में जगह जगह घास, ताड़ और फलदार वृक्षों के बाग, जिनमें छोटी-बस्तियां हैं, देखने में आते हैं । जिले के उत्तरीय भाग में पहाड़ी देश हैं । जिले में महानन्दा, करतोया, तिष्टा, जलधाका इत्यादि नदियां बहती हैं । पश्चिमी द्वार नामक समझीबीजन में ४०० वर्ग मील से अधिक बचाया हुआ जंगल और जल्पाई गोड़ी समझीबीजन में केवल बैकुण्ठपुर नामक जंगल है । पश्चिमीद्वार के चरागाहों में चरने के लिए बंगाल से बहुत सी मवेशियां आती हैं । इस जिले में पहाड़ियों के निकट जंगली हाथी और बनेले मवेशियां और जंगलों में बाघ, तेंदुए, भालू, गेंदों, भैसे इत्यादि बनेले जन्तु रहते हैं ।

जिले में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ५८१५६२ मनुष्य थे; अर्थात् ३६७८९१ हिन्दू, २०८५१३ मुसलमान, ४५०७ आदि निवासी अर्थात् जङ्गली ४८६ बौद्ध, ४५९ कृस्तान और ६ जैन । खास हिन्दुओं में ३५८९६ तियर, २४५२७ बागड़ी, ५८३८ कैवरत, ५४५३ तातियां, ३९०९ ब्राह्मण, ३७८२ कायस्थ, २६७२ बर्नियां, १२६१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं ।

दार्जीलिंग ।

जल्पाईगोड़ी से २३ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ८४ मील) उत्तर सिलीगोड़ी का रेलवे स्टेशन है, जहां से ५१ मील पश्चिमोत्तर दार्जिलिंग तक

दार्जिलिंग हिमालय रेलवे की छोटी लाइन गई है। यह लाइन केवल २ फीट चौड़ी है; गाड़ी भी बहुत छोटी छोटी हैं। ५१ मील जाने में ८ घंटा समय लग जाता है।

सिलीगोड़ी से ७ मील मुकुना स्टेशन के पास गाड़ी की चढ़ाई आरंभ होती है। लाइन की घुमाव बहुत टेढ़ी है। पहाड़ के बगल ऊंचे दर्रखतों और जंगलों से छिपे हुए हैं। १५ मील के पास पर्वत के एक छोटे शृङ्ख के चारो तरफ गाड़ी घुमती है और १००० फीट ऊंचे खड़े पहाड़ के किनारे पर लाइन निकली है। ३० मील पर कुरसियंग के पास, जो समुद्र के सतह से ५००० फीट ऊपर है, चाय का बाग और ५१ मील पर दार्जिलिंग का स्टेशन है। दार्जिलिंग (२७ अंश, २ कला, ४८ विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, १८ कला, ३६ विकला, पूर्व देशांतर में) सूबे बंगाल के राजशीही विभाग में जिले का सदर स्थान एक भसिद्ध जगह है। यह बड़ी रनजीत नदी की घाटी के ऊपर १००० फीट ऊंचे एक सिल सिले पर बसा है। पहाड़ी के बगल में बिले और बंगले छितराए हुए हैं।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दार्जिलिंग में १४१४५ मनुष्य थे; अर्थात् ८५८६ हिंदू, ३६५७ बौद्ध, १२९८ मुसलमान, ५२४ कृस्तान, ५२ सिक्ख और २८ जैन। अपरैल के पहिले यह मनुष्य-गणना हुई थी। अपरैल से अक्तूबर तक दार्जिलिंग की मनुष्य-संख्या बहुत बढ़ जाती है।

एक स्थान पर बाजा बजने की जगह और पानी पीने का एक हॉज बना है। पुराना सेक्रेटरियट एक चौड़े प्लेट (समतल भूमि) पर है। सेक्रेटरियट से ऊपर सेंट ऐन्ड्रू का चर्च है, जिसकी नेव का पत्थर सन् १८७० ई० में रक्खा गया। पुराना चर्च सन् १८४३ में बना। कसबे से १ मील दूर एक पहाड़ी पर १५० सैनिकों के रहने योग्य बाराक बना है।

चर्च से करीब १ मील बाद बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की बड़ी कोठी है। वह यहां गर्मियों की ऋतुओं में समय समय पर रहते हैं।

कसबे के मध्य में प्रधान बाजार देखने लायक है। एतबार के दिन उसमें इतनी भीड़ होती है कि उसमें होकर निकलना मोशकिल होता है। वहां बहुत

छेपचा, लिम्बू, भुटिया, तिब्बती, नेपाली, पहाड़ी, हिन्दुस्तानी, काबुली, काश्मीरी और पारसी देख पड़ते हैं । सेंचछ शृङ्ग के झरनों से नलद्वारा दार्जिलिंग में पानी जाता है ।

दार्जिलिंग से १ मील दूर एक सुन्दर भुटिया घस्ती है, जिसमें तिब्बतन-छात्रों का एक दिलचस्प बौद्ध मन्दिर बना हुआ है ।

दार्जिलिंग से दुनियां की सबसे ऊंची पहाड़ी चोटियां देखी जा सकती हैं । इनमें सबसे ऊंची माउंट एवरेस्ट समुद्र के जल से २९००२ फीट ऊंची है । यद्यपि उसका फासिला कम से कम १२० मील है, किंतु वह व्याघ्र पहाड़ी से, जो दार्जिलिंग से ६ मील है, या जेला पहाड़ फौजी छावनी से देख पड़ती है । दूसरी चोटियां, जो दार्जिलिंग या जेला पहाड़ से देख पड़ती हैं ये हैं;—

चोटियों का नाम	ऊंचाई फीट ।
किचि जंगा ...	२८१५६
जानू... ..	२५३०४
कमू... ..	२४०१५
चुमालरी ...	२३९४३
पौहन्दी ...	२३१८६
डोंकिया ...	२३१७६
बौडिम ...	२२०१७
नरसिंह ...	१९१४६
धूपक राक (काला घटान) ...	१७५७२
चोमूकुले ...	१७३२५

इनमें से किचि जंगा ४५ मील, चुमालरी ८४ मील, डोंकिया ७३ मील और नरसिंह चोटी ३२ मील दूर पर है ।

दार्जिलिंग से १० मील पर रंगपो नदी के साथ रनजीत नदी का संगम है । रनजीत नदी घास घना जंगल होकर दौड़ती है । रंगपो नदी सन्ध्या और ऊपर से आई है, जिसपर घेत के पल्लवने हैं । उस से नीचे रनजीत नदी का

तिष्टा नदी के साथ संगम है । तिष्टा अधिक गहरी, चौड़ी और तेज है । उससे किनारे किनारे सिलीगोड़ी जाने की राह है ।

दार्जिलिंग जिला--यह राजशाही विभाग के उत्तर का जिला १२२४ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर नदियों के सिलसिले, वाद शीकम का राज्य, पश्चिम ऊंची पहाड़ियों का सिलसिला, जो नेपाल राज्य से इसको जुदा करता है; पूर्व और दक्षिण जलपाईगोड़ी और पुर्निया जिला हैं ।

समुद्र के जलसे इस जिले के मैदान की ऊंचाई केवल ३००फीट और मैदान की पहाड़ियोंकी ऊंचाई ६०००फीट से १००००फीट तक है। पहाड़ियों की चोटियों पर सघन जंगलों के मनोहर दृश्य देख पड़ते हैं। नीचले सिलसिले पर जहाँ तह। चाय के बाग हैं। जिले के पर्वत की सभ से ऊंची फलालुम नामक चोटी १२०४२ फीट ऊंची है। जिले में तिष्टा, महानन्दा और गलासन प्रधान नदियाँ हैं। तिष्टा की प्रधान सहायक नदियों में से एक बड़ी रंजीत नदी है। इन दोनों नदियों के संगम से थोड़े नीचे तिष्टा पर लटकाऊ पुल बना है, जिससे होकर तिब्बत के साथ इस जिले में सौदागरी होती है। महानन्दा इस जिले में छोटी धारा है और तराई के बालू में कुछ दूरतक अवृश्य रहती है। जिले के सरहद के बाहर इसमें कई छोटी छोटी नदियाँ मिल जाती हैं। जिले की खानों से कोयला, लोहा, ताँबा और स्लेट निकलते हैं। पहाड़ियों में कई एक गुफा हैं, जिनमें से सबसे अधिक प्रसिद्ध गुफा दार्जिलिंग स्टेशन के कचारी पहाड़ी में है। यहाँ के वेशी लोग विश्वास करते हैं कि यह गुफा तिब्बत से लासा तक षली गई है। ऊँची पहाड़ियों पर तेंदुआ, भालू, और कस्तूरी वाली हरिने होती हैं। बड़ी हरिन नीचले सिलसिलों पर और चन्द हाथी और बाघ मैदान के ऊपरी ढालू पर पाये जाते हैं। तराई में बाघ, गेंडा, हरिन, वनैले सूअर बहुत हैं।

इस जिले में सन १८८१ की मनुष्य गणना के समय १५५१७९ मनुष्य थे; अर्थात् १२६७१७ हिन्दू, १८७७५ बौद्ध, ८२०४ मुसलमान, ८४२ कृस्तान, ६२४ जंगली कौमें, १४ ब्राह्मो और ३ सिक्ख। अगदी का बड़ा भाग जंगली कोम और वे जंगली लोग, जो अब मैदान के लोगों की चपट पर चलते हैं

होते हैं । इनमें नापित बहुत अधिक हैं । लेपचा वीहों में शामिल हैं । सन् १८८१ में ३०८०१ राजवंशी कोच थे । खास हिन्दुओं में १०७३९ ब्राह्मण ६३५ राजपूत और १०००० से अधिक दूसरी जातियां थीं ।

इतिहास—अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८३५ ई० में ३०००० रुपये वार्षिक जेरुज पर १३८ वर्ग मील भूमि गर्मी के दिनों में अफसरों के रहने के लिये शिकम के राजा से खरीदा और पीछे उसका खेराज ६०००० रुपये कर दिए । उसने बाद शीघ्रही गर्मी के दिनों में सूवे बंगाल के अफसर लोग दार्जिलिंग में रहने लगे । रोगग्रस्त यूरोपियन सिपाहियों के रहने के लिये स्थान बना । सन् १८३९ में डाक्टर कैवल ने वहां का चार्ज लिया । समने २० वर्ष सुपरिंटेंडेंट रहकर वहां बाजार, कचहरी, सड़क और चर्च बनवाया और दार्जिलिंग के दक्षिण फौजी छावनी नियत की । सन् १८४९ ई० में, जन सरकारी अफसर शिकम में कैद कर लिए गए, तब सन् १८५० में सरकारी फौज तिरस्कार के बदले लेने के लिये शिकम में भेजी गई । अतः में शिकम राज्य की तराई अर्थात् मोरंग जो पहाड़ियों के कदम के पास है, अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया और पहाड़ियों के दर्मियान की बहुत सी भूमि अंगरेजी राज्य में जोड़ ली गई । सन् १८६४ में तिष्टा के पूर्व का पहाड़ी देश इस जिले में कर दिया गया । सन् १८२६ ई० में पहले पहल हिन्दुस्तान में ऊपरी ओसाम में चाय के दरख्त और बीज आए । सन् १८५६ में चाय का बाग दार्जिलिंग में नियत हुआ । अब लगभग ५०००० एकड़ भूमि पर लगभग २०० चाय के बाग बने हैं । सन् १८८२-८३ में, जन फसिल अच्छी थी, ८०००००० पौंड से अधिक चाय हुआ था । बंगाल के लेफ्टिनेंटगवर्नर प्रति वर्ष गर्मी के दिनों में कई महीने दार्जिलिंग में रहते हैं ।

शिकम ।

- दार्जिलिंग के उत्तर शिकम एक पहाड़ी देशी राज्य है । इसके उत्तर और पूर्वोत्तर तिब्बत; पूर्व-दक्षिण स्वतंत्र राज्य भूटान, दक्षिण अंगरेजी राज्य में दार्जिलिंग जिला और पश्चिम स्वतंत्र राज्य नेपाल है । यह राज्य हिमालय के उंचे सिलसिले पर १५५० वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैला है । इसके सब में

नीचे का मार्ग समुद्र के जल से १३००० फीट ऊपर है। शिकम राज्य में तिष्टा और उसकी सहायक नदियां पहाड़ियों के बहुत नीचे अति तीव्र वेग से बहती हैं। नदियों पर कई जगह बेंत का पुल बना है और कई जगह लोग घर नई से पार उतरते हैं। संपूर्ण वस्तियां और ढालू पहाड़ियां सघन वनों से छिपी हुई हैं। वांस बहुत बड़े और बेंत मोटे तथा बड़े होते हैं। बेंतों से हिमालय में पुल बनाए जाते हैं। वन और पहाड़ियों में बाघ, भालू, कस्तूरीवाले मृग, वनैले सूअर इत्यादि वनजंतु रहते हैं।

शिकम की अनुमानिक मनुष्य-संख्या ७००० है; अर्थात् प्रायः ३००० लेपचा, २००० भोटिया, १००० लेंबू और १००० दूसरे। इनमें अधिकांश लोग बौद्ध मत पर चलते हैं। बहुत बौद्ध पुजारी अपने अपने लामा अर्थात् गुरु के आधीन मठों में रहते हैं। लामा लोग बिना मालगुजारी दिए हुए जितना चाहें उतना खेत जोत सकते हैं। राज्य का प्रधान गांव तमलांग और कंटक, जिसमें काजी का सुंदर मकान बना है, और प्रधान मठ लएवर्ग है।

गेंहू, जव, जनेरा, और थोड़ा धान घाटियों में उपजते हैं। पश्चिम भाग में तेलहन भी होते हैं। बागों में केला, नारंगी और दूसरे फल बहुत होते हैं। तिब्बत के सौदागर शिकम होकर जाते हैं। शिकम के लोग टट्टू, भेड़ और जंगली पैदावारों को कपड़े, तंबाकू आदि चीजों से बदलते हैं।

राजधानी—शिकम की राजधानी तमलांग है, जहां जाड़े और वसंत-ऋतु में राजा रहते हैं। गरमी और बरसात में राजा अपने तिब्बत की मिलकियत चूंघी में बहुधा जाया करते हैं। तमलांग पहाड़ी पर राजा के महल के अतिरिक्त शिकम राज्य के बहुतरे अफसरों के सुंदर मकान बने हुए हैं। प्रत्येक मकान के चारों ओर वांस या फलदार वृक्षों के कई झुंड हैं। शिकम का वर्तमान नरेश महाराज 'चोटाल शिक्यं नामग्य' हैं।

इतिहास—ऐसा मसिद्ध है कि शिकम के राजा का पुरुषा तिब्बत के लासा के पड़ोस से आकर कंटक में बसा। सन् १७७८ ई० में गोरखों ने शिकम पर आक्रमण करके राज्य का एक छोटा भाग लेकर सुलह कर लिया। सन् १७९२ में जब गोरखों ने दूसरी बार शिकम पर आक्रमण किया तब

चीनियों ने उनको खेरा । नैपालियों के परास्त होने पर सन् १८१६ ई० में अंगरेज महाराज और नैपालियों में संधि हुई । उसके अनुसार शिकम के राजा वर राज्य, जो नैपालियों ने छीन लिया था, उसको फिर मिल गया । सन् १८३५ में अंगरेजी सरकार शिकम के राजा से दार्जिलिंग लेकर उसके बदले में ३००० रुपया सालाना गिराज देने लगी । शिकमवाले अंगरेजी राज्य से लड़के चुरा कर उनको दास बना लेते थे और सन् १८४९ में शिकम के राजकर्मचारियों ने सफर करते हुए दो अंगरेजी अफसरों को पकड़ कर कैद कर लिया । तब उनको छुड़ाने के लिये अंगरेजी सेना गई । अब में शिकम के राज्य का एक भाग अंगरेजी गवर्नमेंट ने ले लिया । तब पर भी शिकम वाले अंगरेजी राज्य से लड़का चुरा ले जाते थे । सन् १८६१ में अंगरेजी सेना शिकम की राजधानी तक पहुँची, तब राजा ने परवश होकर झुलह किया । उसके अनुसार अंगरेजी गवर्नमेंट को शिकम में सौदागरी करने और सड़क बनाने का अधिकार हो गया । सन् १८७३ में शिकम के वर्तमान महाराज ने दार्जिलिंग में आकर बंगाल के छोटे लाट से मेंट की थी । अब शिकम का राजा अंगरेजी सरकार के आधीन हो गया है ।

भूटान ।

शिकम से पूर्व हिमालय के पूर्व भाग में स्वाधीन राज्य भूटान है । इसके उत्तर हिमालय, वाद तिब्बत, पूर्व चीन; दक्षिण आसाम देश और जल्पाई गोडी जिला और पश्चिम शिकम है । सन् १८६४ में सम्पूर्ण क्षेत्रफल अनुमान से २०००० वर्ग मील और मनुष्य-संख्या करीब १५०००० थी । सम्पूर्ण देश में ऊँचे और नीचा ऊँचा पहाड़ हैं । बहुतेरी नदियाँ तंग रास्ते से बहती हुई ब्रह्म पुत्र में गिरती हैं ।

भूटिये लोग सख्त और दिलेरे होते हैं । उन का चमड़ा काळा और चेहरे चीनियों के समान हैं । उन की आदत और बदन पैला है । उनकी खोराक चावल, जव का आटा, सब्जियाँ, गोस्त, खासकर सूअर का मांस और चाय है । सब दर्जे के लोग शराब आदि निशाचाले अर्क पीते हैं । पुरुष उन का ढोला

कोट देहुने तक पहनते हैं, कमर पर कपड़े या चमड़े की पेटी धांधते हैं और जूते में लगा हुआ पायजामा और पशम की या मोटे ऊन की टोपी पहनते हैं; और स्त्रियाँ लम्बा क़वादा ढीले अस्तीन के साथ पहनती हैं। उस राज्य में कई भाईयों के एक ही स्त्री के साथ विवाह होने की रिवाज जारी है। वहाँ के लोग बराय नाम के बौद्ध मत वाले हैं; परन्तु वे भूत आदि की बहुत पूजा करते हैं।

पहाड़ी देश होने के कारण वहाँ खेती कम होती है। एक प्रकार के घोंड़े जो टाँघन कहलाते हैं, भूटान में पाले जाते हैं। भूटान के दक्षिण भाग में मोटे कंबल और कपड़े बनते हैं। भूटान में एक प्रकार के वृक्ष से कागज बनाया जाता है। वहाँ तलवार, बर्छी और तीर बनते हैं। प्रायः ऊँचे स्थानों पर वर्षा अधिक होती है। राज्य में पैदावार जिनिश और सौदागरी की वस्तुओं में से मालगुजारी ली जाती है।

३ या ४ मजिल के मकान हैं। झोपड़ियों के चारो तरफ बहुतेरी जमीन जोतने के लिये तैयार की जाती है। गेहूँ, जव, मिलेट और सलगम प्रधान फसलों में से हैं। भोटिए लोग पहाड़ियों के वगलों में काट कर चबूतरों के कच्चार बनाते हैं और उन पर खेती करते हैं। जंगलों में भांति भांति के बड़े वृक्ष हैं। पहाड़ियों के नीचले सिलसिले में बहुत हाथी, तिष्ठा नदी के निकट बाघ, घाटियों में तेंदुआ और हरिन, बर्फों में कस्तूरीवाली हरन और पहाड़ियों के वगलों पर सूअर और गेंड़े मिलते हैं। तिब्बती भाषाओं में से एक वहाँ की भाषा है।

भूटान के राजा धर्मराजा कहलाते हैं और जो उन के राज्य में देश के प्रबन्ध करते हैं उन्हें देवराजा कहते हैं। वह तीसरे वर्ष कौशिल द्वारा बदल जाता है। नीचे के ओहदेदार तनखाह नहीं पाते; परन्तु अपने मातहत के लोगों से जितना हो सकता है वे लेते हैं। लूटपाट सर्वत्र जारी रहता है।

धर्मराजा बुद्ध का अवतार समझा जाता है। उस के मरने के एक या दो वर्ष पीछे प्रायः एक अफसर के खान्दान में लड़के के शकल में नया अवतार होता है। वह मठ में शिक्षा पाता है और वालिग होने पर राजा होता है। प्रधान शहर अर्थात् राजधानी पुनाखा स्वभाविक अभेद्य स्थान में दाजीलिंग

से ९६ मील पूर्वीतर युगती नदी के बाण किनारे पर है। अंगरेजी राजदूत ने सन् १८६४ में भूटान की फौज की संख्या ६००० अनुमान किया था।

इतिहास—भूटान पहले टेफूजातियों के अधिकार में था। टेफू कुच बिहार के कोच खियाल किये जाते हैं। करीब २०० वर्ष हुए कि तिब्बत के सिप्पाहियों के एक जमायत ने टेफूओं को जीत कर उस देश को अपने अधिकार में कर लिया।

सन् १७७२ ई० में जब भूटियों ने कुचबिहार पर चढ़ाई की, तब अंगरेजों के साथ उनका पहला सरोकार हुआ। कुचबिहार के राजा के दरखास्त करने पर जब एक अंगरेजी फौज भजी गई तब भूटिए लोग भाग गए। सन् १८२६ में जब अंगरेजों ने आसाम को ले लिया तब भूटिये लोग पहाड़ के पांव के पास की जमीन, जो द्वारें कहलाती हैं, ले चुके थे। उस के पश्चात् भूटियों ने अंगरेजी राज्य पर आक्रमण करके वासिन्दों को लूटा और उनको कैदी बना लिया। वे लोग बहुतेरों को जब कैदी बना कर ले गये तब अंगरेजी सरकार ने द्वारों को भूटियों से छीन लिया। पर भूटिये लोग द्वारों में अंगरेजी प्रजाओ पर अत्याचार करतेही रहे। सन् १८६५ में भूटान गवर्नमेन्ट ने एक लडाई के पीछे अंगरेजों को दूसरे देश के साथ बंगाल और आसाम के १८ द्वारों को दे दिया और अंगरेजी प्रजाओ को, जिनको भूटिए लोग चोराले गए थे, छोड़ दिया।

आठवां अध्याय ।

(सूबे बंगाल में) रंगपुर, (देशीराज्य में) कुचबिहार,
ब्रह्मपुत्र तीर्थ; (आसाम देश में) त्युरा,
ग्वालपाड़ा, गौहाटी और कामाख्या ।

रंगपुर ।

पार्वतीपुर जंक्शन से २२ मील पूर्वीतर (मनिहारी घाट से १३४ मील)
रंगपुर का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में घाघाट नदी

के उत्तर किनारे पर (२६ अंश ४४ कला ६६ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १७ कला, ४० विकला, पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान रंगपुर एक कसबा है, जिस में माहीगंज, धाप और नवावगंज शामिल हैं ।

सन १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रंगपुर में १४२१६ मनुष्य थे; अर्थात् ७४३७ हिन्दू, ६६६७ मुसलमान, ७६ जैन, ३३ कृस्तान, २ बौद्ध और १ दूसरे । रंगपुर में सिविल कचहरियां, पुलिसस्टेशन, जेलखाना और अस्पताल है ।

रंगपुर जिला—यह राजशाही विभाग के मध्य का जिला ३४८६ वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर जलपाईगोड़ी जिला और कूच-बिहार का राज्य; पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी बाद ग्वालपाड़ा और मैमनसिंह जिला; दक्षिण बगड़ा जिला और पश्चिम दीनाजपुर और जलपाईगोड़ी जिला है ।

इस जिले में कोई पहाड़ नहीं है । जिले के क्षेत्रफल के ३ भाग की भूमि जोती जाती है। धान, तंबाकू, आलू, ऊख, अदरक और अनेक भांति के तेल के बीज उत्पन्न होते हैं । बिना जोती हुई भूमि पर नरकट और बेंत बहुत होते हैं । जिले के पूर्वी सीमा पर ब्रह्मपुत्र नदी बहती है । उस की सहायक नदियों में तिष्टा, ढइला, संकोस, करतोया, गंगाधर और दुधरुमार नदियां प्रधान हैं । इनमें तिष्टा अधिक प्रसिद्ध है, जिस का नाम पुराणों में तृष्णा और तिसोता भी लिखा है । यह सन ई० की १८ वीं शदी में गंगा में गिरती थी; किंतु सन १७८७ में अधिक वर्षा होने के कारण ब्रह्मपुत्र में गिरने लगी । तिष्टा के सहायक नदियों में करतोया, घाघी, मनास और गुजरिया प्रसिद्ध हैं । जिले में गवर्नमेंट को मालगुजारी देने के योग्य कोई जंगल नहीं है । पंगा गांव के पास ८ मील के घेरे में एक जंगल है, जिस में मोटा बेंत, जो छड़ी के लिये विकते हैं, बहुत उत्पन्न होते हैं । जिले में बेंत और नरकट बहुत होते हैं । ब्रह्मपुत्र नदी के बालूदार टापुओं में घाघ और तेंदुए बहुत रहते हैं । साधारण प्रकार से चनैले मैने और सूअर और कई भांति की हरिन देख पड़ती हैं ।

जिले में सन १८८१ की मनुष्य-गणना के समय २०९७९६४ मनुष्य थे; अर्थात् १२७९६०५ मुसलमान, ८१६५३२ हिन्दू, १३९९ पहाड़ी और जंगली जो अपने पुराने मत पर चلتे हैं, २७४ जैन, ८६ कृस्तान, ६० बौद्ध और ८

ब्राह्मो । जातिशों के खाने में ४३२४९८ कोच, पाली और राजवंशी, जो अब हिन्दू के मत पर चलते हैं, ९२७९० तियर, ३६७९५ चंडाल, १०६१२ कैवरत, २५१८० मदक, १३०४१ नाई, १२०७५ ब्राह्मण, जो मैथिल और कामरूपी दो प्रकार के हैं, ११४४९ कायस्थ, ८३८७ जलिया, शेष में दूसरी जातियाँ थीं, —जिसमें २६९७४ वैष्णव और केवल २३२५ राजपूत थे । रंगपुर जिले के कसबे रंगपुर में १३३२०, वरखता में ११३९३, बोगदावाड़ी में १०८९२, ढीमला में १०५०३, गुरग्राम में ९६१६ और छतनाई में ९५०१ मनुष्य थे ।

इतिहास—ऐसा प्रसिद्ध है कि रंगपुर पूर्व काल में राजा भगदत्त का, जिसकी राजधानी कामरूप जिले के गौहाटी थी, देहाती महल था । भगदत्त महाभारत के युद्ध में अर्जुन के हाथ से मारा गया । सन १५०० ई० से पहले इंधराने के राजाओं ने इस देश में राज्य किया था । इन में पहला पृथुराजा था, जिसकी राजधानी की फैली हुई निशानियाँ जल्पाइंगोड़ी जिले में देख पड़ती हैं । दूसरे घराने में ४ राजा हुए, जिन को बंगाल और आसाम के लोग पाल घराने के राजा कहते हैं । पहला राजा धर्मपाल के शहर की निशानी जल्पाइंगोड़ी जिले में अब तक विद्यमान है । पाल घराने के तीसरा राजा भावचंद्र का नाम बंगाल में प्रसिद्ध है । तीसरे घराने में नीलध्वज, चक्रध्वज और नीलांबर ३ राजा हुए । नीलध्वज ने कामतापुर को बसाया । कूचबिहार के राज्य में उसकी तबाहियाँ १९ मील के घेरे में देख पड़ती हैं । कहा जाता है कि गौड़ के अफगान बादशाह हुमेनशाह ने, जिसने सन १४९७ से १५२१ तक गौड़ में राज्य किया था, राजा नीलांबर को छल से पकड़ कर रंगपुर को ले लिया; किंतु मुसलमानों ने इस देश में अपना अधिकार नहीं रक्खा । आसाम की पहाड़ियों से जंगली जातियों में से कोच लोग आकर बस गए, जो कूचबिहार में अब तक विद्यमान हैं । उनमें से राजा बीमू ने पूर्व और आसाम की खाड़ी में और दक्षिण रंगपुर तक अपना अधिकार फैलाया । उस की मृत्यु होने पर राज्य कई भागों में बँट गया । सन १६८७ ई० में औरंगजेब ने खास रंगपुर को अपने राज्य में मिला लिया । पीछे यह अंगरेजी सरकार के आधीन हुआ ।

कूचविहार ।

रंगपुर से ३१ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ५३ मील) पूर्वोत्तर मंगलहाट में रेलवे जंक्शन है । उससे २८ मील उत्तर कुछ पश्चिम कूचविहार स्टेशन रेलवे कूचविहार कसबे के निकट तोरसा नामक स्टेशन तक गई है ।

बंगाल में प्रधान देशी राज्य की राजधानी (२६ अंश, १९ कला, ३६ वि-कला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, २८ कला, ५३ विकला, पूर्व देशांतर में) तोरसा नदी के निकट कूचविहार एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कूचविहार राजधानी में ११४९१ मनुष्य थे; अर्थात् ७५९१ हिंदू, ३७१६ मुसलमान, ११० जैन, ६७ कृस्तान, ४ सिक्ख, २ बौद्ध और एक दूसरे ।

हाल तक कसबे में इंटों के राजभवन के चारो ओर चटाई और फूस की शोपड़ियां थी; किन्तु चंद बरसों से कसबे की बड़ी उन्नति हुई है । कसबे के प्रधान स्केयर के उत्तर बंगाल में दो मंजिली इमारत, महाराज की कचहरी के मकान और आफिस; पूर्व अंगरेजी और बर्नेकुलर स्कूल, छापाखाना और राज्य का दफतरखाना; और दक्षिण १ उत्तम इमारत, जिसमें ४ बड़े कमरे और दूसरे छोटे आफिस हैं, और मातहत दीवानी और फौजदारी कचहरियां हैं । स्केयर के मध्य में सागरदीघी नामक बड़ा तालाब है । कसबे के प्रायः सब लोग इसी तालाब का पानी पीते हैं । पुराने बाजार के स्थान पर नया चौकोना बाजार बना है । बाजार के मकानों की छत लोहे की चादर से पाटी गई है । प्रधान सड़क बाजार होकर गई है । हाल में १२००००० रुपये के खर्च से एक उत्तम राजमहल बनाया गया है । इनके अलावे वहां पोस्टआफिस, जेल-खाना, पुलिस-स्टेशन, कारीगरी का स्कूल और ब्राह्मसमाज की एक सभा है ।

सौदागरी बहुत नहीं है । २ छोटी नदियां, जो तुरसा कहलाती हैं, कसबे को ३ ओर से घेरती हैं । इनमें केवल बरसात में नाव चलती है । एक सड़क रंगपुर से कूचविहार कसबे होकर जलपाईगोदी को गई है ।

कूचविहार-राज्य—यह देशी राज्य, अंगरेजी राज्य से घेरा हुआ है ।

इसके उत्तर जल्पाईगोड़ी के पश्चिमी छोर और दक्षिण रंगपुर जिला है। इसके अलावे रंगपुर और जल्पाईगोड़ी जिले में कुचबिहार राज्य के कई टुकड़े हैं। संपूर्ण राज्य का क्षेत्रफल १३०७ वर्गमील है। राज्य से महाराज को ११३३००० रुपये मालगुजारी आती है।

यह राज्य समतल मैदान में है। इसमें तिष्टा, सींगमारी, तोरसा, काठ-जानी, राधक, गदाधर इत्यादि लगभग २५ नदियां बहती हैं। इनमें बहुतेरी बहुत छोटी हैं। तिष्टा और राधक को छोड़ कर संपूर्ण नदियां गर्मी की ऋतुओं में स्थान स्थान पर बिना नाव के पार होजाने योग्य रहती हैं। संपूर्ण नदियां उत्तर से ब्रह्मपुत्र में गिरती हैं। राज्य के अधिक भाग में खेती अच्छी तरह होती है। पूर्वोत्तर के कोनों में कुछ जंगली देश हैं। बोन वाली भूमि में से भूमि पर धान उत्पन्न होता है। मैदान में किसानों के वधान के आस पास वांस के झुंड और फलदार वृक्षों के बाग देख पड़ते हैं। जूट, तंबाकू, तेल और लकड़ी राज्य से दूसरे स्थानों में भेजी जाती हैं। मैकड़ों पील सब्ज बनी हैं। पहले दस बीस गाड़ी चलती थी, अब हजारहां चलती हैं। हाल में बिद्या की बड़ी उन्नति हुई है। इस राज्य के लोग बस्ती बना कर इकठा नहीं रहते हैं। धनवान लोग अपना अपना मकान अलग अलग बनाए हैं।

इस राज्य में सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ६०२६२४ मनुष्य थे; अर्थात् ४२७४७८ हिन्दू, १७४५३९ मुसलमान, १४४ जैन, ४८ कृस्तान और ४१५ दूसरे। जातियों के खाने में २९९४५८ राजवंसी, जो पहले के कोच जाति हैं, ५४१५२ तियर और मछुहा, १४१९२ बागड़ी, ५२०८ चंडाल, ४४३१ जोगी, ३५८६ कुर्मी, ३५३० धासण, ३१९७ राजपूत, ३०५२ नाई, २६७८ कैवरत, २६४० जलिया, २५२२ कायस्य थे; शेष में दूसरी जातियां थीं। कुचबिहार राज्य में कुचबिहार के अतिरिक्त कोई दूसरा कसबा नहीं है।

इतिहास—पूर्व काल में इस राज्य में कामरूप के पुराने हिंदू राजा की राजधानी थी, जिसको १२ वीं शदी के अन्त के भाग में गौड़ के अफगान बादशाहों ने विनाश कर दिया। उनकी राजधानियों में से कई एक की निशानियां अब तक देख पड़ती हैं। उसके पीछे अंधेर का समय आया। जंगली

लोग पूर्वोत्तर से आकर लूट पाट करने लगे, जिनमें कोच लोग, जो अब राज-
वंसी कहलाते हैं, अगहर थे । उन्होंने ने कूचविहार राज्य नियत किया । कोच
वंश में वीरसिंह पहला राजा था, जिसका पुत्र नरनारायण सबसे बड़ा राजा
हुआ, जिसका राज्य सन् १५५० ई० से आरम्भ हुआ था । उसने सम्पूर्ण काम-
रूप देश को जीता और आसाम में अनेक मंदिर बनवाये । सजड़े धुजड़े मंदिरों
के लेखों में अब तक उस राजा का नाम देख पड़ता है । उसने भूटान के राजा
को कर देने के लिये मजबूर किया और दक्षिण-पश्चिम में, जो अब रंगपुर और
पुर्निया जिले का भाग बना है, अपने राज्य को बढ़ाया । इसी के राज्य के
समय नारायणी सिक्का चलाए गए थे, जो अभी तक कुछ २ चलते हैं । कोच
राज्य की स्वाधीनता बहुत दिनों तक नहीं रही । नरनारायण ने अपने
आधीन की आसाम की भूमि अपने भाइयों को बांट दी । अब तक वहाँ उनूके
वंशधर धनी जमींदार विद्यमान हैं । नरनारायण का पुत्र लक्ष्मीनारायण, जो
कूचविहार में राज्य का उत्तराधिकारी था, कैदी बनाकर दिल्ली में भेजा गया ।
उसके पीछे राजघराना तीन भागों में बंट गया । सन् १७७२ ई० में भूटियों ने
कूचविहार के राजा नाजिरदेव को निकाल दिया । तब अंगरेजी गवर्नमेंट
ने नाजिरदेव के दरखास्त करने पर कूचविहार में अपनी सेना भेज कर
भूटियों को खदेरा और सन् १७७३ ई० में एक संधि की ।

सन् १८६३ ई० में कूचविहार के राजा अपने १० महीने के शिशु पुत्र
वर्तमान कूचविहार नरेश को छोड़ कर मर गए । उस समय राज्य के प्रबंध के
लिये अंगरेजी कमिश्नर नियत किया गया । पीछे राज्य की पैमाइश होकर
मालगुजारी नियत की गई, पुलिस का सुधार हुआ, सड़कें बनाई गईं, डाक-
घर और टेलीग्राम आफिस कायम हुए, और नावालिग राजा पटने में एक
यूरोपियन अफसर से पढ़ा और पीछे उसने कलकत्ते के प्रेसीडेन्सी कालिज
में आइन की शिक्षा प्राप्त की । सन् १८७८ में राजा ने सुप्रसिद्ध बाबू केशव-
चन्द्र सेन की पुत्री से अपना विवाह किया और उसी साल वह इंग्लैण्ड गए ।
सन् १८८३ में महाराज, सर एन. नारायणभूप बहादुर जी. सी. आई. ई.,
जिनकी अवस्था इस समय ३० वर्ष की है, सर्वालिग होने पर राज्य के अधि-
कारी हुए; तब से उनको महाराज की पदवी मिली ।

ब्रह्मपुत्र तीर्थ ।

रंगपुर से ११ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ३३ मील) पूर्व कुछ उत्तर तिष्टा नदी के किनारे कौनिया तक रेल है । कौनिया से ६ मील तिष्टा के पूर्व किनारे के तिष्टा गांव तक आगबोट चलता है । तिष्टा से पूर्व १६ मील कुरीग्राम और २६ मील ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे पर यात्रापुर है । तिष्टा से यात्रापुर तक रेल बनी है ।

कुरीग्राम से १३ मील दक्षिण-पश्चिम और यात्रापुर से इससे कम दूर पर ब्रह्मपुत्र नदी का चिलमारी घाट है, जिसको ब्रह्मपुत्र तीर्थ भी कहते हैं । कुरीग्राम से देहाती मार्ग और यात्रापुर से ब्रह्मपुत्र नदी में नाव का रास्ता है ।

ब्रह्मपुत्र नदी कैलास पर्वत में मानसरोवर के पास से निकल कर हिमालय के उत्तर में पूर्व की ओर बहने के उपरान्त पश्चिम को लौटी है और फिर दक्षिण को बह कर दो धारों में बंट गई है; जिनमें से पूर्व वाली धारा नदी के निकास से लगभग १७०० मील बहने के पश्चात् समुद्र में मिली है और पश्चिम की धारा जिसको यमुना और जनाई कहते हैं, गंगा की प्रधान धारा पदमा में जा मिली है । ब्रह्मपुत्र को तिब्बत में यारु और सांपू कहते हैं । लोहित नदी के संगम होने के पश्चात् इसका नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा है और समुद्र में गिरने से ६० मील पहले यह मेगना कहलाता है । इसके निकट दिब्रूगढ़, शिवसागर, नवगांव, तेजपुर, गौहाटी, ग्वालपाड़ा और धुबड़ी प्रसिद्ध कस्बे हैं ।

चिलमारी घाट पर चैत सुदी ८ को ब्रह्मपुत्र स्नान का मेला होता है । जिस साल चैत की बुधाष्टमी होती है उस साल अधिक यात्री एकत्र होते हैं । यात्री गण चिलमारी घाट पर केवल एक रात निवास करके चले जाते हैं । वे लोग वहां के नियमानुसार लौटने के समय पीछे की ओर फिर कर घाट की नदी देखते । ऐसा प्रसिद्ध है कि महर्षि यमदग्नि के पुत्र परशुरामजी यहां आने पर मातृ-हत्या के दोष से विमुक्त होगे ।

त्युरा ।

यात्रापुर तक रेल है । वहां से आगबोट द्वारा लगभग २५ मील पूर्व

कुछ उत्तर धुवरी जाना होता है। धुवरी से त्युरा तक लगभग ५० मील दृष्ट की सवारी का मार्ग और टेलीग्राफ है। आसाम प्रदेश में (२५ अंश, २९ कला, ३० विकला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, १६ कला १० विकला, पूर्व-देशांतर में) समुद्र के जल से लगभग १३०० फीट ऊपर त्युरा पहाड़ी के सिलसिले पर गारो पहाड़ी जिले का सदरस्थान त्युरा एक गांव है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय त्युरा में ७४४ मनुष्य थे। वह जगह रोग वर्द्धक है। वहां लोगों को बीखार बहुत आता है। लकड़ी, बांस और फूस से मकान बने हुए हैं। सरकारी इमारतों में मामूली कचहरियां और आफिस, २०० कानेटुल के लिए बारक, डिपोटीकमिशनर, पुलिस सुप-स्टिटेण्ड और सिविलसर्जियन के लिये बंगले बने हैं और एक अस्पताल और एक स्कूल है, वहां साल में औसत १२६ इंच वर्षा होती है।

गारोपहाड़ी जिला—इसके उत्तर ग्वालपाड़ा जिला; पूर्व खासी और जयंती पहाड़ियां जिला; दक्षिण और पश्चिम सूबे बंगाल का मैमनसिंह और रंगपुर जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३१४६ वर्गमील है। सम्पूर्ण जिला पहाड़ी देश है। ब्रह्मपुत्र नदी के उचार की पहाड़ियां नीची हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले में १०९५४८ मनुष्य थे, अर्थात् ८५६३४ पहाड़ियों में और २३९१४ मैदान में। गारो लोग स्त्री पुरुष सब कुरूप और काले होते हैं। इनके गाल की बड़ी हड्डियां, चौड़ा नाक, मोटा ओठ और लम्बा कान होता है। इनके दाढ़ी पर घाल बहुत कम जमता है। वे लोग अपने मुख पर जमे हुए बालों को तोड़ डालते हैं। स्त्री और पुरुष दोनों अपने सिर के बालों को कभी नहीं कटवाते। पुरुष केवल डेंडगज लेंथे कपड़े का भगवा, जिसको वे लोग आपही बनाते हैं, पहनते हैं। स्त्रियों का वस्त्र इससे थोड़ा अधिक फैला रहता है। स्त्री और पुरुष दोनों एक छोटे कम्बल लिए रहते हैं, जो साधारण तोर से एक वृक्ष के छाल से बनाया जाता है। पूर्व के पहाड़ियों के गारो लोग खासिआ लोगों के समान छोटे अंगरखे पहनते हैं। पुरुष अपने कानों में ३—४ पीतल के बाले और गले में गुरिया का लच्छा पहना करते हैं। स्त्रियां अपने गले में कांच और पीतल के गुरिए

का लच्छा और कानों में बहुत बड़े और भारी पाळा लगाती हैं । गारो लोगों का हथियार, तलवार, बरछी और ढाल है । इनकी घराऊ रीति और चाल खासिआ लोगों के समान है । स्त्रियाँ अपने घर की मालिक होती हैं । खासिआ लोगों में सम्पूर्ण घरऊ कामों में स्त्रियाँ बहुत मानी जाती हैं । युवा होने पर वर और कन्या का विवाह होता है । विवाह होने पर पुरुष अपने स्त्री के घर चला जाता है । पुरुष अपनी स्त्री के बिना अनुमति से दूसरा विवाह नहीं कर सकता । वे लोग अपने मुर्झों को जलाकर उनकी राख अपनी झोपड़ी के दरवाजे के निकट गाड़ देते हैं । लाश जलाने के समय मृतक को मार्ग दिखाने के लिए एक कुत्ता बलिदान किया जाता है । हाल तक प्रधान के मौत के स्थान पर मनुष्य बलि दिये जाते थे ।

इतिहास—सन् १८६६ ई० में गारो पहाड़ियों में एक अंगरेजी अफसर नियत हुआ । सन् १८६७ में त्युरा में डिपोटी कमिश्नर गए । सन् १८६८ में गारो पहाड़ी जिला नियत होकर त्युरा में सिविल स्टेशन बना । सन् १८७१ के अंत तक लगभग १०० गांव अंगरेजी अधिकार में हुए । सन् १८७३ के मई में सम्पूर्ण जिले का नक्शा तैयार हुआ ।

ग्वालपाड़ा ।

यात्रापुर तक रेल है, वहां से आगवोट में जाना होता है । यात्रापुर से लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर ब्रह्मपुत्र के दहिने किनारे पर ग्वालपाड़ा जिले का सदर स्थान घुबड़ी एक वस्ती है । आगवोट घुबड़ी छोड़ने के दूसरे दिन दोपहर को ग्वालपाड़ा पहुंच जाता है ।

आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के बाएँ अर्थात् दक्षिण किनारे पर यात्रापुर से लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ४१ कला, पूर्व देशांतर में) एक गावडुमी पहाड़ी के पादमूल के पास जिले में प्रधान कसबा ग्वालपाड़ा है, जो पहले जिले का सदर स्थान था ।

ग्वालपाड़ा कसबे में सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ५४४० और सन् १८८१ में ६६९७ मनुष्य थे; अर्थात् ४१५१ हिंदू, २३७३ मुसलमान और १७३ दूसरे ।

एक पहाड़ी पर मैदान से २६० फीट ऊपर सिविल स्टेशन बना है । वहां से ब्रह्मपुत्र की घाटी के उत्तम दृश्य और उत्तर ओर हिमालय के शिरो भाग पर वर्ण देख पड़ती है । पहाड़ी के पश्चिम ढाल पर देशी लोगों का कसबा बसा है । मकान लकड़ी के खंभे, चटाई और कास से बने हुए हैं । कसबा अब तक इस देश में प्रधान तिजारती स्थान है । इसमें बहुतेरे देशी सौदागर और पहाड़ी लोग, जो चमड़े आदि की सौदागरी के लिए नीचे आते हैं, देख पड़ते हैं ।

ग्वालपाड़ा जिला—पूर्वकाल में एक ग्वाला आकर यहां बसा इसलिये इस देश का नाम ग्वालपाड़ा पड़ा । यह आसाम देश का पश्चिमी जिला ब्रह्मपुत्र नदी के ऊपरी घाटी का दरवाजा बनता है । इसके उत्तर भूटान की पहाड़ियां और दक्षिण गारों पहाड़ियों का नया जिला है । जिले का क्षेत्रफल ३८९७ वर्ग मील और सदर स्थान ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर किनारे पर धुवरी कसबा है । यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी के उत्तर किनारे पर ६५ मील और दक्षिण किनारे पर १२० मील फैला है । नदी के किनारों पर सघन वन और नर्कट और उसके बाद धान के खेत फैले हुए हैं । ब्रह्मपुत्र के उत्तर मानस, गदाधार और गंगा धार जिले की प्रधान नदियां हैं । जिले में विशेष करके पूर्वी द्वारों में वेशकीमती लकड़ी के जंगल हैं और बाघ, गेंडा, भैंसा इत्यादि जंगली जानवर बहुत रहते हैं । जंगली जानवर प्रति वर्ष बहुतेरे लोगों को मार डालते हैं । पहाड़ियों में मकान बनाने योग्य पत्थर निकाला जाता है ।

इस जिले में सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ४४६२३२ मनुष्य थे; अर्थात् ३२९०६६ हिंदू, १०४७७७ मुसलमान, ११७१२ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली, ५१३ कृस्तान, ७९ बौद्ध, ३९ जैन, ३२ ब्राह्म और १४ सिक्ख । जातियों के खाने में १९२३० जलिया, जो मछुड़े का काम करते हैं, ११७१० गारो, ११२९४ कुलिता, जो ब्राह्मण का काम करते हैं, २९७० ब्राह्मण, १७३३ कायस्थ, ५७ राजपूत ये शेष में दूसरी जातियां थीं । पहाड़ी जातियों में राज, मैच और कवारी ३ जाति अब हिंदुओं में लिखे जाते हैं और कोच ऊंचा-मरतया रखने के कारण राजवंशी कहाते हैं और हिंदुओं में सामि-

ल हुए हैं । ग्वालपाड़ा जिला रोग कारक देश है और इसमें भूमि बहुत बुरा करता है । जिले में ग्वालपाड़ा के अतिरिक्त किसी गांव में ५००० से अधिक मनुष्य नहीं हैं । धुसरी और विजनी प्रसिद्ध बस्ती हैं ।

इतिहास—ग्वालपाड़ा सर्वदा बंगाल और आसाम के सीमा पर था । पूर्व काल में यह जिला कामरूप के हिंदु राज्य का एक भाग था । लाग कहते हैं कि पीछे यह कूचबिहार के कोचो के अधिकार में हुआ । विजनी के वर्तमान राजा, जिनकी जमीन्दारी इस जिले में फैली हुई है, अपने को कूचबिहार के एक राजा के छोटे पुत्र का वंशधर कहते हैं

गौहाटी ।

यात्रापुर तक रेल है । यात्रापुर से आगवोट द्वारा ब्रह्मपुत्र नदी के मार्ग से लगभग ८० मील पूर्व कुछ उत्तर ग्वालपाड़ा और ग्वालपाड़ा से ९५ मील (यात्रापुर से १७५ मील) पूर्व गौहाटी जाना होता है । आसाम देश के कामरूप जिले का प्रधान कसबा और जिले का सदरस्थान (२६ अंश, ११ कला, उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ४८ कला, पूर्व देशान्तर में) ब्रह्मपुत्र नदी के बाएं अर्थात् दक्षिण किनारे पर गौहाटी एक छोटा कसबा है । ब्रह्मपुत्र के किनारे पर या इसके आस पास ग्वालपाड़ा गौहाटी और २ या ३ दूसरे स्थानों के अतिरिक्त सर्वदा रहने वाले मकान नहीं देख पड़ते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय गौहाटी में १०८१७ मनुष्य थे, अर्थात् ७७७३ हिन्दू, २४०५ मुसलमान, ५१७ एनिमिष्टिक, ९९ कृस्तान, और २३ जैन । मनुष्य गणना के अनुसार गौहाटी आसाम में दूसरा शहर है ।

उत्तरी पहाड़ी के ढाल पर वर्ष में एक बार सौभागरी के लिए भोटिए लोग एकत्रित होते हैं । गौहाटी के निकट ब्रह्मपुत्र नदी के बीच में उमानंद नामक छोटे चट्टानी टापू में एक मन्दिर है । गौहाटी के पड़ोस का पवन पानी रोग वर्द्धक है ।

प्राचीन काल में गौहाटी का नाम प्रागज्योतिषपुर था । यहांही से श्री कृष्णचन्द्र ने भौमामुर को मार कर १६१०० राजकुमारियों को, जिनको भौमा

सुर ने छीन कर रक्खा था, द्वारिका में लेजाकर उनसे व्याह किया और महाभारत में प्रसिद्ध राजा भगदत्त की यही मागज्योतिषपुर राजधानी थी, जिम को कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन ने मारा । भगदत्त के वंशधरों के महल और मन्दिरों की निशानियां अब तक उनकी पराक्रम की साक्षी देती हैं । मुसलमानों ने उससे वंश का विनाश किया था । लोग कहते हैं कि कूचबिहार, दरंग, बिजनी और सीदली के राजा उसी वंश से हैं ।

कामरूप जिला—यह जिला आसाम के ब्रह्मपुत्र घाटी में ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों ओर ३८५७ वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर भूटान देश; पूर्व दरंग और नौगांव जिला; दक्षिण खसिया पहाड़ियां और पश्चिम ग्वालपाड़ा जिला है । जिले का सदर स्थान गौहाटी कसबा है । ब्रह्मपुत्र के दक्षिण की पहाड़ियां चंद स्थानों में २००० से ३००० फीट तक ऊंची हैं । इनके ढालुओं पर चाय के बाग बनाये गए हैं । ब्रह्मपुत्र के दोनों ओर बहुतेरी छोटी नदियां ब्रह्मपुत्र में गिरती हैं । जिले में लगभग १३० वर्ग मील क्षेत्रफल में जंगल लगा है । हाथी, बाघ, तेंदुए, भालू, भेंड़ा, भैंसा, बड़ी हरिन और जंगली सूअर, खास कर जिले के उत्तर में बहुत होते हैं । बहुतेरे गांव जंगली जानवरों के भय से घेरान से घिरे हुए हैं । प्रति वर्ष जंगली जानवर बहुतेरे आदिमियों को मार डालते हैं । जिले में मयूर पक्षी बहुत होते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कामरूप जिले में ६४४९६० मनुष्य थे, अर्थात् ५६९९०६ हिन्दू, ५०४५२ मुसलमान, २३५२५ आदिनिवासी, ६९० बौद्ध, ३६६ कृस्तान, २० जैन और १ ब्राह्म । जातियों के खाने में १४०९२३ कोतोटा, ९९२९३ कचारी, ८१५५१ कोच, ५३२०३ केवट, ३६३३६ ब्राह्मण, २२७२३ राभा, शेष में कटानी, डोम, चंडाल, मिकिर, सुनरिया, इत्यादि जातियां थी । राजपूत केवल २११ थे ।

कामरूप जिला महापुरुषिया करके प्रसिद्ध वैष्णवों का प्रधान स्थान है । इसमें ६१ मठ, जो सास्वत कहलाते हैं, प्रसिद्ध हैं । इनके अतिरिक्त देवलांयी करके प्रसिद्ध दूसरे बहुतेरे मठ हैं । कामरूप जिले में कई एक तीर्थ स्थान हैं । इनमें से एक महामुनि का बौद्ध मंदिर है, जहां हिमालय के उस पार के भी बौद्ध यात्री आते हैं ।

इतिहास—अति पूर्व काल में राजा भगदत्त, जिसकी राजधानी मागज्योतिषपुर (वर्तमान काल की गौहाटी) थी, इस देश में राज करता था। उसको कुरुक्षेत्र के संग्राम में अर्जुन ने मार डाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा भगदत्त का राज्य पूर्व दिशा में मनीपुर की पहाड़ियों से करतोवा नदी तक और सम्पूर्ण आसाम की घाटी पर फैला था। आईन अकबरी में लिखा है, कि भगदत्त के वंश में २३ उत्तराधिकारी राजा हुए। एक टीकाकार ने लिखा है, कि भौमासुर का पुत्र भगदत्त था; किंतु मुझको किसी पुराण में यह बात नहीं मिली।

वेशी कहावत है कि इस देश में भुइयां लोग राज्य करते थे। यह निश्चय है कि पीछे कोच लोगों ने आसाम से आकर कूचबिहार को जीता। सन् १२०८ ई० में मुसलमान बादशाहों के साथ कामरूप का संबंध आरम्भ हुआ। रंगामती का किला, जो अब ग्वालपाड़ा जिले में है, दिल्ली राज्य के अखीर पूर्वोत्तर में बाहरी का पड़ाव था। सन् १८२४ के पीछे आसाम के नीचे की घाटी को अङ्गरेजी गवर्नमेंट ने बंगाल में मिला लिया और उपरीघाटी आसाम के राजा पुर्न्दरसिंह के आधीन एक देशी राज्य बना, परंतु सन् १८३८ में पुर्न्दरसिंह का सम्पूर्ण राज्य गवर्नमेंट ने छीन लिया। सन् १८७४ ई० में आसाम प्रदेश एक चीफकमिशनर के आधीन बंगाल से अलग एक देश नियत हुआ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(उद्योग पर्व, चौथा अध्याय)
पूर्व के समुद्र के पास का रहने वाला भगदत्त है। (१९ वां अध्याय) राजा भगदत्त के संग चीन और किरात देश की सेना हस्तिनापुर में दुर्योधन की सहायता के लिए आई। (कर्ण पर्व पांचवां अध्याय) अर्जुन ने राजा भगदत्त को, जो पूर्व समुद्र के निकट के अनुपदेश के किरातों का स्वामी, इंद्र का प्यारा मित्र और क्षत्रियों के धर्म में सदा निरत रहने वाला था, कुरुक्षेत्र के संग्राम में मार डाला। (शांतिपर्व १०१ वां अध्याय) मागदेशीय योद्धा लोग हाथियों के युद्ध में निपुण होते हैं।

श्रीमद्भागवत—(दशमस्कंध ५९ वां अध्याय) श्रीकृष्णचन्द्र सत्यभामा

के सहित गरुड़ पर चढ़ भौमामुर के नगर प्रागज्योतिषपुर में गए । वहां पर्वत, जल, अग्नि, पवन और शस्त्र का किला था । भौमामुर, जिसका नाम नरकामुर भी है, गजारुड़ सेना सहित बाहर निकला । बड़ा युद्ध करने के पश्चात् कृष्ण-भगवान ने पृथ्वी के पुत्र भौमामुर का सिर अपने चक्र से काट डाला और १६१०० कन्याओं को, जिनको भौमामुर ने छीन कर एकत्र किया था, पाल-कियों में बैठा कर चार चार दांत वाले ६४ हाथियों सहित द्वारिकापुरी में भेज दिया । वहां संपूर्ण कन्याओं से कृष्णभगवान का व्याह हुआ (यह कथा आदिन्नहपुराण के ९१ वें अध्याय में भी है) ।

कामाख्या ।

गौहाटी से लगभग २ मील पश्चिम (२६ अंश, १० कला, उत्तर अर्धोश और ९१ अंश, ४५ कला, पूर्व देशांतर में) कामाख्या नामक पहाड़ी है । उसके सिर पर एक सरोवर के निकट कामाख्या देवी का, जिनको लोग कामाक्षा भी कहते हैं, सुन्दर मंदिर है । मंदिर में अंधियारा रहने के कारण दिन में भी दीप जलता है । मंदिर के पास मोदियों की अनेक दुकानें और पंढाओं के मकान बने हैं । हिंदुस्तान के सब विभागों से पात्नी गण कामाख्या जाकर देवी का दर्शन करते हैं । माघ, भादो और आश्विन में उत्सव के समय बहुत लोग कामाख्या में एकत्र होते हैं ।

शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में के भीमशंकर को शिवपुराण में कामरूप देश में लिखा हुआ है; किंतु बंबई के पास के भीमशंकर को लोग ज्योतिर्लिंग कहते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—देवीभागवत—(७ वां स्कंध ३८ वां अध्याय) कामरूप देश के कामाख्या भूमण्डल में देवी का महाक्षेत्र है । भूमण्डल में इसमें श्रेष्ठ स्थान देवी का नहीं है । वहां साक्षात् देवी प्रति मास रजस्वला होती हैं । वहां की सब पृथ्वी देवी रूप है । कामाख्या योनि मण्डल से पर और स्थान नहीं है ।

पद्मपुराण—(पाताळ खण्ड १२ वां अध्याय) शत्रुघ्नजी यज्ञ-अश्व की

रखा करते हुए, अहिछत्ता नामक घड़े नगर में पहुँचे । उसने एक देवालय देखकर अपने मन्त्री सुमति से पूछा कि यह मन्दिर किसका है । मन्त्री ने कहा कि यह मन्दिर विश्व की माता कामाख्याजी का है, जिनके दर्शन मात्र से संपूर्ण सिद्धि उत्पन्न होती है । अहिछत्तापुरी के राजा सुमद ने इनकी पूजा की; जब से यह इस पुरी में स्थित हुई है और सब का शुभ करती है । (१३ वां अध्याय) राजा सुमद की आज्ञा से पुरजनों ने तोरणादिकों से अपने-२ गृह भली भाँति से सँवारे । सहस्रों कन्या रम्य भूषणों से भूषित होकर हाथियों पर चढ़ कर शत्रुघ्नजी के सम्मुख उपस्थित हुईं और राजा अपनी सेना सहित शत्रुघ्नजी से जा मिले । जब राजा शत्रुघ्नजी को अपने राजमन्दिर को लेचले तब हाथियों पर चढ़ी हुई कन्याओं ने शत्रुघ्नजी के ऊपर लावा मिश्रित मोतियों की वर्षा की ।

दूसरा शिवपुराण—(दूसरा खण्ड ३७ वां अध्याय) शिव की स्त्री सती दक्ष के यज्ञ में अपने द्वांस को ब्रह्माण्ड में चढ़ाकर शरीर को छोड़ निज लोक को गई । शिवजी ने दक्ष के यज्ञ विध्वंस करने के पश्चात् सती के शरीर को गंगा के तट में पड़ा हुआ देखा । तब वह उसको अपने शरीर में लपटाए हुए चारों ओर दौड़ने लगे । जिस स्थान पर सती के अंग गिरे वह सब स्थान सिद्धपीठ होगए । काम शैल पर सती की योनि गिरने से कामाख्या नाम देवी प्रकट हुई, जिनको कामरूपा कहते हैं ।

वामनपुराण—(८४ वां अध्याय) महाबाहू ने कामरूप देश में जाकर पार्वती शिव का पूजन किया ।

शिवपुराण—(ज्ञान मंहिता ३८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिंग हैं, जिनमें से ढाँकिनी में भीमशंकर स्थित है । (४८ वां अध्याय) लंका के कुम्भकर्ण का पुत्र भीम नामक राक्षस अपनी माता कर्कटी के साथ सदा पर्वत पर रहता था । उसने दस हजार वर्ष तक कठोर तप करके ब्रह्माजी से अमरत्व लाभ किया । उसके पश्चात् वह कामरूप के राजा को परास्त कर यदि वह कामरूप देश का स्वामी बन गया और देवता गण तथा ऋषि-बेने लगा । कामरूप के राजा ने वन्दिखाने में पड़े हुए अपनी

स्त्री के सहित पार्थिव बनाकर शिवजी की आराधना करने लगा । उधर देव-
ताओं ने शिवजी को प्रसन्न कर भीम के विनाश के लिए उनसे प्रार्थना की ।
भीम ने जब सुना कि राजा चन्दिगृह में भी शिव की पूजा करता है तब राजा
के पास जा उनको अनेक दुर्वचन कह कर उनके ऊपर तलवार चलाया । उसी
समय शिवजी ने पार्थिव से निकल कर भीम की तलवार को अपने पिनाके से
सौ टुकड़े कर डाला । भगवान शंकर और भीम वैद्य का मयंक युद्ध होने
लगा । उस समय पृथ्वी डोलने लगी, समुद्र उछलने लगा और देवतागण
अति त्रस्त हुए । जब नारद ने आकर शिवजी की प्रार्थना की तब उन्होंने
हंकाररूपी अक्ष से संपूर्ण राक्षसी के सहित भीम को भस्म कर दिया । उस
समय देवताओं ने शिवजी से प्रार्थना की कि हे भगवन् ! आप लोक के हित
के लिए इस स्थान में निवास करके इस दुष्ट देश को पवित्र कीजिए । शिव
जी देवताओं के वाक्य स्वीकार करके उस स्थान में रह गए और भीम शंकर
नाम से प्रसिद्ध हुए, जिनके दर्शन और स्मरण करने से संपूर्ण पाप का विना-
श हो जाता है ।



नवा अध्याय ।

(आसाम देश में) शिलांग, सिलहट,
सिलचर, और देशी राज्य मनोपुर ।

शिलांग ।

गौहाटी से ६४ मील दक्षिण (२५ अंश, ३२ कला, ३९ विकला, उत्तर अक्षांश
और ९१ अंश, ५५ कला, २२ विकला पूर्व देशान्तर में) समुद्र के जल से ४९००
फीट ऊपर खसिया और जयंती पहाड़ियां जिले का प्रधान कसबा और आ-
साम के चीफ कमिश्नर का सदर स्थान शिलांग एक छोटा कसबा है । गौहाटी
से तांग्र की डाक एक दिन में शिलांग चली जाती है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के सहित शिलांग में ६७२० मनुष्य थे; अर्थात् ३०९५ हिंदू, २५११ एनीमिस्टिक, ५६६ मुसलमान, ५४० कृस्तान, १ बौद्ध और ७ दूसरे ।

शिलांग में चीफकमिशनर सर्वदा रहते हैं । मनुष्य संख्या बढ़ती जाती है । बहुत रुपये खर्च करके सरकारी इमारतें बनाई गई हैं और एक गिरजा बना है । नलद्वारा पानी सर्वत्र पहुंचता है । सप्ताहिक हाट लगता है । सन् १८८५ ई० में शिलांग की छावनी में २ पहाड़ी तोपों के साथ बंगाल पैदल की ४२ वीं रेजीमेन्ट थी । शिलांग में सालाना औसत ८७ इंच वर्षा होती है । अगहन से चैत वा बैशाख तक जाड़ा रहता है । वर्ष कभी नहीं पड़ती है; किन्तु कभी २ सरदी से कम गहड़ा पानी जम जाता है ।

खसिया और जयंतिया पहाड़ियां जिला—इस जिले के उत्तर कामरूप और नौगांव जिला; पूर्व नौगांव और कचार जिला; दक्षिण सिलहट जिला और पश्चिम गारो पहाड़ियां हैं । जिले का क्षेत्रफल ६१५७ वर्गमील और सदर स्थान शिलांग है ।

खासी पहाड़ियों पर अङ्गरेजी गवर्नमेंट के आधीन छोटे छोटे बहुतेरे देशी राजा हैं और बहुतेरे गांव अङ्गरेजी हैं । जयंती पहाड़ियां अङ्गरेजी राज्य में हैं, जिसको सन् १८३५ में सरकार ने वहां के राजा से छीन लिया । खसिया पहाड़ी पर पहाड़ी नदियां बहुत हैं । जंगलों में मधुमक्खी का मोम और लाही होती है और हाथी, गेंडे, बाघ, भैंसे, बनैली गाय इत्यादि सब प्रकार के वनैले जंतु रहते हैं और बहुतेरे आश्चर्य्य गुफा और खोह देखने में आते हैं, जिनमें से चेरापुंजी और रूपनाथ का खोह बहुत प्रसिद्ध है । रूपनाथ का खोह भूमि में बहुत दूर तक फैला है । कत्तार की सीमा पर कपिली नदी के किनारे एक गर्म झरना है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १६९३६० मनुष्य थे; अर्थात् १६०९७६ आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली जातियां, ५६९२ हिन्दू, २१०७ कृस्तान, ५७० मुसलमान और १५ ब्राह्म ।

इस जिले में स्त्रियां मालिक हैं । पुरुष विवाह करने के पश्चात् अपने समु

के घर में रह जाता है। जो धन सम्पत्ति पुरुष अपने घर से ले आता है, वह उसके मरने पर उसकी सत्त्वे छोटी वधिन पाती है, और विवाह के पहले की सम्पूर्ण जायदाद की वही चारिस होती है। विवाह के पश्चात् की प्राप्त हुई जायदाद मृत पुरुष की स्त्री और लड़के पाते हैं; किन्तु जिले के भिन्नभिन्न प्रान्त में यह रीति बदली हुई है। दक्षिणी ढालू और घाटियों के निवासी विवाह के पहले और पीछे की उपार्जन की हुई सम्पत्ति में भेद नहीं मानते। वहाँ मृत पुरुष की संतान सम्पूर्ण धन सम्पत्ति की मालिक होती है। खसिया और जयंती पहाड़ियों में केवल शिलांग और जोआई अङ्गरेजी स्टेशन और चैरापूंजी और शोलापूंजी देशी कसबा है। गौहाटी और शिलांग के बीच में गाड़ी की एक अच्छी सड़क सन् १८७७ में बनाई गई। उसके कई एक वर्ष पीछे सन् १८८३ में वह चैरापूंजी तक ३० मील बढ़ाई गई।

इस जिले में नारंगी, आलू, तेजपात और सोंपारी बहुत होती हैं। जयंती पहाड़ियों में हल चलता है, किन्तु खसिया पहाड़ियों में केवल कुदाल से खेती होती है।

चैरापूंजी—खसिया पहाड़ियों के दक्षिण भाग में जेठ से कार्तिक तक भारी वर्षा होती है। चैरापूंजी के पास, जो इस जिले में शिलांग से ३० मील दक्षिण है, सन् १८७७ से १८८१ तक ४६३ इंच वर्षा हुई थी। लोग कहते हैं कि दुनिया की जानी हुई वर्षा से सब से बड़ी वर्षा सन् १८७६ के १६ जून को चैरापूंजी में हुई। उस समय २४ घंटे में २४ इंच पानी गिरा था। सन् १८६१ में ८०५ इंच वर्षा हुई, जिसमें से केवल जून में ३६६ इंच हुई थी।

इतिहास—अङ्गरेजी सरकार ने सन् १८३५ में जयंती के राजा राजेन्द्रसिंह से जयंती पहाड़ियां छीन लीं। खसिया का राजा सन् १८३३ में सरकार के आधीन हो चुका था। पहले इस जिले का सदर स्थान चैरापूंजी था, किन्तु सन् १८६४ में शिलांग सदर स्थान बनाया गया। सन् १८७४ में जब आसाम एक चीफ कमिश्नर के आधीन हुआ तब शिलांग चीफ कमिश्नर का सदर स्थान बना।

आसाम देश—आसाम देश का क्षेत्रफल ४९,००४ वर्गमील है । इस देश में कितनी जगह अब तक नापी नहीं गई है । देश के उत्तर भूटान; पूर्वोत्तर मिशमी पहाड़ियां; पूर्व ब्रह्मा और मनीपुर का राज्य, दक्षिण लुसाइयो के रहने वाली पहाड़ियां, टिपरा जिला और टिपरा का राज्य और पश्चिम सूरे बंगाल में मैगनमिंह, रंगपुर और जलपाईगोड़ी जिले तथा कूचबिहार का राज्य है ।

यह देश ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों ढार पर चीन की सीमा तक चला गया है और स्वभाविक ३ भागों में बंटा है; अर्थात् ब्रह्मपुत्र घाटी, सुरमा घाटी और मध्य के पहाड़ी देश में । इसमें पहाड़ियां और जंगल बहुत हैं, जिनमें दफला, मीरी, मिशमी, नागा, कूकी, लुसाई इत्यादि जंगली जातियां बहुत रहती हैं । भारतवर्ष का कोई भाग इस देश के समान आर्द्र नहीं है । इसकी प्रधान नदी ब्रह्मपुत्र और सुरमा है; किन्तु लगभग ४० नदियां ऐसी हैं, जो वर्ष भर में किसी समय बाढ़ नहीं होतीं । चैत्र से कार्तिक तक बड़ी वर्षा होती है । यह देश चाय के उपज के लिए प्रसिद्ध है । चाय के बागों में काम करने के लिये दूर दूर के देशों से आसाम में कूली लाये जाते हैं । आसाम में लोहा और कोयला बहुत निकलता है । जंगलों में हाथी और गेंडे बहुत रहते हैं । गहुतेरे लोग जंगलों से हाथियों को बध्नाकर दूसरे देशों में लेजाते हैं । जंगली लोग तसर के कीड़ों को ले आते हैं । इस देश में भूडोल बहुधा हुआ करता है ।

आसाम प्रदेश में ११ जिले हैं,—सिलहट, कचार, ग्वालपाड़ा, कामरूप, दरंग, नवगांव, शिवसागर, छखिमपुर, नागा, खसिया पहाड़ियां और गारो । खसिया पहाड़ियां जिले के शिलांग में आसाम के चीफ कमिश्नर रहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय आसाम देश में ५४७६८३३ मनुष्य थे; अर्थात् २८१९५७५ पुरुष और २६५७२५८ स्त्रियां । इनमें से २९९७०७२ हिन्दू, १४८३९७४ मुसलमान, ९६९७६५ जंगली जातियां इत्यादि, १६८४४ कुस्तान, ७६९७ बौद्ध १३६८ जैन, ८३ सिक्ख, ५ यहूदी और २५ अन्य थे । इनमें सैकड़ों पीछे बंगाली भाषा वाले ५० मनुष्य, आसामी भाषा वाले २५ मनुष्य, हिंदी वाले ४ मनुष्य, कचारी भाषा के ३ मनुष्य, खासी भाषा वाले ३ मनुष्य, गारो भाषा वाले २ मनुष्य और अन्य भाषा वाले ११ मनुष्य थे ।

आसाम के कसबे, जिनमें सन् १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय ५००० से अधिक मनुष्य थे ।

नम्बर	कसबा	जिला	जन संख्या
१	सिलहट	सिलहट	१४०२७
२	गोहाटी	कामरूप	१०८१७
३	डिब्रुगढ़	छत्तिमपुर	९८७६
४	बरपेटा	कामरूप	९३४२
५	सिलचर	कचार	७५२३
६	शिलांग	खसिया पहाड़ी	६७२०
७	ग्वालपाड़ा	ग्वालपाड़ा	५४४०
८	शिवसागर	शिवसागर	५२४९

अति पूर्व काल में आसाम प्रदेश महाभारत में प्रसिद्ध राजा भगदत्त और उनके उत्तराधिकारियों के आधीन था । बाद लगभग १३ वीं शदी में वह 'अहम' नामक पहाड़ी जातियों के अधिकार में हुआ । अंगरेजी गवर्नमेंट ने सन् १७६५ ई० में आसाम के सिलहट और ग्वालपाड़ा जिले को; सन् १८२६ में आसाम का निचला भाग; सन् १८३० में राजा गोविन्दचंद्र के बिना वारिस मृत्यु होने पर कचार के मैदान का भाग; और सन् १८३८ में राजा पुरंदरसिंह को निकाल कर घाटी का ऊपरी हिस्सा अपने राज्य में मिला लिया । अङ्गरेजी अधिकार बहुत समय में धीरे धीरे पहाड़ी देशों पर फैलता गया । एक अङ्गरेजी अफसर सन् १८६८ में नागा पहाड़ी के 'समागुतींग' में रखा गया; किन्तु नागा जातियों की एक असभ्य जाति अब तक स्वाधीन है । सन् १८७४ में ११ जिले बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के अधिकार में निकाल कर एक चीफ कमिशनर के आधीन आसाम देश बनाया गया ।

सिलहट ।

शिलांग से ३० मील दक्षिण कुछ पश्चिम चेरापूँजी और चेरापूँजी से लगभग ३० मील दक्षिण कुछ पूर्व (२४ अंश, ५३ कला, २२ विकला उत्तर

अक्षांश और २२ अंश, ५४ कला, ४० विकला, पूर्व देशांतर में) सुरमा नदी के दहिने अर्थात् उत्तर किनारे पर आसाम देश में प्रधान कसबा और एक जिले का सदर स्थान सिलहट कसबा है । शिलांग से सिलहट तक चेरा होकर सबक बनी हुई है और नारायणगंज से, जो सिलहट से पश्चिम दक्षिण की ओर बंगाल प्रदेश में है, सिलहट कसबे से लगभग १५ मील दूर नित्य आग बोट आता है । उस सफर में आगबोट को दो दिन लगता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिलहट कसबे में १४०२७ मनुष्य थे; अर्थात् ७२७६ पुरुष और ६०५१ स्त्रियां । इनमें ७०२० मुसलमान, ६८८८ हिंदू, ७४ कृस्तान, ३६ जैन और ९ एनिमिष्टिक थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह आसाम प्रदेश में पहला शहर है ।

यूरोपियन लोगों के मकान दो मील तक सुर्मा नदी के किनारे पर और कसबे के पीछे छोटी पहाड़ियों पर छितराए हुए हैं । वहां मामूली सरकारी इमारतें और एक सुन्दर गिर्जा बना हुआ है । शाहजलाल नामक फकीर की मस्जिद मसजिद है, जहां दूर दूर से मुसलमान यात्री आते हैं ।

सिलहट तिजारती कसबा है । चावल, ढाल, चमड़ा, सीतलपाटी, नारंगी पत्ती का छाता, जेवर इत्यादि वस्तु वहां से दूसरे स्थानों में जाती हैं और कपड़ा, निपक, धीनी, रेशम, मसाला इत्यादि सामान दूसरे स्थानों से वहां आते हैं । सिलहट में सीतलपाटी, हाथी दांत और हड्डी के जेवर, पेटाड़ा और मोढ़े अति उत्तम बनते हैं । वहां के समान उत्तम नारंगी किसी जगह नहीं होती । वहां ईद के तिहवार के समय मुसलमानों का मेला होता है, जो दो दिनों तक रहता है । सन् १८६९ के भारी भूकंप से सिलहट की इमारतों की बड़ी हानी पहुंची थी ।

सिलहट जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ५४१३ वर्गमील है, जिसके उत्तर खशिया और जयंती पहाड़ियां जिला; पूर्व कचार जिला, दक्षिण टिपरा का राज्य और बंगाल के अङ्ग्रेजी राज्य का टिपरा जिला और पश्चिम बंगाल में मैमनसिंह जिला है । जिले के बड़े भाग में समतल भूमि है । स्थान स्थान में छोटी छोटी पहाड़ियां, जो टीला कहलाती हैं, देख पड़ती हैं । जिले में नदियां

बहुत हैं । आपाड़ से कार्तिक तक जिले का पश्चिमी भाग नदियों के जल से समुद्र सा देख पड़ता है । लोग केवल नौकाओं द्वारा आवागमन करते हैं । बांस, ताड़ और दूसरे वृक्षों के कुंजों में गांव बसे हैं । जिले के दक्षिणी भाग के मैदानों में पहाड़ियों के ८ सिलसिले हैं; इनमें से किसी की ऊंचाई समुद्र के जल से १०० फीट से अधिक नहीं है । जिले के मध्य में दृष्ट पहाड़ियाँ हैं । सिलहट कसबे के निकट की पहाड़ियाँ लगभग ८० फीट ऊंची हैं, जिन्हें से बहुतेरी पर चाय की खेती होती है । जिले में सुरमा नदी की बहुतेरी शाखा और सहायक नदियाँ बहती हैं । जिले के दक्षिण पूर्व के भाग में अच्छी लकड़ी होती है । जिले के जंगली पैदावारों में लकड़ी, बांस, छप्पर छाने योग्य घास, लाहो, मधुमक्खियों का मोम, मधु, वृक्ष के रस से बना हुआ अगरबत्तर और जंगली जानवरों में बाघ, हाथी, भैंसा, गेंडा प्रधान हैं । जिले के पूर्व दक्षिण के भाग में हाथी बड़ाए जाते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सिलहट जिले में १९६९००९ मनुष्य थे; अर्थात् १०१५५३१ मुसलमान, ९४९३५३ हिन्दू, ३७०८ जंगली जातियाँ, ३७९ कृस्तान और ३८ ब्राह्म । जातियों के खाने में १५७१३० कायस्थ, १२९६०९ चंडाल, १०२०६५ दास या हलवा, ८२१७० नाथ या जोगी, ४९६०० पाटनी, ४५४३४ ब्राह्मण, ४०४१२ माली, ३६४२२ मुँड़ी, ३५४०७ कैवरत, २७२६४ डोम, २६३३० धोवी और केवल ३६५८ राजपूत थे; शेष में बूसरी जातियाँ थीं ।

इतिहास—मुसलमानों ने १४ वीं शदी के अंत में सिलहट जिले पर आक्रमण करके जिले के हिस्से को जीता । जयंतिया के राजा ने चंद अद्वेजी प्रजाओं को बल से छीन कर कालीजी को बलि चढ़ाया; इस लिये अद्वेजी सरकार ने सन् १८३५ ई० में उसका राज्य छीन कर अपने राज्य में मिला लिया । राजा इंद्रमिह अपने मरने के समय सन् १८६१ ई० तक ६००० रुपया वार्षिक पेंशन पाता था । सिलहट जिला सन् १८७४ में आसाम की कमिश्नरी में मिला दिया गया ।

सिलचर ।

सिलहट कसबे से लगभग ८० मील पूर्व (२४ अंश, ४९ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अंश, ५० कला, ४८ विकला, पूर्व देशांतर में) बारक नदी के दक्षिण किनारे पर आसाम देश के कचार जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा तथा फौजी छावनी सिलचर है। सूखी ऋतुओं में सिलहट से कचार तक सुर्मा नदी में नाव पर जाना होता है। बरसात में नारायणगंज से कचार तक आगबोट चलता है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय सिलचर में ७५२३ मनुष्य थे, अर्थात् ५१४४ हिंदू, २२२४ मुसलमान, ८४, कृस्तान, ६३ एनिमिष्टिक, ५ जैन, १ बौद्ध, १ यहूदी और १ दूसरा।

सिलचर में एक सुन्दर गिर्जा हाल में बना है। सिविल स्टेशन और फौजी छावनी इत्यादि सरकारी इमारत बनी हुई हैं। माघ मास में एक मेला होता है, जो ७ दिन तक रहता है। मेले में बीस पचीस हजार मनुष्य और मनीपुर से बिकने के लिये बहुत से टांघन (घोड़े) आते हैं। सिलचर से मनीपुर तक सड़क बनी हुई है, जिसको अङ्गरेजी गवर्नमेंट ने सन् १८३२ और १८४२ ई० के बीच में बनवाया था।

कचार जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३७५० वर्गमील है। जिले के पूर्व मनीपुर का राज्य और नागा पहाड़ी जिला; दक्षिण पहाड़ी देश, जिसमें लुशाई और फूकी पहाड़ी लोग रहते हैं, पश्चिम सिलहट जिला और जयन्ती पहाड़ी और उत्तर कपिली और दयांग नदी बाढ़ नौगांव जिला है। जिले का सदर स्थान सिलचर है। कचार जिले के ३ ओर पहाड़ियों के उंचे मिलसिले हैं; केवल पश्चिम सिलहट की ओर खुला मैदान है। मध्य में एक नदी पूर्व से पश्चिम बहती है, जिसमें वर्षा काल में आगबोट चलता है। बारक नदी कचार जिले में १३० मील बहती है। इन नदियों की सहायक बहुतरी छोटी नदियां हैं। पहाड़ियों के नीचे ढालू भूमि पर चाय के बाग हैं। जगह जगह नीची भूमि पर भांग की खेती होती है। बांस और फलदार वृक्षों के कुंजों

में, जिनकी दृश्य मनोरम है, लोगों की झोंपड़ियां बनी हुई हैं। जंगलों में हाथी, गेंडे, भैंसे, बाघ और बनेली बिल्ली देखने में आती हैं। खास करके भैंसे से खेत जोते जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कचार जिले में ३१३८५८ मनुष्य थे; अर्थात् २८१४२५ मैदान में और २४४३३ पहाड़ी देश में। इनमें से मैदान में १८६६५७ हिंदू, ९२३९३ मुसलमान, ९५७० पहाड़ी जाति, ७६५ कृस्तान, और ४० ब्राह्म और पहाड़ी देश में १०९४७ हिंदू, ३ मुसलमान, २ कृस्तान और शेष पहाड़ी नंगली मनुष्य थे। जातियों के खाने में कचारी ४४२५ मैदान में और १०८१० पहाड़ियों में, कूकी और लुम्बाई २७९४ मैदान में और ६४२० पहाड़ियों में; नागा ५१८४ मैदान में और ४०२१ पहाड़ियों में; मिकिर ६५१ मैदान में और ३०४५ पहाड़ियों में थे, शेष में अन्य जातियां थीं। कचार जिले में कूकी बहुत हैं। इस जिले के लोग धान की खेती या चाय के बागों में काम करते हैं। जिले में सिलचर के सिवाय ५००० से अधिक मनुष्य की कोई वस्ती नहीं है।

इतिहास—सन् १८३० ई० में पिछला कचारो राजा मारा गया और देश अङ्ग्रेजी गवर्नमेन्ट के अधिकार में आया। खियाल किया जाता है कि उस पहाड़ी देश में कचारी राजा लोग रहते थे, जहां अब नागा जाति के लोग बसते हैं। उनकी राजधानी पहाड़ियों के पाव के निकट दीमापुर था। कचार के उत्तर भाग के पहाड़ी देश में अब तक कचारी लोग बसते हैं। कचार जिले में भूकंप बहुत होता है। सन् १८६९ ई० की १० वीं जनवरी के भूकंप से सिलचर का गिरा और सरकारी इमारतें गिर गईं; बाजार का बड़ा भाग उजड़ गया और पृथ्वी में दरार हो गई और सन् १८८२ ई० के ३३ वीं अक्टूबर के भूकंप से सिलचर की पक्की इमारतों की बड़ी हानि हुई।

मनीपुर ।

कचार से १०८ मील पूर्व आसाम में देशी राज्य की राजधानी मनीपुर है। कचार से मनीपुर तक पहाड़ी सड़क बनी है। नागापहाड़ी जिले के

कोहिमाँ छावनी से १८ मील दूर माओ है । माओ से दक्षिण मनीपुर तक घोड़े चलने योग्य एक पहाड़ी सड़क है ।

सन् १८९१ ई० में मनीपुर के राजा कुलचंद्र ने आसाम के चीफ कमिश्नर और अन्य कई अङ्गरेजों को मार डाला, इस लिये अङ्गरेजी सरकार ने उन के महल का बड़ा भाग और उनका देवमंदिर तोड़ डाला । राजा का खास महल छोड़ दिया गया है । राजा कालापानी भेजा गया । अब मनीपुर का एक छोटा लड़का राजा बनाया गया है । राज्य का प्रबंध अङ्गरेज महाराज करते हैं । मनीपुर में रेजीडेन्सी है और अङ्गरेजी सेना रहती है ।

मनीपुर राज्य — इसके उत्तर नागा पहाड़ी जिला और पहाड़ी देश, जिनमें नागा जाति के लोग बसते हैं और दूसरे लोग नहीं जा सकते; पश्चिम कर्धार जिला; पूर्व ब्रह्मा का एक भाग और दक्षिण छूसाई, कूकी और सूती लोगों का देश है । इस राज्य में समस्त पहाड़ी देश के भीतर एक फैली हुई घाटी है । राज्य का क्षेत्रफल लगभग ८००० वर्गमील और खास घाटी का क्षेत्रफल ६५० वर्गमील है । साधारण तरह से पहाड़ी सिलसिले उत्तर से दक्षिण को गए हैं ।

‘लोगताक’ झील के दक्षिण की घाटी घास के जंगल से पूर्ण बिना वृक्ष की है, किन्तु राज्य के उत्तर और पूर्व के भाग में बहुत वस्तियां देखने में आती हैं । फासिले पर उत्तर की पहाड़ियों के नीचे एक कोने में राजधानी मनीपुर है । देश के दूसरे भागों के अपेक्षा राजधानी के आस पास का देश अधिक आबाद है । कई एक नदियां उत्तर और पश्चिम से लोगताक गामक झील में प्रवेश करती हैं । लोगताक झील बहुत बड़ा है, किन्तु प्रतिवर्ष छोटा होता जाता है । घाटी की लंबाई लगभग ३६ मील और इसकी सरसमें अधिक चौड़ाई लगभग २० मील है । घाटी के बहुतेरे कूर्पों से नमक निकलता है, जिनमें प्रधान रूप राजधानी से १४ मील पूर्वोत्तर पहाड़ियों के पादमूल के निकट है । यही सब नमक मनीपुर में खर्च होता है । घाटी में कोई प्रसिद्ध नदी नहीं है । सब नदियों में बड़ी चारक नदी है । जंगलों में विविध प्रकार के वृक्ष देखने में आते हैं । खास का जंगल सर्वत्र लगे हुए हैं । पहाड़ी देश में बहुतेरे शायी,

घाघ, तेंदुए और भालू विचरते हैं। पूर्व और दक्षिण के भाग में गेंडे मिलते हैं। ऐसा जान पड़ता है कि मनीपुर राज्य में जहरीले सर्प नहीं हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मनीपुर राज्य में १५४ वस्तियाँ, ४५३२२ मकान और २२१०७० मनुष्य थे; अर्थात् १३०८९२ हिंदू, ८५२८८ पहाड़ीकोम, ४८८१ मुसलमान, ७ कृस्तान और २ बौद्ध।

मनीपुर राज्य की स्त्रियाँ बड़ी परिश्रमी हैं। खेती के कामों के अतिरिक्त खरीदना, धेचना इत्यादि बहुतरे कामों को बही करती हैं। भारतवर्ष के किसी स्थान में मनीपुर की स्त्रियों से अधिक परिश्रम करने वाली स्त्रियाँ नहीं हैं। वहाँ तिजारत, दुकान्दारी का काम प्रायः सब स्त्रियाही करती हैं।

राज्य के उत्तर भाग में खास करके नागा लोग और दक्षिण भाग में बूकी लोग बसते हैं। नागा लोग मामूली तवर से पगड़ी नहीं धांधते, किन्तु बूकी लोग सर्वदा सिर पर पगड़ी रखते हैं।

राज्य में धान, कपास, तेल के बीज, आलू, मकई, तम्बाकू और अनेक प्रकार की तरकारियाँ होती हैं। मनीपुर के टांगन घोड़े प्रसिद्ध हैं। अंगरेजी सरकार ने सन् १८३२ और १८४२ ई० के मध्य में मनीपुर से कचार तक सड़क बनवा दी। सन् १८८३ ई० में घोड़े चलने योग्य एक अच्छी सड़क मनीपुर से कोहिमा से १८ मील की दूर पर है, जो, बनाई गई। इनके अलावे घाटी में देशी सौदागरी के योग्य कई एक कच्ची सड़कें हैं।

इतिहास—सन् १७१४ ई० में 'पामहीवा' नामक नागा हिन्दू मत में आकर गरीबनेवाज के नाम से मनीपुर का राजा बना। उसने कई बार ब्रह्मा मुश्क पर चढ़ाई की। उसके मरने के पश्चात् ब्रह्मा वालों ने मनीपुर पर आक्रमण किया। तब मनीपुर के राजा जयसिंह ने अंगरेजी सरकार से सहायता मांगी। सरकार ने फौज भेजी, किन्तु पीछे वह लौटा ली गई। सन् १८२४ में अंगरेजी सरकार और ब्रह्मा के राजा की पहली लड़ाई आरंभ हुई। जब ब्रह्मा वालों ने कचार, आसाम और मनीपुर पर आक्रमण किया तब मनीपुर के राजा गंभीरसिंह ने अंगरेज महाराज से सहायता मांगी। अंगरेजी सरकार ने अपनी फौज कचार की ओर भेजी और दुश्मनों को

ख़वेर कर कुचोघाटी ले ली । सन् १८२६ में जब सरकार को ब्रह्मावालों से संधि हुई तब उन्होंने ने मनीपुर को स्वाधीन बनाया । सन् १८३४ में गंभीर-सिंह मर गया; उस समय उसका पुत्र चंद्रकीर्तिसिंह केवल एक वर्ष का लड़का था; इस लिये उसका चाचा (गरीबनेवाज का परपोता) नरसिंह राज्य का मालिक बना । सन् १८३४ में अंगरेजी सरकार ने ब्रह्मा के राजा को कुचोघाटी लौटा दी और उसके बदले में मनीपुर के राजा को सालाना ६०,३७० रुपया देने को कबूल किया । सन् १८५० में राजा नरसिंह की मृत्यु होने पर उस के भाई देवेन्द्र सिंह को अंगरेजी गवर्नमेंट ने मनीपुर का राजा बनाया, किंतु ३ महीने के बाद गंभीरसिंह के पुत्र चंद्रकीर्तिसिंह ने मनीपुर पर आक्रमण किया । देवेन्द्रसिंह कचार की ओर भाग गया और चंद्रकीर्तिसिंह राजा बन गया । सन् १८५१ की फरवरी में अंगरेज महाराज ने उस को राजा कबूल किया । सन् १८७९ में नागा लोगों की लड़ाई के समय चंद्रकीर्तिसिंह ने अंगरेजी सरकार की सहायता की; इस की कृतज्ञता में सरकार ने उसको के. सी. एस. आई. की पदवी दी ।

सन् १८९० ई० में महाराज शूरचंद्रसिंह मनीपुर के राजा थे । उनके छोटे भाई कुलचंद्रसिंह युवराज और कुलचन्द्र से छोटे भाई टिक्केंद्रजितसिंह सेनापति थे और उनसे भी छोटे भाई अंगसिंह 'पक्का सेना' का काम करते थे । इन के अलावे महाराज के और भी ४ भाई थे । टिक्केंद्रजितसिंह ने महाराज के विरुद्ध विद्रोह मचाया । तारीख १२ सितम्बर की आधी रात में महाराज शूरचंद्रसिंह ने 'पक्कासेना' और कई एक सेवकों सहित भाग कर रेजीडेंसी में पनाह लिया और दूसरे दिन वृन्दावन जाने के बहाने कर के अपने लोगों के साथ कलकत्ते का मार्ग पकड़ा । उसने कलकत्ते में पहुँच कर भारत गवर्नमेंट से सहायता मांगी । बड़े लाट लार्ड लेंसडौन ने उन की सहायता नहीं की । उन्होंने युवराज कुलचन्द्र को मनीपुर के महाराज बनाने और सेनापति टिक्केंद्र-जितसिंह को मनीपुर से निकाल देने के लिये आसाम के चीफ कमिश्नर फिन्टन साहब को मनीपुर जाने की आज्ञा दी । आज्ञा पत्र में लिखा था कि टिक्केंद्रजितसिंह मनीपुर में नहीं रहें, तो गवर्नमेंट कुलचंद्रसिंह को मनी-

पुर का महाराज स्वीकार करेगी। किन्टन साहब चार पांच सौ आदमियों सहित जिन में १७५ सिपाही थे, मनीपुर चले। उन्होंने नेमन में निश्चय किया कि दरबार में युवराज, सेनापति आदि को बुला कर गवर्नमेंट की आज्ञा सुना दें और उसी समय सेनापति टिकेन्द्रजितसिंह को पकड़ लें। तारीख २२ मार्च को जब चीफकमिशनर साहब मनीपुर की राजधानी से कुछ दूर ही थे, तब सेनापति २ पल्टन अपने साथ ले उनके स्वागत के लिये उनसे जा मिले। साहब के राजधानी के पास पहुँचने पर युवराज कुलचन्द्रसिंह भी उससे मिले। चीफकमिशनर ने दरबार के लिये दोपहर दिन नियत किया। दरबार के समय युवराज थे; पर सेनापति नहीं आए; इस लिये दरबार नहीं हुआ। साहब ने युवराज के पास कहला भेजा कि बिना सेनापति के आए दरबार नहीं होगा। दूसरे दिन ८ बजे दरबार के समय भी सेनापति नहीं आए; तब दरबार का समय १ बजे नियत हुआ। उस समय भी वह नहीं आए, तब मनीपुर के रेजीडेण्ट थिमंड साहब ने मनीपुर के दरबार गृह में जाकर बड़े लाट की आज्ञा युवराज कुलचन्द्र सिंह से कह सुनाई और उस के पीछे सेनापति को समझाया कि आप मनीपुर से चले जाइए, पर सेनापति ने उनका कहना स्वीकार नहीं किया। चीफकमिशनर ने राजमहल में मनीपुरी सेना को प्रवेश करते देख कर रेजीडेन्सी के हाते को बृद्ध कर रक्खा। ता० २४ मार्च को चीफकमिशनर ने अंगरेजी सेना को सेनापति को पकड़ने की आज्ञा दी। सबेरे ५ बजे अंगरेजी सेना का आक्रमण आरंभ हुआ। मनीपुरी सेना उनसे लड़ने लगी। दिन भर युद्ध होता रहा। कई अंगरेजी अफसर घायल हुए। शाम को अंगरेजी सेना परास्त होकर रेजीडेन्सी के हाते में भाग गई। मनीपुरी सेना ने रेजीडेन्सी के मकान को घेर लिया। उस के पीछे चीफकमिशनर और कई एक अन्य अंगरेज युवराज और सेनापति से सधि की बात करने गए। उसी समय मनीपुर वालों ने उनको कैद कर लिया। कई अंगरेज मारे गए। रेजीडेन्सी के भीतर के लोग निकल भागे। मनीपुरियों ने रेजीडेन्सी को जला दिया। चीफकमिशनर किंटन साहब, इत्यादि ५ अंगरेज घातको द्वारा दाब से काट डाले गए। पीछे मनीपुर वालों ने सब देशी कैदियों को छोड़ दिया।

यह खबर पाकर अंगरेजी सेना ने तीन ओर से मनीपुर पर चढ़ाई की; एक कोहिमा होकर, दूसरी तम्म स्थान होकर और तीसरी सिलचर होकर । लगभग ३० अप्रैल को मनीपुरी सेना कुछ मुकाविला करने के पश्चात् परास्त होकर भागी । अंगरेजी सेना ने राजधानी पर अपना अधिकार कर लिया । किन्टन साहव आदि कई एक मृत अंगरेजों के सिर राजभवन के आंगन में गड़ें हुए मिले, जो मरने के ३८ दिन बाद दफन किए गए । अंगरेजों ने महाराज के देव मन्दिर और राजमहल का बड़ा भाग तोड़ दिया । युवराज कुलचन्द्रसिंह, सेनापति टिकेंद्रजितसिंह इत्यादि प्रधान लोग क्रम क्रम से पकड़े गए । विचार करने के लिये मनीपुर में एक कमीशन बैठा । सेनापति 'टिकेंद्रजितसिंह' नायब सेनापति, बूढ़ा तोंगल जेनरल और बहुतेरे अन्य राज कर्मचारी फांसी दिए गए और युवराज कुलचन्द्रसिंह, उन के भाई अंगसिंह इत्यादि बहुतेरे लोग कालापानी भेजे गए । इन के लड़के वाले मनीपुर से निकाल दिए गए । राज्य का एक छोटा लड़का मनीपुर का राजा बनाया गया । राज्य का प्रबंध अंगरेजी अफसर द्वारा होने लगा ।

दसवां अध्याय ।

(आसाम देश में) तेजपुर, नवगांव,

शिवसागर, कोहिमा, डिब्रुगढ़,

और परशुरामकुण्ड ।

तेजपुर ।

गौहाटी से लगभग ८० मील पूर्वोत्तर आसाम प्रदेश में ब्रह्मपुत्र नदी के दहिने अपात्र उत्तर किनारे पर (२६ अन्श, ३७ कला, १५ विकला, उत्तर अक्षांश और ९२ अन्श, ५३ कला, ५ विकला, पूर्व देशांतर में) दरंग जिले का प्रधान कसबा और सदर स्थान तेजपुर है । तेजपुर के निकट मैरवी नदी ब्रह्मपुत्र में मिली है । पहाड़ियों के दो सिलसिलों के बीच के मैदान में तेजपुर बसा है । सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इसमें २९१० मनुष्य थे ।

पहाड़ी पर यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हैं। वेशी वस्ती में खपड़े और लोहे की चादर से छाए हुए बहुतेरे पक्के मकान हाल में बने हैं। वहां मामूली अनेक सिविल आफिस, जेलखाना, एक त्वैराती अस्पताल और एक अङ्गरेजी स्कूल है।

कचहरी के आस पास बहुतेरे स्तंभ और नकाशीदार पत्थर पड़े हुए हैं; इससे अनुमान होता है कि पूर्व काल में तेजपुर प्रसिद्ध स्थान था। तेजपुर के पड़ोस के जंगल में बहुतेरे मंदिरों की निशानियां देख पड़ती हैं। उस देश में तेजपुर प्रसिद्ध तिजारती जगह है। वहां चायवाले यूरोपियन बहुत रहते हैं। चाय उत्पन्न होने के लिये वह बहुत प्रसिद्ध स्थान है।

दरंग जिला—इसके उत्तर भुटिया, आका और डफला पहाड़ियां; पूर्व एक नदी के बाद लक्खिमपुर जिला, दक्षिण ब्रह्मपुत्र नदी और पश्चिम कामरूप जिला है। जिले का क्षेत्रफल ३४१८ वर्ग मील और सदर स्थान तेजपुर है।

जिले में कई एक नदियां बहती हैं। मनुष्य संख्या कम है। खेती कम होती है। नरकट और वेंत के सघन जंगल हैं। हाथी, भालू, गेंडे, भैंसे, घाघ, इत्यादि विविध प्रकार के बनेंछे जंतु रहते हैं। हिंसक जंतुओं के मारने वालों को सरकार से इनाम मिलता है। सन् १८८२—१८८३ में हाथी वशाने वालों से सरकार को २५६० रुपया महसूल मिला था। कई एक नदियों में खास करके भीवानी में बालू धोकर सोना निकाला जाना है। कई एक नदियां मैदान में कुछ दूर जाकर बालूदार भूमि में गुप्त हो जाती हैं और कई एक मील के पश्चात् फिर प्रकट होकर बहती हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय दरंग जिले में २७३३३३ मनुष्य थे; अर्थात् २५१८३८ हिन्दू, १४६७७ मुसलमान, ४८५२ पहाड़ियों के मत वाले, ७२३ बौद्ध, ३७१ कृस्तान, २७ जैन और १८ ब्राह्मण। जातियों के खाने में ७२२०० कचारी, ४२०६१ कोच, २४४६० कलिता, १६६०९ जोगी (रेशुम चिनने घाला) १५०९० राभा, १३९७० केंवट, ९४१८ डोम, (महुडा), ८९२९ ब्राह्मण, ८७१८ गनक और शेष में दूसरी जातियां थीं; सत्नी केवल ७२४ थे। जिले में सब से बड़ा कसबा तेजपुर, सबदिवीजन मालदाई और तिजारती बस्ती विश्वनाथ, हवाला मोहनपुर, नलमाड़ी और कुरुआगांव हैं।

नवगांव ।

तेजपुर के दक्षिण बृह्मपुत्र के दूसरे पार अर्थात् उससे दक्षिण और कलंगा नदी के पूर्व किनारे पर आसाम प्रदेश में जिले का सदर स्थान नवगांव एक छोटा कसबा है । सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय उसमें ४२४८ मनुष्य थे । नवगांव में जिले की सरकारी इमारतें और आफिस बने हुए हैं और लफ्डी, बांस तथा फूस से बनी हुई झोपड़ियों में वहां के लोग रहते हैं ।

नवगांव जिला—इसके उत्तर बृह्मपुत्र नदी बाद दरंग जिला, पूर्व शिवसागर जिला और नागा पहाड़ियां, दक्षिण खासिया और जयंती पहाड़ियां जिला और पश्चिम कामरूप जिला है । वह जिला ३४१७ वर्ग मील क्षेत्रफल में फैला है । जिले के पूर्वोत्तर के कोने में मिकिर पहाड़ी और पूर्व भाग में बृह्मपुत्र के दक्षिण किनारे से कलंगा नदी के उत्तर किनारे तक कामाख्या पहाड़ी फैली है । उसके एक शिखर पर दुर्गादेवी का मन्दिर है । पहाड़ी के ढालों पर चाय की खेती होती है । कामाक्षा का प्रसिद्ध मन्दिर कामरूप जिले में है ।

जंगलों में लाही, मधुमक्खियों का मोम, गोंद इत्यादि वस्तु होती हैं । जंगली जंतु प्रति साल बहुतेरे लोगों को मार डालते हैं । उनको मारने वाले मनुष्यों को गवर्नमेंट से नियमित इनाम मिलता है ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले में ३१०५७२ मनुष्य थे, अर्थात् २४९७१० हिन्दू, ४८४७८ पहाड़ी जंगली कोम, अर्थात् मिकिर, गारो और झूकी, १२०७४ मुसलमान, २५४ कृस्तान, ३२ जैन और ३१ बूढ़ो । जातियों के खाने में ४७४९७ मिकिर, ४२८७८ कोच, ४१६९५ लाट्टन, २५५५३ डोम, २३१४४ कलिता, १७८९६ केवट, १६६०९ काटनी, १२५५५ कचारी और शेष में दूसरी जातियां थीं । इन में ७५०२ ब्राह्मण, २३१२ कायस्थ और केवल ७७ राजपूत थे । नवगांव जिले के जल वायु अत्यंत रोग वर्द्धक हैं ।

शिवसागर ।

नवगांव से १०० मील से अधिक पूर्वोत्तर और डिब्रुगढ़ से तीस चालिस

मील दक्षिण-पश्चिम ब्रह्मपुत्र नदी के दक्षिण किनारे से ९ मील दूर एक छोटी नदी के किनारे पर (२६ अंश, ५९ कला, १० विकला, उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ३८ कला, १० विकला, पूर्व देशांतर में) आसान प्रदेश के जिले का सदर स्थान शिवसागर है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय शिवसागर में ५८६८ मनुष्य थे; अर्थात् ४४२५ हिन्दू, १३५१ मुसलमान और ९२ कृस्तान ।

शिवसागर अहम बंश के राजाओं की राजधानियों में से एक था । अब तक उस समय का एक उत्तम तालाब ११४ एकड़ क्षेत्रफल में फैला हुआ है । उसके किनारे पर बहुतेरे पुराने मन्दिर विद्यमान हैं । नदी के दोनों किनारों के बाजारों में लोहे से छाए हुए बहुतेरे मकान और कई एक अच्छी दुकानें बनी हैं । प्रति दिन हाट लगता है । मारवाड़ी सौदागर रहते हैं । चावल और खांस करके चाय शिवसागर से अन्य स्थानों में भेजे जाते हैं । तालाब के बांध के आस पास सरकारी इमारतें और यूरोपियन लोगों की कोठियां बनी हैं ।

शिवसागर जिला—जिले का क्षेत्रफल २८५५ वर्ग मील है । इसके उत्तर और पूर्व लखिमपुर जिला; दक्षिण नागा पहाड़ियां जिला और पश्चिम नवगांव जिला है । जिले में जंगल घास और, ब्रह्मपुत्र की सहायक बहुत नदियां हैं । जिले के भीतर कोई पहाड़ी नदी है । उत्तर की सीमा पर ब्रह्मपुत्र नदी बहती है । खेती योग्य अच्छी भूमि है । जंगलों में हाथी, गेंडे, बाघ, भालू, भैंसे इत्यादि सब प्रकार के घन जंतु मिलते हैं । सन् १८८२—१८८३ में जंगली हाथियों को बहाने वाले लोगों ने सरकार को ८००० रुपया दिया था ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में ३७०२७४ मनुष्य थे; अर्थात् २१२२२४ आदि निवासी, जो अपने मत पर अब तक चलते हैं और जो अब हिन्दू के मत पर चलते हैं, १३९०७५ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, ३०७ यूरोपियन और यूरेशियन, और ३ चीनी । इनमें मजहब के अनुसार ३३९६६२ हिन्दू, १५६६५ मुसलमान, १३८२९ आदिनिवासी जो अपने पुराने मत पर चलते हैं, ८०४ कृस्तान, २७६ बौद्ध, ३७ जैन और १ पृश्तो थे । जातिपों के खाने में ११७८७२ अहम, ३३८१२ कलिता, २९९५२ चटिया, २४२४८ कोच

२२८६७ डोम, १८४९२ भूमिज, १९७५३ कंधारी, १७७३६ केवट, ११६०७ ब्राह्मण, १०८३६ मीरी, ५४०४ कतानी और शेष में दूसरी जातियां थीं; जिनमें ३१०९ कायस्थ, और १४२८ राजपूत थे। इसजिले के जोरहाट और गोलाघाट में सोदागर लोग रहते हैं। नजीरा में आसाम के चाय कंपनी का सदर स्थान है। जिले में माड़बारी खास करके सोदागरी करते हैं।

इतिहास—शिवसागर जिले पर अङ्गरेजी अधिकार होने से पहिले अहम वंश के राजाओं ने ४०० वर्ष तक राज्य किया था। उनसे पहिले चटिया लोगों का अधिकार था। अहम लोगों की पहली राजधानी शिवसागर कसबे से थोड़ा दक्षिण पूर्व गढ़वाल में थी। वहां अब तक दूर तक खंडहर देखने में आते हैं। राजमंडल लगभग २ मील लंबी ईस्ट की दीवार से घेरा हुआ था। वहां संपूर्ण स्थान में जंगल लग गया है। अहम लोगों की दूसरी राजधानी शिवसागर कसबे के दक्षिण रंगपुर था, जिसको सन् १६९८ ईस्वी में राजा रुद्रसिंह ने नियत किया था। उसने महल का खंडहर और उसका बनवाया हुआ 'जयसागर' में एक मन्दिर घने जंगल में अब तक विद्यमान है। ऐसा प्रसिद्ध है कि राजा रुद्रसिंह के बड़े पुत्र शिवसिंह ने लगभग सन् १७२२ में १५४ एकड़ में शिवसागर के बड़े तालाब को बनवाया। सन् १७८४ तक रंगपुर अहम लोगों की राजधानी था। उस वंश के राजा गौरीनाथ अपनी प्रजाओं के चागी होने पर डिसाइ नदी के किनारे पर जोरहाट में भाग गया। वहां वह सन् १७९३ में मर गया।

अङ्गरेजी सरकार ने इस देश के हुकूमत करने वाला पुरंदरसिंह को नियत खिराज पर शिवसागर दे दिया था; किंतु सन् १८३८ में उसको राज्यच्युत करके शिवसागर को अपने अधिकार में कर लिया।

कोहिमा ।

आसाम प्रदेश में नागा पहाड़ी जिले का प्रधानस्थान कोहिमा एक गांव और फौजी छावनी है। वहां जिले के सिविल आफिस बने हैं। कोहिमा से १८ मील दूर माओ है। अंगरेजी सरकार ने सन् १८८३ ई० में माओ से मनीपुर तक छोड़े चलने के योग्य सड़क बनवा दी।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कोहिमा और पौजी छाँवनी में १३८० मनुष्य थे, अर्थात् १३५१ पुरुष और २९ स्त्रियाँ । इनमें १२५९ हिन्दू, ९४ मुसलमान, २५ कृस्तान और २ दूसरे थे ।

नागा पहाड़ी जिला—यह जिला नौगांव जिला और मनीपुर के राज्य के मध्य में है । इसके उत्तर शिवसागर जिला, पश्चिम नवागांव जिला और दक्षिण मनीपुर का राज्य है । इसका क्षेत्रफल लगभग ६४०० वर्ग मील है । जिले का सदर स्थान कोहिमा स्टेशन है । जिले में सर्वत्र जंगल, पर्वत और नदियाँ हैं । सर्वत्र मनुष्य नहीं जा सकते । घाटियाँ और पहाड़ियाँ सघन वनों से ढपी हुई हैं । स्थान स्थान पर छोटी गहड़ी झील और दलदल हैं । मधुमक्खी का मोम, अनेक भाँति की दारचीनी और रंग जंगली पैदावार है । कोयला, पत्थरभाठ और स्लेट खानों से निकाले जाते हैं । बहुतेरे स्थानों में गरम झरने हैं । वनों में हाथी, गेंडे, बाघ, तेंदुए इत्यादि बहुत होते हैं । ढाँग, धनेश्वरी और यमुना नामक नदी इस जिले में प्रधान नदियाँ हैं । इनमें बरसात में छोटी नाव चलती है ।

सन् १८८१ में मोटे तवर के अनुमान से जिले में ११०३०० मनुष्य थे, अर्थात् ९४००० अनेक भाँति के नागा, ८८०० मिक्तिर, ३५०० कचारी, २६०० फूकी, १००० असामी और ४०० एटानिया । इन लोगों का खास हथियार बछी, दाव और ढाल है ।

इतिहास—सन् १८६७ ई० में नागा पहाड़ी एक डिप्टी कमिश्नर के आधीन एक जिला बनाया गया । अब तक उस देश की पैमाइश ठीक तौर से नहीं हुई है । उसमें प्रायः सम्पूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी जातियाँ पसनी हैं, जिनको नागा कहते हैं । वे आसाम के अहम राजाओं के साथ मेल से रहते थे, किंतु देश पर अङ्ग्रेजी अधिकार होने पर उत्तर और नौगांव और शिवसागर जिलों में और दक्षिण-पश्चिम कचार में लूट पाट करने लगे । सन् १८३२ और १८५१ के बीच में उनको डरवाने के लिये इधियार बन्द अङ्ग्रेजी सेनाओं ने १० बार से अधिक उनके देशी पहाड़ियों में आक्रमण किए । नागा लोग अगम स्थानों में रहते हैं । १२ वें आक्रमण के पीछे सन्

१८८१ की फरवरी में भारत गवर्नमेंट ने निश्चय किया कि कोहिमा का अङ्गरेजी अधिकार कायम रहे, एक अङ्गरेजी रेजीमेंट सर्वदा पहाड़ियों में रहा करे और जिले का प्रबंध अङ्गरेजी राज्य के तौर पर किया जावे, उसके बाद ऐसा ही सब प्रबंध हो गया ।

डिब्रूगढ़ ।

शिबसागर से ४० मील से अधिक पूर्वोत्तर (२७ अंश, २८ कला, ३० विकला उत्तर अक्षांश और ९४ अंश, ५७ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) ब्रह्मपुत्र और डिब्रू नदी के संगम से ४ मील दूर डिब्रू नदी के किनारे पर आसाम प्रदेश में लखिमपुर जिले का प्रधान कस्बा और सदर स्थान डिब्रूगढ़ है । तेजपुर से डिब्रूगढ़ तक मार्ग के पास चाय के बाग फैले हुए हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय डिब्रूगढ़ और छावनी में ९८७६ मनुष्य थे; अर्थात् ७१०१ हिंदू, २३९५ मुसलमान, २३८ एनिमिष्टिक, ९० कृस्तान, ४७ जैन, ४ बौद्ध और १ दूसरे ।

छावनी में लगभग ५०० लड़ाके सिपाही रहते हैं । आसपास हजारों एकड़ भूमि पर चाय की खेती होती है और कई एक झरने और अनेक कोपले की खान हैं । चाय डिब्रूगढ़ से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं ।

लखिमपुर जिला—यह जिला आसाम प्रदेश के पूर्व में ब्रह्मपुत्र नदी के दोनों ओर लगभग ११,५०० वर्ग मील में फैला हुआ है । जिले के अधिक विभागों में पहाड़ी जातियों के लोग रहते हैं, जो अंगरेजी गवर्नमेंट के साधारण अधिकार को स्वीकार नहीं करते । जिले का बंदोबस्ती हिस्सा हाल के पैमाइश से ३७२३ वर्ग मील हुआ है । जिले के उत्तर डफला, भीरी, अबर, और मिशमी पहाड़ियां; पूर्व मिशमी और सिगाफो पहाड़ियां, दक्षिण नागा पहाड़ियां इत्यादि और पश्चिम शिवसागर और दरंग जिला है । उत्तर और पूर्व की सीमा निश्चय नहीं हुई है । ब्रह्मपुत्र नदी और इसकी सहायक अनेक छोटी नदियां जिले में बहती हैं । जिले के सब भागों में बिना जोती हुई चरागाह की भूमि फैली हुई है । जंगली पैदावारों में प्रधान रेशम,

मधुमक्खी का मोम, रंग और भांति भांति की जड़ी बूटी हैं। इनको पहाड़ी लोग हाटों में बेचते हैं। जंगलों में हाथी, गेहे, भैंसे, वनैली गाय, भालू, इत्यादि सब भांति के वनैले जंतु रहते हैं। गवर्नमेंट को हाथी बझाने वालों से प्रति वर्ष २०००० रुपये से ३०००० रुपये तक मिलता है। इसके अलावे गवर्नमेंट हाथी पकड़नेवालों से प्रति हाथी १०० लेती है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय हाल की पैमाइश की हुई ३७२३ वर्ग मील वंदोवस्ती हिस्से में १७९८९३ मनुष्य थे। उनमें बिना पैमाइश की हुई भूमि के कुछ पहाड़ी कौम भी शामिल थे। इनमें १५२१९० हिंदू; १६३८२ पहाड़ी कौम, जो अब तक अपने मत पर हैं; ५८२४ मुसलमान; ४६५७ बौद्ध; ८३७ कृस्तान और ३ जैन थे। जातिओं के खाने में ५१५८८ अहम, १८६९९ कचारी, १६७०८ चोटिया, ११७६५ डोम, ११६८७ मीरी, ७७४२ कलितो, ४५९८ कोच, २८८३ कामटी, शेष में दूसरी जातियां थीं, जिन में २०७०, कायस्थ, १७९१ राजपूत और १३६३ ब्राह्मण थे। जिले में लखिमपुर और सदिया में वेशी काम के लिये कपड़े तैयार होते हैं और थोड़ी तिजारत होती है।

परशुरामकुण्ड ।

भारतवर्ष के पूर्वोत्तर की सीमा पर, जहां ब्रह्मपुत्र नदी हिमालय पर्वत से निकल कर आसाम के मैदान में प्रवेश करती है, परशुरामकुंड है। जो पूर्वकाल में ब्रह्मकुंड करके प्रसिद्ध था। कुंड के चारो ओर पहाड़ियां हैं। ब्रह्मपुत्र की खास धारा पूर्वोत्तर से कुण्ड के समीप आई है। ऐसा प्रसिद्ध है कि ब्रह्मपुत्र नदी पर्वत से आकर इस कुण्ड में गुप्त हो गई और फिर आसाम के मैदान में प्रकट हुई, इसी कारण से अर्थात् ब्रह्मकुण्ड में गुप्त होकर फिर प्रकट होने से इस नदी का नाम ब्रह्मपुत्र पड़ा। उस कुण्ड के पास ब्रह्मपुत्र नदी देवपाणि के नाम से प्रसिद्ध है और वहां से कुछ दूर नीचे आकर ब्रह्मपुत्र के नाम से विख्यात हुई है। कुण्ड के निकट कोई गृह नहीं है; दूर की पहाड़ी पर एक पहाड़ी वस्ती है। कुण्ड के समीप गुफा के भीतर १ क्षरना और बाहर २ क्षरने हैं। कुण्ड का जल घड़ा ठंढा है। यात्रीगण विशेष करके सार्ध सन्यासी दूर दूर से आते हैं और कुण्ड में गोता मार कर क्षरने के जल से स्नान करते हैं।

ऐसा प्रसिद्ध है कि विष्णु के अवतार परशुरामजी ने २१ बार सत्तियों का विनाश कर के अंत में ब्रह्मकुण्ड पर परशु को त्याग दिया और वहाँ तपस्या करके वह पाप से विमुक्त हुए । तभी से उस कुण्ड का नाम परशुराम कुण्ड हुआ ।



ग्यारहवां अध्याय ।

(सूत्रे बंगाल में) बुगड़ा, रामपुरबोलिया, कुष्टिया,
ग्वालंडो, पवना, सिराजगंज, फरीदपुर, नोआ-
खाली, सीताकुंड, बलवाकुंड, चटगांव,
कोमिला, टिपरा, नारायणगंज,
ढाका और मैमनसिंह ।

बुगड़ा ।

पावतीपुर जंक्शन से ४९ मील दक्षिण नवागंज रेलवे का स्टेशन है । स्टेशन से ३० मील से अधिक पूर्व सूत्रे बंगाल के राजशाही विभाग में बुगड़ानदी के पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान बुगड़ा एक छोटा कस्बा है ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय बुगड़ा में ६१७९ मनुष्य थे; अर्थात् ३४६३ मुसलमान, २६६७ हिन्दू और ४९ दूसरे । कस्बे में देखने योग्य कोई इमारत या दूसरी वस्तु नहीं है; कालीतला और मालतीनगर दो हाट हैं ।

बुगड़ा जिला—यह जिला ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिम १४९८ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । जिले में बहुतेरी छोटी नदियाँ बहती हैं । जंगली पैदावारों में अनेक भाँति के रंग और मधुमक्खियों का मोम है । जंगलों में बाघ, भैंसे, सूअर और तेंदुए रहते हैं । जिले में गाजीपियाँ के नाम से मुसलमानों के बहुतेरे तिहवार और मेले होते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जिले में ७३४३५८ मनुष्य थे,

अर्थात् ५९३४११ मुसलमान, १४०८६० हिंदू, ५४ जैन, २७ कृस्तान, २ बौद्ध और ४ दूसरे । जातियों के खाने में ११९५५ कोच, पाली और राजवंशी, १५५६६ कैवरत, ११३१४ वैष्णव इत्यादि, ९८९२ चंडाल और शेष में दूसरी जातियां थी; जिनमें ४६१४ ब्राह्मण, ३७४९ कायस्थ और केवल ३७२ राजपूत थे ।

इतिहास—बुगड़ा का कोई खास इतिहास नहीं है। सन् १८२१ में राजशाही दीनाजपुर और रंगपुर से निकाल कर यह एक जिला बनाया गया । सन् १८६९ में यह स्वाधीन जिला बना और जिले में कलक्टर और मजिस्ट्रेट नियत हुए ।

रामपुरबौलिया ।

नवाबगंज से ३९ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से ८८ मील) दक्षिण नाटूर का रेलवे स्टेशन है । नाटूर राजशाही जिले में सबडिवीजन का सदर स्थान एक कसबा है, जिसमें सन् १८८१ में ९०९४ मनुष्य थे, अर्थात् ५३६८ मुसलमान, ३७२१ हिन्दू और ५ दूसरे । कसबे के मध्य में नाटूर के राजा का 'जो ब्राह्मण हैं', सुंदर मकान बना हुआ है ।

नाटूर के रेलवे स्टेशन से ३० मील पश्चिम (२४ अंश, २२ कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३८ कला, ५५ विकला पूर्व देशांतर में) पद्मा नदी के बाएं सूत्रे बंगाल के राजशाही विभाग में राजशाही जिले का सदर स्थान और प्रधान कसबा रामपुरबौलिया है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रामपुरबौलिया में २१४०७ मनुष्य थे; अर्थात् ११२५५ हिन्दू, १००४९ मुसलमान, ७८ कृस्तान, १३ जैन, १० बौद्ध और २ दूसरे ।

कसबे की उन्नति हाल में हुई है । इसमें तिजारत बहुत होती है । पद्मा की बाढ़ कसबे में घुसजाती है । रामपुरबौलिया में जिले के प्रधान हाकिमों के अतिरिक्त कमिश्नर साहब भी रहते हैं ।

कसबे से १५ मील पूर्व पोठिया गांव में एक बंगाली ब्राह्मण राजा है । वहां महाराज जगतनारायण राय की स्त्री महारानी भुवनमयी का बनघाया हुआ भुवनेश्वरनाथ महादेव का विशाल मन्दिर देखने में आता है ।

“राजशाही जिला—यह जिला राजशाही विभाग के दक्षिण-पश्चिम के कोने में २३६१ वर्गमील क्षेत्रफल में फैलता है । इसके उत्तर दीनाजपुर और बूंगड़ा जिला; पूर्व बूंगड़ा और पटना जिला, दक्षिण गंगा अर्थात् पद्मा नदी और नदिया जिला; और पश्चिम मालदाह और मुर्शिदाबाद जिला है । सदर स्थान रामपुरबौलिया है । जिले में जगह जगह ऊँचे स्थानों पर घुँघा के कुँजों के बीच में वस्तियाँ देखने में आती हैं । सर्वत्र पोस्ते के खेत फैले हुए हैं । जंगल विशेष नहीं हैं । जिले के बहुतेरे लोग कीड़ों को पाल कर रेशम तैयार करते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जिले में १३३८६३८ मनुष्य थे; अर्थात् १०४९७०० मुसलमान, २८८७४९ हिन्दू, १२१ कृस्तान, ५५ बौद्ध, ४ जैन, २ यहूदी और ७ दूसरे । जातियों के खाने में ६३१३४ कैवर्त, २९७९२ चंडाल, १७०८१ वैष्णव, १६५२३ ब्राह्मण, १३७७४ जलिया, ९२७३ ग्वाला और शेष में दूसरी जातियाँ थीं । राजपूत केवल १२३३ थे । जिले में रामपुरबौलिया, नाटवर और पोठिया यही ३ में ५००० से अधिक मनुष्य थे ।

इतिहास—नाटवर के राजवंश का पहला राजा बड़ा धनी जमींदार था । उसकी मिलकियत राजशाही करके प्रसिद्ध थी । वही राजशाही नाम अंगरेजी जिले का रक्ता गया । प्रथम इस जिले का सदर स्थान नाटवर था; किंतु वहाँ के जलवायु रोग वर्धक होने के कारण उसको छोड़ कर रामपुर-बौलिया सदर स्थान बनाया गया ।

कुष्टिया ।

नाटवर से ५३ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से १४१ मील) दक्षिण पोढ़ादह जंक्शन और पोढ़ादह से १० मील पूर्व कुष्टिया का रेलवे स्टेशन है । पहले सांराघाट से दाभुकदिया घाट तक पद्मा नदी में १२ मील आगबोट में जाना होता है । सूत्रे बंगाल के नदिया जिले में पद्मार्गंगा के दहिने अर्थात् दक्षिण किनारे पर सबदिगीजन का सदर स्थान कुष्टिया एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय कुष्टिया में १११९९ मनुष्य थे; अर्थात् ६०४० मुसलमान, ५१३२ हिंदू और १८ कृस्तान ।

कुटिया में सबडिवीजन की कचहरियों के मकान हैं और साधारण तिजारात होती है । वहां कोई देखने योग्य प्रसिद्ध वस्तु नहीं है ।

पवना ।

कुटिया के रेलवे स्टेशन से दस पंद्रह मील पूर्वोत्तर सूबे बंगाल के राजशाही विभाग में इच्छामती नदी के किनारों पर जिले का सदर स्थान पवना एक कसबा है । कुटिया से पवना आगबोट जाता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पवना कसबे में १६४८६ मनुष्य थे; अर्थात् ९०१४ मुसलमान, ७४४४ हिंदू, २७ कृस्तान और १ बौद्ध ।

कसबा इच्छामती के दोनों किनारों पर बसा है । इसमें ५ बड़े बाजार, कई एक पक्की सड़कें, अस्पताल, स्कूल, नील की कोठी और जिले की कचहरियां हैं ।

पवना जिला—यह राजशाही विभाग के दक्षिण-पूर्व के कोने में १८४७ वर्गमील में फैला है । इसके पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान धारा यमुना; और दक्षिण-पश्चिम गंगा की प्रधान धारा पद्मा बहती है । जिले का सदर स्थान पवना कसबा है; किंतु जिले में सबसे बड़ा कसबा और तिजारती स्थान सिराजगंज है । जिले में अनगिनत नदियां बहती हैं इस लिये बरसात में प्रत्येक गांव में नाव जा सकती है । संपूर्ण जिले में धान की खेती होती है । वस्तियों के आस पास बांस और वृक्षों के झुण्ड हैं । जिले में पद्मा की प्रधान शाखा इच्छामती नदी बहती है; बहुतेरी झील भी हैं और जगह जगह बाघ, तेंदुए और बनेले सूअर मिलते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पवना जिले में १३११७२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९४९९१८ मुसलमान, ३६१४३९ हिंदू, २२६ जैन, १४४ कृस्तान और १ बौद्ध । जातियों के खाने में ५३३१९ चंडाल, ३१२७९ जालिया, ३४६०२ कायस्थ, २६०४९ सुंडी, २३३०६ कैयारत, २०९७० ब्राह्मण और केवल ४५५ राजपूत थे; शेष में दूसरी जातियां थीं । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले का कसबा सिराजगंज में २३२६७ और पवना में १६४८६ मनुष्य थे ।

इतिहास—प्रथम यह जिला राजशाही जिले का एक बड़ा भाग था । सन् १८३२ में यहाँ एक जेंट मजिस्ट्रेट और डिप्टी कलेक्टर नियत हुए । सन् १८६१ में यहाँ के अफसर को मजिस्ट्रेट और कलेक्टर का पूरा अधिकार मिल गया । सन् १८७३ में एक बल्ला हुआ था, जिसको पुलिस ने दबाया । उस समय लगभग ३०० आदमी पकड़े गए, जिनमें से बहुतों को सजा दी गई ।

सिराजगंज ।

पटना से लगभग ५० मील सीधा पूर्वोत्तर (२४ अंश, २६ कला, ५८ विकला उत्तर अक्षांश और ८१ अन्ध्र ४७ कला, ५ विकला पूर्व देशांतर में) ब्रह्मपुत्र नदी की प्रधान धारा यमुना के निकट सूबे बंगाल के पटना जिले में प्रधान कसबा और उस देश में प्रसिद्ध दरियाई बाजार सिराजगंज है । पटना से सिराजगंज होकर सड़क गई है ।

सन् १८९१ की गनुष्य-गणना के समय सिराजगंज में २३२६७ मनुष्य थे, अर्थात् १२३३१ मुसलमान, १०६१२ हिंदू, २११ जैन और ३३ कृस्तान ।

सिराजगंज कसबे में १ बाजार और १२ पतली सड़कें हैं । नदी के किनारे पर नावों से उतरने के लिये ४ घाट बने हैं । बरसात में यमुना में बड़ी बाढ़ होती है । प्रति वर्ष उस नदी का स्थान कुछ बदल जाता है, इस कारण से उसके किनारे पर गोदाम या वृक्ष नहीं रहते हैं ।

नदी में नावों का आमदरफ्त बहुत रहता है । बड़ी नावें बीच घाटे में लंगड़ों पर रहती हैं और छोटी नावें नदी के स्वभाविक झुकावों में ठहरती हैं । तिजारती व्यापारी और दलाल लोग हलकी डोंगियों में इधर उधर फिरते हैं । झुण्ड के झुण्ड फूली माल उतारने और चढ़ाने में लगे रहते हैं । बहुत लोग प्रति दिन अपने मकानों से नदी के किनारे पर जाते हैं ।

सिराजगंज में कई एक यूरोपियन कोठियां हैं । वहाँ देशी सौदागरों में प्रधान माड़वारी है, जिनको वहाँ के लोग कैंआ कहते हैं । उनके अतिरिक्त बंगाली सौदागर भी बहुत हैं । व्यापारी लोग चारों ओर के देश के मेतों के पैदावार छोटे छोटे व्यापारियों से सिराजगंज में खरीद कर कलकत्ते

भेजते हैं । सिराजगंज के व्यापार की प्रधान वस्तु नमक, तेल, तेल के बीज, जूट, पटसन, चावल, गल्ले, तंबाकू, चीनी और खुर्दा यूरोपियन चीजें हैं । अधिक व्यापार कलकत्ते के साथ होता है । रंगपुर मैनसिंह, कूचबिहार, बुगड़ा, ग्वालपाड़ा, जलपाईगोड़ी इत्यादि के साथ भी सिराजगंज की सौदागरी होती है । सन् १८७५ के ३१ अगस्त को सिराजगंज में नावों की गिनती हुई; उस दिन वहाँ १४३६ नावों में १६२००० मन माल लदा था, जिसमें से तीन चौथाई जूट था और सन् १८७४ के ४ थी सितम्बर की गिनती के समय ११८५ नावों में १९५००० मन माल था । सन् १८७६—७७ में उजान और भाटी दोनों ओर की नावें ४९६४४ गिनी गई थीं ।

इतिहास—उन्नीसवीं शदी के आरंभ में सिराजअली नामक एक मुसलमान जमीन्दार ने कसबे में एक बाजार बनाया; उसी के नाम से उस कसबे का नाम सिराजगंज पड़ गया । उस समय कसबा यमुना नदी के किनारे पर था । सन् १८४८ की भारी बाढ़ से जब सिराजगंज बह गया, तब वहाँ के सौदागर लोग उस जगह से लगभग ५ मील पीछे नदी के नए किनारे पर जा बसे । पीछे नदी अपने पुराने स्थान पर चली गई; किन्तु सौदागर लोग वहाँही रह गए । सन् १८७७ ई० में सिराजगंजमें बंगाल बैंक की एक एजेंसी और ६ यूरोपियन कोठियां थीं ।

ग्वालंडो ।

पोडादह जंक्शन से ४८ मील पूर्व (पार्वतीपुर से १८९ मील और कलकत्त से १५१ मील) ग्वालंडो का रेलवे स्टेशन है । सूबे बंगाल के ढाके विभाग के फरीदपुर जिले में गंगा की प्रधान धारा पद्मा और ब्रह्मपुत्र नदी के संगम के निकट ग्वालंडो एक कसबा है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ग्वालंडो में ८६५२ मनुष्य थे; अर्थात् ४५०८ हिन्दू, ४१३० मुसलमान, और १४ दूसरे ।

ग्वालंडो में सर्वदा रहने वाले मकान नहीं हैं, क्योंकि नदी के निकट की भूमि बदलती रहती है । बरसात में नदी की तेजी बहेद बढ़जाती है । प्रति

वर्ष ज्येष्ठ मास में वहां के निवासी गंगा के किनारे को छोड़ कर २ कोस दूर जा बसते हैं। रेलवे का स्टेशन भी उतनीही दूर चला जाता है। ग्वालंडो में बहुतेरी नाव रहती हैं।

। लगभग २५ वर्ष पहले ग्वालंडो मछली मारने वालों का एक छोटा गांव था, जो अथ बहुत प्रसिद्ध हुआ है। सन् १८७० में कृष्टिया से ग्वालंडो तक रेलवे बढ़ाई गई। कसबे में प्रति दिन बाजार लगता है, एक कचहरी का मकान है और बहुतरे बंगाली और मुसलमान खास करके मारवाड़ी सौदागर रहते हैं। तम्बाकू, नमक, अनेक प्रकार के गल्ले और तेल के बीज की तिजारत होती है। वहां से बहुत मछलियां कलकत्ते भेजी जाती हैं।

ग्वालंडो से आगबोट प्रति दिन नारायणगंज को और तीन चार दिन पर आसाम के लिये धोवरी को जाते हैं।

फरीदपुर।

ग्वालंडो से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व छोटी पद्मा के दहिने अर्थात् दक्षिण (२३ अंश, ३६ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश ५३ कला, ११ विकला पूर्व देशांतर में) मूवे बंगाल के ढाका विभाग में जिले का सिविल स्टेशन फरीदपुर एक कसबा है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय फरीदपुर में १०७७४ मनुष्य थे; अर्थात् ५७११ हिन्दू, ५००८ मुसलमान, ५१ कृस्तान और ४ बौद्ध।

कसबे के दक्षिण दोल्समुद्र नामक मीठा पानी का झील और कमबे में एक गिरजा है। फरीदपुर में प्रति वर्ष के माघ में खेती की नुमाइश होती है और सन् १८८३ में ब्रह्मो समाज की एक सभा नियत हुई है।

फरीदपुर जिला—इसके उत्तर और पूर्व गंगा की प्रधान धारा पद्मा नदी; दक्षिण ननवा और भगनी नदी और दलदलों की लाइनें और पश्चिम कई छोटी नदियां हैं। जिले का क्षेत्रफल २२६७ वर्ग मील है। जिले की घास्तियां खास करके नदियों के किनारों पर मट्टी की झोंपड़ियों से बनी हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय फरीदपुर जिले में १६३१७३४

मनुष्य थे; अर्थात् २७४९८३ मुसलमान, ६६३९९२ हिन्दू, २७४१ कुँस्तान, १३ बौद्ध और ५ ब्रह्मो । जातियों के खाने में २४४९२३ चण्डाल, ८४१९३ कायस्थ, ४६९०५ ब्राह्मण, ३४४९१ सूनड़ी, २८६०७ जलिया, २४०१० कैबरत और शेष में दूसरी जातियां थीं । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय जिले के सकरे मदारीपुर में १३७७२, फरीदपुर में १०७७४ और ग्वालण्डो तथा कुतबपुर में दस हजार से कम मनुष्य थे ।

नोआखाली ।

ग्वालण्डो के रेलवे स्टेशन से ७९ मील दक्षिण-पूर्व ब्रह्मपुत्र नदी में आग बोट द्वारा चांदपुर जाना होता है । चांदपुर से आसाम बंगाल रेलवे गई है । चांदपुर से ३१ मील पूर्व लक्सम जंक्शन और लक्सम से २५ मील दक्षिण-पूर्व फेनी का रेलवे स्टेशन है । फेनी से लगभग २५ मील दूर (२२ अंश, ४८ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ८ कला, ४५ विकला पूर्व देशान्तर में) सूबे बंगाल के चटगांव विभाग में नोआखाली खाल के दहिने किनारे पर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा नोआखाली है, जिसको देशी लोग सुधाराम कहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय नोआखाली कसबे में ५१२४ मनुष्य थे; अर्थात् २५६० हिन्दू, २५२८ मुसलमान और ३६ दूसरे ।

कसबे में अनेक मसजिदें, सरकारी कचहरियां और तालाब बने हुए हैं । एक समय यह कसबा समुद्र के किनारे पर था, किन्तु अब समुद्र वहां से लगभग १० मील दूर है ।

वहां के जमीन्दार सुधाराम मजुमदार ने वहां एक बड़ा तालाब बनवाया, तब से नोआखाली को देशी लोग सुधाराम कहते हैं ।

नोआखाली जिला—इस जिले का क्षेत्रफल १६४१ वर्ग मील है । इसके उत्तर टिपरा का देशी राज्य और अङ्गरेजी जिला, पूर्व टिपरा का राज्य और चटगांव जिला; दक्षिण बंगाल की खाड़ी और पश्चिम मेर्गना है । इस जिले में ऊंची भूमि पर वस्तियां बनी हैं । वर्षा काल में वस्तियों के अति-

रिक्त देश में सदृज जल फैल जाता है । तालाबों के चारों ओर बांध बनाए गए हैं । जिले के पश्चिमोत्तर की सीमा के समीप समुद्र के जल से ६०० फीट ऊंची एक पहाड़ी का भाग है । समुद्र के किनारे पर नदियों से कई एक टापू बन गए हैं । इस जिले में बाघ, तेंदुए, सूअर, जंगली भैंसे इत्यादि घनैले जन्तु होते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय नोआखाली जिले में ८२०७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ६०८५९२ मुसलमान, २१४७६ हिन्दू, ५८८ कृस्तान, ११४ बौद्ध और २ दूसरे । जातियों के खाने में ३७८७९ जोगी, ३७५६५ कायस्थ, १८६४४ चंडाल, १६१५१ कैसरत, १५१५१ घोसी, १२६७१ नापित, १०९६३ ब्राह्मण, ८६०२ जालिया (अर्थात् मजदूर), ५९८२ सूण्डी थे, शेष में दूसरी जातियां थीं । जिले में कोई कसबा नहीं है । एक या दो बाजारों के अतिरिक्त इस जिले में सिलसिछे से बसी हुई बस्ती नहीं है । प्रत्येक झोपड़ी वृक्षों के बीच में अकेली खड़ी है । केवल नोआखाली जिसको सुधाराम कहते हैं, एक बड़ा गांव है ।

इतिहास—सन् १७५६ ई० में इण्डियन कंपनी ने नोआखाली और डिपरा में अपनी कोठियां नियत कीं, जिनमें से चंद की निशानियां अब तक विद्यमान हैं । समुद्र के दारू इस देश में बहुत दिनों से लूटपाट करते थे । पीछे उनको सजा देने के लिए एक ज्वॉइंट मजिस्ट्रेट कायम किया गया । इस नये प्रबन्ध के होने से इस जिले का नाम नोआखाली पड़ गया ।

सीताकुण्ड ।

फैनी के रेलवे स्टेशन से ३२ मील (लखसम जंक्शन से ५७ कोठ) दक्षिण पूर्व सीताकुण्ड का रेलवे स्टेशन है । बगाल के चटगांव जिले में (२२ अंश, ३७ कला, ४० विकला उत्तर अर्धार्ध और ९१ अंश, ४१ कला, ४० विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से ११५५ फीट ऊपर सीताकुण्ड नाम का पवित्र पहाड़ी का सिलसिछा है । उसकी सब से ऊंची चोटी पर पवित्र सीताकुण्ड है, जिस का जल सदा गर्म रहता है । उसके जल के निकट जलती

हुई नती लेजाने से उसकी बाफ बाह्य के समान भभक उठती है । हिन्दुस्तान के प्रति विभागों के बहुतेरे यात्री वहां जाते हैं । सीताकुण्ड से लगभग ३ मील उत्तर एक पवित्र क्षरणा है ।

बलवाकुण्ड ।

सीताकुण्ड के स्टेशन से ४ मील दक्षिण बलवाकुण्ड का रेलवे स्टेशन है । उसके निकट चटगांव जिले में बलवाकुण्ड एक प्रसिद्ध तीर्थ है । उस स्थान के कुण्ड में पानी के ऊपर ज्वालामुखी की भांति सदा आग धलती रहती है । सीताकुण्ड के समान वहां भी बहुत यात्री जाते हैं ।

चटगांव ।

सीताकुण्ड से २४ मील और लक्सम जंक्शन से ८१ मील दक्षिण-पूर्व (ग्वालंडो से १९१ मील) चटगांव का रेलवे स्टेशन है । सूबे बंगाल में स-पुद्र के किनारे से दस चौरह मील पूर्व (२२ अंश, २१ कला, ३ बिकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, ५२ कला, ४४ बिकला पूर्व देशान्तर में) कर्ण-फूली नदी के दहिने किनारे पर किस्मत और जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा और बंगाल में प्रसिद्ध बंदरगाह चटगांव है, जिसको चि-टागंग और इसलामाबाद भी कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय चटगांव म्युनिसिपैल्टी के भीतर २४०६९ मनुष्य थे, अर्थात् १४२५४ पुरुष और ९८१५ स्त्रियां । इनमें १६७५३ मुसलमान, ६२७५ हिन्दू, ७४२ कृस्तान और २९१ बौद्ध थे ।

पहाड़ियों पर यूरोपियन लोगों की बहुतेरी कोठियां बनी हुई हैं । प्रधान सबूँ, जो उत्तर से दक्षिण की गई हैं, दीवान बाजार और चन्दनपुरा बा-जार कहलाती हैं । यूरोपियन और देशी निवासियों के मकानों के अतिरिक्त अनेक सरकारी आफिस, गिरिजे, डाकबंगले और बड़ी बड़ी मसजिदें इंटे की बनी हुई हैं और कई एक अस्पताल और स्कूल हैं । बहुतेरे कुण्ड और तालाब होने से और दूसरे अनेक कारणों से चटगांव का जल बापु बहुत ही रोग वर्द्धक है ।

• चटगांव क्रम क्रम से बढ़कर अब बड़ा तिजारती स्थान हुआ है । बन्दरगाह में विदेश और हिन्दुस्तान के शहरों से बहुत जहाज आते हैं । बन्दरगाह की सौदागरी बढ़ रही है । सन् १८८१-८२ में चटगांव में लगभग ७७ जहाज आए और गवर्नमेंट को ६०८२० रुपया बन्दरगाह का महसूल मिला । वहां खास कर निमक बहुत आता है और वहां से घान चाय इत्यादि वस्तु दूसरे देशों में भेजी जाती हैं ।

• चटगांव जिला—जिले का क्षेत्रफल २५६७ वर्गमील है । इसके पश्चिमोत्तर और उत्तर फेनी नदी है, जो नोआखाळी और टिपरा के अंगरेजी जिले और टिपरा के राज्य से इस जिले को अलग करती है, पूर्व चटगांव का पहाड़ी देश और ब्रह्मा का आराकान देश, दक्षिण ब्रह्मा और पश्चिम बंगाले की खाड़ी है ।

• बंगाले की खाड़ी और चटगांव और आराकान के बीच में नीची पहाड़ियों के सिलसिले हैं । कर्णफूली और मगू उस जिले की प्रधान नदियां हैं । जिले में सीतारुंड, सातबनिआ इत्यादि पांच प्रधान पहाड़ी सिलसिले हैं, जिन में से सीतारुंड के सिलसिले पर सीतारुंड और चद्रनाथ नामक पवित्र चोटी (जिले में सबसे अधिक) ११५५ फीट ऊंची है । गल्ला, मट्टी का बर्तन, जलबन की लकड़ी, सूखी मडली और घास की तिजारत नावों द्वारा होती है । समुद्र और नदियों की मडलियों से आबूदी के एक बड़े हिस्से का निर्याद होता है । सूखी मडलियां खास कर के चटगांव को भेजी जाती हैं । जंगलों में नरकट, बेंत और घास बहुत उत्पन्न होते हैं और दाही, बाघ, गेंदें, मूसर और तेंदुए बहुत रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय चटगांव जिले में ११३२३४१ मनुष्य थे, अर्थात् ८०१९८६ मुसलमान, २७५१७७ हिन्दू, ५४११० बौद्ध, १०५५ कृस्तान, ८ ब्राह्म और ५ सिख । जातियों के खाने में ७२३७० कायस्थ, २९३३४ शूद्र, २७३५१ योगी, (पट्टेरा), २१३५५ ब्राह्मण, १५३८२ नारै, १८३१२ जालिया, ११४४६ घोरी, ८०३० घनियां और शेष में दूसरी जातियां थीं, इनमें केवल १०४० राजपूत थे । जिले के वास्स बाजार नामक छोटे कस्बे में चाय की खेती होती है ।

इतिहास—पूर्व काल में चटगांव जिला टिपरा के हिन्दु राजाओं के राज्य का एक हिस्सा था । १३ वीं या १४ वीं शदी में अफगान मुसलमानों ने इस जिले को जीता । १६ वीं शदी में जब बंगाल के राज्य के लिये मोगल और अफगानों में विवाद था, तब आराकान के राजा ने चटगांव को जीतकर अपने राज्य में मिला लिया । सन् १५८२ में अकबर के मंत्री टोंडर मल ने इस के लगान का प्रबंध किया । उस समय चटगांव आराकान का एक देश था, जो सन् १६६६ तक वैसे ही रहा । सन् १६६४-६५ में बंगाल के गवर्नर शाइस्ता खां ने अपनी बड़ी फौज भेज कर आराकानियों को परास्त करके चटगांव को बंगाल में मिला लिया और चटगांव का नाम बदल कर इसलामाबाद नाम रखवा । सन् १७६० में वर्दवान और मिदनीपुर जिले के साथ चटगांव जिला अंगरेजी अधिकार में आया ।

सन् १८५७ के १८ वीं नवम्बर की रात में ३४ वीं देशी पैदल की दूसरी, तीसरी और चौथी कंपनियां अचानक बागी हो गईं । उन्हो ने खजाना लूट लिया, जेलखाने से कैदियों को छोड़ दिया और एक सिपाही को मार डाला । जब उन्होंने पहाड़ी टिपरा की राहली तब अंगरेजों ने पीछा करके उनको छितर बितर कर दिया । पहाड़ी टिपरा के राजा और पहाड़ी लोगों ने इधर उधर फिरने वाले बागी सिपाहियों को पकड़ कर अंगरेजी अफसरों के पास भेज दिया ।

कोमिला ।

लक्सम जंक्शन से १५ मील उत्तर (ग्वालंडो से १३५ मील) कोमिला का रेलवे स्टेशन है । सूबे बंगाल के चटगांव विभाग में गोमती नामक नदी के किनारे पर (२३ अंश, २७ कला, ५५ विकला उत्तर अक्षांश और ९१ अंश, १३ कला, १८ विकला पूर्व देशान्तर में) टिपरा जिले का सदर स्थान कोमिला एक कसबा है । एक सड़क चटगांव से कोमिला होकर ढाका गई है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कोमिला में १४६८० मनुष्य थे; अर्थात् ८५२० मुसलमान, ६०२३ हिन्दू, ८१ कृस्तान, और ५६ बौद्ध ।

कसबे को बरसात के पानी से बचाने के लिये एक बांध बांधा गया है । प्रधान सड़क के बगलों में सुन्दर वृक्ष लगे हुए हैं । एक मील घरे का धर्मसागर नामक साक्षात् है, जिस को १५ वीं शदी में टिपरा के राजा ने बनवाया था । इसके किनारों पर यूरोपियन अप्सरों सी कोठियां और जिला स्कूल बना है । कोमिला में मामूली सरकारी कवहरियां और इमारतें; यूरोपियन लोगों के मकान, एक गिरजा और पोस्ट आफिस इन्टे के बने हुए हैं । इनके सिवा इन्टे के मकान बहुत कम हैं, बयो कि टिपरा का राजा, जिसकी वह जमीन्दारी है, बहुत भारी भेंट लेकर इन्टे का मकान बनाने देता है । कोमिला से दाउदकंडी चटगांव, कम्पनीगंज, हाजीगांव, लक्सम, बीवी बाजार और लालमाई को गाड़ी की सड़कें गई हैं । सड़कों के नीचे स्थान स्थान पर पुल बनाए गए हैं ।

टिपरा जिला—इस का क्षेत्रफल २४९१ वर्गमील है । इस के उत्तर मैमनसिंह और सिलहट जिला, पूर्व पहाड़ी टिपरा, दक्षिण नोआखाली जिला और पश्चिम मेगना नदी बाद मैमनसिंह, ढाका और वाकरगंज जिले हैं । जिले का सदर स्थान कोमिला है, किंतु ब्राह्मणवेरिया सबसे बड़ा कसबा है । जिले में केवल लालमाई सिलसिला पहाड़ी देश है । मैदान में अच्छी तरह से खेती होती है । खाल और नदियां सर्वत्र हैं । प्रायः सम्पूर्ण गांव ताड़, बांस और केला के बागों में बसे हैं । इस जिले में सीतलपाटी का खर्ब बहुत उपजता है । जंगलों में बाघ और तेंदुए होते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले में १५,१९,३३८ मनुष्य थे; अर्थात् १००७७४० मुसलमान, ५,११,०२५ हिन्दू, ३७४ बौद्ध और १९९ कृस्तान । जातियों के खाने में ८३०२३ चंडाल, ७,३७३ कायस्थ, ५,५८४८ योगीजात, ५०,२९० फैयरत, ३,२९,९० मूँदी, ३,१५,०२ ब्राह्मण, २,२२,५५ नाई और छेप में दूसरी जातियां थी । राजपूत केवल ११६२ थे । सन् १८९१ में इस जिले के कसबे ब्राह्मणवेरिया में १८००६ और कोमिला में १४६८० मनुष्य थे ।

इतिहास—सन् १७६५ में टिपरा जिंदा इस्टइंडियन कम्पनी के अधिकार में हुआ । सन् १७७२ में नोआखाली और टिपरा के लिये एक कलक्टर नियत हुआ । सन् १८२२ में टिपरा एक अलग जिला बनाया गया ।

टिपरा राज्य ।

टिपरा के अंगरेजी जिले से मिला हुआ पहाड़ी टिपरा एक देशी राज्य है । जिसको तिपरा भी कहते हैं । इसके उत्तर सिलहट जिला, पूर्व लुशाई देश और चटगांव का पहाड़ी देश; दक्षिण नोआखाली और चटगांव जिला और पश्चिम अंगरेजी टिपरा जिला और नोआखाली जिला है । राज्य का क्षेत्रफल ४०८६ वर्ग मील है । अगरताला में, जो एक गांव है, टिपरा के राजा और अंगरेजी पोलिटिकल रहते हैं । पहाड़ियों के ५ अथवा ६ सिलसिले उत्तर से दक्षिण को समानांतर रेखा में गए हैं । ओसत फासिले एक दूसरे से लगभग १२ मील हैं । पहाड़ियों का बड़ा भाग बांस के जंगल से छिपा है । नीची भूमि पर अनेक भांति के वृक्ष और दलदल हैं । जंगलों में हाथी बहुत मिलते हैं और गेंडे, घाघ, भालू, तेंदुए और अनेक भांति के बहुत सांप रहते हैं । राज्य का प्रधान फसिल धान है । राजा को राज्य से २५०००० रुपया मालगुजारी आती है; किंतु अपने राज्य और अंगरेजी राज्य की जमींदारी दोनों मिलकर लगभग ५००००० रुपया मालगुजारी होजाती है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय टिपरा—राज्य में ९५६३७ मनुष्य थे, अर्थात् ४१९१५ पहाड़ियों पर और ४५७२२ मैदानों में । इनमें से पहाड़ियों पर, ३५२५७ टिपरा लोग, जो तीन प्रकार के होते हैं, ११६८८ रिआंग और हलाम, २७३३ कूकी, २११ चकमा, और २६ खासी और मैदानों में,— २६९९१ बंगाली मुसलमान, ९७३९ बंगाली हिंदू, ८८१३ मनीपुरी, ११३ बंगाली क्रिस्तान और ६६ आसामी थे । इस राज्य में कोई कसबा नहीं है । राजधानी अगरताला मामूली गांव है ।

अगरताला—कोमिला से ३८ मील उत्तर अगरताला तक सड़क घनी है । टिपरा राज्य में एक नदी के उत्तर किनारे पर टिपरा राज्य की राजधानी अगरताला एक गांव है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय २१४४ मनुष्य थे । उसमें टिपरा के महाराज का एक महल, स्कूल, अस्पताल, जेलखाना और पुलिसस्टेशन बने हैं, कभी कभी राजा उस महल में रहते हैं ।

पुराना अगरताला—वर्तमान राजधानी अगरताला से ४ मील पूर्व पुराना अगरताला है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय ११८६ मनुष्य थे ।

प्रथम टिपरा के राजा उस गांव में रहते थे, किंतु सन् १८४४ में नये अगरताला में चले गए । वहां टिपरा के राजा और रानी के कई एक स्मारक चिह्न बने हुए हैं । पुराने महल के स्थान पर नई इमारतें बनी हैं । टिपरा के राजा सन् १८७५ ई० से साधारण प्रकार से वहां रहते हैं । महल के निकट एक छोटे पवित्र मन्दिर में सोने, चांदी और दूसरी धातुओं में बने हुए १४ सिर हैं । पहाड़ी लोग टिपरा के देवता समझ कर उस मन्दिर का बड़ा मान्य करते हैं ।

उदयपुर—पुराने उदयपुर से कई एक मील दूर गोमती नामक नदी के दक्षिण अर्थात् बाएँ किनारे पर टिपरा के राजा उदयमानिक्य की पुरानी राजधानी पुराना उदयपुर है । उदयमानिक्य ने सोलहवीं शदी में राज्य किया था । टिपरा के राजा प्रथम उदयपुर में रहते थे । अब वह छोटी सी बस्ती है । वहां जंगल लग गया है । रुई, लकड़ी और बांस का बाजार लगता है । उदयपुर में त्रिपुरेश्वर का पुराना मन्दिर है । वह तीर्थ स्थान समझा जाता है । सालाना हजारों यात्री वहां जाते हैं । उसी मन्दिर के नाम से उस देश का नाम त्रिपुरा पड़ा, जिसका अपभ्रंश टिपरा है ।

इतिहास—इस राज्य में उदयपुर एक पुरानी पवित्र बस्ती है । उसके त्रिपुरेश्वर के मन्दिर के नाम से देश का नाम त्रिपुरा पड़ा, जिसका अपभ्रंश टिपरा है । टिपरा का राजवंश बहुत पुराना है । इसका इतिहास राजमाला नामक बंगला पुस्तक में और इतिहास लिखने वाले मुसलमानों की किताब में लिखा हुआ है । टिपरा के राजा अपने को चंद्रवंशी राजा ययाति के पुत्र द्रह्म का वंशधर कहते हैं ।

लोग कहते हैं कि धर्ममानिक्य के राज्य (सन् १४०७—१४३९ ई०) तक सामान्य लगभग १००० मनुष्य बलिदान दिए जाते थे, किंतु धर्ममानिक्य ने आज्ञा दी कि तीन वर्ष पर नर बलिदान दिया जाय । इन्हीं की इच्छा से

राजमाला पुस्तक का पहला भाग बना था । टिपरा का राज्य अनेक बार पश्चिम में सुन्दर बन से पूर्व में ब्रह्मा तक और उत्तर में कामरूप पर्यन्त फैला था । सोलहवीं शदी में राजा शिधन्व ने अपने राज्य के चारों ओर के देशों पर आक्रमण किया । सन् १५१२ में टिपरा के जनरल ने चटगांव को जीता था और उसको बचाने वाली गौड़ की फौज को परास्त किया था । उसी राजा के राज्य में मुगलों की भारी सेना बंगाल से आक्रमण करके ना काम-आव लौट गई; किंतु बादशाह जहांगीर के राज्य के समय सन् १६२० में मुगलों ने टिपरा पर आक्रमण करके उदयपुर राजधानी को ले लिया और राजा को कैद कर दिल्ली में भेज दिया । बादशाह ने खिराज लेने की शर्त पर राजा को छोड़ दिया; किंतु राजा ने खिराज देना अस्वीकार किया । सन् १६२५ में जब राजा कल्याणमानिख्य राजसिंहासन पर बैठा तब बादशाह ने फिर राजा से खिराज लेने के लिये टिपरा पर आक्रमण किया; किंतु मुसलमानी सेना परास्त होकर लौट गई । पीछे मुसलमानों ने बार बार आक्रमण करके नीचे की जमीनों को अपने अधिकार में किया । सन् १७६५ में वह भूमि, जो टिपरा का अंगरेजी राज्य है, अङ्गरेजों के अधिकार में आई ।

सन् १८०८ से अङ्गरेजी सरकार टिपरा के सब राजाओं को राजसिंहासन पर बैठाती है और उनसे नजर लेती है । हिंदुस्तान के देशी राजाओं से टिपरा अधिक स्वाधीन है । लोग कहते हैं कि वर्तमान टिपरानरेश महाराज वीरचंद्रमानिख्यदेव वर्मन ९२ वां राजा है । इनकी अवस्था इस समय लगभग ५० वर्ष की है ।

नारायणगंज ।

नदी के मार्ग से ग्वालंडो से ७९ मील पूर्व-दक्षिण पूर्व कथित चांदपुर और चांदपुर से २५ मील उत्तर (२३ अंश, ३७ कला, १५ विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, ३२ कला, ५ विकला पूर्व देशांतर में) लखमिया और धवलेश्वरी नदी के संगम के निकट लखमिया के पश्चिम किनारे पर ढाका जिले में नारायणगंज एक तिजारती कसबा है । प्रति दिन आगजोट ग्वालंडो से नारायणगंज जाता है । नारायणगंज से उत्तर मैमनसिंह तक रेल बनी है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नारायणगंज में १७७१५ मनुष्य थे, अर्थात् ९७१७ हिंदू, ७९०८ मुसलमान, ८९ कृस्तान और १ दूसरे।

कसबा नदी के किनारे ३ मील की लंबाई में फैला है। म्युनिसिपलिटी के भीतर मदनगंज है। नारायणगंज के आसपास सत्रहवीं शदी के मीर जुल्मा के बरबाए हुए कई एक किले और प्रायः सामने कदमरसूल नामक एक मसजिद है। कसबे में नमक, तंबाकू, जूट, कपास इत्यादि दूसरे शहरों में भेजे जाते हैं और जूट, नमक, चावल, चीनी, तंबाकू, अनेक भाँति के तेल के बीज इत्यादि सामग्री अन्य स्थानों से वहाँ आती हैं। वहाँ जूट दवाने की कई एक कलें हैं।

ढाका।

नारायणगंज से १० मील पश्चिमोत्तर (ग्वालहों से ११४ मील) ढाका का रेलवे स्टेशन है। सूत्रे बंगाल में घुड़ीगंगा के बाएँ किनारे पर (२३ अंश, ४३ कला, उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २६ कला, २५ विकला पूर्व देशांतर में) किस्मत और जिले का सदर स्थान ढाका एक शहर है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय ढाके में ८२३२१ मनुष्य थे, अर्थात् ४५१९९ पुरुष और ३७१२२ स्त्रियाँ। इनमें ४१५६६ हिंदू, ४०१८३ मुसलमान, ४६७ कृस्तान, ७६ बौद्ध, १३ जैन, ९ एनिमिष्टिक, और ७ दूसरे थे। मनुष्य-संख्या के अनुसार यह भारतवर्ष में ३५ वाँ और सूत्रे बंगाल में तीसरा शहर है।

शहर नदी के साथ साथ लगभग ४ मील की लंबाई में बसा है। नदी की ओर उत्तम मकान बने हुए हैं। शहर की २ प्रधान सड़कें एक दूसरी को समान कोन में काटती हैं, जिनमें से एक लालबाग महल्ले से दोलाईकोल तक नदी के समानांतर रेखा में २ मील से अधिक लंबी और दूसरी चौड़ी सड़क, जिसके पगलों में सुन्दर मकान बने हैं, शहर के उत्तर ओर पुरानी छावनी तक ११ मील लंबी है। पश्चिम ओर सड़कों के मेल के पास, जहाँ एक बाग है, चौक बना है। शहर के मकान चौपजिछे तक हैं। शहर के बीच में नदी के निम्न यूरोपियन लोगों का महल्ला देखने में आता है। शहर में ढाका

के नवाब सरख्वाजा अबदुलगनी के। सी. एस. आई. का सुन्दर मकान बना हुआ है, जिनके बाप ने एक खैराती मकान बनवाया, एक स्कूल नियत किया, शहर की सफाई के लिये म्युनिसिपलिटी को ५० हजार रुपया दिया और जलकल अपने खर्च से बनवाया। नवाब के महल से आगे जाने पर, अस्पताल की उत्तम इमारत मिलती है। कमिश्नर की कोठी से १०० गज दक्षिण एक गिरिजा और गिरिजा से १ मील दूर कयरगाह है। इनके अतिरिक्त 'ढाका कालिज' की उत्तम इमारत और कई एक स्कूल हैं।

सत्रहवीं शदी का बना हुआ पुराना किला अब नहीं है। कटरा और लालबाग का महल, जो तैयार नहीं हुए थे, उजाड़ पड़े हैं। कसबे से ८ मील दूर धवलेश्वरी नदी और बूढ़ीगंगा का संगम है।

ढाके का मलमल प्रसिद्ध है। सोने और चांदी की उत्तम प्रकार की वस्तु वहां बनती हैं और खास करके कलकत्ते में भेजी जाती हैं। कसीदे का काम, डोरिया, जामदानी, चारखाना इत्यादि सामान अब तक वहां बहुत तैयार किए जाते हैं। ढाके में मुहर्रम का तेहवार बड़ी धूमधाम से होता है। यूरोपियन और मारवाड़ी वहां अधिक तिजारत करते हैं।

ढाका जिला — इस के उत्तर मैमनसिंह जिला; पूर्व टिपरा; दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम बाकरगंज और फरीदपुर जिला और पश्चिम थोड़ी दूर के लिये पटना जिला है। अनेक नदियां इसकी स्वभाविक सीमा बनती हैं, पूर्व मेघना, दक्षिण और दक्षिण पश्चिम पद्मा और पश्चिम यमुना नदी। जिले का क्षेत्रफल २७९७ वर्गमील है। धवलेश्वरी नदी जिले के मध्य में पूर्व से पश्चिम को बहती है। इसके अतिरिक्त अनेक छोटी नदियां जिले में हैं। मधुपुर जंगल को छोड़ कर दूसरा कोई बड़ा जंगल नहीं है। बहुतेरे लोग बरसात में अपने मवेशियों को चरने के लिये मधुपुर के जंगल में भेजते हैं। जिले के की नदियों की मछलियों से प्रतिवर्ष लगभग १ लाख रुपये की आमदनी होती है। वहां भूकंप बहुधा हुआ करता है।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ढाका जिले में २११६३५० मनुष्य थे, अर्थात् १२५०६८७ मुसलमान, ८५६६८० हिन्दू, ८७९९ कृस्तान, ४९

बौद्ध, ४३ ब्राह्म, और ९२ दूसरे । जातियों के खाने में २०२५१० चंडाल, ९२९०९ शायस्थ, ६०५४७ ब्राह्मण, ५७९१७ सून्डी, ४९२७४ जलिया, ४०४२२ वैवरत, २५३२७ त्वाला और शेष में दूसरी जातियां थीं । सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय जिले के कसबे ढाके में ८२३२१ और नारायणगंज में १७७१५ मनुष्य थे । मानिकगंज, इत्यादि कई दूसरे छोटे कसबे हैं । जिले का प्रधान बाजार नारायणगंज है, मुन्सीगंज में प्रतिवर्ष एक बड़ा तिजारती मेला होता है और ३ सप्ताह तक रहता है । सन् १८८१ में इसजिले में ७९ डच वर्षा हुई थी ।

इतिहास—ढाके वृक्ष के नामसे या ढाकेश्वरी देवी के नाम से ढाका नाम की उत्पत्ति है । अति पूर्व काल में बलवान हिन्दू राजाओं से ढाका शासित होता था । जान पड़ता है कि मुसलमानों के आक्रमण के पहले ढाका जिले का केवल एक भाग, जिस की सीमा पर घवलेश्वरी नदी थी, बंगाल के हिन्दू राज्य के आधीन था । नदी के दक्षिण विक्रमादित्य नामक एक राजा राज्य करता था, जिससे नाम से विक्रमपुर परगना है और उत्तर पाल खांदान के भुडआ राजाओं का राज्य था, इनकी राजधानी और महल का खंडहर बंगाल के पूर्वी भाग के ब्रह्मपुत्र घाटी में अनेक जगह विद्यमान हैं । घवलेश्वरी नदी के उत्तर ढाका जिले के मधुवनपुर, सामर और दुरदुरिया में उनके समय का बहुरेरे मट्टी का काम और इटे के टीले देखने में आते हैं ।

लगभग सन् १३०५ में महम्मद तोगलक ने वर्तमान ढाका जिले को गौड़ के राज्य में मिला लिया । सन् १५७५ में मुनहर गांव प्रधान तिजारती शहर था । सत्रहवीं शदी के आरंभ में बादशाह जहांगीर के समय उस के सूबेदार इसलामगंवा ने राजमहल को छोड़ कर ढाके शहर को बंगाल का सदर स्थान बनाया । उस समय ढाका शहर का नाम जहांगीरनगर रखा गया और शहर उन्नत पर हुआ । पीछे अंगरेज, फगसीमी और डचवालों ने वहां अपनी अपनी कोठियां बांधी की । ढाके का मलमल घूरप में प्रसिद्ध हुआ । सन् १६४५ में बादशाह शाहजहा के पुत्र मुगलान गुजा ने नदी के दक्षिण किनारे पर बड़ा । सन् १६७७ में औरंगजेब के पुत्र महम्मद आज़िज़ ने शहर

वै लालबाग के महल का काम आरंभ किया; किंतु उस का काम पूरा हुआ । सन् १६८३ में साइस्ताखां ने छोटे कटरे को बनवाया । सन् १६९० ग्राहम खां ने किला बनवाया । अठारहवीं शदी के आरंभ में ढाका शहर घटती हुई, क्यों कि सन् १७०४ में बंगाल के सूबेदार मुर्शिदाकुली खां ने को छोड़ कर मुर्शिदाबाद को बंगाल की राजधानी बनाया । लोग यह हैं कि उस समय ढाका शहर की शहर तलियां उत्तर ओर १५ मील फैली हुई थीं । अब तक बहुतेरी मसजिदें और ईंटे के मकान जंगल में बूढ़े हुए मिलते हैं । सन् १७५७ में ढाके पर अङ्गरेजी अधिकार हुआ ।

सन् १८५७ के बल्ले के समय ढाके के किले में सिपाहियों की २ कंपनी । मेरठ के बल्ले के पीछे एक जंगी जहाज ढाके को बचाने के लिये कत्ते से भेजा गया । किले के सिपाही बागी हो गए । अंत में ४१ बागी गड़ में मारे गए, बहुतेरे भागते समय नदी में डूब गए अथवा गोली से मर गए और चंद भूटान के जंगल में चले गए ।

मैमनसिंह ।

ढाके से ७५ मील (नारायणगंज से ८५ मील) उत्तर मैमनसिंह का रेलवे स्टेशन है । सूबे बंगाल के ढाका विभाग में ब्रह्मपुत्र नदी की धारा के बीच किनारे पर (२४ अंश, ४५ कला, ५० विकला उत्तर अक्षांश और ० अंश, २६ कला, ५४ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान मैमनसिंह एक कसबा है, जिसको नमीराबाद भी लोग कहते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मैमनसिंह कसबे में ११५५५ मनुष्य थे; अर्थात् ६५०८ हिन्दू, ४९२९ मुसलमान, ८८ कृस्तान, २७ जैन और १ एनिमिष्टिक । कसबा तिनारत के लिये प्रसिद्ध नहीं है, उसमें २ पुराने मन्दिर, १ खैराती अस्पताल और छोटे बड़े कई स्कूल हैं । कसबे में सूर्यकांत आचार्य बहादुर एक जमीन्दार राजा है, जिन्होंने ३० हजार रुपये के खर्च से उनहाल बनवाया और अपनी रानी के स्मरण चिन्ह के अर्थ मैमनसिंह के मालक के लिये १ लाख १३ हजार रुपया चंदा दिया ।

मैमनसिंह जिला—जिले का क्षेत्रफल ६२८७ वर्ग मील है । इसके उत्तर गारो पहाड़ी जिला, पूर्व आसाम का सिलहट जिला; दक्षिण-पूर्व डिबा जिला; दक्षिण ढाका जिला और पश्चिम यमुना नामक नदी, बाढ़ पटना, धुगड़ा और रंगपुर जिले हैं । जिले का बड़ा भाग समतल और मैदान है । मधुपुर जंगल के अतिरिक्त सर्वत्र खेती होती है । मधुपुर जंगल ढाका जिले के उत्तरी भाग से मैमनसिंह जिले के भीतर प्रायः ब्रह्मपुत्र नदी तक फैला हुआ है । इसकी औसत ऊंचाई मैदान से ६० फीट और सबसे अधिक ऊंचाई १०० फीट; लंबाई लग भग ४५ मील और चौड़ाई ६ मील से १६ मील तक; और क्षेत्रफल ४२० वर्ग मील है । यमुना नामक नदी जिले के पश्चिम सीमा पर ९४ मील बहती है । इस के अलावे ब्रह्मपुत्र, मेगना और अनेक छोटी नदियां जिले में हैं । जिले में बाघ अब कम हैं । मधुपुर के जंगल में भालू मिलते हैं । गारो और सुमंग पहाड़ियों में प्रतिवर्ष बहुत से हाथी पकड़े जाते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय उस जिले में ३०५१९६६ मनुष्य थे; अर्थात् २०३८५०५ हिन्दू, ९८७३५५ मुसलमान, २५९५५ आदि निवासी और १५१ कृस्तान । जातियों के खाने में १४८३८० चंडाल, ९४२१७ कैबरत, ५०६१५ नाई, ५०१५२ ब्राह्मण, ४४३०८ मूंडी, ४३३९३ योगी, ३२०११ जलिया, ३११७१ कोच, २८७२४ बड़ई और शेष में दूसरी जातियां थी । राजपूत केवल २१६७ थे । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे टंगइल में १७१७३, जमालपुर में १५३८८, किशोरगंज में १३१८८, मैमनसिंह में ११५५५ और शेरपुर में १०७४४ मनुष्य थे । जमालपुर एक समय फौजी स्टेशन था । प्रतिवर्ष सावन मास में किशोरगंज में मेला होता है ।



वारहवां अध्याय ।

(सूवे बंगाल में) कृष्णनगर, नदिया,
संतीपुर, जंशर, खुलना, बैरीसाल,
नइहाटी, वारकपुर, दमदम और
वारासत ।

कृष्णनगर ।

पोडादह जंक्शन से ४५ मील (पार्वतीपुर जंक्शन से १८६ मील) दक्षिण और कलकत्ता के स्प्यालदह से ५८ मील उत्तर घगुला का रेलवे स्टेशन है । घगुला से १२ मील पश्चिम कृष्णनगर तक षकी सड़क पर घोडा गाडी चलती है । मार्ग में हांसनगर का घाट उतरना होता है । सूवे बंगाल के नदिया विभाग में जन्धी नदी के बाएँ किनारे पर (२३ अंश, २३ कला, ३१ बिकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, ३२ कला, ३१ बिकला पूर्व देशांतर में) नदिया जिले का सदर स्थान कृष्णनगर एक कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कृष्णनगर में २५५०० मनुष्य थे, अर्थात् १२४४४ पुरुष और १३०५६ स्त्रियाँ । इनमें १७१०६ हिन्दू, ७७५७ मुसलमान, और ६३७ कृस्तान थे ।

कृष्णनगर तिजारती कसबा है । वहाँ मदी की रंगदार र्त्तियाँ बहुत सुन्दर बनती है और एक कालिज है । ग्वाडी महल्ले में मामूली सरकारी कचहरियाँ और आफिस बने हुए हैं । कृष्णनगर में नदिया के राजा का महल है ।

नदिया ।

कृष्णनगर की कचहरी से ६ मील (घगुला के रेलवे स्टेशन से १८ मील) पश्चिम सूवे बंगाल के प्रेसिडेन्सी विभाग के नदिया जिले में (२३ अंश, २४ कला, ५५ बिकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २५ कला, ३ बिकला पूर्व

नेशान्तर में) भागीरथी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर नदिया एक कसबा है, जिसको नवद्वीप भी कहते हैं। पहले यह भागीरथी के पूर्व किनारे पर था। अब तक कसबे के पश्चिम भागीरथी का खाल देख पड़ता है। कसबे के निकट खड्डुआ नदी भागीरथी में मिली है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नदिया में १३३३४ मनुष्य थे; अर्थात् १९८५६ हिन्दू, और ४७८ मुसलमान।

पूर्व काल में नदिया संस्कृत पाठशालाओं के कारण प्रसिद्ध थी, वहां के पण्डित न्याय शास्त्र में बड़े प्रवीण होते थे। अब भी नदिया में संस्कृत के अनेक पाठशाला हैं, जिनमें दूर दूर से विद्यार्थी आकर विद्या पढ़ते हैं।

नदिया कसबे से लगभग २ मील दूर विद्यानगर, जो एक समय बड़ा गांव था, एक छोटी बस्ती है। उसी जगह चैतन्य महामु ने विद्या पढ़ी थी। वहां एक मन्दिर में उनकी मूर्ति है।

चैतन्य महाप्रभु—नदिया कसबा चैतन्य महामु की, जिनको कृष्ण-चैतन्य और गौरांग प्रभु भी कहते हैं जन्म भूमि है। नदिया के एक मन्दिर में गौरांग प्रभु की मूर्ति प्रतिष्ठित है। यात्रीगण प्रथम पुढामात्र और बूढाशिव के दर्शन करके तब गौरांग प्रभु के दर्शन करते हैं। प्रति वर्ष माघ में वहां एक मेला होता है। मेले में पांच सात हजार बैष्णव एकत्रित होते हैं।

चैतन्य महामु ने सन् १४८५ ईस्वी में नदिया के जगन्नाथ मिश्र ब्राह्मण की स्त्री के गर्भ से जन्म लिया। वह संपूर्ण बगाल और उड़ीसे में विष्णु की भक्ति का उपदेश करते रहे। उन्होंने एक सत्त की पुत्री से अपना विवाह किया था; किन्तु २४ वर्ष की अवस्था में वह गृह को छोड़ कर उड़ीसे में चले गए। उसके पश्चात् वह १८ वर्ष तक विष्णु के उपासना का प्रचार करने सन् १५२७ ईस्वी में परमप्राय को चले गए।

चैतन्य महामु का ऐसा मत था कि सब जाति के मनुष्य विष्णु की पूजा का समान अधिकारी हैं। सचाई और सदा का भजन उनके उपदेश का सारांश था। उनके उपदेश के अनुसार केवल भक्तिही से नहीं किन्तु उसके

साथ ज्ञान होने से मोक्ष मिलती है और मोक्ष का माने केवल सत्ता का नष्ट होना ही नहीं है, किन्तु उसमें शरीर के दुर्गुण और विकार का दूर हो जाना खास कर सामिल है ।

चैतन्य के मत के संत लोगों में से अधिक लोग अपना ब्याह करते हैं और अपनी स्त्री पुत्रों के साथ कृष्ण के मन्दिर के निकट के गृह में निवास करते हैं । चैतन्य महाप्रभु को लोग कृष्ण भगवान् का अवतार समझते हैं । उनकी पूजा बंगाले, खास कर उड़ीसे में घर घर होती है । बहुतेरे लोग अपने अपने घर के छोटे मन्दिरों में नित्य उनकी पूजा करते हैं ।

लगभग ३०० वर्ष हुए कि नाभाजी ने भक्तमाल ग्रन्थ पद्य भाषा में बनाया । उस में भक्त और संतों का यश वर्णन किया गया है । भक्तमाल में लिखा है कि श्रीनित्यानन्द कृष्णचैतन्य की भक्ति दशों दिशाओं में फैल गई । उन्होंने गोड़ देश (बंगाल) के पाखण्ड को दूर करके वहाँ के मनुष्यों को भजन में निरत किया और कृपा दृष्टि से अमंख्य मनुष्यों को सुगति दी ।

नदिया जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३४०४ वर्गमील है । इसके उत्तर राजशाही जिला; पूर्व पटना और जशर जिला; दक्षिण चौबीसपरगना जिला; पश्चिम वीरभूम, बर्दवान, और हुगली जिला और पश्चिमोत्तर मुर्शिदाबाद जिला है । नदिया जिले को गंगा की प्रधान धारा पद्मा नदी पटना और राजशाही जिले से, जलंधी नदी मुर्शिदाबाद जिले से, एक छोटी नदी दक्षिण-पूर्व की सीमा पर जशर जिले से अलग करती है और नदिया की पश्चिमी सीमा के पास भागीरथी बहती है । भागीरथी से जगह बदल कर जिले का एक पतला भाग, जिसमें नदिया कसबा है, भागीरथी के पश्चिम हो गया है । जिले का सदर स्थान कृष्णनगर है । सीमा की नदियों के अतिरिक्त पद्मा की बहुतेरी शाखा और जलंधी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियां जिले में बहती हैं ! उस जिले में नदियों के किनारे पर कालीगंज, संतीपुर, करीमपुर, कृष्णनगर, स्वरूपगंज, मुन्शीगंज, गोपालनगर, आलमडंगा, कुष्टिया इत्यादि तिजारती जगह हैं । नदिया जिले में जंगली सूअर, तेंदूआ और सांप बहुत हैं, प्रति वर्ष लगभग ५०० मनुष्य सांप के काँटने से और ५० जंगली जनवरों के मारने से मर जाते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय नदिया जिले में २०१७८४७ मनुष्य थे; अर्थात् ११४६६०३ मुसलमान, ८६४७७३ हिन्दू, ६४४० कृष्णान, २८ ब्राह्म और ३ दूसरे । जातियों के खाने में १२६०६३ केवरात, ९३३८२ ग्वाला, ५९८९४ ब्राह्मण, ४०७८० कायस्थ, २३२३४ नाई और शेष में दूसरी जातियाँ थीं । केवल ६०४७ राजपूत थे । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय उस जिले के कसबे संतीपुर में ३०४३७, कृष्णनगर में २५५००, नवद्वीप अर्थात् नदिया में १३३३४, कृष्टिया में ११२९९ और चगड़ा, रानाघाट, कुमारखाली, मिहरपुर, वीरनगर में दस हजार से कम मनुष्य थे ।

इतिहास—नदिया कसबे में राजा वल्लालसेन के पुत्र बंगाल के अंतिम स्वाधीन राजा लक्ष्मणसेन रहते थे । लोग कहते हैं कि उन्ही ने सन् १०६३ ईस्वी में नदिया को बसाया और गोड़ को छोड़ कर इसको अपनी राजधानी बनाई । सन् १२०३ ई० में खलिफार खिलजी के आधीन मुसलमानों ने नदिया को ले लिया और हिन्दू राजा के वंश का विनाश कर दिया ।

नदिया के वर्तमान राजा, भट्टनारायण के वंशधर हैं । बंगाल के राजा आदिलशूर ने, जिनकी राजधानी गोड़ थी, कन्नोज से ५ ब्राह्मणों को बुलाया, जिनमें सारस्वत, कानमुञ्ज, गोड़, मैथिल और उत्कल थे ५ प्रकार के ब्राह्मण हुए, जो पंचगोड़ करके प्रसिद्ध हैं; उन्ही पाँचों में से एक भट्टनारायण थे । उनके वंश में सब से अधिक प्रसिद्ध महाराज कृष्णचंद्र हुए, जो सन् १७२८ ईस्वी में राजसिंहासन पर बैठे । वह बड़े विद्वान और दानी थे । सन् १७५७ में जब शिराजुद्दौला अंगरेजों से लड़ा, तब महाराज कृष्णचंद्र भी थे । उनके कृतज्ञता में अहमरेजी सरकार ने उनको राजेंद्र चले गए । उसके पुर १२ तोपें नजर दीं, जो अब तक महल में देखी जाती हैं । सन् १५२७ ईस्वी में के राजा भी पण्डित और दानी होते आए हैं, इस

चैतन्य महाप्रभु का जन्म न्यायशास्त्र और पण्डितों का घर होने की का समान अधिकारी हैं । नचैतन्य महाप्रभु के जन्म होने के कारण नदिया रांश था । उनके उपदेश के ।

संतीपुर ।

भागीरथी (अर्थात् हुगली नदी) के किनारे पर (२३ अंश, १५ कला, २४ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २९ कला, ६ विकला पूर्व देशांतर में) नदिया जिले में सबसे बड़ा कसबा संतीपुर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-संख्या के समय संतीपुर में ३०,४३७ मनुष्य थे, अर्थात् २१,१९७ हिन्दू, ९,२३१ मुसलमान और ९ कृस्तान ।

संतीपुर कपड़े की दस्तकारी के लिये प्रसिद्ध है । उसमें देशी तिजारत बहुत होती है और गंगा स्नान का वह एक प्रसिद्ध स्थान है । वहां कार्तिक की पूर्णिमा के समय श्री कृष्ण की रासयात्रा का मेला होता है, जो ३ दिन रहता है । अंतिम दिन प्रधान सडक होकर बड़ी धूमधाम से श्रीकृष्ण भगवान की सवारी निकलती है । मेले में पचीस तीस हजार आदमी आते हैं ।

जशर ।

बगुला के स्टेशन से १२ मील (पार्वती पुर से १९८ मील) दक्षिण रानाघाट जंक्शन, रानाघाट से २१ मील पूर्व बनगांव जंक्शन और बनगांव से २६ मील पूर्वोत्तर जशर का रेलवे स्टेशन है । मूवे बंगाल के मेसीडेंसी विभाग में (२३ अंश, १० कला, ५ विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, १५ कला, पूर्व देशांतर में) बैरव नदी के पश्चिम किनारे पर रेलवे स्टेशन से १ मील दूर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा जशर है, जिसको उस देश के लोग कसया कहते हैं । उसका शुद्ध नाम यशहर है, जिस का अपभ्रंश जशर होगया है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय जशर में ८४,१५ मनुष्य थे, अर्थात् ४५,११ हिन्दू, ३८,२२ मुसलमान और १,६२ दूसरे । म्युनिसिपल्टी की सीमा के भीतर पुराना कसबा, शंकरपुर, चंचरागांव और वदाहर है ।

कसवे के चौक का नाम मल्लुहा बाजार है । कसवे के पश्चिम जिले की मापूली कचहरियां, जेलखाना और पुलिस की लाइन पक्की बनी हुई हैं ।

इन के अतिरिक्त जशर में स्कूल, गिर्जा, एक खैराती अस्पताल, सन् १८८३ का बना हुआ श्रीरघुनाथजी का १ मन्दिर और २ कबरगाह हैं । कसबे से १ मील दक्षिण चंचरा बस्ती में जशर के राजा के महल की निशानी देखी जाती है । उस महल के निकट जशर के एक राजा का बनवाया हुआ चोरमारा नामक एक बड़ा तालाब है । लोग कहते हैं कि इस तालाब के पास राजा का जेलखाना था, इस लिये तालाब का चोरमारा नाम पड़ा ।

जशर जिला—इस जिले का क्षेत्रफल २१२५ वर्ग मील है । इसके उत्तर और पश्चिम नदिया जिला, दक्षिण खुलना जिला और पूर्व फरीदपुर जिला है । जिले में कई एक छोटी नदियां बहती हैं ।

सन् १८८१ ई० की मनुष्य गणना के समय जशर जिले में १५७७२४१ मनुष्य थे; अर्थात् १४५२१७ मुसलमान, ६३१४३१ हिन्दु, ४७४ कृस्तान और ३३ ब्राह्म । जातियों के खाने में ७८००२ जालिया, कैचरत, मछाह, पोड़ी इत्यादि; ६२६११ कायस्थ, ३७७५२ ब्राह्मण, १०३ राजपुत और शेष में दूसरी जातियां थी । इस जिले के जशर कसबे में ८४१५, कोटचांदपुर में १२३१ और केशवपुर में ६४०५ मनुष्य थे ।

सन् १७८१ ई० में गवर्नरजनरल ने जशर कसबे के निकट मुरली में एक कचहरी नियत होने की आज्ञा दी और पुढे तौर से जिले में अंगरेजी प्रबन्ध कायम हो गया ।

खुलना ।

जशर से ३५ मील दक्षिण पूर्व (शानावाट जंक्शन से ८२ मील) खुलना का रेलवे स्टेशन है । मूरे बंगाल के प्रेसीडेंसी विभाग में (२२ अंश, ४९ कला, १० विकला उत्तर अक्षांश और ८९ अंश, ३६ कला, ५५ विकला पूर्व देशांतर में) जिले का सदर स्थान खुलना एक छोटा कमरा है ।

खुलना के निकट भैरव नदी सुंदर वन में मिल गई है । ऐसा कहा जा सकता है कि खुलना सुन्दरवन की राजधानी है । इसमें ३ बाजार हैं, जिनमें से सेन का बाजार, जो सर में स्थान है, भैरव नदी के पूर्व और दूसरे २ वस

नदी के पश्चिम किनारे पर हैं । खुलना में सरकारी कचहरियों बनी हुई हैं । खुलना होकर ढाका और वाकरगंज से चावल, सिलहट से चूना और नारंगी; सुन्दरवन से लकड़ी और राजशाही, पवना और फरीदपुर से तीसी और दाल कलकता भेजी जाती हैं ।

खुलना जिला—इसका क्षेत्रफल बिना नाप किया हुआ सुन्दरवन को छोड़ कर २०७७ वर्ग मील है। इसके पूर्व वाकरगंज जिला, दक्षिण सुन्दरवन पश्चिम चौबीसपरगना जिला और उत्तर जशर जिला है । इस जिले के पश्चिमोत्तर के भाग में खजूर आदि वृक्षों के सुन्दर कुंज फैले हुए हैं । प्रत्येक वस्त्रियों के समीप बाग और कुंज लगे हुए हैं । नदी के किनारे के ऊँचे स्थानों पर मकान बने हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय खुलना जिले में १०७९९४८ मनुष्य थे, अर्थात् ५५५५४४ मुसलमान, ५२३६५७ हिन्दू, और ७४७ कृस्तान । जातियों के खाने में ८६५४ ब्राह्मण, ५५१ राजपूत और शेष में दूसरी जातियां थीं । इस जिले के कसबे सतखीरा में ८७३८, कालामोआ में ५९९५, कालीगंज में ५५५४, और देवहाट में ५५१४ मनुष्य थे ।

इतिहास—लगभग १०० वर्ष से खुलना कसबा प्रसिद्ध हुआ है । एक समय वह कंपनी के नमक बनाने का सदर स्थान था । सन् १८८२ ई० में खुलना एक जिला बनाया गया ।

वैरीसाल ।

खुलना के रेलवे स्टेशन से लगभग ५० मील पूर्व (२२ अंश, ४१ कला, ४० विकला उत्तर अक्षांश और ९० अंश, २४ कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) वैरीसाल नदी के पश्चिम किनारे पर सूरे वंगाल के ढाका विभाग में वाकरगंज जिले का प्रधान कसबा और सदर स्थान वैरीसाल है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय वैरीसाल में १०४८२ मनुष्य थे, अर्थात् ८०४७ हिन्दू, ७०५४ मुसलमान, ३६७ कृस्तान और १४ बौद्ध ।

वैरीसाल में मामूली सरकारी कचहरियां पनी हुई हैं । देशियों के मकान साधारण बरह से लकड़ी, बांस टट्टी और फूस से बने हैं ।

बाकरगंज जिला—इस जिले का क्षेत्रफल ३६४९ वर्ग मील है । इसके पूर्व मेगना और शाहवाजपुर नदी, जिसके बाद नोआखाली और टिपरा जिला हैं; दक्षिण बंगाल की खाड़ी; पश्चिम जशर और फरीदपुर जिला और उत्तर ढाका और फरीदपुर दोनों जिले हैं । सदर स्थान वैरीसाल कसबा है । इस जिले में गंगा, ब्रह्मपुत्र और मेगना तीनों की मिली हुई धारा बहती है । दूसरी बहुतेरी छोटी छोटी नदियां हैं । कोई पहाड़ी या टीला नहीं है । गस्तियों के चारो ओर बांस और सुपारी के कुंज लगे हुए हैं । जिले में शगिया, सालटी, समसील इत्यादिक बहुतेरी झील हैं । भूमि से बहुत नमक तैयार किया जाता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बाकरगंज जिले में १९००८८९ मनुष्य थे, अर्थात् १२६७६९४ मुसलमान, ६२४५९७ हिन्दू, ४७१७ बौद्ध, ३७१७ कुस्तान, ८३ ब्राह्म और १ यहूदी । जातियों के खाने में २६०७७ चंडाल, ८७८३४ कायस्थ, ४४७३६ ब्राह्मण, ३३४११ नापित, २१६२८ घोषी, २१५१८ जोगी, १८०८० कैबरत, १६८४५ सूँधी और शेष में दूसरी जातियां थीं । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बाकरगंज जिले के कसबे वैरीसाल में १५४८२, और फरीदपुर में १२२४६ मनुष्य थे ।

बाकरगंज, जो सन् १८०१ ई० में पहले इस जिले का सदरस्थान था, गैराबाद और एक दूसरी नदी के संगम के पास है, जिसमें सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय ७०६० मनुष्य थे ।

नइहाटी ।

रानाघाट जंक्शन से २२ मील (पार्वतीपुर से २२० मील) दक्षिण और कलकत्ता के सियालदह से २४ मील उत्तर नइहाटी का रेलवे जंक्शन है, जहाँ से ५ मील की रेलवे लाइन पश्चिमोत्तर हुगली कसबे के पास जाकर इष्टइण्डियन रेलवे से मिलती है; बीच में हुगली अर्थात् भागीरथी नदी पर रेलवे पुल बना

हुआ है । सूवे बंगाल के प्रेसीडेन्सी विभाग के चौबीस परगने जिले में नइहाटी एक तिजारती कसबा है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय नइहाटी में २१७२४ मनुष्य थे; अर्थात् २४७६६ हिंदू, ४८०६ मुसलमान, १३५ कृस्तान और १७ बौद्ध ।

वारकपुर ।

नइहाटी से १० मील (पार्वतीपुर जंक्शन से २३० मील) दक्षिण और सियालदह से १४ मील उत्तर वारकपुर का रेलवे स्टेशन है । सूवे बंगाल के चौबीस परगना जिले में भागीरथी के बाएँ किनारे पर श्रीरामपुर के आमने सामने वारकपुर है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय फौजी छावनी के साथ वारकपुर में ५६६२७ मनुष्य थे;—इनमें से दक्षिणीय वारकपुर में ३५६४७ (अर्थात् २६१५१ हिंदू, ८५१२ मुसलमान, १५२ कृस्तान, २४ सिक्ख, २ पारसी, १ बौद्ध और ५ दूसरे) और उत्तरीवारकपुर में जिसको नवाबगंज भी कहते हैं, २०९८० (अर्थात् १६३३४ हिंदू, ४५०५ मुसलमान, १३६ कृस्तान और ५ जैन) थे ।

छावनी से दक्षिण २५० एकड़ भूमि पर एक सुन्दर पार्क बना हुआ है । उसमें खुवसूरती के साथ वृक्ष लगाए गए हैं और हिंदुस्तान के वाइसराय की दिहाती कोठी बनी है, जिसको लार्ड मिंटो ने, जो सन् १८०६ से १८१५ तक भारतवर्ष का गवर्नर जनरल था, बनवाया और उसके बाद के गवर्नर जनरल मार्किंस आफ डेस्टिंग्स ने बढ़ाया । बड़े लाटसाहब समय समय पर कलकत्ते से आकर के इस गवर्नमेंट हाउस में रहते हैं । छावनी में यूरोपियन और देशी पुलटन रहती हैं और लेडी केनिंग की कबर है ।

रेशकोर्म के निकट हाथियों के सिखलाने का अस्तवत्त है । जो हाथी पूर्वी बंगाल के जंगलों से पकड़ कर आते हैं वे आम तरह से सिखलाने के लिए वहां भेजे जाते हैं और तालीम के लिये चन्द महीनों तक अस्तवत्त में रक्खे जाते हैं ।

इतिहास—सन् १७७२ ई० में बारकपुर में फौजी छावनी नियत हुई, इस लिये उसका नाम बारकपुर पड़ गया । सन् १८२४ में ४७ वीं बंगाल पैदल फौज को, जो बारकपुर में थी, ब्रह्मा की लड़ाई में जाने का हुक्म हुआ । उसके अफसर और सिपाहियों ने कहा कि हम लोग समुद्र की राह से नहीं जायेंगे । हम लोगों को दुसकी मार्ग से भेजा जाय और भत्ता दुगुना कर दिया जाय तब जा सकेंगे । तारीख १ नवंबर को वे लोग वागी हो गए । उन्होंने हथियार रख देने से इनकार किया । जब यूरोपियन आर्टिलरी का एक बैटरी वागियों पर खोली गई, तब वे लोग अपने हथियारों को फेंक कर नदी की राह से भागे । उनमें से चंद गोली से मार दिए गए; चंद पानी में डूब गए; बहुतेरे को फांसी दी गई और उस रेजीमेंट के लोग काम से अलग कर दिए गए ।

सन् १८५७ ई० में बारकपुर में बगावत हुई । वर्ष के आरंभ में फौजी स्टेशनों में यह बात फैली कि नया टोटा अपवित्र है; अंगरेजी सरकार देशी सिपाहियों की जात भ्रष्ट करके कृस्त्रान बनाना चाहती है । यह झूठा खियाल दिन पर दिन बढ़ने लगा । तारीख २१ मार्च को बारकपुर की छावनी के मंगलपांडे ने एक यूरोपियन अफसर को गोली से मारा; किंतु बगावत बढ़ी नहीं ।

दमदम ।

बारकपुर से १ मील दक्षिण और कलकत्ते के सियालदह से ५ मील पूर्वोत्तर दमदम का रेलवे स्टेशन है, जहां से रेलवे शाखा दमदम छावनी और पारासत होकर धनगांव गई है । सूबे बंगाल के २४ परगना जिले में सबडिवीजन का सदर स्थान और फौजी छावनी दमदम है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय दक्षिण के दमदम में ११०३७ (अर्थात् ६२८६ हिंदू, ४६११ मुसलमान और ६० कृस्त्रान) और उत्तर के दमदम में, जिसमें फौजी छावनी है, १०३१६ मनुष्य, (अर्थात् ६३८८ हिंदू, २७१८ मुसलमान और १२१० कृस्त्रान) थे ।

दमदम में सन् १८८३ ई० में फौज रहती है । वारक इंटे के बने हुए हैं ।
लैन से थोड़ी दूर पर बाजार है । गोली बनाने के लिये बहुत बड़ा
कारखाना बना है ।

वारासत ।

दमदम जंक्शन से पूर्योत्तर वनगांव की लाइन पर २ मील दमदम छावनी
का और १० मील वारासत का रेलवे स्टेशन है । वारासत चौबीस परगना जिले
में सबडिवीजन का सदर स्थान (२२ अंश, ४३ कला, २४ विकला उत्तर
अक्षांस और ८८ अंश, ३१ कला, ४७ विकला पूर्व देशांतर में) एक कसबा है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वारासत में १०५३३ मनुष्य थे;
अर्थात् ५७०२ हिंदू, ४८०७ मुसलमान, और २४ दूसरे ।

वारासत में सबडिवीजन की सरकारी इमारतें बनी हैं और थोड़ी
तिजारत होती है ।

इतिहास—सन् १८३४ ई० में नदिया और जशर के कई एक परगने
से वारासत जिला बना; किंतु सन् १८६१ में ब्रॉडट मजिस्ट्रेट वारासत से उठा
दिया गया; वारासत चौबीस परगना जिले का एक सबडिवीजन बनाया गया ।



तेरहवां अध्याय ।

कलकत्ता

कलकत्ता ।

गंगा की पश्चिमी शाखा भागीरथी के, जिसको हुगली नदी भी कहते हैं,
घाट अर्थात् पूर्व किनारे पर हवड़ा के सामने पूर्व (२२ अंश, ३४ कला, २
विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, ५१ विकला पूर्व देशांतर में)
समुद्र से ८० मील उत्तर भारतवर्ष की राजधानी और बंगाल का प्रधान शहर
कलकत्ता है ।

कलकत्ते के पास के सियालदह के रेलवे स्टेशन से उत्तर ५ मील दूमदम जंक्शन, २४ मील नइहाटी जंक्शन, २४४ मील पार्श्वीपुर जंक्शन और ३७१ मील दार्जिलिंग और दक्षिण ३८ मील 'टायमंड हारवर' और कलकत्ते के निकट के हवडे के रेलवे स्टेशन से पश्चिमोत्तर ६७ मील बर्झवान, ७५ मील खाना जंक्शन, २६२ मील (कार्ड लाइन से) लक्ष्मीसराय जंक्शन, ३३२ मील पटना, ३३८ मील भाकीपुर जंक्शन, ३६८ मील आरा, ४६१ मील मुगलसराय जंक्शन, ४७६ मील बनारस, ५६४ मील इलाहाबाद, ६८४ मील कानपुर जंक्शन, ८२७ मील तुंडला जंक्शन, ८४३ मील आगरा किला, और १५४ मील दिल्ली, हवडे से पश्चिम ओर १३२ मील आसनसोल जंक्शन, ७५१ मील नागपुर, १११७ मील मनमार जंक्शन, और १२७८ मील बंबई का विक्टोरिया स्टेशन और हवडे से नागपुर और मनमार जंक्शन होकर २११३ मील पश्चिम-दक्षिण मद्रास है ।

खास कलकत्ता शहर भागीरथी के किनारे पर लगभग ७ वर्ग मील के क्षेत्रफल में फैला है । इसकी लंबाई चितपुर से दक्षिण और खिदिरपुर से उत्तर ४१ मील और औसत चौड़ाई भागीरथी गंगा से पूर्व और सर्कुलर रोड से पश्चिम ११ मील है । खास शहर से पूर्व और दक्षिण-पूर्व नर्कुलडागा, शिमला, सियालदह, पंढाली, बालीगंज, भवानीपुर, अलीपुर और खिदिरपुर (शहरतलियां) हैं । शहर में सबकों की लंबाई १२० मील है । सबकों पर रात्रि में गैस की लालटेन से रोशनी होती है । ट्रामगाडी चलने पर भी प्रधान सबकों पर घोड़ेगाडी और एक्कों की भीड़ रहती है । सन् १८८९-१८९० ई० में कलकत्ते की म्युनिसिपैल्टी की आमदनी ४२१७१२१ रुपये और उसका खर्च ४१२७८३१ रुपये थे ।

हवडा स्टेशन के पास आरमेनियन घाट के सामने भागीरथी गंगा की चौड़ाई लगभग ६०० गज है । राजमहल से आगे गंगा की दो धारा हो गई हैं । उनमें से प्रधान धारा पद्मा, जिसको पद्मा भी कहते हैं, फरीदपुर और ग्वालंडो होकर कलकत्ते से बहुत पूर्व गमुद्र में गिरती है और दूसरी धारा भागीरथी, जिसको हुगली भी कहते हैं) जो एक समय प्रधान धारा थी, चंदनगर,

हुगली और कलकत्ता होकर दक्षिण को बहती हुई कलकत्ते से लगभग ८० मील दक्षिण समुद्र में मिली है। पहिले समय में भागीरथी कालीजी के मंदिर के निकट होकर बहती थी। उसका भागर अर्थात् नाला, जिसमें याली लोग स्नान करके काली जी का पूजन करते हैं, अब तक विद्यमान है।

कलकत्ते के पास भागीरथी में नाव के पुल से दक्षिण को सौ नक सैकड़ों जहाज और आगबोट सर्वदा देखने में आते हैं। इन के मस्तूल और गुनरखों का सुंदर दृश्य दृष्टिगोचर होता है।

कलकत्ते की हवा सर्द है; वहां चार चार और भारी वर्षा हुई करती है, किंतु लगातार नहीं। वहां औसत में सालाना वर्षा ६० इंच होती है। कलकत्ते का समय मद्रास के समय से ३३ मिन्ट और दिल्ली के समय से ४६ मिन्ट अधिक और बंबई के समय से २९ मिन्ट कम है।

कलकत्ते के आस पास कागज इत्यादि के अनेक कल कारखाने हैं। कागज के कारखाने से सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के दफ्तर खाने के लिये सरकार ने २७० टन कागज खरीदा था। कलकत्ते में ओरियंटल इन्सियोरेंस कंपनी के पास जिन्दगी का बीमा होता है। वह आदमी से उसके जीवन पर्यन्त प्रति महीने नियत रुपया लेकर उसके मरने पर उसके वारिस को एक नियत रकम देती है। प्रतिवर्ष आपाद मुद्दी २ को कलकत्ते में जगन्नाथ घाट से जगन्नाथजी की धूमधाम से रथयात्रा होती है। कलकत्ते में महाराज यतिन्द्र-मोहनठाकुर इत्यादि कई बंगाली जमीन्दारों को सरकार से महाराज तथा राजा की पदवी मिली है। यद्यपि बंबई की मनुष्य-संख्या कलकत्ते से कम नहीं है, किंतु कलकत्ते के समान विशाल और बृहद् इमारतें बंबई में बहुत कम हैं।

रेलवे—कलकत्ते के निकट से रेलवे लाइन ३ तरफ गई है। महमूल तीसरे दर्जे का फी मील २५ पाई लगता है।

(१) कलकत्ते से दक्षिण इष्टर्न बंगाल स्टेट मील—प्रसिद्ध स्टेशन—
रेलवे के सदर्न सेक्शन— ३ बालीगंज ।

१० सोनारपुर जंक्शन ।

३८ डायमण्ड हारवर ।

सोनारपुर जंक्शन से १८

मील दक्षिण पूर्व केनिग ।

(२) कलकत्ते से उत्तर इष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

५ दमदम जंक्शन ।

७ बेलघरिया ।

१० सोदपुर ।

१४ चारकपुर ।

२४ नइहाटी जंक्शन ।

४६ रानाघाट जंक्शन ।

५८ बगुला ।

१०३ पोडादह जंक्शन ।

१२० दामुकदियाघाट (पद्मा गंगा के दहिने किनारे पर)

१३२ सांराघाट (गंगा के बाएँ) ।

१५६ नाटवर ।

१९५ नवागंज ।

२४४ पारमतीपुर जंक्शन ।

३०५ जल्पाईगोड़ी ।

३२८ सीलीगोड़ी ।

३७९ दार्जिलिंग ।

दमदम जंक्शन से पूर्वोत्तर

मील दमदम छावनी, १०

मील चारासत, और ३६ मील

बनगांव जंक्शन ।

नइहाटी जंक्शन से ५ मील
पश्चिमोत्तर हुगली जंक्शन ।

रानाघाट जंक्शन से पूर्व
कुछ दक्षिण २१ मील बनगांव
जंक्शन और ८२ मील खुलना ।

पोडादह जंक्शन से पूर्व कुछ
दक्षिण ५ मील जगती जंक्शन,
१० मील कुष्टिया और ४८ मील
ग्वालंडो ।

दामुकदियाघाट से आग-
वोट गंगा के उस पार सांराघाट
को जाते हैं । दोनों स्टेशनों का
फासिला १२ मील है । सूखी
झुलुओं में इससे बड़े हिस्से पर
चंदरोजा लाइन बैठाई जाती है ।
सांराघाट के पास 'उतरी बंगाल
रेलवे' आरंभ होती है ।

ग्वालंडो से पूर्व थोड़ा द-
क्षिण ब्रह्मपुत्र नदी में आगवोट
जाती है, जिसकी राह से ७९
मील चान्दपुर और १०४ मील
नारायणगंज है ।

नारायणगंज से उत्तर रेल
के रास्ते से १० मील ढाका और
८५ मील मैमनसिंह ।

चान्दपुर से 'आसाम बंगाल
रेलवे' द्वारा ३१ मील पूर्व छ-
यसम जंक्शन ।

लक्ष्मण जंक्शन से दक्षिण
थोड़ा पूर्व ५७ मील सीताकुण्ड,
६१ मील बलघाकुण्ड और ८१
मील चटगांव स्टेशन।

दागुकिदियाघाट के स्टेशन
से १२ मील पूर्व कुछ उत्तर सां-
राघाट स्टेशन तक, जो दूसरे
पार में है, पद्मागंगा में आग-
घोट चलता है।

पार्वतीपुर जंक्शन से पू-
र्वोत्तर २२ मील रंगपुर, ३९
मील तिष्टा जंक्शन और ५३
मील मगलहाट और तिष्टा जंक्-
शन से पूर्व कुछ उत्तर २६ मील
धातापुर।

पार्वतीपुर जंक्शन से प-
श्चिम कुछ दक्षिण १९ मील दीना
जपुर, ६५ मील बरसुई जंक्शन
और ८९ मील कठिहर जंक्शन।

(३) हवड़े से पश्चिमोत्तर 'इंटरइण्डियन
रेलवे'—

मील—प्रसिद्ध स्टेशन—

१२ श्रीरामपुर।

१४ मैवडाफुली जंक्शन।

२१ चन्द्रनगर।

२४ हुगली जंक्शन।

२९ मगरा।

६७ बर्दवान।

७५ खाना जंक्शन।

खाना जंक्शन से पश्चिमो-
त्तर काट लाइन पर ४१ मील
अंडाल जंक्शन, ४६ मील रा-
नीगंज, ५७ मील आसनसोल
जंक्शन, ६३ मील सीतारामपुर
जंक्शन, १०८ मील मधुपुर जंक्-
शन, १२६ मील वैद्यनाथ जंक्-
शन और १८७ मील लक्ष्मीस-
राय जंक्शन।

खाना जंक्शन से टूपलाइन
पर उत्तर ६१ मील रामपुरहाट,
७० मील नलहाटी जंक्शन, १२०
मील तीनपहाड़ जंक्शन, १४४
मील साहबगंज।

साहबगंज से पश्चिम ४६
मील भागलपुर, ६१ मील मुल-
तानगंज, ७९ मील जमालपुर
जंक्शन और १०४ मील लक्ष्मी-
सराय जंक्शन।

खास करके कूड़ा फेंकने और घाटों से माल लेजाने के लिये कलकत्ते
शहर के बगलों पर, नदी के किनारे और सर्कुलररोड पर रेलवे बनी हैं।

रेलवे सबसे पहले सन् १८१८ ई० में बिलायत में जारी हुई और सन्

१८५२ ई० में हिंदुस्तान में बनी । इस समय तक हिन्दुस्तान में १५ हजार मील से अधिक रेलवे लाइन बन चुकी हैं ।

स्टीम कम्पनियाँ—पेनिनसुलार ऐंड ओरियेन्टल स्टीम नेवीगेशन

कम्पनी के आगवोट १५ दिन पर कलकत्ते के जेटियों से लंदन के लिये खुलते हैं और मदरास कोलम्बो, एडेन, पोर्ट सेड, मार्मिलेस और प्लाईमूथ में मुसाफिरों को उतारते चढ़ाते हैं ।

एक कंपनी के आगवोट नम्बर २३ गार्डनरीच से मार्मिलेस के लिये दो हफ्ते पर खुलते हैं और मदरास, पांडीचरी, कोलम्बो, गेली, एडन, स्वेज, पोर्टसेड, मेसिना, नेपुलस और जेनवा में मुसाफिरों को चढ़ाते उतारते हैं ।

एक कंपनी के आगवोट पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये, छ हफ्ते पर आस्ट्रेलिया के लिये और एक हफ्ते पर तम्बे के लिये खुलते हैं और किनाटे के सब बन्दरों पर लोगों को चढ़ाते उतारते हैं ।

एक कंपनी के आगवोट रंगून, सिंगापुर, सिलोन, बम्बे, मरीटियस और एंडमन जाते हैं ।

एक कंपनी के आगवोट हर पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये खुलते हैं और कोलम्बो, स्वेज, पोर्टसेड, और माल्टा में मुसाफिरों को चढ़ाते उतारते हैं ।

एक कंपनी के आगवोट पन्द्रहवें दिन लंदन के लिये कलकत्ते को छोड़ते

एक कंपनी के आगरोट मामूली दिनों पर बीच के स्टेशनों पर होते हुए आसाम में डिब्रूगढ़ को और हफ्तावारी उड़ीसे में चान्दवाली को जाते हैं ।

एक कंपनी के आगरोट हररोज आरमेनियन घाट से मिदनीपुर, और बीच के स्टेशनों के लिये खलने हैं और उलवडिया में मोसाफिरों को चढ़ाते हैं ।

ट्रामवे—कलकत्ता ट्रामवे लाइनें यह हैं;—(१) सियालदह स्टेशन से बहूवाजार प्लेट, डलहौसी स्केयर और हेयर प्लेट होकर प्लेण्ड तक, (२) चितपुर से चितपुर रोड, सामिल करते हुये नम्बर १ पुलिस कोर्ट के नजदीक प्लेण्ड तक, (३) रक्षापुगला से भवानीपुर, चौरंगी, एस्पुनेड और वोल्ड-कोर्ट हौस प्लेट होकर डलहौसी स्केयर तक । इनके अलावे धर्मतला प्लेट, वेलस्ली प्लेट, एलियट रोड, कालिज प्लेट, कर्नवालिस प्लेट, प्लेण्ड रोड इत्यादि होती हुई कई लाइनें बनी हैं । एक लाइन मैदान और पुल होकर खिदिरपुर गई है । इस भांति से करीब ५० मील सड़क पर ट्रामवे की लाइनें बनी हैं, जिन पर ट्रामगाड़ी चलती है । एक ट्रामगाड़ी को एक या दो घोड़े खेंचते हैं और उसपर पचोस तीस आदमी चढ़ते हैं । उस पर बैठने के लिये बेंच बने हुए हैं । आदमी जिस स्थान पर चाहे वहां उस पर चढ़ जाता है और जिस स्थान में इच्छा करे वहां उतरता है ।

मनुष्य-गणना—सन १८९१ ई० की मनुष्य-गणना के समय कलकत्ते में २६०७० पक्के और ४७३५१ कच्चे मकान थे । खास शहर और शहर तलियों में ८१०७८६ मनुष्यों की गणना हुई थी, जिनमें से खास शहर में ६८१५६० मनुष्य थे; अर्थात् ४४६७४६ पुरुष और २३४८१४ स्त्रियां । इनमें ४४४८४५ हिन्दू, २०३१७३ मुसलमान, २८९९७ कृस्तान, २१९९ बौद्ध, १३९९ यहूदी, ४९४ जैन, २८७ सिक्ख और १६६ पारसी थे । शहर से बाहर दो शहर तलियों में ५९५८४ मनुष्य थे, अर्थात् ३५८४२ पुरुष और २३७४२ स्त्रियां । इनमें ४३६८७ हिन्दू, १४९८५ मुसलमान, ९०७ कृस्तान, ३ जैन, १ बौद्ध और १ पारसी थे, और दक्षिणी शहरतली में ६९६४२ मनुष्य थे; अर्थात् ३७७९४ पुरुष और ३१८४८ स्त्रियां । इनमें ३९१३१ हिन्दू, २९९६४ मुसलमान, ४६६ कृस्तान, ५१ बौद्ध, १ जैन और २९ दूसरे थे ।

मनुष्य गणना के अनुसार कलकत्ता भारत वर्ग में दूसरा शहर है; किन्तु भास पास की शहरतलियाँ और दबड़ा के साथ वह पहला शहर होता है ।

कलकत्ते में यूरोपियन, यूरेशियन, पोर्चुगीज, आरमेनियन, ग्रीक, यहूदी, चीनी, पारसी इत्यादि परदेशी और हिन्दुस्तान के प्रत्येक विभाग के हिन्दुस्तानी लोग बसे हैं ।

कलकत्ते में गंगाजी के ज्वार भाटे का समय,—

तिथि	ज्वार आरम्भ		भाटा आरम्भ	
	दिन	रात	दिन	रात
	घंटा मिनट	घंटा मिनट	घंटा मिनट	घंटा मिनट
दशमी	६ ८	६ १३	१० ५८	११ ३
एकादशी	६ ५६	७ १	११ ४६	११ ५१
द्वादशी.....	७ ४४	७ ४९	१२ ३४	१२ ३९
त्रयोदशी	८ ३२	८ ३७	१ २२	१ २७
चतुर्दशी	९ २०	९ २५	२ १०	२ १५
आमावस्या पूर्णिमा	१० ८	१० १३	२ ५८	३ ३
प्रतिपदा	१० ५६	११ १	३ ४६	३ ५१
द्वितीया	११ ४४	११ ४९	४ ३४	४ ३९
तृतीया	१२ ३२	१२ ३७	५ २२	५ २७
चतुर्थी	१ २०	१ २५	६ १०	६ १५
पंचमी	२ ८	२ १३	६ ५८	७ ३
षष्ठी	२ ५६	३ १	७ ४६	७ ५१
सप्तमी	३ ४४	३ ४९	८ ३४	८ ३९
अष्टमी	४ ३२	४ ३७	९ २२	९ २७
नवमी	५ २०	५ २५	१० १०	१० १५

प्रति दिन ज्वार के समय पानी की ऊँचाई एकही समान अधिक होती है । समुद्र अपने हृद मे अधिक (बिना भारी तूफान के) नहीं बढ़ता;

परन्तु आमावस्या और पूर्णिमा के उबार का जल प्रति दिन के नियम से अधिक ऊंचा होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत-(उद्योग पर्व-१५१ वाँ अध्याय) जैसे आमावस्या और पूर्णिमा की को समुद्र की तरंग उठती है, वैसेही पाण्डवों की सेना का महा कोलाहल शब्द आकाश मंडल को स्पर्श करने लगा। (मत्स्य-पुराण— १२२ वाँ अध्याय) चन्द्रमा के बढ़ने घटने के अनुसार समुद्र बढ़ता घटता है। पूर्णिमा और आमावस्या के दिनों में समुद्र १५०० अंगुल बढ़ता और घटता है। वाल्मीकिरामायण—(अयोध्याकांड—१४ वाँ सर्ग) सत्यता के कारण समुद्र अपने थोड़ी भी पर्यादा को नहीं छोड़ता (अर्थात् अपने हृद से अधिक नहीं बढ़ता) है।

पानी की नल—वारकपुर से २ मील उत्तर के मनीरामपुर से हुगलीनदी का पानी कलद्वारा कलकत्ते में पहुंचाया जाता है। पंप का स्टेशन और पानी के सब होज बेल्टन स्केयर में हैं और वैसेही पंप का स्टेशन हेल्डीडे प्लोट के पास हाल में बना है। पीने लायक पानी की नल लगभग २३२ मील लम्बी है। प्रति दिन २ करोड़ गैलन पानी खर्च होता है। इसके सिवा सड़कों पर छिड़कने के लिये बिना तय्यार किया हुआ पानी आता है, जिसकी नल ६६ मील लंबी है। सन् १८७० ई० में पानी की नल खुली। सन् १८९१ की जनवरी तक १ करोड़ ५५ लाख रुपए इस काम में खर्च पड़े थे। पंप का नया स्टेशन भवानीपुर में बना है, जिसमें नित्य ४० लाख गैलन पानी तय्यार होकर शहर के दक्षिण हिस्से में (पश्चिम) खिदिरपुर के डक से (पूर्व) घालीगंज तक जाता है।

कलकत्ते की पुलिस—कलकत्ता शहर हाईकोर्ट के मातहत है। पुलिस का प्रधान हाकिम पुलिस कमिश्नर कहलाता है, जिसको और डिप्टी कमिश्नर को बंगाल के 'लेफ्टिनेंटगवर्नर' मोकरर करते हैं। पुलिस के लिये कलकत्ता शहर उत्तरीय, दक्षिणीय और मध्य तीन भागों में विभक्त है। प्रत्येक भाग में एक सुपरिंटेंडेंट और ६ थाने रहते हैं। प्रत्येक थाने में १

इन्स्पेक्टर है। 'चौथा भाग हुगली नदी है, जिसके लिये १ सुपरिंटेंडेंट और ३ याने हैं। तीनों में एक एक इन्स्पेक्टर रहते हैं। एक शाखा भी है, जिसमें एक सुपरिंटेंडेंट है।

खास शहर के प्रबंध के लिये ३ सुपरिंटेंडेंट, २५ इन्स्पेक्टर, ८ दारोगा, ३१ सर्जिण्ट (हवलदार), ६९ करपोरल (नायक), ५१ स्पेशल कांस्टिबल और ११०० कांस्टिबल हैं। सुपरिंटेंडेंटों के साथ रिजर्व् फोर्स १६२ आदमी और सवार पुलिस और गवर्नमेंट गार्डों में ५ इन्स्पेक्टर और ३०५ आदमी हैं।

पुलिस कचहरी की नई इमारत, जिसका नम्बर १७ है, लालगंजार स्ट्रीट में सन् १८९० ई० के अक्टूबर में खुली।

मजिस्ट्रेट के काम के लिये उत्तरीय और दक्षिणीय दो भागों में कलकत्ता तकसीम है;—उत्तरीय भाग के मोकदमे को उत्तर-भाग के प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट और दक्षिणीय भाग के मोकदमे को चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट देखते हैं। फौजदारी मोकदमे देखने के लिये हफ्ते में ३ रोज बेंच बैठती है, जिसमें मामूली तरह से ३ मजिस्ट्रेट रहते हैं, जो अपने में से एक प्रधान चुन लेते हैं। म्युनिस्पल्टी के मोकदमे देखने के लिये हफ्ते में ३ दिन कचहरी होती है, जिसको एक आनरेरी मजिस्ट्रेट देखते हैं।

सबर्बन पुलिस—यह भी पुलिस कमिश्नर के मातहत है। चौबीस परगने जिले में कमिश्नर और दिपोटी कमिश्नर दोनों को मजिस्ट्रेट का अरिज्यार दिया गया है। कलकत्ता शहर से बाहर के हिस्से उत्तरी और दक्षिणी दो भागों में तकसीम है। हर एक में एक सुपरिंटेंडेंट और ७ याने हैं। प्रत्येक याने में १ इन्स्पेक्टर या सब इन्स्पेक्टर रहते हैं। फौजदारी मोकदमे देखने के लिए दो पुलिस कचहरी हैं। उत्तरी हिस्से के मोकदमे को सिंगालदह का सबडिविजनल अफसर और दक्षिणी हिस्से के मोकदमे को अलीपुर का दिपोटी मजिस्ट्रेट देखता है। बाहरी हिस्से की खबरगीरी के लिये २ सुपरिंटेंडेंट, १२ इन्स्पेक्टर, ४ सब इन्स्पेक्टर, २ दारोगा, १६ हवलदार, २६ नायक, और ६२५ कांस्टिबल हैं।

अन्य मुल्क के आफिसें—

नाम मुल्क आदि	नम्बर आफिस	पता
अमेरिका-आफिस.....३		एस्प्लानेड रो पूर्व।
बेल्जियम ७		लियन्स रेंज।
डेनमार्क ४		फेलीप्स।
फ्रांस कंसल जनरल का आफिस.....४		रसल प्लीट।
जर्मन एम्पायर कंसल जनरल का आफिस...४०		चौरंगी रोड।
ए० कंसल का आफिस.....२—३		क्लैव रो।
ग्रीसकंसल का आफिस २३		केनिंग प्लीट।
इंपिरियल और रायल अप्ट्रो १३६		केनिंग प्लीट।
हंगेरियन कंसल का आफिस		
इटली आफिस ५५		पार्क प्लीट।
नेदरलैंड्स आफिस ११		लालबाजार।
परसिया—आफिस.....५		वेस्टिङ्ग प्लीट।
पोर्चुगाल—आफिस.....१		वैं सी टार्ट रो।
स्याम आफिस.....१९		राधाबाजार।
स्पेन-आफिस.....१		वैं सी टार्ट रो।
स्वेडिस् नर्वेजियन-आफिस.....१		लालबाजार।

धर्मशाले—नीचे लिखी हुई धर्मशालाओं में ३ दिन तक मोसाफिर टिक सकते हैं। सब में रसोई के चौके और पायखाने बने हैं। हर मंजिलों में मोसाफिर रहते हैं।

हेरिसनरोड (नई सड़क) और चितपुर रोड के मेल के पास हेरिसनरोड के उत्तर बगल में (नम्बर १६५) रामकिमुनदास और गिरधारीमल की धर्मशाला है, जिस के आंगन के बगलों में तीनमंजिले मकान बने हैं।

रामकिमुनदास, गिरधारीमल की धर्मशाले के पास हेरिसन रोड के दक्षिण बगल (नम्बर १६०) रामदेव बनिपा की तीन मंजिली छोटी धर्मशाला है।

इन्स्पेक्टर है। 'चौथा भाग' हुगली नदी है, जिसके लिये १ सुपरिटेण्डेंट और ३ घाने हैं। तीनों में एक एक इन्स्पेक्टर रहते हैं। एक शाखा भी है, जिसमें एक सुपरिटेण्डेंट है।

खाम शहर के प्रबंध के लिये ३ सुपरिटेण्डेंट, २५ इन्स्पेक्टर, ८ दारोगा, ३१ सर्जिण्ट (हवलदार), ६९ करपोरल (नायक), ५१ स्पेशल कांस्टिबल और ११०० कांस्टिबल हैं। सुपरिटेण्डेंटों के साथ रिजर्व्ह फोर्स १६२ आदमी और सवार पुलिस और गवर्नमेंट गार्ड में ५ इन्स्पेक्टर और ३०५ आदमी हैं।

पुलिस कचहरी की नई इमारत, जिसका नम्बर १७ है, लालबाजार स्ट्रीट में सन् १८९० ई० के अक्तूबर में खुली।

मजिस्ट्रेट के काम के लिये उत्तरीय और दक्षिणीय दो भागों में कलकत्ता तकसीम है;—उत्तरीय भाग के मोकदमे को उत्तर-भाग के प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट, और दक्षिणीय भाग के मोकदमे को चीफ प्रेसीडेंसी मजिस्ट्रेट देखते हैं। फौजदारी मोकदमे देखने के लिये हफ्ते में ३ रोज बेंच बैठती है। हेरिसन मामूली तरह से ३ मजिस्ट्रेट रहते हैं, जो अपने में से एक प्रधान मजिस्ट्रेट, म्युनिस्पल्टी के मोकदमे देखने के लिये हफ्ते में ३ दिन, और बाजार मजिस्ट्रेट, जिसकी लाइन जिसको एक आन्टेरी मजिस्ट्रेट देखते हैं।

न स्केयर बना है; और ग्रे

सबर्वन पुलिस—यह भी पुलिस स्ट्रीट है। इन में का हेरिसन-परगने जिले में कमिश्नर और डिप्टी में तैयार हुआ, उस पर बिजुली अख्तियार दिया गया है।

दक्षिणी दो भाग में राधाबाजार, पुराना और नया चीनाबाजार और बड़ा-वाँजार प्रधान बाजार हैं। राधाबाजार और चीनाबाजार में सराब, तेल, और अनेक प्रकार के अमबाव, कपडा और बहुत किसिम के माल बिकते हैं। वहां जानकार आदमियों को उचित दाम पर चीज मिलती हैं, पर सौदागर लोग पहले दूना तक दाम कहते हैं। बड़ाबाजार में खुरदा माल, कम्पीरीशाल, जोहरी की चीजें, वेशकीमती पत्थर, घर्तन, दवा, कपडे इत्यादि वस्तु बिकती हैं।

दक्षिणीय भाग के बहूवाजार से दक्षिण, धर्मतल्ला से उत्तर और बेंटिक-
ले पूर्व के हिस्से में हिन्दुस्तानी लोग, नीचे के दरजे के यूरोपियन,
तीन और बहुत वहाँ के वासिन्वे रहते हैं। वहाँ घनी घस्ती, बेदाती
न, तंग गली और खराब नाले हैं।

धर्मतल्ला से उत्तर चान्दनीचौक नामक बाजार है और उस हिस्से में निऊ
रबेट नाम का भी एक बाजार घना है।

धर्मतल्ला से दक्षिण बेंटिक-पट्टी के पास से करीब २ मील लम्बा और
८० फीट चौड़ा चौरंगीरोड नामक सड़क है, जिसके पूर्व किनारे पर उत्तम
मकान बने हुए हैं, जिन में बहुतेरे अपने हाते में और बहुतेरे बाग में खड़े हैं।
मकानों के आगे (पश्चिम) किले का मैदान हुगली गंगा तक फैला है। दक्षिण
की तरफ के मकानों के आगे सुन्दर बरंडे बने हैं। उनमें बहुतेरे मकान तीन
मंजिले हैं जिनमें लंबे, चौड़े तथा ऊँचे कमरे बने हुए हैं।

चौरंगीरोड के समानान्तर पूर्व बेल्लली-पट्टी नामक उत्तम सड़क छौड़े
करीब करीब सीधी चली गयी है। वह चौड़ी सड़क
पर सवार है।

लार्ड डफरिन की प्रतिमा—यह सन् १८८४ ई० से १८८८ तक
हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और बाइसराय थे। किले से करीब २०० गज
पूर्व चौमुहानी सड़क के बीच में, जहाँ से किले में २ रास्ते गये हैं, एक खूब-
सूरत पायसतून पर इनकी उत्तम पत्थर की प्रतिमा है, जो चन्दे से बनी है।
इसके बनाने में ४१ हजार रुपया खर्च पड़ा है।

लार्ड सर जेम्स उटरम की प्रतिमा—यह लार्ड डफरिन की प्रति-
मा से पूर्व पार्कपट्टी के फाटक के सामने धातु से बनी हुई छौड़े पर सवार है।
यह लेफ्टिनेन्ट जनरल और बड़ा जवांमर्द था, जो ६० वर्ष के होकर सन्
१८६३ ई० में मरा।

एशियाटिक सोसाइटी—यह नम्बर ५७ पार्कपट्टी में है, जो सन्
१७८४ ई० में एशियातव्द के इतिहास, सिलप, साहित्य, आदि के शोध करने
के लिये कलकत्ते में कायम हुई। महीने के पहिले बुध को इसकी बैठक होनी

है। इसमें करीब ३०० मेमर और एक बड़ी लाइब्रेरी (पुस्तकालय) है, जिसमें १५ हजार जिल्द से अधिक पुस्तकें रखी हैं, जिन में ५ हजार से अधिक संस्कृत, अरबी, ब्राह्मी, नेपाली, पारसी, और हिन्दी की पुस्तकें हाथ की लिखी हुई हैं। सोसाइटी में सिरके, ताम्बा की सनद, तस्वीरें, नकशे इत्यादि जो रखे हैं वे देखने लायक हैं। आनरेरी सेक्रेटरियों के पास दरखास्त करने पर लाइब्रेरी और सिफो को आदमी देख सकते हैं।

अर्ल मेयो की प्रतिमा—यह सन् १८६९ ई० से हिन्दुस्तान के गवर्नर-जनरल और वाइसराय थे, जो सन् १८७२ की तारीख १८ फरवरी को एण्डेमन टापू में एक खूनी के हाथ से ५० वर्ष की उमर में मारे गये। अर्ल मेयो बड़े नेक और सर्व हितैषी थे। लार्ड डफरिन की प्रतिमा से पूर्वोत्तर की ओर सीनार से तीन चार सौ गज दक्षिण चौमुहानी सबक पर धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार इनकी उत्तम प्रतिमा है।

किले के मैदान का सीनार—गवर्नमेंटहौस से पूर्व दक्षिण और धर्मतल्ला बाजार से दक्षिण १२५ फीट ऊंचा सर डेविड अकतरलोनी का मनु मेंट अर्थात् समाधिस्तंभ है। उसके सिर पर चढ़ने के लिए उसके भीतर २६३ सीढ़ियां बनी हैं। ऊपर चढ़ने से सारा शहर दिखाई देता है। एलिस् कमिन्दर के पास दरखास्त करने पर उसकी कुंजी मिलती है। अकतरलोनी ने हैदरअली के समय से हिन्दुस्तान की लड़ाईयों में काम किया था और सन् १८२३ ई० में मालवे और राजपूताने में रेजीडेंट था।

मसजिद—धर्मतल्ला ग्रीट के कोने के पास श्रीरंगपटन के सुबुख्यात टीपू सुलतान के पुत्र प्रिंस गुलमहम्मद ने सन् १८४२ ई० में एक बड़ी मसजिद बनवाई, जिसमें नित्य सैकड़ों मुसलमान निमाज पढ़ते हैं।

पारसियों का अग्निमन्दिर—यह २६ नं० एजरा प्लोट में है। प्रसिद्ध पारसी सौदागर मिष्टर रुस्तमजी कयासजी ने सन् १८३७ में इसको बनवाया।

पारसी टावर—यह बेलियाघाट रोड में है। इसको नोरोजी सरो-बजी पारसी सौदागर ने सन् १८२२ में तैयार कराया था।

म्युनिस्पल बाजार—यह म्युनिस्पल आफिस प्लीट के दक्षिण बड़ा भारी तीन रोख का चौखूटा मकान है, जो सन् १८७४ ई० में ६ लाख ६५ हजार रुपये के खर्च से तय्यार हुआ । इसमें यूरोपियन लोगों के खर्च की सामग्री बिकने के लिए सजी रहती है । इसके बाद जप्टिस लोगों ने धर्मतल्ला बाजार को ७ लाख रुपये में खरीद किया ।

प्रेसीडेन्सी जेल—यह जनरल हस्पिटल के पास मैदान में १८ फीट ऊंची दीवार से घेरा हुआ है । इसमें एक तिमजिला मकान है, जो खियाल किया जाता है कि सिराजुद्दौला का दिहाती मकान था । इस जेल में औसत १३०० कैदी रहते हैं, जिनमें ८० से १०० तक यूरोपियन, यूरेसियन, आरमेनियन, और यहूदी हैं । इनमें से बड़े मैयाद वाले लगभग ७०० कैदी बंगाल गवर्नमेंट के लिये छापे और किताब की जिल्दबंदी के काम और छोटे मैयाद वाले कैदी तेल पेरने और गेहूं धीसने का काम करते हैं । जेल के छापेखाने से हर महीने में औसत ७० लाख से ८० लाख तक फार्म निकलते हैं । कैदियों के वर्ष दिन के काम का कीमत लगभग १२०००० रुपये हैं । सुपरिटेंडेंट के पास दरखास्त करने पर जेलखाने देखने की इजाजत मिलती है ।

अलीपुर का जेल—यह जेल बेलवेडियर और भवानीपुर के पुल के बीच में अत्युत्तम जेलखाने का नमूना है । इसमें १७३४ कैदी रह सकते हैं । लगभग ११०० कैदी दस्तकारी के काम में लाये गए हैं । खास करके विनाई का काम होता है । सुतरी कल द्वारा काती जाती है । विनाई हाथ से होती है । इसके अलावे इस जेल में बंगाल के छोटे जेलों के काम के लिए खाने, पीने और पकाने के वस्तुन बनते हैं और लोहे और लकड़ी का काम होता है । बड़ई और लोहार भी दूसरे जेल के काम के लिये यहां सिखलाये जाते हैं । जेल देखने का दरखास्त २४ घंटे पहले सुपरिटेंडेंट के पास देना चाहिये । ऐतबार के दिन कोई जाने नहीं पाता है ।

मुजरिम लड़कों को चाल सुधारने का स्कूल—यह अलीपुर के जेल के सामने सन् १८८० ८१ ई० में कायम हुआ । नन्गवान मोजरिमे तालीम के बँद में रखे जाते हैं । उनको अच्छे और मेहतवर खोराक दिया

जाता है और तरकी के लिये पेशा सिखलाया जाता है । वे हेस्क, अलपारी, फुरसी, पलंग, इत्यादि चीजें बनाते हैं । उनमें छोटे और टीन के काम करने वाले, जिल्द बान्धने वाले और छापने वाले भी हैं । सुपरिटेण्डेंट से दरखास्त करने पर इसको देखने का हुक्म मिलता है ।

सेंटपाल्स कैथेड्रल—यह गिरजा के मैदान के अतीर दक्षिण में है । इस इमारत की सय से अधिक लम्बाई २४७ फीट, चौड़ाई, ८१ फीट और ऊंचाई २०१ फीट है । खास गिरजा १२७ फीट लम्बा और ६१ फीट चौड़ा है । इसमें ५० हजार पाउण्ड अर्थात् ५ लाख रुपया खर्च पड़ा, जो हिन्दुस्तान और इंग्लैंड के लोगों के चन्दे से आया था । गिरजा सन् १८४७ में खुला । इसके पास अंगरेजों के बहुत मनुमेंट अर्थात् समाधि तिनह हैं, जिनमें १६ मशहूर हैं ।

सेंट जान्स चर्च—यह पुराने कवरगाह की जमीन पर सन् १७८७ में २ लाख के खर्च से तैयार हुआ । सन् १८११ और १८६३ में इसकी तरकी हुई । इसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं । यहाँ प्रसिद्ध अंगरेजों की बहुत कब्रें हैं ।

सेन्ट जेम्स चर्च—यह लोवर सर्कुलर रोड पर २४४ फीट लम्बा, १९४ फीट चौड़ा और ६५ फीट ऊंचा है, जिसमें ७०० आदमी बैठ सकते हैं । यह सन् १८६४ में तैयार हुआ । जमीन के कीमत के अतिरिक्त इसमें २ लाख रुपया खर्च पड़ा ।

स्कूल और कालिज—कलकत्ते में प्रेसीडेंसी कालिज, संस्कृत कालिज, मेडिकल कालिज, इंजिनियरिंग कालिज, विश्वस कालिज, कलकत्ता पदरसा, डाक्टर डफ्का स्कूल इत्यादि हैं, जिनमें कई स्कूल लड़कियों के लिये भी हैं । किसी में बिना फीस के लोग पढ़ाये जाते हैं, किसी में यतीप याने बिना मा बाप के छड़के शिक्षा पाते हैं, किसी में गाना बजाना और किसी में हुनर के काम सिखलाये जाते हैं ।

अस्पताल—कालिज-स्ट्रीट पर मेडिकल कालिज का अस्पताल दुनिया के बड़े अस्पतालों में से एक है । इसमें ३०० मरीज रह सकते हैं । इसके पास तीन मजिस्ट्रा एडिन हस्पिटल है ।

अस्पताल के पूर्वोत्तर आई इनफर्मरी याने आंग्र की दवा'का सफाखाना है । इसमें ५०० मरीज रह सकते हैं ।

मेसीहेंसी हस्पिटल में मरीजों को प्रतिदिन डबल कमरों के लिये ५ रुपये और १ कमरे का २ रुपये देना पड़ता है । इसमें १२१ मरदों के लिये, १८ औरतों के लिये और १२ लड़कों के लिए विस्तर हैं ।

प्लेण्ट रोड के उत्तर में ओ नेटिव हस्पिटल है । इसमें १२० रोगी रह सकते हैं । अस्पताल के सामने दरिया के किनारे के घाट पर शहर के मुर्दे जलाये जाते हैं ।

कोड़ी खाना—यह एम्हर्ट् प्लैट में है ।

इण्डियन मिडजियम—(अजायबखाना)—यह किले के मैदान के पूर्व चौरंगी रोड पर (नंबर २७ और २८) है । यह ता० १ फरवरी से ता० १० नवम्बर तक १० बजे से ५ बजे तक और ता० १६ नवम्बर से ३१ जनवरी तक १० बजे से ४ बजे तक हर रोज आम लोगों के लिए खुला रहता है, पर विचारियों के सिवा दूसरे लोगों के लिए बिके और शूक्र को बन्द रहता है । ता० १ मई से १५ मई तक और ता० १ नवम्बर से १५ नवम्बर तक सफाई और मरम्मत के लिए बन्द रहता है । बन्द के दिनों में अफिसरों में से एक के पास दरखास्त करने पर आदमी बरामदों में जासकता है ।

अजायबखाने का अगवास चौरंगी रोड पर ३०० फीट लम्बा है और इसकी चौड़ाई सदर प्लैट की तरफ २७० फीट है । अगवास की तरफ का दो मंजिला मकान बहुत ऊंचा है । दो वाजुओं में, जो आगे निकले हुए हैं, और मध्य के पेशगाह में उमड़े तंबे लगे हैं । एक चौड़ी सीढ़ी, जो दोनों ओर खुली हुई है, पेशगाह में ऊपर तक चली गई है । एक कमरे में, जो ८० फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा है, मेहराबों के ३ कतार डबल सीढ़ी के घर में चले गये हैं, जहां से दहिने और बाएँ ऊपर को सीढ़ी गई हैं ।

अजायबखाने का आंगन १८० फीट लंबा और १०५ फीट चौड़ा है, जिसमें घास, पेड़ और पौधे लगे हैं । आंगन के चारों बगलों पर मेहराबदार सायबान हैं, दो तले पर भी चारों तरफ बरंदा है । पूर्व और पश्चिम ग्यारह ग्यारह और उत्तर और दक्षिण सात सात मेहराबियां बनी हैं ।

इमारत के चारो कोनों के मध्येक कमरा ४४ फीट लंबा और ४० फीट चौड़ा है । अजायबखाने की इमारत सन् १८७५ ई० के पीछे तैयार हुई । इसके बनाने में १ लाख ४० हजार पाउण्ड खर्च पड़ा ।

इसमें संपूर्ण एसिया की अद्भुत और अनोखी चीजें भरी हैं । जल और घल के अद्भुत धातु, वनस्पति तथा नीच कृत्रिम और स्वभाविक दोनो प्रकार के लाकर के इसमें रक्खे गए हैं । फल, फूल, पेड़ों की टहनिया, मरे हुए जीव जन्तु और नए नए भांति के पक्षी, कीट, पतंग इत्यादि शीशों के भीतर ऐसे ढक्के के अर्क देकर रक्खे गए हैं कि सब ताजे और जीवित जान पड़ते हैं । इनके अलावे इसमें भांति भांति के अन्न, वस्त्र, बर्तन, पसारी की चीजें, इत्यादि के नमूने रक्खे गए हैं । इसके समान अजायबखाना भारतवर्ष में दूसरा नहीं है ।

पहले नीचेवाले कमरों में चारो तरफ देख कर तब प्रधान सीढ़ी से चढ़ कर ऊपर के मंजिल में चारो तरफ देखना चाहिये ।

नीचे के दक्षिण पश्चिम और दक्षिण के कमरों में अशोक के समय की बौद्ध मूर्तियां, जो २००० वर्ष से पहले की हैं, एक बहुत पुराना तोरन (फाटक), पटने की दो बड़ी मूर्तियां; बुध गया से लाये हुए अशोक के समय के कई स्तंभ के नमूने और पत्थर के हिस्से और मथुरा की मंगतराशी और लेख हैं । कमरे के दक्षिण खिड़की के आगे ६ फीट ऊंची बुद्ध की मूर्ति है । दरवाजे के बाएँ गुप्त वरामदे में दीवार के आस पास बुद्ध सम्बन्धी मंगतराशी का उत्तम सिलसिला है । दूसरा गुप्त-वरामदा १६० फीट लम्बा और ४० फीट चौड़ा है । (गुप्त राजाओं ने चौथी और पांचवीं शतक में उच्चरी हिन्दुस्तान में राज्य किया था) । बौद्ध सम्बन्धी मंगतराशी दहिने और ब्राह्मण सम्बन्धी औ जैन सम्बन्धी बाएँ तरफ है । उड़ीसे के हिन्दु के मन्दिरों की मंगतराशी के नमूने बाँ सिलसिला बाएँ की दीवार में लगा है । दूसरा सिलसिला बम्बे का है । बनारस के पास के सारनाथ से, जो चीज आई हैं, वह अधिक मशहूर हैं । एक मार्गुल का टुकड़ा है, जिससे बुद्ध का जन्म, शिक्षा और मोक्ष जाहिर होता है । वरामदे के सामने ब्राह्मण सम्बन्धी मंगतराशी है, जिनमें से बहुतरे कालिजर, बिहार, गौड़, बटक, इत्यादि से और चन्द्र जावा टापू से आये हैं ।

धीच में शीशे लगे हुए बाक्स हैं, जिनमें से एक में अनेक भाँति के घेस कीमती पत्थर और दूसरे टुकड़े हैं, जो सन् १८८१ में मुद्दगया के मन्दिर के पास उसको खोदते समय मिले थे। दूसरो में पुराने समय के कुम्हार के घरतन और धात और पत्थर के औजार हैं। एक दूसरे बाक्स में पत्थर की कुल्हाड़ी और (लड़ाई वाला) पत्थर का हथियार, जो पुराने समय में हिन्दुस्तान में बनते थे, हैं। चौथे वरामदे में पत्थर पर लेख, बहुतैरी किसिम की इल्मी इमारतें और एफ्रिका के इजिप्ट देशका एक मोमी भी हैं। मोमी मुर्दे की उस लाशको कहते हैं, जिसको इजिप्ट के लोग मोम आदि मसाले देकर ऐसी तरकीब से रखते थे कि वह सड़ती गलती नहीं।

पूर्व के कमरे में लम्बे बाक्सों में समुद्र के जानवरो के नमूने हैं। उनमें से चन्द समुद्र के घास पात के समान मालुम होते हैं, पर ये सब मरे हुए जानवर हैं। बाएँ तरफ और धीच के टेबुल बाक्सों में सीप, घोघा, कौड़ी, बड़ा केकड़ा, हर किसिम की तितलियाँ, उचुरुंग, कीड़े, रेशम के कीड़े, बिच्छी, इत्यादि मृत जानवर हैं।

उत्तर के कमरे में हर किसिम के धातु और पत्थर के टुकड़े इत्यादि हैं और पश्चिमोत्तर के कोने के कमरे में बहुत नकशे टंगे हुए हैं।

सीढ़ीघर के सिर के पास बर्षवान के महाराज महतावचन्द बहादुर की (सन् १८७७) दी हुई महारानी विक्टोरिया की मार्बुल की प्रतिमा है, जिसके पीछे पेशगाह के ऊपर ५९ फीट लम्बा, ५० फीट चौड़ा और ५० फीट ऊँचा लाइवैरी का बड़ा हाल है, जिसमें सन् १८८७ ई० में करीब १३००० जिल्द पुस्तकें थीं। लाइवैरी के पास के वरामदे में किडे, मकोडे के नमूने हैं।

दक्षिण के वरामदे में मरे हुए चिड़ियों का झून्ड है। इससे दक्षिण-पूर्व के कमरे में सूखे हुए कीड़े मकोडे हैं। वहाँ चमड़े और मांस निकालकर जानवरों की समूचा देह की हड्डियाँ जैसे के तैयै खड़ी की गई हैं, जिनमें एक बड़ी कच्छू की हड्डी है।

पूर्व के कमरे में बाघ, सिंह, गेंडा, हरिन, भैंसे, बिली, नेवला, खरंगोस, गद्धे, आदि दूध पिलानेवाले जानवरों की देह के सिलसिले उत्तम तरह से लगे हैं।

समुद्र के एक मही मच्छ की तमाम हड्डी ४१ फीट लम्बी है । एक बड़ा मच्छ का जवरा है, जो मच्छ १०० फीट लम्बी होगी । ११ फीट ऊँचे एक हाथी की संपूची हड्डी है । दीवारों में बहुत किसिम के जानवरों की सींगें लटकाये गये हैं । वहाँ शिवालिक पहाड़ की एक बिल्ली शेर के समान बड़ी है । किड़ों के दरमियान एक मगर १८ फीट और एक साँप १८ फीट लम्बा है । पूर्वोत्तर के कमरे में खास करके मछलियाँ हैं ।

अजायब घर के पूर्वोत्तर के कोने से पूर्व उसमें लगा हुआ तीन मंजिला नया अजायब खाना बना है, जिसकी दीवार की लम्बाई सदर प्लीट के अगवास पर २५६ फीट और छत की ऊँचाई ८४ फीट है । उस इमारत और उसके असबाब में ३ लाख रुपया खर्च पड़ा है ।

नीचे के मंजिल में हिन्दुस्तान की अनेक कोमों की जिन्टे के समान मूर्तियाँ, उनकी पूजा की चीजें, पोशाक, जेवर, हथियार, काम का औजार, वर्तन, इत्यादि सामान हैं ।

दूसरे मंजिल में बहुत नफीस कारिगरी की चीजें; असली और नकली जवहरियों की चीजें; चान्दी, पीतल और नाथे की चीजें; कारचोवी और फुलकारी का काम, कुम्हार की बनाई चीजें; बॉर्निस किया हुआ काम; लकड़ी, हाथीदाँत और मार्बल काटकर बने हुए असबाब, सींग के असबाब, चमकीले हथियार; चढ़ाई, दौरी, इत्यादि सामान हैं ।

इनके अलावे अजायबखाने में अनेक भाँति के कपड़े, लैस कारचोवी के काम, लकड़ी और हाथीदाँत की बनी चीजें, कुम्हार की बनाई चीजें, घातकी दस्तकारी, हिन्दुस्तान के मैदान और पहाड़ के बसनेवाले खास कोमों अर्थात् कोल, मंथाल, मुंदा, जाट, राजपूत, ब्रह्मा के कैरेन, पेण्डमन के नेशाइट, इत्यादि की प्रतिमूर्तियाँ, रंग, तेछ, तेल के बीज, दवा, मूत, सींशने वाली चीजें, इत्यादि हैं ।

गवर्नमेंट हौस (बड़े लाह की कोठी)—यह टेलीग्राफ आफिस से दक्षिण पश्चिम है । इसके दक्षिण २ मील तक सिले का मैदान है । ६ एकड़ के बाग के उत्तर भाग में यह खड़ा है । बाहर के घेरे में उत्तर और

दक्षिण दो दरवाजे बने हैं; पूर्व और पश्चिम दो दो उमड़े फाटेक के रास्ते हैं। गवर्नर जनरल मार्किंस आफ वेल्सली के हुकुम से सन् १७९९ ई० में इसकी नेव पड़ी और सन् १८०४ में १३ लाख रुपये के खर्च से यह तय्यार हुआ।

गवर्नमेंट हाँस को ४ बाज्र हैं। इसका बड़ा दरवाजा उत्तर है। प्रवेश करने पर देवदी के भीतर दहिने मार्किंस आफ वेल्सली की उजले-मायुल की प्रतिमा देख पड़ती है। खाना खाने के कमरे में सफेद मायुल का फर्श लगा है। एक धोनरूम याने शाहीतख्त का कमरा है। मुलतान टीपू का शाहीतख्त इसमें रक्खा गया, इस लिये इसका नाम धोनरूम पड़ा। इनके अतिरिक्त नास्ता का कमरा, कौन्सिल-कमरा इत्यादि हैं। खाना खाने के कमरे और उसके पास के कमरों के ऊपर नाच घर है। कमरों में हिन्दुस्तान के बहुतेरे गवर्नर जनरलों की और दूसरे बहुतेरे शरीफों की तस्वीरें हैं।

दक्षिण के दरवाजे के सामने सिक्ख लड़ाई से लाई हुई पीतल की एक उत्तम तोप है, जिस के दोनों तरफ मेरंगापाटन की लड़ाई से लाई हुई २ पीतल की तोपें हैं, जिन पर शेरों के सिर और पंजे अजब तरह से घने हैं और उत्तर के दरवाजे के सामने एक तरफ कायुल की लड़ाई से लाई हुई और दूसरी ओर हैदराबाद से लाई हुई पीतल की तोपें हैं।

ट्रैजरी—यह गवर्नमेंट हाँस से पश्चिम बहुत बड़ी तीन मंजिली इमारत है, जिस के कई बाज्र बने हैं। इस का काम सन् १८८२ ई० में आरंभ होकर सन् १८८४ में समाप्त हुआ।

लार्ड हार्डिंग की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हाँस के पूर्व-दक्षिण तीन कोनी जमीन पर मिले हुए धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार है। प्रतिमा और घोड़े की बनावट उत्तम है, जो आम लोगों के चन्ने से बने हैं। लार्ड हार्डिंग सन् १८४४ ई० से १८४८ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे।

लार्ड लारेंस की प्रतिमा—गवर्नमेंट हाँस के दक्षिण-दरवाजे के पास मिले हुए धातु से बनी हुई पूरी लम्बी इनकी प्रतिमा खड़ी है। लार्ड लारेंस सन् १८६४ ई० से १८६९ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे।

लार्ड केनिंग की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हाँस के पश्चिम-दक्षिण तीन कोनी जमीन पर मिले हुए धातु से बनी हुई घोड़े पर सवार है । लार्ड केनिंग सन् १८५६ ई० से १८६२ तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे ।

सर इस्टुआर्ट काल्विन की प्रतिमा—यह गवर्नमेंट हाँस के पश्चिम सड़क के पास तीन कोनी जमीन पर खड़ी है । प्रतिमा मार्बुल की बनी हुई पूरी लंबी है । सर इस्टुआर्ट काल्विन सन् १८८७ से १८९० ई० तक बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर थे ।

टाउनहाल—गवर्नमेंट हाँस से पश्चिम और हाईफोर्ट से पूर्व टाउन हाल है, जिस को सन् १८०८ ई० में कलकत्ते के वासिन्दों ने ७० हजार पाउंड के खर्च से बनवाया (इस समय १६ रुपये का एक पाउंड होता है) । इस में आम लोगों की कपीटी होती है ।

यह इमारत दो मंजिली है । गाड़ी खड़ी होने का घरंदा उत्तर तरफ बना है, जिसमें गोलेकार बहुत मोटे और ऊँचे ८ स्तंभ लगे हैं । दक्षिण के कोने में कूच-विहार की वर्तमान महारानी के पिता केशवचन्द्रसेन की बड़ी तस्वीर और अन्य लोगों की मार्बुल की ४ आधी मूर्तियाँ और पूर्व तथा पश्चिम दो मंजिले पर जाने की सीढ़ियाँ हैं । दोनों सीढ़ियों पर मार्बुल की दो दो आधी प्रतिमा देखने में आती हैं । कमरे के दक्षिण १७२ फीट लम्बा और ६५ फीट चौड़ा बड़ा हाल (कमरा) है, जिसमें गोलेकार बीस बीस तबलाओं के दो कक्ष हैं । हाल के मध्य में उत्तर तरफ महाराज रामनाथ टैगोर पहादुर सी. एस. आई. की मार्बुल की प्रतिमा मार्बुल की कुर्सी पर बैठी है और पश्चिम किनारे पर हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (१७८६-१७९३) मार्किंस आफ कानेवालिस की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है । इस हाल के दक्षिण एक दक्षिण रुख का दालान है, जिसमें हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (१७७४—१७८५) वारेन हेस्टिंग की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है, जिसके दोनों पगलों पर दो छोटी प्रतिमा हैं ।

ऊपर के उत्तरवाले कमरे में, जिस में दोनों पगलों पर नीचे से सीढ़ी

गढ़ हैं, छोटी बड़ी २३ तस्वीरें और मार्बुल की ४ आधी प्रतिमा हैं, जिनमें मार्किंस आफ वेलेस्ली, महारानी विक्टोरिया, लार्ड मेटकाफ, लार्डलेक्, द्वारिकानाथ टैगोर इत्यादि की तस्वीरें और राजा सर राधाकृत बहादुर, प्रसन्नो कुमार टैगोर इत्यादि की प्रतिमा हैं । इस कमरे के दक्षिण नीचे वाले बड़े हाल के ठीक ऊपर नीचे ही के समान हाल है । इस में मानिकजी रस्तमनी, सर विलियम ग्रे, क्लैव इत्यादि की ६ तस्वीरें हैं । हाल में दक्षिण नीचे के दालान के ऊपर दोनों कोनों पर ४३ फीट लम्बे और २१ फीट चौड़े दो कमरे हैं और मध्य में ८२ फीट लम्बा और ३० फीट चौड़ा एक कमरा है, जिस में २ तस्वीरें लगी हैं ।

नीचे का मंजिल २३ फीट और ऊपर का २९ फीट ऊँचा है । नीचे के मंजिल में मार्बुल का और ऊपर के मंजिल में टीक की लकड़ी के तख्तों का फर्श है ।

लार्ड विलियम वेंटिक की प्रतिमा—टाउन हाल के सामने दक्षिण पूरी लम्बी, मिले हुए धातु से बनी हुई, इन की प्रतिमा खड़ी है । यह सन् १८२८ से १८३५ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे ।

हाईकोर्ट—टाउनहाल से थोड़ा पश्चिम नई हाईकोर्ट है, जो सन् १८७२ ई० में तैयार हुई । इस जगह पर पुराना सुप्रीमकोर्ट और ३ मकान थे ।

बड़ा चौगान (अंगनई) के पूर्व और पश्चिम बगलों पर दो मंजिली और उत्तर और दक्षिण तीन मंजिली इमारत हैं । चौगान पूर्व से पश्चिम को लंबा है । इसके उत्तर और दक्षिण सत्रह सत्रह और पूर्व और पश्चिम नव नव मेहराबियाँ बनी हैं, तीन तरफ एकहरा और दक्षिण तरफ दोहरा बरंदा है । बरंदाओं के पीछे कमरे हैं । चौगान में फुलवाड़ी और इस के मध्य में कले के पानी का एक छोटा झील है । प्रधान दरवाजा दक्षिण, आम लोगों की गाड़ी के (३) दरवाजे पूर्व और पीछे के (३) दरवाजे पश्चिम हैं ।

उत्तर को छोड़ कर तीन तरफ ऊपर जाने के लिये सीढ़ियाँ बनी हैं । प्रधान सीढ़ी दक्षिण के टावर में है । उसी जगह सर एडवार्ड हाइड ईष्ट की प्रतिमा देखने में आती है ।

दूसरे मंजिल में ७ कचहरियाँ, जज लोगों और वारिष्ठों के कमरे, जज लोगों की लाइब्रेरी, और धार लाइब्रेरी, वकीलों के कमरे, और एटर्नियों के कमरे इत्यादि हैं । दूसरे मंजिल में चारों ओर चौगान की तरफ और बाहर दक्षिण तरफ तीनों मंजिल में बरंटे हैं ।

दक्षिण-पश्चिम के कोने में चीफ जस्टिस की कचहरी में तीन चीफ जस्टिसों की तस्वीरें हैं । दक्षिण पूर्व के कोने के पास के मेशन जज फी कचहरी में तीन अद्वरेजों की बड़ी तस्वीरें हैं, जिनमें २ चीफ जस्टिस थे । अपील के दूसरे दर्जे की कचहरी में, जो प्रधान सीढ़ीघर से पश्चिम है, हाईकोर्ट के पहला देशी जज कश्मीर के रहनेवाले शंभुनाथपण्डित की बड़ी तस्वीर है । पूर्व वारिष्ठों की लाइब्रेरी और पूर्व के कोने में एटर्नियों की लाइब्रेरी है । प्रायः सब कचहरियाँ दक्षिण तरफ हैं ; उनमें और उन के आगे के बरंटे में वारिष्ठ, वकील और साधारण लोगों की भीड़ रहती है । कचहरियों में सर्वसाधारण लोगों के बैठने के लिये बहुत सी बेंच और कुर्मियाँ रक्खी हुई हैं ।

ऊपर वाले तीसरे मंजिल में टैक्सिंग आफिसर, क्लार्क आफ दी काउन, कोर्ट रिसीवर, इनसाल्वेंट कचहरी का प्रधान क्लार्क, लीगल रिमेंट्रेसर और गेडवोकेट जनरल के चेम्बर आदि के आफिस हैं ।

इस समय हाईकोर्ट में एक चीफ जस्टिस और १२ जज हैं, जिनमें २ हिंदू, १ मुसलमान और बाकी सब अद्वरेज हैं । इस हाईकोर्ट के आधीन बंगाल, बिहार, ऊड़ीसा, छोटा नागपुर, और आसाम है, जो २००५४७ वर्ग मील में फैलते हैं और उनमें ७६८२३८२० आदमी रहते हैं ।

हाईकोर्ट में इन्साफ के काम इसदाई और अपील २ हिस्सों में तकसीम हैं । इसदाई में केवल कलकत्ते शहर के मोकदमे होते हैं और अपील में फौजदारी और दीवानी मोकदमें, अपील और निगरानी होकर जिले और दूसरी मातहत की कचहरियों से आते हैं, हाईकोर्ट की इसदाई कचहरी की अपील भी इसी में होती है । कचहरी बेंचों में तकसीम हैं । हर एक बेंच में एक, दो या इससे अधिक जज रहते हैं । जिस बेंच में एक जज है, उसकी

अपील अधिक जजों की वेंच में होती है। सुप्रीमकोर्ट और सदर दीवानी अदालत दोनों मिल कर सन् १८६२ ई० में हाईकोर्ट बनी।

लार्ड नार्थब्रूक की प्रतिमा—यह सन् १८७२ से १८७६ ई० तक हिंदुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय थे। हाईकोर्ट के दक्षिण के खास दरवाजे के सामने पायसतून पर इनकी पूरी लंबी प्रतिमा है, जो आम लोगो के चन्दे से बनी थी। पायसतून पर अङ्गरेजी, बंगला, पारसी, और हिन्दी लेख हैं।

बंगाल बंक—हाईकोर्ट से पश्चिम हुगली गंगा के किनारे पर कलकत्ते की उत्तम इमारतों में से बंगाल बंक की इमारत है। इसका अगवास गंगा की ओर है। इसकी छत और दीवारों में सुनहरी मीनाकारी का काम बना है और इसके फर्श में काले और सफेद मार्बुल के तख्ते जड़े हुए हैं। यह बंक सन् १८०९ ई० में कायम हुआ था। इसमें परामिसरी नोट इत्यादि का सरकारी काम होता है।

एडेनगार्डन—बंगाल बंक से दक्षिण बावूघाट के पास एडेनगार्डन है। इस बाग में हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (सन् १८३६ से ४२ तक) लार्ड आकलैंड की बहिन मिस एडेन की प्रतिमा खड़ी थी, जो थोड़े दिनों से हाईकोर्ट के पास की सड़क पर रक्खी गई है। यह स्थान सुबह और शाम को टहलने के लिये बहुत खुशनुमा है। इसमें लम्बी चौड़ी जमीन पर घास जमाई गई है, घुमाव के रास्ते बने हैं; जगह २ फूल और झाड़ लगे हैं, रात में रोशनी होती है और अच्छे मौसिम में शाम को सैकड़ों आदमी टहलते हैं। बाग के पश्चिम हिस्से में नियत दिन के शाम को एक सुन्दर अठपहले बगले में अङ्गरेजी बाजा बजते हैं। बाग के पास कलकत्ते के क्रिकेट की जमीन है। एक जगह पानी के बगल पर एक बरमिज पैगोडा (ब्रह्मा देश का मन्दिर) खूबसूरती के साथ खड़ा है, जो सन् १८५४ की ब्रह्मा की लड़ाई के पीछे ब्रह्मा के शहर प्रोम से लाया गया और सन् १८५६ में यहां बनाया गया। इसके पाँच खंभों के चार कत्तारों के ऊपर अजब तरह से एक के ऊपर दुसरे, चारों तरफ से क्रम से छोटे होते हुए ८ छप्पर हैं।

लार्ड आर्कलैंड की प्रतिमा—यह सन् १८३६ से १८४२ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे । इनकी धातु की प्रतिमा एडेनगार्डन के उत्तर फाटक के सामने खड़ी है ।

सर विलियम की प्रतिमा—यह जंगी जहाज की फौज के कमांडर थे, इनकी सफेद मार्बुल की प्रतिमा एडेनगार्डन के दक्षिण हुगली नदी के किनारे पर खड़ी है ।

वाल्डियरों की इमारत—टाइकोट से दक्षिण स्वीमिंगवाय (तैरने का हम्माम) और एडेन गार्डन के बीच में गंगा की तरफ मुख करके बलकचे के वाल्डियरों की इमारत खड़ी है । हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल और वाइसराय लार्ड लैंसडौन ने सन् १८८९ ई० की पहली अप्रैल को इसकी नेव का पत्थर रखवा । सन् १८९० की फरवरी में चन्डे के खर्च से इमारत तैयार हुई । इमारत और इसके सामान में करीब ८०००० रुपया लगा है । इसमें ५०००० हथियार आदि सामान रह सकते हैं और एक बहुत बड़ा कमरा है, जिसमें पांच छः सौ मेम्बर, जिनका नाम लिखा है, बैठते हैं ।

तैरने का हम्माम—इसको सन् १८८७ में लेफ्टिनेंट गवर्नर ने खोला । रेजिष्टर में ४०० से अधिक नहानेवाले आदमियों का नाम लिखा है । इमारत का काम बहुत अच्छा है । इसकी छत लोहे की है । हम्माम १०० फीट लम्बा और ३४ फीट चौड़ा है । इसके पानी की गहवाई ६ फीट से ९ फीट तक बदला करती है । महीने में एक दफे पानी निकाल कर हम्माम साफ कर दिया जाता है । असवार पहनने के कमरे टीक की छकड़ी के बने हैं । हर दर्जे और हर कोम के लोगों को इस हम्माम में नहाने का समान अधिकार है ।

छोटी अदालत—डेयर प्लोट के उत्तर बगल पर पोष्ट-आफिस से दक्षिण पुराने पोष्ट आफिस की जगह पर छोटी अदालत की तीन मंजिली इमारत है । सन् १८७२ ई० में इसका काम आरंभ हुआ; १८७४ में यह खुली । यह ३३० फीट लम्बी और औसत में ६० फीट चौड़ी है । इसके दर

एक मंजिल में उत्तर और दक्षिण बरंटे हैं। नीचे के मंजिल १८ फीट और दूसरे और तीसरे मंजिल पचीस पचीस फीट ऊंचे हैं। आम लोगों के जाने का दरवाजा बंकहाल-स्ट्रीट में पूर्व तरफ है। ऊपर के मंजिलों की कचहरियों में जाने के लिये ३ चौड़ी सीढ़ियां बनी हैं। इस समय छोटी अदालत में ५ जज रहते हैं। देशी जज को छोड़ कर दूसरे संपूर्ण जज और रजिस्ट्रार वारिष्टर हैं। इस अदालत में २००० रुपये तक करजे के मोकदमे देखे जाते हैं।

मेटकाफ हाल—यह हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल (सन् १८३६ ई०) लार्ड मेटकाफ के यादगार में डेयर स्ट्रीट और प्लेण्टरोड के मेल के पास छोटी अदालत से पश्चिम दरिया के किनारे पर सन् १८४४ ई० में चन्टे के खर्च से तैयार हुआ। हाल दो मंजिला है, जिसके चारो तरफ गोलेकार बड़े बड़े २८ खंभे लगे हैं। प्रधान दरवाजा पूर्व है। नीचे के मंजिल खेती और बागवानी की सोसाइटी (मजलिस) के दखल में है और ऊपर वाले में कलकत्ता-पब्लिक लाइब्रेरी (आम पुस्तकालय) है। दरवाजे के सामने लार्ड मेटकाफ की आधी प्रतिमा देखने में आती है।

डलहौसी स्केयर और लालदीगी-टेलीग्राफ आफिस के उत्तर और करैसी बंक से पश्चिम डलहौसी स्केयर है। इसके मध्य में एक बड़ा तालाब है, जिसके चारोतरफ सड़क बनी है और उत्तम बाग लगा है। स्केयर के चारो ओर लोहे के जंगले का घेरा; चारो कोनों पर टीन के पायखाने और दक्षिण बगल पर मध्य में इमारत के बरंटे में लार्ड हेष्टिङ्ग की मार्बुल की प्रतिमा खड़ी है। यह सन् १७७४ से १७८५ ई० तक हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल थे।

पोष्ट आफिस—डलहौसी स्केयर के पश्चिम किनारे के निकट कोयला-घाट स्ट्रीट के कोने के पास पुराने किले की जगह पर खुबसूरत बनावट का पोष्ट-आफिस है, जो ६३०५१० रुपये के खर्च से तैयार होकर सन् १८६६ ई० में खुला। इसमें ऊंचे ऊंचे २ मंजिल हैं। पूर्व और दक्षिण खुबसूरत खंभे लगे हैं। दक्षिण-पूर्व का कोन अर्ध गोलाकार है। वहां उत्तम खंभे लगे हैं और उससे होकर एक ऊंचे गोलेकार हाल में जाना होता है, जिस में लैटर बक्स है।

टेलीग्राफ आफिस—इसका काम सन् १८७३ ई० में आरंभ हुआ । यह शहर के उत्तम और बड़ी इमारतों में से एक है । इसके प्रधान हिस्से का चेहरा उत्तर ओर डलहौसी स्क्वेयर की तरफ है । इसके तीन बाजू हैं । पूर्व ओर १२० फीट ऊंचा एक टावर बना है । पूर्व के बाजू का रोख पुराना कोर्ट-हौस स्ट्रीट की तरफ है । दूसरा बाजू पश्चिम ओर तीसरा बीच में है । इनमें इमारत का प्रधान हिस्सा और पूर्व का बाजू तीन मंजिला है और दूसरे दोनों बाजू दो मंजिले हैं । यह इमारत इंटे से बनी हुई ७० फीट ऊंची है । इसमें उत्तर तरफ मध्य में आमलोंगों के आमादरफत का दारवाजा बना है ।

इस इमारत में बंगाल डिविजन का सुपरिंटेंडेंट डाइरेक्टर जनरल, डिप्टी डाइरेक्टर जनरल, ऐमिस्टेंट सुपरिंटेंडेंट, टेलीग्राफ के माष्टर, आदि बहुत अफसर रहते हैं और यह टेलीग्राफ का प्रधान आफिस है ।

करेंसी आफिस—यह डलहौसी स्क्वेयर के पूर्व, पश्चिम मुख की ऊंची इमारत है । इसके नीचे के मंजिल में करेंसीनोट की खरीद बिक्री और छोटे बड़े नोटों की परस्पर बदली होती है । कोई आदमी हो घोरी गये हुए नोटों के नम्बरों से मिलाकर उसकी नोट के बदले में रुपये या रुपये के बदले में नोट मिलजाता है ।

दरवाजे पर लोहे का खुबसूरत फाटक लगा है । मध्य का हाल बहुत बड़ा है । प्रवेश करने वाले के बाएं नये नोटों के फारमों के सन्दूकों का कतार है, जिनमें लाम्बी किरौड़ों रुपये के नोट रहते हैं । चांदी किले के तहखाने में रहती है, किन्तु जरूरी काम के लिये यहां के तहखाने में रक्खी जाती है । ऊपर वाले कमरे खुबसूरत हैं, जिनमें इटेलियन मार्बुल के फर्श लगे हैं ।

यह इमारत पहले आगरा और माष्टरमैन के बैंक के लिये बनी थी । उसके काम बंद होजाने पर सरकार ने इसको खरीद लिया ।

आगरा बैंक—करेंसी आफिस के पूर्व उसमें लगा हुआ आगरा बैंक की तीन मंजिली खुबसूरत इमारत है । इसके नीचे के मंजिल में दक्षिण पूर्व के कोने के पास बैंक का आफिस है । तीन मंजिले पर बैंक का अफसर रहता है । मैं इसी बैंक में ठिका था ।

इस बंक का हेड आफिस लन्दन में है, जिसकी शाखाएँ मदरास, बम्बे, आगरा, करांची, लाहौर, रंगून, मंगाई और एडिम्बरा में हैं ।

पशु कुलेश निवारिनी सभा—इसका आफिस राधावाजार प्लीट पर १११ नंबर का है । यह सभा सन् १८६२ में कायम हुई; तबसे सन् १८९० ई० तक इसने एजेंटों द्वारा पशुओं को कुश देने वाले ८३६९३ आदमी की सजा हो चुकी है । पशु कुश निवारन के लिये पहले सन् १८६९ में एकट १ और सबसे पीछे सन् १७८० में एकट ११ पास हुए । इस समय इसका सभापति आनरेबुमिष्टर जस्टिस नरीश है । सभा का खर्च चन्दे और जुर्माने से चलता है । सभा की तरफ से जानवरों के पानी पीने के लिये ३ तालाब और सड़कों पर जगह जगह ४९ चरन बने हैं ।

बंगाल सेक्रेटरीयट (कंपन्ती वारक)—यह डलहौसी स्केयर के उत्तर सड़क के बगल पर तीन मंजिली इमारतों का सिल सिला है, जिसके दक्षिण का अगवास ६६० फीट लम्बा है । इमारतों के बट्ठा और तबदील करने में १० लाख रुपये खर्च पड़े हैं । इसमें बंगाल सेक्रेटरीयट, जुडिसियल पोलिटिकल, रेवीन्यू एजुकेशनल, पब्लिक वर्क, इरीगेशन, आदि आफिसें बने हैं ।

कष्टम हौस—डलहौसी स्केयर के पश्चिमोत्तर के कोने के पास प्लेड रोड पर सन् १८२० ई० का बना हुआ कष्टम हौस है, जिसमें आमदनी और रफ्तनी माल का महसूल लिया जाता है । इसमें लगे हुए बहुत गोदाम हैं ।

सन् १८९०—९१ ई० में यहाँ के बन्दरगाह में ३३९६१३७२२ रुपये का माल आया और बन्दरगाह से ४३७०९०६६१ रुपये का माल गया और हर किसिम की रफ्तनी से १८६८००६ रुपया और आमदनी से २६३८९१६ रुपया और निमक से २१९६८१५४ रुपया महसूल आया ।

पोर्ट एंड शिपिंग आफिस—गवर्नमेंट ने सन् १८९० ई० में कष्टम हौस और पोर्ट कमिश्नर के आफिस के बीच में इसको बनवाया । सन् १८९१ की पहली जनवरी से इसमें पोर्ट अफसर का काम आरंभ हुआ और शिपिंग

माष्टर और पोर्ट का डेल्टा अफसर रहने लगे । वन्दरगाह सम्बन्धी काम के योग्य यह उत्तम आफिस है ।

बंगाल वराडेड वेयर हौस—यह केनिङ्ग-प्रीट से पश्चिम क्लैव प्रीट में है, जो सन् १८३८ ई० में कायम हुआ । यह आफिसों का कक्ष है और कम्पसियल बिल्डिंग कहलाता है । जो चीजें बाहर से आती हैं और जिन पर महसूल लगता है वे इसके जिन्सखाने और गोदामों में जमे होती हैं । बाहर जाने वाली चीजों के रहने का यहां काम पड़ता है ।

निऊ सिनेगग—यह केनिङ्ग-प्रीट पर यहूदी लोगों की मजहबी पूजा की इमारत है, जो सन् १८८४ ई० में खुली । यह १४० फीट लम्बी और ८२ फीट चौड़ी है । इसके तबे और दरवाजे इत्यादि में मार्बुल के तैरते लगे हैं और सोनहुले काम हैं । गुम्बज की शकल की छत में नीले रंग पर सोने की सितारे बनी हैं । इसका त्वास हिस्सा ९२ फीट लंबा, ३३ फीट चौड़ा और ५२ फीट ऊंचा है । फर्श मार्बुल का लगा है । एक पुर्ज १४० फीट ऊंचा है, जिसके ऊपर चढ़ने के लिये भीतर सीढ़ियां हैं । इसमें एक घड़ी लगी है, जिसके चारों तरफ ४ डायल हैं ।

इंष्ट इण्डियन रेलवे कम्पनी का आफिस—यह कलम हौस से उत्तर, फेयर्ली ग्रेस में दक्षिण तरफ ४०० फीट लम्बा और १८० फीट चौड़ा है । इसके बनाने में लगभग ३२०००० रुपया खर्च पड़ा था । इसमें पत्थर का काम बहुत है । प्रधान आफिस का फर्श मार्बुल से बना है ।

टकसाल घर—यह हवडा के पुल से २०० गज उत्तर प्लेण्डरीड पर सड़क के पूर्व बगल की बड़ी जमीन पर है । यहां चान्दी और ताम्बे की दो टकसाल हैं । चान्दी की टकसाल की उत्तम इमारत सन् १८३१ ई० में खुली । त्वास इमारत से दक्षिण टकसाल के अंजन के लिये पानी का तालाब बना है । ताम्बे की टकसाल सन् १८६५ ई० में खुली । चान्दी की टकसाल के मध्य के चौगान में सोना चान्दी के तहखाने हैं । ताम्बे और चान्दी की टकसाल के बीच की बड़ी जमीन पर लोहा और पीतल गठाने का घर और बड़ों और छोहरों का कारखाना है ।

सिक्के बनाने के लिये, चान्दी और सोना जिस में $\frac{11}{12}$ या इस से अधिक निराला हो, बंक और सौदागरों से लिया जाता है। सोना एक महीने में १ हजार तोले से अधिक नहीं लिया जाता। सोना चान्दी आदि धातु ३ घंटे आग पर गलने पर सांचे में ढाले जाते हैं; पीछे जांच होकर उसके सिक्के तय्यार होते हैं।

टकसाल में नीचे लिखे हुए सिक्के बनाए जाते हैं,—हिन्दुस्तान-गवर्नमेंट के लिये सोने के मोहर, चान्दी के रुपये, अठनी, चौअनी, दोअनी और ताम्बे के पैसे, आधे पैसे और पाई।

अलवर-राज्य के लिये चान्दी के रुपये।

बीकानेर-राज्य के लिये चान्दी के रुपये।

धार-राज्य के लिये ताम्बे के पैसे, आधे पैसे और पाई।

देवास-राज्य के लिये ताम्बे के पैसे और पाई।

सिलोन-गवर्नमेंट के लिये ताम्बे के ५ सेंट, सेंट, आधा सेंट और चौथाई सेंट।

पूदुच-गवर्नमेंट के लिये ताम्बे के सेंट, आधा सेंट और चौथाई सेंट।

इम्पीरियल ब्रिटिश ईष्ट एफ्रिका के लिये ताम्बे के पैसे।

इन के अतिरिक्त फौजी अफसर और सिपाहियों तथा कालिज और स्कूल के विद्यार्थियों को इनाम देने के लिये तगमा भी यहां बनते हैं।

जान पड़ता है कि कलकत्ते की टकसाल धुनियां के सब टकसालों से षड़ी है। ताम्बे और चान्दी के करीब १० लाख सिक्के इसमें एक दिन में तय्यार हुए हैं।

जो आदमी टकसाल देखना चाहे उस को गुरुवार को टकसाल देखने के लिये पहिलेही मंगल के दिन मिंट के माष्टर के पास दरखास्त करना चाहिये। ५ आदमी से अधिक को एक साथ जाने की इजाजत नहीं मिलती और १० पास तक मिलता है। बीके के सिवा दूसरे दिन के लिये भी मिंट के माष्टर खास पास देते हैं। मिंट देखने का उत्तम समय ११ बजे से १ बजे तक है। उस समय गली हुई चान्दी ढाली जाती है।

जैन मन्दिर—माणिकतल्ले के बाग में राय बदरीदास मुकीम बहादुर का जैन मन्दिर है; यह कलकत्ते के सब मन्दिर और मसजिदों से बहुत सुन्दर है। मन्दिर एक सुन्दर बाग में बना है। बाग में तालाब, सड़क, चबूतरा और मकान बने हुए हैं। जैनों की सालाना यात्रा बड़े खर्च और धूमधाम से कलकत्ते की सड़कों से निकलती है।

मदनमोहन जी का मन्दिर—यह प्रसिद्ध मन्दिर बाग बाजार में है। हजारों आदमी इस में दर्शन को आते हैं। जन्माष्टमी और रथयात्रा के दिनों में यहां बड़ी भीड़ होती है।

सत्यनारायण जी का मन्दिर—बड़ी बाजार की तूलापट्टी में सत्यनारायण का विशाल मन्दिर है। यहां नित्य कलकत्ते के बहुत लोग दर्शन को आते हैं।

कलकत्ते की शहर तलियां—बोधीसपरगने जिले के मजिष्टर और कलेक्टर के आधीन कलकत्ते की शहरतलियां २३ वर्ग मील में फैलती हैं, जिनमें नीचे लिखी हुई प्रधान हैं—

काशीपुर—शहर से उत्तर काशीपुर एक गांव है, जहां सरकारी तोप धनने की कल, चीनी के कारखाने और अमीरों के कई बिले (मुफसिल के मकान) बने हैं। काशीपुर के पास एक कृषीशाला है, जिसमें अमेरिका इत्यादि कई देशों के हर तरह के फूल, कन्द, फल, साग के बीज और पेड़ बिकते हैं और विद्यार्थियों को कृषी विद्या सिखलाई जाती है।

साततालाब—काशीपुर से उत्तर बावू स्पामाचरण मलिक का प्रसिद्ध बिला (मुफसिल का मकान) है, जिस में अच्छी चित्रकारी हुई है और खोद कर मूर्तियां बनाई गई हैं। बिले के चारों तरफ की छोटी नहर तालाबों से मिली है। नहर पर जगह जगह पुल बने हैं। साततालाब के पास सीठ घराने वाले का एक उत्तम बिला है।

चितपुर—काशीपुर से दक्षिण चितपुर गांव ३०० वर्ष से अधिक का पुराना है। यहां पूर्ण समय में चित्रकाली की आदमी बलि दिये जाते थे।

नर्कुलडंगा—चितपुर के पुल लांघने पर एक वस्ती से आगे दक्षिण तरफ नर्कुलडंगा मिलता है, जहां गैस कम्पनी का बड़ा कारखाना है ।

सियालदह—खास कलकत्ते शहर के पूर्व हेरिसन रोड के पूर्वी छोर के पास सियालदह है, जहां से 'कलकत्ता और सौथ इष्टर्न रेलवे' ३८ मील दक्षिण-पूर्व हायमंड हारवर तक और 'इष्टर्न बंगाल रेलवे' २०८ मील उत्तर सीलीगोड़ी तक गई है ।

एंटाली—यह सियालदह से दक्षिण एक बड़ी वस्ती है, जहां यूरो-पियन लोगों के बहुत मकान हैं और म्युनिस्पेल्टी का कारखाना बना है ।

वालीगंज—यहां खुला हुआ मैदान है, जिसके पास अनेक बारक अर्थात् मैनिकगृह और गवर्नर जनरल के अंगरक्षक फौज की कन्वायट की जगह हैं । मैदान के चारो तरफ और सड़कों के पास फैली हुई जमीन पर यूरोपियन लोगों के रहने के लिये उत्तम मकान बने हैं ।

भवानीपुर—कलकत्ते से दक्षिण भवानीपुर में देसी लोगों की घनी वस्ती है । इसमें धातु के वस्तु बनाने वाले बहुत से हिन्दू कारीगर रहते हैं और एक पागल खाना और जलकल के पंपका नया स्टेशन है ।

कालीजी—भवानीपुर से दक्षिण हाईकोर्ट से लगभग ४ मील दूर भागीरथी गंगा की छोड़ी हुई नाले के निकट कालीघाट नामक वस्ती में काली जी का मन्दिर है । वस्ती में पंडे लोगों ही का अधिक मकान देखने में आते हैं । यह नाला हेष्टिंग्स पुल के निकट भागीरथी में मिला है ।

काली के वर्तमान मन्दिर को सन् १८०९ ई० में बेहाला के चौधरियों ने बनवाया । मन्दिर से नाले तक पत्थर की सड़क बनी है । मन्दिर के पास महादेवजी का मंदिर है । दर्शक लोग नाले में स्नान करके कालीजी की पूजा करते हैं । दर्शकों से पैमे मांगनेवाली बहुत गरीब लड़की और स्त्रियां मन्दिर के पास रहती हैं । चैत्र और आश्विन के नवरात्रों में दर्शन और पूजा की अधिक भीड़ होती है ।

कोई कोई कहता है कि जब शिवजी सती के मृत शरीर लेकर फिरते थे तब सती के चरण की अंगुलियां यहां गिरी थीं; तभी से यह स्थान हुआ ।

यहां पहले भागीरथी गंगा की प्रधान धारा 'धी', जिस के स्थान पर वर्तमान नाला है । इसी काली के नाम से पूर्वकाल में कलकत्ता का नाम कालीकोटा था । पहले समय में यहां देवीजी को मनुष्य बली दिए जाते थे ।

टालीगंज—कालीघाट से दक्षिण टालीगंज में चर्चमिशनरी सोसाइटी का स्टेशन है, जिस के पास रामनाथमंडल के (सन् १७९६ ई० के) वन बापे हुए बहुत देवमन्दिर स्थित हैं ।

रसापुगला—यहां मैसूर के टीपूमुलतान के खान्दान के लोगों के मकान हैं ।

अलीपुर—भवानीपुर से दक्षिण-पश्चिम अलीपुर बस्ती है । यहां बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोठी, वेसी पल्टन के मकाम, जिले का जेलखाना, २४ पुराना जिले का सदर मकाम, भाषारण और लड़ाई सम्बन्धी आफिस, टेलीग्राफ की सामग्री तय्यार करने का कारखाना और सरकारी चिड़िया खाना है ।

लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोठी—अलीपुर की फैली हुई भूमि पर बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर की उत्तम कोठी बनी है । इस के ऊपर के मजिल में लेफ्टिनेंट गवर्नर के रहने का सज्जतनत और दरबार हाल इत्यादि हैं । कोठी के आसपास बहुत दरख्त लगे हैं और एक तालाब बना है । पश्चिम के फाटक के आगे अलीपुर की सड़क है ।

चिड़ियाखाना—लेफ्टिनेंट गवर्नर की कोठी के पास टोलीज नाला के दक्षिण किनारे पर अलीपुर का सरकारी चिड़ियाखाना अर्थात् पशुशाला है । यहां बड़े घेरे के भीतर एक घड़ा घास है, जिस में जगह जगह पशु, पक्षी, घीबे और दरियाई जानवरों के रहने के लिये योग्य-स्थान बने हैं, जिन में हाल की गिनती के अनुसार ५०० मेमल (अर्थात् दूध पीने वाले जानवर) , ४०० चिड़ियें और १३४ कीड़े हैं । मेमलों में बहुतरे किस्म के बाघ, हरिन, घन्दर, कई एक गेंडे, भालू, भेड़िया, गृगाळ, नीलगाय, साहिळ, खरगोल, भूसा, भुम्हो और एक सिंह, एक झुराफ (बंगली ऊंट), पक्षियों में बहुतरे

तरह के सुतुरमुर्गे, विलायती भुर्गी, चील्ह, वतक, मूंगे, मोर, कबूतर; और कीड़ों और जलजन्तुओं में बहुतरे किसिम के साँप, मछली और घड़ियाल शामिल हैं। जुराफ ऊँट के समान होता है; पर इस का मुख बैल के समान है; इस की पीठ पर कूबड़ नहीं होता; यह दौड़ने में बहुत तेज होता है।

सन् १८७५ ई० में इस बाग का काम आरंभ हुआ। सन् १८७६ की पहली जनवरी को महारानी विक्टोरिया के पुत्र प्रिंस आफ वेल्स ने इसको जलूस किया। उसी साल की मई में सर्व साधारण लोगों के लिये यह खुल गया। तीन चार वर्ष में इसके सब काम पूरे हो गये। नुमाइश के साल १८ लाख ८ हजार ५३२ आदमियों ने इसको देखा। देखनेवाले को एक आना महसूल लगता है।

अलीपुर का बाग—यह बाग हिन्दुस्तान की खेती और बागवानी की सोसाइटी का है, जिसके कमरे मेटकाफ हाल में हैं। यहाँ भेम्बरों की बाँटने के लिये दरख्त लगाये जाते हैं और सालाना फूल की नुमायश होती है। बाग के एक हिस्से में गुलाबों की बड़ी क्यारियाँ और दरख्तों के उत्तम नमूने हैं।

खिदिरपुर—अलीपुर से पश्चिमोत्तर कलकत्ते शहर के दक्षिण की सीमा पर खिदिरपुर में देसी लोग फैल से बसे हैं। वहाँ एक गिरजा, मिलीटरी आर्फन स्कूल, और सरकारी डकघाईस हैं।

खिदिरपुर का डक—इसका काम सन् १८८६ ई० में आरंभ होकर अब तय्यार हुआ है। ४३ एकड़ जमीन पर डक का पानी है। इसके बनाने में २ करोड़ ५० लाख रुपया खर्च पड़ा है। इसमें सब से बड़े १४ एीयर रह सकती हैं। जहाज और एीमरों को इसमें रहने से तूफान का डर नहीं रहता।

गार्डनरोच—यह हेपिंग्स पुल के दक्षिण बहुत पुरानी और प्रसिद्ध जगह है। हुगली नदी के किनारे २ मील तक खूबसूरत मकाम बने हुए हैं, जो सन् १७६८ से १७८० ई० तक बने थे। यहाँ अबध के नवाब बाजिद-अली शाह सन् १८५७ से सरकारी पेंशन पाकर रहते थे। सन् १८८७ ई० में उनके मरने पर सरकार ने उनकी जायदाद नीलाम कर दी।

कम्पनी बाग—इस शाही नमातीबाग को सन् १७८६ में ईष्ट इंडिया कम्पनी ने कायम किया । यह गार्डनरीच के मटियापुर्ज के सामने गवर्नमेंट एनजिनियरींग कालेज के पास हवड़ा जिले में भागीरथी के पश्चिमी किनारे पर एक मील फैला है । बाग का फाटक भागीरथी के पुल से ३१ मील दक्षिण है । हवड़ा और शिवपुर गांव होकर एक अच्छी सड़क वहां गई है, जिससे आदमी आसानी से बाग में पहुंचते हैं और भागीरथी की नावद्वारा भी आदमी बाग में जाते हैं । बाग दिन भर खुला रहता ।

यह बाग २७२ एकड़ जमीन पर है । बाग में बहुतेरी सड़कें बनी हैं । गाड़ी पर चढ़ कर सब जगह आदमी जा सकता है । बाग के पश्चिमोत्तर के कोने के पास हवड़ा फाटक से प्रवेश करने पर पहिले एक बट के वृक्ष के दोनों तरफ दो पीपल के वृक्ष मिलते हैं । फाटक के दोनों तरफ दो पतली सड़क और सामने एक चौड़ी सड़क गई है । देखने वालों को चौड़ी सड़क से आगे जाना चाहिये ।

थोड़े आगे जाने पर सड़क के दोनों तरफ पानी की दो चादर मिलती हैं । उससे आगे कनुआरिन के दरखतों के कुंज से बाहर निकल कर एक भूमि के बड़े टुकड़े पर सड़क जाती है, जहां सड़क के दोनों तरफ खनूर लगे हैं । उससे आगे एक नहर पर ३ पुल हैं । नहर पार होने पर दहिने फूल-बाग मिलता है, जहां कियारियों में खनूर, फूल और फलों के वृक्ष लगे हैं ।

फूल और पौधे का एक बंगला है, जिसके फूलों की शोभा गरमो की ऋतुओं में जाहिर होती है और दूसरी ऋतुओं में उन पौधों की डांटी और पत्तियों की खूबसूरती फूलों से भी अधिक देख पड़ती है । बंगले के वंभे और सस्तीर लोहे के हैं । बंगले के सामने बाग के कायम करने वाले जनरल कीडका पन्यूमेंट है । उससे आगे जाने पर एक सड़क मिलती है, जिससे चन्द सौ गज आगे जाने पर एक चौड़ी सीधी सड़क दहिने देख पड़ती है, जो बटके वृक्ष के पास गई है ।

यह बट वृक्ष करीब १२५ वर्ष का है । जमीन से ५६ फीट ऊपर इस की जड़ का घेरा ५१ फीट और इसके सिरका घेरा लगभग ९०० फीट है । इसकी

क्षेत्रों से करीब ३०० चरोह निल कर नीचे जमीन पकड़ बये हैं । बहुतेरे छटके हुए चरोह गाँठ फोड़े हुए बाँसों को खड़े करके उन के पोरो में कर दिये गये हैं । उससे वे बाँसों के अन्दर होकर जल्दी जमीन पकड़ लेते हैं । घट वृक्ष से आगे जाने पर एक मनुमेंट मिलता है, जिस से आगे देवदारु के दोहरे कत्तार होकर सड़क दर्हिने झुकती है ।

बहुत आगे जाकर दर्हिने घूमने पर पौधों से पूर्ण अठपहले बनावट का एक बंगला मिलता है । उसका ढाँचा लोहे का है, जिस पर लोहे के बाल लगाये गये हैं; ऊपर घास का पतला छप्पर और मध्य में गुम्बज है । बंगले का व्यास २१० फीट है, उसका हर एक पहल ८५ फीट लंबा है । उसके मध्य के गुम्बज की ऊँचाई ५० फीट है । बंगले में बहुतेरे घुमाव के रास्ते बने हैं और भूमि पर तथा बहुतेरे गमलों में अनेक भांतिके पौधे लगाए गए हैं । उसको अंगरेजी में पामहौस कहते हैं ।

पामहौस के पश्चिम तरफ आगे जाने पर झील के किनारे आदमी पहुँचते हैं, जिसमें थोड़े पानी के चिड़ियें हैं । झील के पास फूल और पौधे का एक तीसरा बंगला है, जिसकी ऊँचाई पामहौस और अर्चिडहौस के बीच बीच है ।

कम्पनीबाग में प्रायः सब देशों के दरख्त लगाये गये हैं । लोहे के पत्तों पर बहुतेरे वृक्षों का चूर्चात लिख कर के उनके पास खड़े कर दिये गए हैं ।

हुगली गंगा के पास के कल कारखाने—शिवपुर और राम-कृष्णपुर के पास जूट दवाने और इसकी दस्तकारी के लिये बहुत बड़ी इमारतें हैं ।

हवड़ा के उत्तर गुसरी गाँव में रुई का मिल (कल कारखाना) है ।

हवड़ा से ६ मील उत्तर रेलवे स्टेशन के पास वाली नामक बस्ती है, जिसमें सन् १८९१ में १६७०० मनुष्य थे । वह पवित्र स्थान समझा जाता है और उसमें हजारों घर ब्राह्मण रहते हैं । उसके पास गंगा के किनारे पर एक उत्तम मकान में एक बड़ा पुस्तकालय और पढ़ने और लेखन करने के कमरे हैं और वाली में कागज का एक मिल है ।

वाली के सामने बड़ानगर बस्ती में बोरा बनाने का एक मिल है । उससे थोड़े उत्तर एक बस्ती में सन् १८५२ के बने हुए बहुतेरे देव मन्दिर हैं ।

रिमेरा नामक एक छोटे गाँव के पास जूट का मिल है । वहाँ रिमेरा होस नामक एक उत्तम पुराना मकान है ।

रिमेरा के सामने नदी के बाएँ किनारे पर अगरपाड़ा में एक गिरजा और एक स्कूल है । उसमें १ मील आगे एकही जगह शिव के २४ मन्दिर हैं, जिसमें १ मील आगे बारकपुर है ।

सोदपुर—सियालदह के रेलवे स्टेशन से १० मील उत्तर सोदपुर का रेलवे स्टेशन है । सोदपुर में पिंजरापोल नामक प्रसिद्ध पशुशाला है । प्रति वर्ष गोपाष्टमी (कार्तिक शुक्ल अष्टमी) को पिंजरापोल का मेला होता है । आर्य-सन्तान वहाँ गौवों की पूजा करते हैं । मेले के समय कलकत्ते में स्पेशल गाड़ी खुलती है ।

सात वर्ष हुए कलकत्ते-बड़ेबाजार के अनेक मारवाड़ी, खत्री, भाटिये और बंगाली इत्यादि धार्मिक पुरुषों ने गौवश की रक्षा के निमित्त पिंजरापोल स्थापित किया । उसमें सन् १८९० ई० में ७०९ गौ, बेल और बछड़े, १३० घोड़े इत्यादि बीमार तथा लंगड़े चार पाये; और ३५५ चिड़िये थे ।

इतिहास—काली के नाम से कलकत्ता नाम की स्थापित है । अठारहवीं शदी की किनारों में कलकत्ता का नाम कालीकोटा लिखा है ।

सन् १६३६ में मुगल बादशाह शाहजहाँ ने इण्डिअन कम्पनी को बंगाले के साथ तिजारत करने की आज्ञा दी । सन् १६४० में अंगरेजी कोठी हुगली में कायम हुई ।

सन् १६८६ ई० में अंगरेजी एजेंट हुगली की कोठी छोड़कर सतानती को चले गये, जो हुगली अर्थात् भागीरथी नदी के किनारे पर एक गाँव था । अब वह जगह टकसाल से सोभाबाजार तक कलकत्ते का हिस्सा बनी है । पीछे बादशाह औरंगजेब के फौजदार ने अंगरेजी एजेंट पर हमला किया, जिसमें अलीर में एजेंट को सतानती छोड़ कर मदरास जाना पड़ा । उसके पश्चात् बादशाह ने अंगरेजी तिजारत से अपना फायदा समझ कर लूटो हुई चीजों का ६० हजार रुपया हरजाने देकर अंगरेजी एजेंट मिस्टर चार्नक को मदरास से बोला लिया । चार्नक ने सन् १६९० ई० के २४ अगस्त को वर्तमान कलकत्ता शहर की नींव दी ।

सन् १६९८ में बादशाह की तरफ से कम्पनी को अपनी डिफाजत के लिये क़िला बनाने का हुकुम मिला । जिस जगह पर अब कष्टमहौस और जनरल पोष्ट आफिस है उसी जगह क़िला बना और उस समय के इङ्गलैंड के बादशाह विलियम के नाम से क़िले का नाम फोर्ट विलियम पड़ा ।

सन् १७०० ई० में औरंगजेब के पुत्र मिस आजीम ने कीमती नज़र लेकर कम्पनी को सतानती, कलकत्ता और गोविन्दपुर इन ३ गांवों को खरीदने का हुकुम दिया, जो हुगली गंगा के किनारे पर चितपुर से कूलीबाजार तक थे और कलकत्ता क्वाइव प्लीट के उत्तर बावूघाट तक करीब १०० गज की लंबाई में था ।

सन् १७१६ में फर्हखशियर की तरफ से कम्पनी को कलकत्ते के दक्षिण हुगलीनदी के दोनों किनारे ३७ गांव खरीदने का हुकुम मिला; पर बंगाल के नवाब मुर्शिदकुलीखां ने जमीन खरीदने से उसको गुप्त भाव से रोका; परन्तु उस हुकुम से कम्पनी को सौदागरी में बहुत मदद मिली, इस से कलकत्ते की उन्नति होने लगी ।

सन् १७२० में कलकत्ते में जमीन्दारी आफिस कायम हुआ । वह कलकत्ते के लोगों के दीवानी और फौजदारी मुकदमों को देखता था । सन् १७२४ में यूरोपियन लोगों के मुकदमों देखने के लिये एक महकमा कायम हुआ । सन् १७२६ में मदरास, बम्बे और बंगाल जुड़े जुड़े ३ हाते बनाए गए ।

सन् १७४२ में महाराष्ट्रों ने बंगाल पर आक्रमण करके बालासोर से राजमहल तक मुल्क को वरबाद करके अन्त में हुगली को दखल करलिया । वहां के वासिन्दे कलकत्ते में भाग गये । उस समय अंगरेजी प्रेसीडेंट को हुकुम मिला कि सतानती के उत्तर हिस्से से गोविन्दपुर के दक्षिण हिस्से तक कम्पनी की जगह खाइसे घेर दी जाय । ६ मास में ३ मील खाई तय्यार हुई, जो मरहटों की खाई कही जाती थी, वह पीछे भर दी गई । सन् १७४८ में महाराष्ट्रों के हमले से बचने के लिये एक कमीटी नियत हुई ।

सन् १७५६ ई० में बंगाल के नवाब अलीउद्दीन खां के मरने पर उसका पोता सिराजुद्दौला नवाब बना । सन् १७५७ में उसने कलकत्ते पर आक्रमण करके अंगरेजों को निकाल दिया, पर थोड़ेही दिन बाद अंगरेजों ने सिराजुद्दौला

को जीत कर कलकत्ते को दखल करके अलिबर्दोखां के दमाद मीरजाफर को बंगाल का नवाब बनाया (मुर्शिदाबाद के वृत्तान्तों में देखो) ।

सन् १७५७ में वर्तमान फोर्टविलियम किले का काम आरंभ हुआ । नया किला तय्यार होने पर पुराना किला धीरे धीरे बरबाद होगया ।

सन् १७७३ में पार्लियामेंट की तरफ से कम्पनी को नया अहदनामा हुआ, जिसके अनुसार यह नियम बना कि कलकत्ते के गवर्नर को गवर्नर जनरल बनाया जाय, उनको २५ हजार पाउण्ड तनखाह मिले, मदद के लिये कौंसल कायम हो और तमाम अंगरेजी हिन्दुस्तान इनके मातहत रहे और एक सुप्रीमकोर्ट (बड़ी कचहरी), जिसमें एक चीफ जस्टिस और ३ जज रहे, कलकत्ते में कायम हो । सन् १७७४ में २५०००० रुपये सालाने तनखाह पर वारेन हेस्टिंग पहले पहल हिन्दुस्तान के गवर्नर जनरल हुए ।

हिन्द के गवर्नर और गवर्नर जनरलों की फिहरिस्त, जो 'इष्ट इण्डिया कम्पनी' के राज्य में हुए, नीचे है,—

नम्बर नाम और हिन्द में आने का समय ।

(१) पहला गवर्नर लार्डकुँव सन् १७५८ ई० ।

(२) हारीवरिलस्ट सन् १७६७ ।

(३) जानकारटिएर सन् १७६९ ।

(१) पहला गवर्नर जनरल वारेन हेस्टिंग सन् १७७४ ।

(२) सरजान मेकफर्मन सन् १७८५ ।

(३) मार्किस आफ कानेवालिस-सन् १७८६ ।

(४) सरजान शोर (लार्ड टेनमथ) सन् १७९३ ।

(५) सर एलरेड क्लार्क सन् १७९८ ।

(६) लार्ड मारिंगटन (मार्किस आफ वेल्सली) १७९८ ।

(७) मार्किस आफ कर्नवालिस दूसरी बार सन् १८०५ ।

नम्बर नाम और आने का समय ।

(८) सरजार्जवाली सन् १८०५ ।

(९) अर्ल आफ मिंटो सन् १८०६ ।

(१०) अर्ल आफ माइग (मार्किस आफ हेस्टिंग) सन् १८१५ ।

(११) जान एडम सन् १८२३ ।

(१२) अर्ल एग्मरेष्ट सन् १८२३ ।

(१३) लार्ड विलियम बेबेंडिस बॅटिक सन् १८२८ ।

(१४) सर चार्ल्स मेटक्लाफ सन् १८३५ ।

(१५) लार्ड आकलैंड सन् १८३६ ।

(१६) अर्ल आफ एलेनबरा सन् १८४२ ।

(१७) बैकोन्ट हार्डिंग सन् १८४४ ।

(१८) अर्ल आफ डेलहौसी (पीछे से मार्किस) सन् १८४८ ।

(१९) अर्ल केनिंग सन् १८५६ ।

हिन्द के वाइसराय, जो बादशाही राज्य में हुए, नीचे लिखे जाते हैं;

नम्बर नाम और आने का समय ।

- (१) अर्ल केनिंग सन् १८५८ ।
- (२) अर्ल आफ एलजिन सन् १८६२
- (३) सरजान लारेंस (लार्ड लारेंस)
सन् १८६४ ।
- (४) अर्ल आफ मेओ सन् १८६९ ।
- (५) अर्ल आफ नार्थ ब्रुक सन् १८७२

नम्बर नाम और आने का समय ।

- (६) अर्ल आफ लिटन सन् १८७६ ।
- (७) मार्किस आफ रिपन सन् १८८० ।
- (८) लार्ड डफरिन सन् १८८४ ।
- (९) लार्ड लैंसडौन १८८८ ।
- (१०) लार्ड एलगिन सन् १८९२ ।

चौबीस परगना जिला—यह प्रेसीडेसी विभाग के दक्षिण-पश्चिम का जिला है । इसके उत्तर नदिया जिला; पूर्वोत्तर जशर जिला; पूर्व खुलना जिला और सुन्दरवन; दक्षिण समुद्र तक फैला हुआ सुन्दर वन और पश्चिम हुगली नदी अर्थात् भागीरथी है । इस जिले का क्षेत्रफल (सुन्दर वन की बिना नापी हुई भूमि और कलकत्ते का ३१ वर्ग मील क्षेत्रफल को छोड़ कर) २०९७ वर्ग मील है । कलकत्ते की दक्षिणी शहरतली अलीपुर जिले का सदर स्थान है । एक खास अफसर सुन्दरवन की मालगुजारी का प्रबंध करता है । इस जिले के उत्तर का भाग बड़ा उपजाऊ है और पूर्वोत्तर का भाग उंचा है । इसमें जगह-जगह ताड़ के कुंज लगे हैं । प्रत्येक वस्तियों के आस पास चांग लगे हुए हैं । जिले के दक्षिण के भाग में ३ जंगल हैं; इनके अतिरिक्त सुन्दरवन से उत्तर इस जिले में परती जमीन नहीं है । जिले में हुगली, विद्याधरी, पियाली, कालिंदी और इच्छामती ये ५ प्रधान नदियाँ और कई एक नहर हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय चौबीस परगना जिले में १६,८४,२० मनुष्य थे; अर्थात् १,००,३१,१० हिंदू, ६,०४,७२२ मुसलमान, ९९,२८ कृस्तान, ४१४ पहाड़ी और जंगली, २३० बौद्ध, १० पारसी और ५ ब्राह्म । जातियों के खाने में २१,७१,८७ मलाह, मछुवा, इत्यादि; १४,५४,९६ कैवरत, ७,८६,५४ बागड़ी, ६,२६,७० ब्राह्मण, ५,६६,८२ वाला, ३,७१,७१ तियर, ३,६५,८६

चमार, ३००१३, कायस्थ, ६०५४ बनियां, ४०७२ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय शहर कलकत्ते को छोड़ कर चौबीस परगना जिले के कसबों में इस भांति मनुष्य थे;—कलकत्ते की दक्षिणी शहरतली में ६९६४२, दो शहरतलियों में ५१५८४, दक्षिणी धारकपुर में ३५६४७, बडानगर अर्थात् उत्तरी शहरतली में ३४२७८, नइदाटी में २१७२४, उत्तरीय धारकपुर में २०१८०, वसीरहाट में १५१०१, बंदुरिया में १२७४४, दक्षिणी दमदम में ११०३७, राजपुर में १०९४०, उत्तरी दमदम और छावनी में १०३९६ और बारासत, जयनगर, गोवरडंगा, इटंडा में दस हजार से कम मनुष्य थे ।

इतिहास—मुगलों के राज्य के समय चौबीसपरगना 'सातगांव' सरकार का एक हिस्सा था । सातगांव, जो अब हुगली जिले में हुगली नदी के पश्चिम किनारे पर एक साधारण वस्ती है, एक समय बंगाल का प्रधान बंदरगाह था ।

सन् १७५७ ई० के २० सितम्बर की संधि के अनुसार बंगाल के नवाब मीरजाफर ने इस जिले की जमीन्दागी हक इष्ट इंडियन कंपनी को दे दिया । उस समय यह कलकत्ते की जमीन्दारी या चौबीसपरगना की जमीन्दारी करके प्रसिद्ध था और इसका क्षेत्रफल केवल ८८३ वर्ग मील था । सन् १७५९ में दिल्ली के बादशाह ने लार्ड क्लाइव को चौबिसपरगना में जागीर की सनद दी, जिसके अनुसार पुरा मालिकाना हक जिन्दगीभर के लिये क्लाइव को और उसके बाद सर्वदा के लिये इष्ट इंडियन कंपनी को मिल गया । कलकत्ते शहर और बंदरगाह पर पहिलेही से कंपनी का अधिकार हो गया था ।

चौबीसपरगना जिले के हाकिमों का अख्तियार कलकत्ते शहर पर नहीं है । सन् १८६१ में चौबीसपरगना जिले में ८ सबडिवीजन नियत हुए;—ढा-यमंड हारवर, अलीपुर, बरुडपुर, दमदम, धारकपुर, बारासत, वसरहाट और सतखीरा । सन् १८८२ में खुलना जिला बनने पर सतखीरा सबडिवीजन उसमें कर दिया गया ।

बंगाल प्रदेश—इसमें ४ सूबे हैं,—बंगाल, विहार, उड़ीसा और छोटा नागपुर। बंगाल प्रदेश के पूर्व आसाम; दक्षिण बंगाले की खाड़ी, पश्चिम मदरास हाता, मध्यवेश, सीमा का राज और पश्चिमोत्तर वेश; और उत्तर नैपाल, शिकम और भूटान के राज्य हैं। यह लेफ्टिनेंट सन् १८५९ ई० में नियत हुई; इसके लेफ्टिनेंट गवर्नर कलकत्ते के पास अलीपुर में रहते हैं। सन् १८९१ के अनुसार उस प्रदेश के अङ्गरेजी राज्य का क्षेत्रफल १५१,५४३ वर्ग मील और देशी राज्यों का क्षेत्रफल ३५८३४ तथा दोनों का १८७३७७ वर्ग मील है। यह देश भारतवर्ष के संपूर्ण देशों से अधिक आबाद और उपजाऊ है, इसमें धान बहुत उत्पन्न होता है।

बंगाल प्रदेश में ९ भाग और ४७ जिले इस भांति हैं,—(सूबेबंगाल में)
(१) बर्दवान विभाग में हुगली, हवड़ा, बर्दवान, चौरभूमि, बांकुड़ा और मेदनीपुर; (२) प्रेसीडेंसी विभाग में चौबीसपरगना (और कलकत्ता), नदिया, जशर, मुर्शिदाबाद और खुलना, (३) राजशाही विभाग में पटना, राजशाही, चुगड़ा, रंगपुर, दीनाजपुर, दार्जिलिंग, जल्पाईगोड़ी और वाकरगंज, (४) ढाका विभाग में फरीदपुर, ढाका और प्रेमनसिंह; (५) चटगांव विभाग में नोआखाली, चटगांव, पहाड़ी चटगांव और टिपरा; (सूबेविहार में) (६) भागलपुर विभाग में मालदह, पुर्निया, भागलपुर, मुंगेर और संथाल परगना; (७) पटना विभाग में गया, पटना, शाहाबाद, सारन, चंपारन, मुजफ्फरपुर और दरभंगा, (सूबे उड़ीसे में) (८) उड़ीसा विभाग में बालासोर, कटक, पुरी, बांकी और अंगोल (सूबे छोटा नागपुर में) (९) छोटा नागपुर विभाग में हजारीबाग, लोहारडागा, मानभूमि और सिंहभूमि जिला।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बंगाल के अङ्गरेजी राज्य में ७१,३४६,१८७ मनुष्य थे; अर्थात् ३५,५६,३२१ पुरुष और ३५,७८,३६८ स्त्रियां। इनमें ४५,२२,०१२ हिंदू, २३,३३,७५९ मुसलमान, २,२९,४५० बंगाली जातियां इत्यादि, १,९०,८२९ कृस्तान, १,८१,१२२ बौद्ध, ७०,४२ जैन,

१४४७ यहूदी, ४१२ सिक्ख, १७९ पारसी, ५७१८ जिनका कोई मजहब नहीं लिखा गया और १७ छोटे छोटे मजहबवाले थे । इनमें सेकड़े पीछे ५३ बंगाली भाषा वाले, ३६१ हिन्दी भाषा वाले, ६१ उड़िया भाषा वाले, २ संथाली भाषा वाले और २ अन्य भाषा बोलने वाले मनुष्य थे ।

बंगाल प्रदेश में अर्थात् बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन के शहर और कमरे, जिन में सन् १८०१ ई० की मनुष्य-गणना के समय १० हजार से अधिक मनुष्य थे,—

नं० शहर या जिला कमरा	जन-संख्या	नं० शहर या जिला कमरा	जन-संख्या
१ कलकत्ता २४परगना	६८१५६०	१७ दक्षिण- २४परगना	३५६४७
दो शहर- तथा...	५९५८४	पारसपुर	
तल्लियाँ		१८ मुर्शिदा- मुर्शिदाबाद...	३५५७६
२ पटना और पटना ...	१६५१९०	बाद	
चांकीपुर		१९ बरवान बरवान ...	३४४७७
३ हवड़ा हवड़ा ...	११६६०६	२० बडानगर २४परगना	३४२७८
४ ढांका ढांका ...	८२३२१	२१ हुगली और हुगली ...	३३०६०
५ गया गया ...	८०३८३	चिसुरा	
६ दरभंगा दरभंगा .	७३५६१	२२ मदनपुर मेदनीपुर ...	३२२६४
७ कलकत्ते २४परगना	६९६४२	२३ मंतीपुर नदिया ...	३०४३७
की दक्षिणी		२४ नइहाटी २४परगना	२१७२४
शहर तली		२५ पुरी पुरी ...	२८७९४
८ भागलपुर भागलपुर...	६९१०६	२६ कृष्णगढ़ नदिया ...	२५५००
९ छपरा सारन ...	५७३५२	२७ चटगाँव चटगाँव ...	२४०६९
१० मुंगेर मुंगेर ...	५७०७७	२८ बरहमपुर मुर्शिदाबाद	२३५१५
११ मुजफ्फरपुर मुजफ्फरपुर	४९१९	२९ सिराजगंज पटना ...	२३२६७
१२ बिहार पटना ...	४७७२३	३० घेतिया चंपारन ...	२२७८०
१३ कटक कटक ...	४७१८६	३१ सहसराम शाहाबाद ..	२२७११
१४ आरा शाहाबाद ..	४६१०५	३२ हाजीपुर मुजफ्फरपुर	२१४८७
१५ दानापुर पटना ...	४४४१९	३३ रामपुर चौ- राजशाही ..	२१४०७
१६ श्रीरामपुर हुगली ...	३५९५२	कीया	

नं० शहर या कसबा	जिला	जन-संख्या	नं० शहर-या कसबा	जिला	जन-संख्या
३४ उत्तरीय धारकपुर	२४ परगना	२०९८०	६३ मदारीपुर	फरीदपुर...	१३७७२
३५ बालासोर	बालासोर...	२०७७५	६४ रिबिलगंज	सारन ...	१३४७३
३६ रांची	लोहारहागा	२०३०६	६५ सोनामुखी	वांरुड़ा ...	१३४६२
३७ बांरुड़ा	बांरुड़ा ...	१८७४३	६६ नवद्वीप	नदिया ...	१३३३४
३८ हुमरांव	शाहाबाद ...	१८३८४	६७ मोतीहारी	चंपारन ...	१३१०८
३९ बैथवटी	हुगली ...	१८३८०	६८ बरुरिया	२४ परगना	१९७४४
४० विष्णुपुर	बांरुड़ा ...	१८१९०	६९ लालगंज	मुजफ्फरपुर	१२४१३
४१ जमालपुर	मुंगेर ...	१८०८९	७० जगदीशपुर	शाहाबाद	१२४७५
४२ ब्राह्मण बैरिया-	टिपरा ...	१८००६	७१ बाढ़	पटना ...	१२३६३
४३ टंगैल	मैमनसिंह	१७९७६	७२ फीरोजपुर	वाकरगंज	१२२४६
४४ नारायणगंज	ढाका ...	१७७१५	७३ दीनाजपुर	दीनाजपुर	१२२०४
४५ सिवान	सारन ...	१७७०९	७४ पुरुलिया	मानभूमि	१२१२८
४६ अद्रपाडा	कटक ...	१७६४७	७५ जाजपुर	कटक ...	११९९२
४७ मधुवनी	दरभंगा	१७५४४	७६ मैमनसिंह	मैमनसिंह	११५५५
४८ बाली	हवड़ा ...	१६७००	७७ टेकारी	गया ...	११५३२
४९ हजारीबाग	हजारीबाग	१६६७२	७८ चंद्रकोना	मेदनीपुर	११३०९
५० पवना	पवना ...	१६४८६	७९ साहवगंज	संथाल-	
५१ बक्सर	शाहाबाद	१५५०६	८० कुष्टिया	परगना...	११२९७
५२ बरिशाल	वाकरगंज	१५४८२	८१ कांडी	नदिया ..	१११९९
५३ जमालपुर	मैमनसिंह	१५३८८	८२ दक्षिण-	मुर्शिदाबाद	१११३१
५४ बसरहाट	२४ परगना	१५१०९	दमदम	२४ परगना	११०३७
५५ कुमिला	टिपरा ...	१४६८०	८३ राजपुर	२४ परगना	१०९४०
५६ पुर्निया	पुर्निया ...	१४५५५	८४ रोसरा	दरभंगा...	१०८८७
५७ रंगपुर	रंगपुर ...	१४२१६	८५ चचरा	हजारीबाग	१०७८३
५८ दार्जिलिंग	दार्जिलिंग	१४१४५	८६ फरीदपुर	फरीदपुर	१०७७४
५९ किशोरगंज	मैमनसिंह	१३९८८	८७ शेरपुर	मैमनसिंह	१०७४४
६० घटाल	मेदनीपुर...	१३९४२	८८ उत्तरीय दमदम	२४ परगना	१०३१६
६१ डंगलिसबाजार	मालदह...	१३८१८	८९ धवुआ	शाहाबाद	१०२१६
६२ रानीगंज	बर्बवान...	१३७७२	९० खरवार	मेदनीपुर	१०८०३

बंगलावर्गभाला

[illegible]

बंगाल प्रदेश में उड़ीसा, पश्चिम बंगाल प्रदेश में सूवे बिहार और छोटा नागपुर; और उत्तर स्वतंत्र राज्य भूटान है। खास बंगाल में बर्दवान, प्रेसीडेंसी, राजशाही, ढाका और चटगांव इन ५ किस्मतों में २६ जिले हैं। सूवे बंगाल में गंगा, ब्रह्मपुत्र, तिष्टा, दामोदर, रूपनारायण इत्यादि नदियां बहती हैं; बर्दवान जिले में कोयले की प्रसिद्ध खानें हैं; कई एक जिलों में कपड़े और रेशम की दस्तकारी होती है और खजूर की चीनी बनती है।

महाभारत और पुराणों में बंगाल का नाम बंग लिखा है; किन्तु ठीक नहीं जान पड़ता है कि बंगदेश की सीमा किस स्थान से किस स्थान तक थी। महाभारत-आदिपर्व के १०४ वें अध्याय में लिखा है कि बली नामक एक राजा की सुवेलणा स्त्री थी; उसने एक अन्धे ऋषि से संभोग किया, जिससे अंग, बंग, कलिंग, पुंड्र और सुह्य ५ पुत्र उत्पन्न हुए। उनके नाम से एक एक देश प्रख्यात हुआ; अर्थात् अंग के नाम से अंग देश, बंग के नाम से बंगदेश, कलिंग के नाम से कलिंगदेश, पुंड्र के नाम से पुंड्रदेश और सुह्य के नाम से सुह्यदेश।

सूवे बंगाल के दिहाती मकानों की दीवारें टट्टियों की और छपर फूस के होते हैं। वस्तियों के मकानों के झूंड अलग अलग रहते हैं। बहुतेरे मकानों के आस पास केले, खजूर, नारियल इत्यादि के वृक्ष लगाये जाते हैं। बहुतेरे हिंदू अपने अपने गृह के पास देवता के अर्थ एक कोठरी रखते हैं।

खास बंगाले में अधिक धान उत्पन्न होता है और लाखों आदमी दूसरे देशों से आकर इस सूवे में व्यापार या नौकरी करते हैं। इस देश के बहुतेरे लोग रेशम के किड़ो को पालते हैं और रेशम संबंधी काम करते हैं। बंगालियों की भाषा बंगला है, जिसमें संस्कृत शब्द बहुत मिले हुए हैं। इनके शरीर निर्वल हैं; किन्तु इनकी बुद्धि प्रबल होती है; वे इस समय अंगरेजी शिक्षा में निपुण हो कर बड़े बड़े ओहदे पाते हैं। बंगाले की अनेक स्त्रियां भी प्रतिवर्ष बी. ए. एम. ए. पास करती हैं।

सर्वसाधारण बंगाली धोती के ऊपर कुर्ता या कोट पहन कर फंघे पर घादर रखते हैं। इनका सिर मायः सर्वदा उघार रहता है। भारतवर्ष के

अन्य हिंदूओं के समान इनमें शिखा रखने की रीति नहीं है । इनमें स्नान करने की चाल बहुत है । वे हिंदू-धर्म में बड़े दृढ़ होते हैं और अपने धर्म के लिये बड़ा आन्दोलन करते हैं । बंगाल की स्त्रियों में पर्वे में रहने की चाल बहुत कम है, वे प्रायः झीने कपड़े पहनती हैं; कुर्ते या चोली पहनने की रीति इनमें नहीं है ।

बंगालियों का साधारण भोजन साक, भात और मछली है । बहुतरे धनी लोग मछली के बास्ते अपने मकान के पास दींगी बना रखते हैं ।

आश्विन के नवरात्र में बंगाले के स्थान स्थान पर कालीजी की पूजा का उत्सव बड़े धूम धाम से होता है । कालीजी और शिव आदि देवताओं की मृणमय विचित्र प्रतिमा बनाई जाती है । बंगाली लोग बड़े उत्साह से कालीजी की पूजा करते हैं और अंत में दशहरे के दिन प्रतिमाओं को नदी के जल में विसर्जन कर देते हैं ।

बंगाले में ब्राह्म समाज नाम की एक नई संप्रदाय नियत हुई है । सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय भारतवर्ष में इस संप्रदाय के ३४१० मनुष्य थे, जिनमें ७०८ कलकत्ते शहर में थे । राजा राममोहन राय ने इस समाज के मत की नेव दी, जिनके उद्योग से भारत गवर्नमट ने सन् १८२९ ई० में आइन द्वारा सती होने की रीति बंद करदी । सन् १८३० में कलकत्ते में इस मत की नेव पड़ी ; उसी सन् से ब्राह्म सम्प्रदाय आरंभ हुआ । राजा राममोहन राय के १० वर्ष हिंदूस्तान छोड़ देने से ब्राह्म समाज निर्बल होगया था । सन् १८४२ में देवेन्द्रनाथ टैगोर इस समाज में मिल कर लोगों को धीरे धीरे एक ईश्वरकी पूजा में विश्वास दिलाने लगे । “एकमेवाद्वितीयं ब्रह्म नेह नानास्ति किंचन” इत्यादि श्रुति उन लोगो का मूल है । ब्रह्मैव एकमिदमग्र आसीत् नान्यत्किञ्चनासीत् तदिदं सर्वमखण्डम् । तदेवनित्यज्ञातमनन्तं शिवं स्रवं त्रं निरवयवमपरमेवा द्वितीयमसर्वव्यापिसर्वनियन्तृसर्वाश्रयंसर्ववित् सर्वशक्तिमद्भुवं पूर्णमप्रतिममिति । एतस्य तस्यैवोपासनया पारस्परिकमहिम्नं च शुभं भवति । नस्मिन्प्रतीतिस्स्यप्रियकार्यसाधनञ्चतदुपासनमैव ॥ अर्थात्—पूर्व में एक ब्रह्म ही था और कुछ न था । उसने संपूर्ण पदार्थ उत्पन्न किये । वही

ब्रह्म नित्य, ज्ञानस्वरूप, अनन्त, कल्याणकारी, स्वतन्त्र निरवयव, एकही, अद्वितीय, सर्वव्यापी, सर्वनियन्ता, सर्वाधार, सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान्. अनल, पूर्ण और अनुपम है। एकही उसकी उपासना में परलोक और इसलोक में शुभ होता है। ब्रह्म में प्रीति करना और उसके मिय काम करना उसकी उपासना ही है। यही ब्राह्म समाजियों का मत है। वे लोग जाति विभाग की रीति को नहीं मानते हैं। सन् १८४५ में चारों घेदों से बाँटे निकाल कर एक ग्रन्थ बनाया गया और इस मत के लोग उसको शिक्षा के कामों में लाने लगे। सन् १८४७ तक इस समाज के मत में ७६७ मनुष्य शामिल हुए। सन् १८५८ में २० वर्ष की अवस्था के बाबू केशवचन्द्रमेन इस समाज में आ मिले, उस समय १० वर्ष के बीच समाज बहुत उन्नति कर चुका था, बंगाल के भिन्न भिन्न देशों में उसकी शाखा नियत हो चुकी थी। देवेंद्रनाथ टैगोर और केशवचन्द्रमेन के मिला हुआ असर से चन्द इस्तमोली सुधार हो गये। केशवचन्द्रमेन की वक्तृता बड़ी हृदय ग्राहक थी। वह ब्राह्म समाज में बड़े प्रसिद्ध हुए। उनकी पुत्री का ब्याह बूचविहार के वर्तमान महाराज से हुआ। वह सन् १८८४ ई० में मर गए। कलकत्ते में ब्राह्म समाज वालों की 'तत्त्वबोधिनी प्रतिका' नामक एक अखबार निकलता है।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय सुन्दरवन छोड़ करके सूबे बंगाल का क्षेत्रफल ७०४३० वर्ग मील था। जातियों के खाने में २००६३४० कैवर्त, १५६४००० चंडाल, १०७६८५४ ब्राह्मण, १०५६०९३ कायस्थ, ७२०३०२ वा-गडी, ६१३१३२ ग्वाला, ५४७७३२ सदगोप, ५१५०४२ तेली और कालू, ४३८५४५ वैष्णव, ४०९६६२ चमार और मोची, ३८२५०६ मूण्डी, ३७४६५५ जालिया, ३२४५६८ पोठ, ३१७७८९ बनिया, २८५६२० लोहार, २५२४१८ वाठरी, २५२२९६ कुम्हार, २२८६७५ तियर, ११०५३९ राजपूत, ८७५३६ वैदिया और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे।

इतिहास—सन् ईस्वी की बारहवीं शदी के अन्त तक बंगाल में गंगा के नीचे की घाटी में बहुतेरे छोटे छोटे राजा राज्य करते थे। सन् १२०० में बंगाल में मुसलमानों का विजय आरंभ हुआ। लगभग सन् १२६० से

१३३६ तक बंगाल की हुकूमत करने वाले गवर्नरों को मुसलमान बादशाह लोग कायम करते थे । सन् १३३६ से १५३९ तक मुसलमान गवर्नर स्वाधीन रहे । सन् १५३९ में पठानों ने बंगाल को अपने अधिकार में कर लिया । सन् १५७६ में दिल्ली के बादशाह अकबर ने पठानों का विनाश करके बंगाल को मुगलों के राज्य में मिला लिया । सन् १७६५ में इण्डिया कंपनी ने बिहार और उड़ीसे के साथ बंगाल को ले लिया । प्रथम मुसलमानों ने समय समय पर हिंदुओं के तीर्थों को नष्ट भूष्ट करते थे, मन्दिरों को तोड़ते थे, इनकी धर्म पुस्तकों को जलाते थे और इनके धर्म कर्म में अनेक बांति की बाधा डालते थे; अंगरेजों के राज्य होने से यह सब विपत्ति जाती रही; हिंदू इत्यादि सब मत के लोग स्वतंत्र भाव से अपने अपने मत का पालन करने लगे ।

हवड़ा ।

कलकत्ते के सामने पश्चिम भागीरथी गंगा के दूसरे पार अर्थात् दहिने किनारे पर सूबे बंगाल के बर्द्धमान विभाग में जिले का सदर स्थान हवड़ा एक शहर है, जिसको कलकत्ते की शहरतली कहना चाहिए । जो लोग पश्चिम से कलकत्ता जाते हैं, वे हवड़े में रेलगाड़ी से उतर भागीरथी को पुल द्वारा पार होकर कलकत्ते में पहुँचते हैं । वहाँ भागीरथी पर नावों का पुल बना है । मंगल और शुक्रवार को पुल का एक भाग २ घंटे तक खोल दिया जाता है; उस मार्ग से संपूर्ण नाव और जहाज पुल से निकल जाते हैं । पुल पर बिजली की रोशनी होती है । पुल से दक्षिण बलुतेरी नाव तैयार रहती हैं, जो एक पैसे लेकर आदमी को पार उतार देती हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय हवड़ा में १,६६,०६ मनुष्य थे; अर्थात् ७०,४७७ पुरुष और ४६,१२९ स्त्रियाँ । इनमें ८६,२४७ हिंदू, २८,३६६ मुसलमान, १,८६७ कृस्तान, ५६ एनिमिष्टिक, २९ बौद्ध, १० यहूदी, ७ जैन और २४ दूसरे थे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारत वर्ष में २४ वां और सूबे बंगाल में दूसरा शहर है ।

रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील उत्तर कुछ बाड़े राजा शिववत्स बागला

बहादुर की दुमंजिली धर्मशाला बनी हुई है, जिसमें मुसाफिर लोग ३ दिन तक टिक सकते हैं। स्टेशन से दक्षिण गंगा के किनारे पर बर्नकम्पनी का बड़ा कल कारखाना है, जिसमें रेल, पुल, मकान इत्यादि के काम के लिये लोहे और पीतल के सरंजाम तैयार होते हैं। इनके अतिरिक्त हवड़े में इष्ट्र इण्डिया रेलवे का बड़ा स्टेशन, अनेक प्रकार के मिल अर्थात् कल कारखाने, बहुतेरे स्कूल और कलकत्ते के सोदागरों के दिहाती मकान बने हुए हैं और एक मजिष्टर रहता है। शिवपुर के दक्षिण प्रसिद्ध कंपनीवाग और इंजिनपरिंग कालिज है।

हवड़ा जिला—यह जिला बर्दवान विभाग में हुगली जिले के दक्षिण ४७३ वर्ग मील में त्रिभुजाकार फैला हुआ है। इसके उत्तर वालीखाल और हुगली जिले की दक्षिणी सीमा; पूर्व भागीरथी नदी; दक्षिण भागीरथी और रूपनारायण नदी और पश्चिम रूपनारायणनदी है। जिले में बहुतेरी छोटी नदियां, उलबड़िया और मिदनीपुर नहर और अनेक झील हैं। इस जिले में हवड़ा और उलबड़िया २ सबडिवीजन हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय हवड़ा जिले में ६३५३८१ मनुष्य थे; अर्थात् ५००८७० हिंदू, १३२११८ मुसलमान, २०९१ क्रिस्तान, २४२ एनिमिष्टिक, ३७ बौद्ध, १३ यहूदी, ६ ब्राह्म, ३ जैन और १ पारसी। जातियों के खाने में १५५६५३ बैरत, ५४९४३ वागड़ी, ३९१४१ ब्राह्मण, १७३७० ग्वाला, १५८४९ कायस्थ, १५६२३ तियर, १४२५० तांती, १४१३८ पोड़, १२६९२ सद्गोप और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। राजपूत कवल १०३९ थे। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय इस जिले के हवड़ा कसबे में ११६६०६ और वाली में १६७०० मनुष्य थे। जिले में शामपुर भी एक छोटा कसबा है।



चौदहवां अध्याय ।

गंगासागर

गंगासागर ।

गंगासागर-स्नान का मेला मकर की, संक्रान्ति हो, जो पौष या मार्ग में होती है, प्रतिवर्ष होता है । मेले के समय कलकत्ते में साधुओं की बहुत जमात आती है जिनको बहा के रईस लोग आंगोठ और नावों में बहा से गंगासागर भेजते हैं और खाने पीने की सामग्री उनके साथ कर देते हैं । दुकानदार भी नावही पर जाते हैं । कलकत्ते से ३८ मील दक्षिण 'डायमंड हार्वर' तक रेल है, परन्तु उससे आगे बिना नाव के काम नहीं चलता, इस लिए प्रायः सब लोग कलकत्ते से नाव और आंगोठों में चढ़कर गंगासागर जाते हैं । नाव समुद्र के भाटा होने पर दक्षिण जाती है और ज्वार होने पर दक्षिण से उत्तर को चलती है ।

य १६ रुपये पर आती जाती के लिये एक नाव भाड़ा करके उस पर सवार हो गंगासागर चला और खाने के सरजाम और दो मट्टुकेमें पानी अपने साथ लेलिया । नाव भागीरथी में दक्षिण चली ।

हवडे से ७५ बज नाव खुली और १७ घंटे पर बपनीराग ३३ घंटे पर चडियलहाट और वावडी गाव के सामने और ५ घंटे पर उलबडिया पहुँची । कलकत्ते से चडियलहाट तक गंगा के दोनों किनारे जगह जगह कलकार-खानों की ऊँची ऊँची चिमिनो देख पड़ती हैं ।

कलकत्ते से १५ मील दक्षिण भागीरथी गंगा के बाएँ किनारे पर हवडा जिले के सपडिवीजन का सदर स्थान उलबडिया एक छोटा कसबा है । छीमर हर रोज कलकत्ते के आरमेनियन घाट से खुल कर उलबडिया से नहर द्वारा मेदनीपुर, जाता है । उलबडिया से एक अच्छी सड़क मेदनीपुर, बालासोर और कटक होकर जगन्नाथपुरी तक पहुँची है ।

उलबडिया से आगे दामोदर नदी के मोहाने के सामने फुल्टा नामक एक

बड़ी वस्ती है। उससे आगे कलकत्ते से २० मील पर गंगा के दहिने मेदनीपुर जिले में लगभग ६००० मनुष्यों की वस्ती तमलूक है। वह पूर्व समय में बहुत मशहूर शहर और बौद्धों का एक वन्दरगाह था, जहाँ चीन का मुसाफिर फ्राहियन पांचवीं शदी के शुरू में सिलोन जाने के लिए उतरा था। उससे लगभग २५० वर्ष पीछे चीनीयात्री हायनतशांग ने इसको बौद्धों का प्रसिद्ध वन्दरगाह लिखा था। तमलूक में एक मन्दिर है, जिसको वहाँ के लोग 'दरगाह भामा' या मोना कहते हैं। वह स्थान एक अजीब तेहरी दीवार से घेरा हुआ है। शुरू में वह बौध मन्दिर था।

तमलूक से १५ मील से अधिक दक्षिण जाने पर भागीरथी गंगा का जल छितरा गया है। दहिने और बाएँ उस खाड़ी का जल फैला हुआ है, जिसको लोग ढोल समुद्र कहते हैं। गंगासागर के यात्री बाएँ किनारे से जाते हैं। बाएँ तरफ एक के बाद दूसरे ३ बंगले देख पड़ते हैं।

बाएँ चलने पर दो तीन घंटे में 'डायमंडहारवर' में नाव पहुँच जाती है, जो कलकत्ते से नदी की राह से ४८ मील और रेलवे द्वारा ३८ मील है।

डायमंड हारवर चौबीसपरगने जिले में एक सबडिवीजन का सदर स्थान है। उसके उत्तर हाजीपुर एक बड़ी वस्ती है। डायमंड हारवर में एक कस्टम-हौस, मुनसिफी आदि सबडिवीजन की कचहरियाँ, और चिन्नीखाल फोर्ट नामक एक छोटा किला है। रेल की ५ स्टेशन कलकत्ते से वहाँ जाती हैं। उससे २ मील उत्तर रूपनारायण नदी गंगा में गिरती है। डायमंड हारवर से आगे जाकर जहाज और आगवोट दहिने घूमते हैं और कजरी होकर, जो डायमंड हारवर से २० मील दूर भागीरथी के मुहाने के पास है, आगे समुद्र में जाते हैं।

डायमंड हारवर से चलने पर १ घंटे के पीछे चौपहला घूर्ज, ११ घंटे पर तीन महला घूर्ज, २१ घंटे पर लकड़ी का खंभा और ३ घंटे पीछे बाएँ तरफ टेंगराहाट गाँव मीला। वहाँ बाजार लगता है; वहाँ से कलकत्ते तक करीब ४८ मील एक सड़क गई है। टेंगराहाट के पास काशीपुर एक वस्ती है। उस से आगे नदी के समान तंग खाड़ी मिलती है।

दुर्गाहाट से चलने से १० घंटे पर एक दूसरी तग खाड़ी में बाएँ किनारे के पास मेरी नाव लगी, जहाँ से १२ मील आगे गंगासागर लोग बतलाते हैं । वहाँ बालिया की मँकड़ों नाव लगी थीं और जगल से मूखी लकड़ी लाकर वे लोग रसोई बनाते थे । वहाँ मट्टी के बरतन निकते थे ।

वहाँ से चलने पर ६ घंटे में गंगासागर नाव पहुँची । मार्ग में खाड़ी के दोनों तरफ सघन जंगल है और जगह जगह छोटी छोटी बालिया जगल से निर्बल कर खाड़ी में मिली हैं ।

कलकत्ते से गंगासागर; अर्थात् सागर टापू जल मार्ग से लगभग ०० मील दक्षिण है । मेरी नाव पूरे ३ दिन में वहाँ पहुँची जो तीन दिनों में ३८ घंटे चली । ज्वार होने पर नाव बाध दी जाती थी । मैं गंगासागर से लौटने पर भी ३ दिन में कलकत्ते पहुँचा ।

गंगासागर में एक खाड़ी उत्तर से आकर समुद्र में मिली है । मकर की संक्रांति के समय उस संगम से उत्तर खाड़ी के पश्चिम किनारे पर करीब १ मील जंगल काट कर मेला बसाया जाता है । मेले में सड़क निकाली जाती है । कलकत्ते से बहुत दुकानें और बंगाल से बहुत चटाइयाँ विक्री के लिये बहा जाती हैं । इस वर्ष १००० से अधिक नाव और सात आठ आगबोट उस खाड़ी में लगे थे । मेले में लाखों आदमी जुटे थे । बहुतेरे लोग नावों में रहते थे और बहुतेरे आदमी टापू पर तारपत्र की चटाइयों के घर बना कर उनमें ठहरे थे । किनारे के पास दोहरी और तेहरी नाव लगी थी । वहाँ का जमीन्दार नाववालों से फी डाढ़ ४ आना महसूल लेता है ।

मेले से पश्चिम दूर तक जंगल है, जिसमें मूखी लकड़ी बहुत मिलती है और बाघ, हरिन, सूअर इत्यादि वनैले जन्तु रहते हैं । कई साल बाघों ने कई बालियों को मार डाला था ।

ऐसा लोग कहते हैं कि गंगासागर में कपिलजी का स्थान गुप्त हो गया था, उसको वैष्णव प्रधान रामानन्दजी ने प्रकट किया । मगध के पास एक टट्टी के ओसारे में घिसी हुई बहुत पुरानी कपिलजी की मूर्ति थी, जिनके दाहिने राजा भगीरथ और बाएँ रामानन्दजी की वैसीही बहुत पुरानी मूर्ति

याँ खड़ी थीं । यात्री लोग संगम पर स्नान करके समुद्र को नारियल, फल या फूल और कोई कोई पंचरत्न (मोती, हीरा, जमूरद, पोखराज, मूंगा) चढ़ाते हैं और कपिलजी का दर्शन और पूजन करते हैं । वहाँ की बड़ी हुई पूजा अयोध्या के मठ के साधु लेते हैं । कपिलजी के स्थान से थोड़ा उत्तर मोठा जल का एक कच्चा पोखरा है, जिसमें मेले के समय कोई स्नान नहीं करने पाता; पीने के लिये घड़े में भर कर पानी लोग लेजाते हैं । पोखरे के भीण्डे पर फूस टट्टी की बनी हुई छोटी छोटी ४ कुटियाँ हैं । उससे कुछ दूर उत्तर खारा जल का दूसरा पोखरा और उससे भी उत्तर खारा जल का एक छोटा तीसरा पोखरा है, जिसके भीण्डे पर फूस टट्टी से बनी हुई साधुओं की ३ कुटियाँ बनी हैं ।

समुद्र और खाड़ियों का जल खाने पीने के काम में नहीं आता और अन्धियारी रात में उछालने पर गोड़सार की भीरआग के समान देख पड़ता है ।

गंगासागर तीर्थ में कोई पंडा नहीं रहता । मकर की संक्रांति के समय वहाँ तीन दिन स्नान होता है; किन्तु मेला ५ दिन तक रहता है । मकर की संक्रांति के अतिरिक्त कार्तिक की पूर्णिमा को भी कुछ लोग गंगासागर जाते हैं, पर उस समय बाजार तथा दुकानें नहीं जाती ।

इस समय वहाँ सागर और गंगा के संगम का चिन्ह नहीं है । पहिले उस जगह संगम था । अब उस जगह समुद्र की खाड़ी है, गंगा का मुहाना पीछे हट आया है । कुछ काल से राजमहल से कुछ आगे बढ़ कर गंगा दो धाराओं में बंट गई है;—उनमें से प्रधान धारा पूर्व में ग्वालंडों के पास ब्रह्मपुत्र से मिलकर सह्याजपुर नामक टापू के सामने समुद्र में गिरती है, इसको पद्मा तथा पद्मा कहते हैं और दूसरी धारा भागीरथी और हुगली के नाम से हुगली और कलकत्ते होकर दक्षिण को बहने के उपरान्त सागर टापू के पास समुद्र में मिली है । दोनों मुहाने के बीच में बंद दो सौ मील के फासिले में गंगा की सैकड़ों धारा समुद्र में गिरती हैं; पानी की बहुतायत से उस जगह सघन जंगल रहता है; उसी जंगल का नाम सुन्दर वन है । आसपास के लोग गंगा-सागर को सागर तीर्थ और उस टापू को सागर टापू कहते हैं । पहिले बहुतेरे

अंशुमं लड़के गंगासागर के समुद्र में फेंक दिए जाते थे । अंगरेज महाराज ने उस बाल को रोक दिया ।

एक आगजोड़ मगर की संक्रांति के समय यादियों को कलकत्ते से गंगासागर पहुंचाता है और वहां से जगन्नाथ पुरी में उनको जगन्नाथजी का दर्शन कराकर फिर कलकत्ते में पहुंचा देता है ।

सागर टापू में अब बहुत कम लोग रहते हैं । लोग कहते हैं कि उस में एक समय २००००० मनुष्य बसते थे, जो सन् १६८८ ई० की एक रात में बाढ़ से बह गए । हाल में टापू की कुछ भूमि जोती जाती है । सन् १८१२ ई० की नाप से टापू की सूखी भूमि १४३२६५ एकड़ हुई थी । कुछ दिनों तक टापू में नमक चनाया जाता था । सागर टापू में एक लाइट हाउस, जिस का काम सन् १८०८ में आरंभ हुआ; टापू के उत्तर टेलिग्राफ आफिस और दक्षिण पश्चिम के अंत में एक अजरवेदरी है । सन् १८६४ की तुफान से सागर टापू के ५६२५ मनुष्यों में से केवल १४८८ बचे ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—अतिस्मृति—(६५ वां श्लोक) जिस मनुष्य को सांप काटा हो वह समुद्र के दर्शन से शुद्ध होता है ।

महाभारत—(वनपर्व—८५ वां अध्याय) गंगा और समुद्र के संगम में स्नान करने से दस अश्वमेध का फल होता है ।

(१०७ वां अध्याय) राजा सगर के यज्ञ-अश्व उनके ६० हजार पुत्रों से रक्षित होकर जल रहित समुद्र के तट पर आने पर अंतर्धान होगया । सगर के पुत्रों ने एक स्थान पर पृथ्वी को फटी हुई देखा । तब वे उस बिलको खोदने लगे । वह बिल समुद्र था । वे खोदते खोदते पाताल तक चले गये । उन्होंने वहां देखा कि कपिलजी के पास घोड़ा घूम रहा है । तब वे लोग कपिलजी को निरादर करके घोड़ा पकड़ने को दौड़े, किंतु कपिलजी के तेजस्वी अग्नि से सब लोग जलकर भस्म होगये । (१०८ वां अध्याय) राजा सगर के पुत्र असमंजस, असमंजस के अंशुमान, अंशुमान के दिलीप और दिलीप के पुत्र राजा भीरीरथ हुए । भीरीरथ ने जब सुना कि हमारे पितरों को महारत्ना कपिल ने भस्म कर दिया था उस कारण से उनको स्वर्ग नहीं मिला तब हिमांचल पर

जाकर एक सहस्र वर्ष धोर तप किया । तब गंगाजी प्रकट होकर बोली कि हे राजन् ! तुम क्या चाहते हो । भगीरथ बोले कि कपिल के क्रोध से जले हुए हमारे पुरुषों को तुम अपने जल से स्नान कराकर स्वर्ग में पहुँचावो । गंगा ने कहा कि हे राजन् ! तुम शिवजी को प्रसन्न करो; स्वर्ग से गिरती हुई हमको वही अपने सिर पर धारण करेंगे । भगीरथ ने बैलाश में जाकर धोर तपस्या करके शिवजी को प्रसन्न किया और उनसे यही वरदान मांगा कि आप गंगा को अपने सिर पर धारण करें (१०९ वां अध्याय) जब भगवान् शिव ने राजा के वचन को स्वीकार किया तब हिमांचल की पुत्री गंगा बड़ी धारा से स्वर्ग से गिरी । गंगा को शिवजी ने भूषण के समान अपने सिर पर धारण कर लिया । गंगा शिव के सिर पर मोती की माला के समान शोभित होने लगी । उसने राजा से कहा कि कहो अब मैं किस मार्ग से चलूँ । राजा भगीरथ जिसरा राजा सगर के ६० हजार पुत्र मरे पड़े थे उधरही चले । उन्हो ने गंगा को समुद्र तक पहुँचा दिया । गंगा ने समुद्र को (जिसको अगस्त्य मुनि ने पीलिया था) अपने जलसे पूर्ण कर दिया । भगीरथ ने अपने पुरुषों को जलदान दिया ।

(११४ वां अध्याय) पांडव लोग गंगा और समुद्र के संगम पर पहुँचे । उन्होंने ५०० नदियों के संगम में स्नान किया । अनन्तर वे लोग समुद्र के किनारे किनारे कलिंग देश की ओर चले, जहां वैतरनी नदी बहती है ।

(सगर के पुत्रों के भस्म होने की और गंगा के समुद्र में आने की कथा बालमीकिरामायण में बालकाण्ड के ३८ वें अध्याय से ४३ वें अध्याय तक; मत्स्यपुराण के स्वर्ग खंड के ७८ वें अध्याय में; बृहन्नारदीय पुराण के ८ वें अध्याय में; दूसरे शिवपुराण के ११ वें खण्ड के २१ वें अध्याय से २२ वें अध्याय तक और श्रीमद्भागवत के ९ वें स्कन्ध के ८ वें और ९ वें अध्याय में है)

वाराहपुराण—(१७० वां अध्याय) गंगासागर संगम में स्नान करने से मनुष्य की ब्रह्महत्या दूर होती है ।

कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता-उत्तरार्द्ध-३६ वां अध्याय) सब समुद्र विशेष रूप से पुण्य देने वाले हैं ।

श्रीमद्भागवत—(तीसरा स्कन्ध, १३ वां अध्याय) भगवान् कपिलदेवजी

अपने पिताके आश्रम (सिद्धपुर) से माता को आवा लेकर ईशान कोण की ओर (गंगसागर में) गये । वहाँ समुद्र ने उनका पूजन कर उनके रहने का स्थान दिया । अब तक कपिलदेवजी त्रिलोक की शान्ति के निमित्त योग धारण करके उसी स्थान पर विराजमान हैं ।



पंद्रहवां अध्याय ।

(सूत्रे उड़ीसे में) कटक, तप्तकुंड, भुवनेश्वर,
और खंडगिरि ।

कटक ।

कलकत्ते के कोयलेघाट से सप्ताह में कई बार कई कंपनी के आगवोट यात्रियों को लेकर के खुलते हैं । एक आदमी का भाड़ा दो रुपया लगता है और आगवोट पर चढ़ानेवाली ढोंगी का महसूल प्रति आदमी को दो आना अलग देना पड़ता है । चाँदवाली में आगवोट से उतरना होता है । वहाँ से छोटे छोटे आगवोट नदी और नहर के मार्ग से यात्रियों को कटक पहुँचाते हैं । कटक से ५३ मील जगन्नाथपुरी तक सुन्दर सड़क बनी है । मकर की संक्रांति के समय कलकत्ते से एक कंपनी का आगवोट समुद्र के मार्ग से पुरी तक जाता है । वह यात्रियों को मकर की संक्रांति से एक दिन पहले गंगसागर में पहुँचाता है; संक्रांति के दूसरे दिन वहाँ से चल कर तीसरे दिन कलकत्ते से २७७ मील दूर पुरी में पहुँच जाता है; ३ रात पुरी में रह कर वहाँ से लौटता है और यात्रियों को लेकर उसके दूसरे दिन कलकत्ता पहुँच जाता है । एक आदमी के जाने आने का भाड़ा पहले दरजे का ५०७, दूसरे दरजे का ३०७, तृतीयानी दरजे का १८७ और तीसरे दरजे का १२७ रुपया लगता है । समुद्र साधारण तरहसे कार्तिक से फागुन तक हल्की हवा के साथ शांत रहता है, इसके भीतर की यात्रा अच्छी है ।

मैं एक बड़े आगबोट में, जिसपर रात्रि में बिजली की रोशनी होती है, कोयलेघाट पर चढ़ा। आगबोट सवेरे ५ बजे खुला और १० बजे सत को चांदवाली में पहुँच कर चैतरनी नदी में लग गया। वहाँ बाजार है और यात्रियों के टिकने के लिये मोदियों के पकान बने हैं। कलकत्ते से जल के मार्ग से ३ मील कंपनीबाग, ६ मील रायगंज, २९ मील फल्टाहोस, ३६ मील लोवर फल्टा, ४८ मील डायमंड हारवर, ६८ मील कजरी और लगभग २०० मील चांदवाली है। चांदवाली से १२ कोस पश्चिम चैतरनी नदी के किनारे पर जाजपुर है, जिसका वृत्तान्त आगे मिलेगा। चांदवाली से छोटे छोटे आगबोट कटक जाते हैं। मैं दूसरे दिन दस बजे दिन में आगबोट पर चढ़ा। आगबोट चैतरनी नदी, ब्राह्मनी नदी और एक नहर में क्रम क्रम से चल कर २३ घंटे में कटक के जोवरा घाट पर (महानदी के दहिने तीर पर) पहुँच गया। मार्ग में स्थान २ पर नहर के फाटकों के पास मुसाफिर आगबोट पर चढ़ते उतरते थे।

कटक कसबे से कई एक सड़कें निकली हैं;—एक सड़क दक्षिण पुरी को; दूसरी पूर्वोत्तर जाजपुर, बालेश्वर और मेदनीपुर को तथा मेदनीपुर से पूर्व कलकत्ते को और उत्तर बाँमुडा हो कर रानीगंज को; तीसरी पश्चिमोत्तर अंगोल हो कर संभलपुर को और चौथी सड़क दक्षिण-पश्चिम रंभा, गंजाम, ब्रह्मपुर, राजमहेंद्री और वेलोर होकर बिजवाड़े को गई है।

सूबे उड़ीसे में (२० अंश, २९ कला, ४ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५४ कला, ९ विकला, पूर्व देशांतर में) महानदी के दहिने किनारे पर महानदी और उसकी शाखा काठजूड़ी के मेल के निकट सूबे उड़ीसे की राजधानी, कटक जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान शहर कटक है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कटक में ४७१८६ मनुष्य थे; अर्थात् २५२३५ पुरुष और २१९५१ स्त्रियाँ। इनमें ३६५०८ हिंदू, ८३९२ मुसलमान, २२४० क्रिस्तान, ४१ जैन, ३ बौद्ध और २ दूसरे थे। मनुष्य-गणना के अनुसार यह भारतवर्ष में ८१ वां और सूबे उड़ीसे में पहिला शहर है।

कटक शहर के उत्तर और पूर्व महानदी और पश्चिम काठजूड़ी नदी बहती है। बरसात में महानदी बहुत बढ़ जाती है। शहर को बाढ़ से

बंधाने के लिये काठजूड़ी के एक किनारे पर नीचे से ऊपर तक पत्थर के ढोंकों से बांध बनाया गया है। नदियों की धाराओं को काबू में लाने के लिये कटक के पास मशहूर बांध बनाये गये हैं; जिनमें से चिरुपा नदी का बांध लगभग दो हजार फीट लंबा और ९ फीट ऊंचा, जिससे उड़ीसे के खेतों को पटाने के लिये २ नहर निकली हैं और महानदी का बांध ६४०० फीट लंबा और १२½ फीट ऊंचा है। महानदी का बांध सन् १८६९—१८७० ई० में तैयार हुआ; उसके बनाने में लगभग १३ लाख रुपया खर्च पड़ा।

कटक के जोवरा नदी के पास जोवरा घाट पर महानदी में आगबोट लगते हैं और उसी घाट के पास आगबोट बनाने का कारखाना है। जोवरा-घाट से १ मील कटक शहर का बसरी बाजार और २ मील बालू बाजार और चौधरी बाजार है। बालू बाजार में प्रधान दुकानें हैं। कटक शहर सोने और चांदी के गहने के लिये प्रसिद्ध है। इसके समान साफ और सुन्दर चान्दी के गहने हिन्दूस्तान में दूसरी किसी जगह भी नहीं बनते हैं। कटक सूवे उड़ीसे में प्रधान तिजारती जगह है। बीमारी फैलने के डर से सर्वसाधारण यात्री शहर के भीतर जाने नहीं पाते हैं।

छावणियों के बीच में और किले को जाती हुई सड़क के दहिने ढाक घंगाला है। उसमें करीब ४०० गज बाद परेडकी जमीन है। शहर से लगभग १ मील दूर काठजूड़ी नदी के दक्षिण किनारे पर १४ वीं शदी के राजा अनंग-भीमदेव का बनवाया हुआ "धारह बटी" नामक एक पुराना किला है, जो अब मट्टी के टीलों का सिलसिला हो गया है। उसकी खाई के पत्थर सन् १८७३ में एक अस्पताल बनाने के लिये और किले के पत्थर "फर्न्सफाईन्ट" के पास "लाइटहाउस" बनाने के लिये ले लिये गये थे। किले के पूर्व की दीवार में एक फाटक और फतेहख़ां की मसजिद है। नहर के पुल के आगे दहिने ओर कपिशनर की कचहरी एक बड़ी इमारत है। इनके अलावे कटक में दीवानी और फौजदारी की कचहरियां, पुलिस-स्टेशन, अस्पताल और स्कूल हैं।

कटक से बुध के दिन तीन कम्पनियों के छोटे छोटे कई आगबोट खुलकर चान्दवाली जाते हैं, जिनके यात्री बड़े आगबोटों पर चढ़कर चान्दवाली से

समुद्र की राहसे कलकत्ते पहुंचते हैं । हर शनीचर को एक छोटा आगवोट कटक से खुल कर आवा के पास समुद्र में जानेवाले आगवोट पर मोसाफिरी को चढ़ाता है; वह बड़ा आगवोट कलकत्ते जाने के लिये आवा से सोमवार को खुलता है । एक गवर्नमेंट आगवोट कटक से नहर होकर सप्ताह में दो बार भद्रक को जाता है । बी. आई. एस. एन. कम्पनी का आगवोट मदरास और दूसरे बन्दरगाहों के लिये “फलस पाइंट” के पास मोसाफिरी को चढ़ाता है । एक छोटा आगवोट कटक और फलसपाइंट के बीच में आता जाता है और कलकत्ते और बम्बे और किनारों के दूसरे बन्दरगाहों के मोसाफिरी को उतारता चढ़ाता है । कटक से ६४ मील फलसपाइंट है; इसमें से ५४ मील नहर की राह है । आम तवर से मार्ग में २४ घंटे लगते हैं । कटक छोड़ने के आधे घंटे बाद बोट फाटक से निकलता है और केन्द्रपारा नहर में प्रवेश करता है । नहर के दो हिस्सों में हो जाने की जगह पर वह ६ घंटे में पहुंचता है । नहर की दहिनी शाखा परसूचाट को और बाएँ वाली चान्दवाली के लिये आवा को गई है ।

महानदी मध्य देश के रामपुर जिले में नवगढ़ के पास से निकल कर संभलपुर होकर ५३० मील पूर्व-दक्षिण बहने के उपरान्त कटक से पचास साठ मील पूर्व “फलसपाइंट” के पास समुद्र में मिली है । फलसपाइंट लाइट हाउस से एक तरफ कलकत्ता २१७ मील और दूसरी तरफ जगन्नाथपुरी ६० मील है ।

रेलवे लाईन दक्षिण-पश्चिम से बेजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटक के पास तक तैयार हो चुकी है और पूर्वोत्तर से मेदनीपुर तथा बालेश्वर होकर कटक तक कई एक बर्षों में तैयार हो जायगी ।

कटक से दक्षिण-पश्चिम “सदर्न भरहठा रेलवे” के बेजवाड़े के स्टेशन तक “इंष्ट्र कोष्ट रेलवे” की लाइन बन गई है; पर अभी गाड़ी नहीं चलती ।

(१) कटक से दक्षिण-पश्चिम “इंष्ट्र कोष्ट रेलवे,” जिसका महसूल फी मील २ पाई होगा—

मील प्रसिद्ध स्टेशनों के फासिले;
शहर से ६ मील कटक
रोड से—
१२ भुवनेश्वर ।

२२ खुर्दा रोड (जटनी) ।

८४ रंभा ।

११४ ग्रहपुर ।

१२९ इच्छापुर ।

२०५ चीकाकोल रोड ।

२४८ विजयानगरम् ।

२८४ विजयापट्टन ।

३६९ कोकानद घन्दर ।

३७८ समालकोट जंक्शन ।

४१० राजमहेन्द्री ।

५०८ बेजवाड़ा जंक्शन ।

खुरदा रोड से एक-

लाइन जगन्नाथपुरी को

जायगी ।

(२) बेजवाड़ा से पश्चिम-दक्षिण "सदर्न मरहटा रेलवे," जिसके तीसरे दर्जे का महमूल फी मील २ पाई है—

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

७ मंगलगिरि ।

१९१ गंतूर ।

१८८१ नदियाल ।

२३६ कर्नूल रोड ।

२७९ गुंटकल जंक्शन ।

(३) कटक से रामेश्वर का फासिला रेलवे द्वारा—

मील एक जगह से दूसरी जगह—

५०८ कटक से बेजवाड़ा जंक्शन ॥

२७९ बेजवाड़ा से गुंटकल जंक्शन ।

१९२ गुंटकल से रेनिगुंटा जंक्शन ।

४१ रेनिगुंटा से आरकोनम् जंक्शन ।

१८ आरकोनम् से कांचीवरम् ।

२२ कांचीवरम् से चिगलपट्टम्

११६ चिगलपट्टम् से चिदंबरम् ।

४२ चिदंबरम् से कुंभकोनम् ।

२५ कुंभकोनम् से तंजोर जंक्शन ।

३४ तंजोर से त्रिचनापली फोर्ट ।

९३ त्रिचनापली फोर्ट से मदुरा ।

१३७० जोड़ ।

१०१ सड़क द्वारा मदुरा से रामेश्वर ।

१४७१ कटक से रामेश्वर ।

रेनिगुंटा जंक्शन से ६

मील त्रिपती (बालाजी),

आरकोनम् जंक्शन से

४३ मील मदुरास और

त्रिचनापली फोर्ट से सड़-

क द्वारा ३ मील श्रीरंग-

जी हैं ।

जो आदमी एकही यात्रा में जगन्नाथजी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरी-

नारायण जाना चाहे उनको नीचे लिखे हुए रास्ते से जाना चाहिये ।

मील नाम स्थान—

१३७० कटक से मधुरा, वेजवाड़ा गुंटकल जंक्शन, आरकोनम् जंक्शन, कांची और चित्रनापल्ली होकर ।

११०२ मधुरा से बम्बई, गुंटकल और पूना होकर ।

१००९ पोरबन्दर से हरिद्वार; महसाना जंक्शन अजमेर, गाजियाबाद और सहारनपुर होकर ।

९१९ मील काठगोदाम से कलकत्ता; सीतापुर, लखनऊ, बनारस, मुगलसराय, पटना और वैश्यानाथ होकर ।

८४०० मिजान रेल के रास्ते का कटक से कलकत्ते तक ।

१०६ कटक से जगन्नाथपुरी और जगन्नाथपुरी से कटकतक, बैलगाड़ी की सड़क ।

२०२ मधुरा से रामेश्वर और रामेश्वर से मधुरा तक; बैल गाड़ी की सड़क ।

३७५ बम्बई से द्वारिका; आगवोट द्वारा ।

५६ द्वारिका से पोरबन्दर, आगवोट द्वारा ।

४१७ हरिद्वार से काठगोदाम, केदारनाथ, बदरीनाथ और मीलचौरी होकर पहाड़ी राह ।

२६० कलकत्ता से कटक आगवोट द्वारा ।

१४१६ जोड़ खुसकी और जल के मार्ग का ।

५८१६ जोड़ रेलवे, खुसकी और जल के मार्ग से, कटक से, पुरी, रामेश्वर, द्वारिका और बदरीनाथ होकर कटक तक ।

कुछ लोग रामेश्वर जाने के लिये कटक से जल और थल (अर्थात् सड़क) के मार्ग से प्रायः समुद्र के किनारे किनारे रंभा, गंजाम, ब्रह्मपुर, चिकाकोल, विजयानगरम्, सावलकोटा, राजमहेंद्री, धवलेश्वर, वेलौर, वेजवाड़ा, नैटोर, बंधकटगिरि आदि प्रसिद्ध स्थानों को होकर रैनिगुन्टा जंक्शन में जाकर रेल-गाड़ी में चढ़ते हैं । कोई कोई आदमी वेजवाड़े के स्टेशन पर रेलगाड़ी में

सवार हो गुन्टकाल जंक्शन होकर रैनिगुन्टा जाते हैं । राजमहेंद्री के समीप गोदावरी नदी और वेजवाड़े के निकट कृष्णा नदी पार उतरना पड़ता है । वेजवाड़े से ३ कोस मगलगिरि पर पन्नानृसिंह हैं । यह पैदल का मार्ग कुशदायक है, किन्तु अब इस मार्ग में रेल बन गई ।

कटक जिला—यह उड़ीसा विभाग के मध्य का जिला ३५१७ वर्ग मील में फैला है । इसके उत्तर वैतरनी नदी और दमरा कोल, जो बालेश्वर जिले से इसको अलग करते हैं; पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण पुरी जिला और पश्चिम उड़ीसा का मालगुजार राज्य है । जिले का सदर-स्थान कटक है । इस जिले की अनेक पहाड़ियों पर देव स्थान और छोटे छोटे पुराने किले देखने में आते हैं । उदयगिरि पहाड़ी पर पवित्र तालाब और हीन दशा में पड़े हुए अनेक मंदिर और गुफाएँ हैं । जिले की सत से ऊँची पहाड़ी २५०० फीट ऊँची है । देशी राज्य में एक पहाड़ी की महाविद्या चोटी पर एक प्रसिद्ध शिव मंदिर है । जिले के उत्तरी सीमा पर वैतरनी नदी, दक्षिण भाग में महानदी और माय में ब्राह्मणी नदी बहती है । ये तीनों नदियाँ दमरा, महानदी और देवी इन तीन समुद्र के कोलों द्वारा समुद्र में मिली हैं । बालेश्वर जिले में दमरा गाँव के निकट बंदरगाह है । कटक जिले में ४ नहर भी बनी हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय कटक जिले में १७३८१६५ मनुष्य थे; अर्थात् १६८७६०८ हिंदू, ३७२५९ मुसलमान, २३३१ कृस्तान, ८५७ आदि निवासी इत्यादि, १०४ सिक्ख, ३ बौद्ध, और ३ ब्राह्म । जातियों के खाने में ३३९४२५ खंडाइट, १७७१९३ ब्राह्मण, १४०८७० ग्वाला, १०३३१४ चासा, ७८९६७ पान, ७३८८२ कंधारा, ५८५५९ तेली, ५६८१९ बाउरी, ५३४३६ शूद्र, ४६८९८ कैंबट, ४१७७७ ताती, ४१७६१ कान, ३२७०९ बनियाँ, २४७९० गोंड, १०७८२ राजपूत और शप में भुडया, खरवार, खाद, सनर इत्यादि थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय कटक जिले के कसरे कटक में ४७१८६, केन्द्रपाडा में १७६४७ और जाजपुर में ११९९२ मनुष्य थे । उस जिले में खुर्दा एक प्रसिद्ध वस्ती है ।

इतिहास—कटक जिले का इतिहास उड़ीसे के इतिहास में सापेक्ष है । केशरी वंश के एक प्रतापी राजा नृपति केशरी ने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहर को बसाया और केशरीवंश की राजधानी भुवनेश्वर को छोड़ कर कटक में रहने लगा । अंगरेजों ने सन् १८०३ ई० में उड़ीसा देश के विजय करने के समय कटक के पुराने किले को ले लिया । वह किला हीन दशा में अवतक विद्यमान है ।

सूवे उड़ीसा—बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन बिहार, बंगाल, छोटानागपुर और उड़ीसा ये ४ सूवे हैं,—इनमें से सूवे उड़ीसे का प्रधान शहर और उसकी राजधानी कटक है । सूवे उड़ीसे के उत्तर और पूर्वोत्तर सूवे छोटा नागपुर और सूवे बंगाल, पूर्व और दक्षिण पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण मद्रास हाता और पश्चिम मध्यदेश है । इस सूवे का क्षेत्रफल २४२४० वर्ग मील है, जिनमें से भीतर की ओर १५१८७ वर्ग मील उड़ीसे के मालगुजार राज्य और समुद्र के किनारे की ओर ९०५३ वर्ग मील अंगरेजी राज्य है । उड़ीसे की नदियों में महानदी, ब्राह्मणी, वैतरनी, सुवर्णरेखा और मिलंदी नदी और मंदिरों में भुवनेश्वर, जगन्नाथ जी और कोनार्क के मंदिर प्रधान हैं । उस सूवे की पहाड़ियों में कई बौद्ध गुफाएँ बनी हुई हैं ।

उड़ीसे के अंगरेजी राज्य में कटक, पुरी, बालेश्वर, बांकी और अंगोल ये ५ जिले हैं । सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय अंगरेजी राज्य में ३७३०७३५ मनुष्य थे, अर्थात् ३६३४०४९ हिंदू, ८५६११ मुसलमान, ६९३० जंगली और पहाड़ी इत्यादि, ३९८२ कृस्तान, १५२ सिक्ख, ७ बौद्ध, ३ ब्राह्म, और १ यहूदी । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय कटक जिले के कसबे कटक में ४७७४६, केंद्रपाड़ा में १७६४७ और जाजपुर में ११९९२; पुरी जिले के पुरी कसबे में २८७९४ और बालेश्वर जिले के बालेश्वर कसबे में २०७७५ मनुष्य थे ।

सूवे उड़ीसे के अंगरेजी राज्य के ५ जिलों में से बांकी और अंगोल ये दोनों पहिले देशी मालगुजार राज्य थे । सन् १८४० में बांकी और सन् १८४७ में अंगोल का राज्य अंगरेजी सरकार ने छीन लिया । अब ये अंगरेजी मिल-

क्रियत हैं । सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय बांकी जिले के ११६ वर्गमील क्षेत्रफल में ५६९०० मनुष्य थे, अर्थात् ५६६१९ हिंदू, २७० मुसलमान और ११ कृस्तान और अंगोल जिले के ८८१ वर्ग मील क्षेत्रफल में १०१९०३ मनुष्य थे; अर्थात् १००३६६ हिंदू, २७५ मुसलमान, ६ कृस्तान और १२५६ आदि निवासी इत्यादि ।

सूवे उड़ीसे के प्रायः सब लोग काले और सांवले रंग के होते हैं । वे अपने सिर पर बड़े घेरे का शिखा रखते हैं । प्रायः सब हिंदू सर्वदा अपनी दाढ़ी और मूछ मुढ़वाते हैं । उड़ीसे में बहुतेरे लोगों को हाथीपांव की बीमारी होती है । बंगाल के अपेक्षा वहां के लोग गंवार होते हैं । सूवे बंगाल के समान वहां के लोगों का भी साधारण भोजन मछली और भात है । वे लोग पान बहुत खाते हैं ।

उड़ीसे में उड़िया अक्षर प्रचलित है । सरकारी कचहरियों में भी उड़िये अक्षर में काम होता है । बहुतेरे ग्रन्थ ताड़ पत्तों पर उड़िये अक्षर में लिखे हुए हैं और लिखे जाते हैं । ताड़के पत्तों पर एक तरह के कांटे से बिना स्याही के अक्षरों की छकीयें लिखी जाती हैं ।

वहां के लोग २½ या ३ मील को एक कोस कहते हैं । वहां आटा कम होता है; बर्तन काले रंग के होते हैं; परन्तु पुरी में नहीं । समुद्र के निकट नमक बनता है । उड़ीसे में १०५ रुपये के वजन का सेर चलता है । चावल आदि कच्ची रसोई की सामग्री सर्वत्र मिलती हैं । बहुतेरे तालाबों और पोखरियों के जल गंदे होते हैं । उड़िये लोग चसी का जल पीते हैं और चसी के किनारे मल मूत्र त्याग करते हैं । उड़ीसे का जल वायु बड़ा रोगकारक है । सरकार बीमारी फैलने के भय से कटक आदि शहरों में सर्व साधारण परदेशी मुसाफिरों को जाने नहीं देती है । शहर और बड़ी चटियों के मकानों में आइन के नियम के मोताबिक मुसाफिर टिक सकते हैं; अधिक मुसाफिरों को टिकाने से मकान के मालिक की सजा होती है । वहां के लोग चैतन्य महाप्रभु को विष्णु का अवतार मान कर उनकी पूजा करते हैं और अपने अपने मकान के पास उनकी पूजा के लिए एक छोटा मृद खाकी रखते हैं । चैतन्य ने वैष्णव के मत की शिक्षा संपूर्ण बंगाल और उड़ीसे में फैलाई ।

उडिया
बुरीमाला

[illegible][illegible]

चैतन्य महाप्रभु का जीवन चरित भारत भ्रमण के इसी खंड के नदिंया के चर्चात में है।

उड़ीसे में १७ मालगुजार राज्य हैं। उनके उत्तर सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पूर्व उड़ीसे का अंगरेजी राज्य; दक्षिण मदरास हाते का गंजाम जिला और पश्चिम मध्य देश में पटना, सोनपुर, बामड़ा इत्यादि देशी राज्य और छोटे नागपुर में कई छोटे देशी राज्य हैं। उड़ीसे के मालगुजार राज्यों का त्रिज नीचे है—

नं०	मालगुजार राज्य	क्षेत्रफल वर्ग मोल	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	तसखोसो मालगुजारी रुपया	गवर्नमेन्ट का 'कर' रुपया
१	मोरभंज	४२४३	३८५७३७	३३२०९०	१०६०
२	धंकेल... ..	१४६३	२०८३१६	१०९१००	५९००
३	बोहं	२०६४	१३०१०३	१००००	८०.
४	कयोझोर	३०९६	२१५६१२	९००००	१९७०
५	नयागढ़	५८८	११४६२२	५००००	५५२०
६	बरवा... ..	१३४	२९७७२	२८३६०	१४००
७	खांडपाड़ा... ..	२४४	६६२९६	२४४५०	४१२०
८	दसपला	५६८	४१६०८	२००००	६६०
९	नीलगिरि... ..	२७८	५०९७२	१९४५०	३९००
१०	रानापुर	२०३	३६५३९	१५०००	१४००
११	अठगढ़	१६८	३१०७९	१४९४०	२८२०
१२	नरसिंहपुर... ..	१९९	३२५८३	१२०००	१४५०
१३	तालचर	३९९	३५५९०	१२०००	१०३०.
१४	अठमलिक	७३०	२१७७४	११०००	४८०
१५	हिन्डोला	३१२	३३८०२	१०,०००.	५५०
१६	टिगरिया	४६	१९८५०	८०००	८०
१७	पलहरा	४५२	१४८८७	५०००	+
	जोड़। .	१५१८७	१४६९१४२	७७१३१०	३३२२०

इन राजाओं में मोरभंज, धंकेल, घोड, कयोशोर, नयागढ़ इत्यादि के बहु-तेरे राजा-राजपूत हैं । पलहरा राज्य के गवर्नमेंट का कार कयोशोर में सामिल है । सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इन राज्यों में से केवल खाड-पाडा वस्ती में ५ हजार से अधिक याने ५०५१ मनुष्य थे ।

उड़ीसे के मालगुजार राज्यों में बहुत पहाड़ी सिल सिले हैं । भीतर की ऊंची भूमि पर महानदी, ब्राह्मणी और वैतरनी ये ३ बड़ी नदियाँ बहती हैं । जंगलों का दृश्य मनोरम है । समतल भूमि पर हिन्दू उड़िया लोग, जो आमादी के तीन चौथाई हैं, बसते हैं और पहाड़ियों पर आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली लोग निवास करते हैं । उनमें खाद अधिक प्रसिद्ध है, जो केवल खेती और लडाई का काम करते हैं । उनके देवते बहुत हैं, जिनको वे लोग रुधिर चढ़ाते हैं । उनमें पृथ्वी देवी प्रधान है, जिसको वर्ष में दो बार खेत बाने और काटने के समय मनुष्य बलि दिए जाते थे, उस मनुष्य को तबसे वे बांध कर उसको टुकड़े टुकड़े करके प्रत्येक खेत में एक टुकड़ा गाड़ा जाता था । जब सन् १८३५ ई० में बहा अङ्गरेजी राज्य हुआ, तब नर उल्लिखान रोका गया और उस काम के लिये अंगरेजी अफसर नियत किये गये ।

एक जाति जुआग या पटुआ कहलाती है, उस जाति के लोग पहले नंगे रहते थे । उनकी स्त्रियाँ अपने आगे पीछे पतो के गुच्छे लटकाती थीं । सन् १८७१ ई० में बहा के अङ्गरेजी अफसर ने उनको पहनने के लिए कपड़े के टुकड़े दिये, तबसे वे कपड़े पहनने लगी ।

इतिहास—उड़ीसे के पूर्व काल का इतिहास तार के पत्तों पर लोहे के कलम से बिना रोशनाई के लिखा हुआ है । उसमें महाभारत के समय से वर्तमान समय तक के १०७ राजाओं के नाम हैं और लिखा है कि पहले के १२ राजाओं ने ३ हजार वर्ष से अधिक राज्य किया था, जिनमें से पहले के ३ राजाओं ने, जिनका नाम महाभारत में है, लगभग १३०० वर्ष राज्य किया ।

उड़ीसे का ठीक इतिहास सन् ईस्वी के पहिले १४०७ और १०३६ वर्ष के बीच से या राजा शंकरदेव के उत्तराधिकारी गोतमदेव के समय से आरंभ

होता है । उस वंश के छठवें राजा महेंद्रदेव के राज्य के समय में शहर राज-
महेंद्री बसाई गई और राजधानी बनी । वह राजा सन् ईस्वी के पहिले
१०३७ और ८२२ के बीच में था । सन् ईस्वी के चार पांच सौ वर्ष पहिले
से उसके आरंभ तक उड़ीसे में बौद्ध लोगों का राज्य था । सन् ईस्वी के
५० वर्ष पहिले से ३१९ वर्ष पीछे तक का इतिहास ताड़ के पत्तों के लेख में
नहीं है । यह जान पड़ता है कि उसी समय में उड़ीसे की पहाड़ियों और
घटानों में काट कर गुफा और मठ बनाये गये । उड़ीसे के घटानों पर के राजा
अशोक के समय के शिला लेखों से और बौद्ध गुफाओं से निश्चय होता है
कि ईसा के ४०० वर्ष पहिले से और लगभग ३०० वर्ष पीछे तक उड़ीसे में खास
करके बौद्धों की प्रधानता थी ।

सन् ४७४ ई० में केशरी वंश के राज्य के नियत करने वाला राजा
ययातिकेशरी उड़ीसे पर आक्रमण करने वाले यावानों को खदेर कर उड़ीसे
का राजा बना । उसकी राजधानी भुवनेश्वर कसबा था । उसी समय भुवने-
श्वर का बड़ा मंदिर बनाया गया । केशरी वंश के राजाओं के पहिले के उस
वंश के राजा बौद्धमत के थे । केशरी वंश के एक प्रतापी राजा ने, जिसका
राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहर को बसाया । सन् ११३२
में केशरी वंश के राज्य का अंत होगया; गंगा वंश का एक राजा दक्षिण से
आकर उड़ीसे में राज्य करने लगा । केशरी वंश के राजा शैव थे; किंतु
गंगा वंश के राजा वैष्णव हुए । इस वंश के पांचवें राजा अनंगभीमदेव ने,
जिसने सन् ११७५ से १२०२ तक राज्य किया था, जगन्नाथजी के वर्तमान
मंदिर को बनवाया । यह उड़ीसे के सब से बड़े राजाओं में से एक था ।
कबीरजी ने सन् १३८० और १४२० के बीच में उड़ीसे में धर्म उपदेश किया
था और चैतन्य महामु ने, जो सन् १४८५ से १५२७ तक थे, उड़ीसे के लोगों
को शिक्षा दी थी । उड़ीसे में घर घर चैतन्य महामु की पूजा होती है ।
सन् १५३२ में गंगा वंश का अंतिम राजा मर गया, उसके दीवान ने सन्
१५३४ में उस वंश के सब लोगों को मारकर उस राज्य को ले लिया ।

सन् ५६७—६८ में बंगाल के अफगान मुसलमान मुहम्मद ने उड़ीसे के

स्वाधीन हिंदू राजा को जाजपुर की दीवार के भीतर परास्त किया । उसने पुरी को भी ले लिया । हिंदू राज्य का अंत हो गया । मुलेमान का पुत्र दाउदखां दिल्ली के बादशाह की आधिपत्या छोड़ कर स्वाधीन बन गया, इस लिये मुगल और अफगानों को लड़ाई हुई । सन् १५७४ में अफगान लोग परास्त हुए । सन् १५७८ में दूसरी बार अफगानों के परास्त होने पर उड़ीसा देश अकबर के राज्य का एक भाग बना । सन् १७५१ में महाराष्ट्रों ने मुगलों से उसको जीत लिया । सन् १८०३ में अंगरेजों ने उड़ीसे पर आक्रमण करके उसको अपने अधिकार में कर लिया ।

उड़ीसे के माजगुजार राजाओं में से अंगोल के राजा ने सन् १८४७ में बगावत किया, इसलिये उसका राज्य अंगरेजी सरकार ने छीन लिया और बांकी के राजा पर सन् १८४० में सून का मुकदमा साबित हुआ, इस कारण से उसका राज्य अंगरेजी राज्य में मिला लिया गया ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(आदिपर्व, १०४ वां अध्याय)

बली नामक राजा की सुदेष्णा स्त्री से एक अंधे ऋषि ने संभोग किया जिससे अंग, वंग, कलिंग, पुंड्र और सुध ये ५ पुत्र उत्पन्न हुए, जिनके नाम से एक एक देश हो गए । उनमें से कलिंग के नामसे कलिंग देश हुआ । (वनपर्व ११४ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण वनवास के समय पर्यटन करते हुए गंगासागर तीर्थ में स्नान करके समुद्र के तीर तीर चले । उन्होंने कलिंग देश में वैतरणी नदी पार उतर कर वहां पितरों का तर्पण किया । पीछे वे लोग उसस्थान से दक्षिण की चलते चलते महेन्द्राचल पर्वत पर पहुँचे । कूर्मपुराण—(ब्राह्मीसंहिता, उत्तरार्द्ध, ३८ वां अध्याय) कलिंग देश के पश्चिमार्द्ध । अमरकंटक पर्वत से नर्मदा नदी निकली है (ऊपर के लेखों से ज्ञात होता है कि मूवे उड़ीसे और मध्यदेश इन दोनों में कलिंग देश है) ।

लिंगपुराण—(६५ वां अध्याय) सूर्य का पुत्र मनु और मनु का पुत्र सुधुम्न हुआ । सुधुम्न के उत्कल, गय और विनताश्व ये ३ पुत्र जन्मे, जिनसे नामसे एक एक देश हो गये । उनमें से उत्कल के नाम से उत्कल देश हुआ । आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) समुद्र के उत्तर भागमें विरज क्षेत्र

(नाजपुर) में बैतरनी नदी है; इस तीर्थ के अतिरिक्त उत्कल देश में अन्य भी अनेक पवित्र तीर्थ हैं और पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं (ऊपर के लेखों से जान पड़ता है कि कलिंग देश का एक भाग उत्कल देश है) ।

आदि ब्रह्मपुराण—(२७ वां अध्याय) दक्षिण के समुद्र के समीप में ओड़ देश विख्यात है, जिसमें कौणादित्य सूर्य (अर्थात् कौणार्क) रहते हैं (ओड़ देश का अपभ्रंश उड़ीसा देश है; उड़ीसे का नाम उत्कल और ओड़ पुराणों में सिद्ध होता है) ।

तप्तकुण्ड ।

कटक शहर से २५ मील पश्चिम पुरी जिले का एक सब डिवीजन का सदर स्थान खुरदा एक बड़ी वस्ती है, जिसमें जगन्नाथपुरी के राजा के पूर्वज लोग रहते थे । वहां पुराने किले की निशानी अब तक विद्यमान है; एक मजीष्टर रहता है और बाजार लगता है । सन् १८१८ ई० से १८२८ तक जिलेका सदर स्थान खुरदा था । एक सबक कटक से खुरदा हो कर गंजाम को गई है ।

खुरदा से ६ मील पश्चिम बाघमारी गांव के समीप तप्तकुण्ड नामक एक झूप है, जिसका उष्ण जल सर्वदा खोलता रहता है । झूप से थोड़ी दूर पर एक पोखरे के निकट हाटकेश्वर महादेव का मंदिर है । वहां मकर की संक्रांति के समय एक मेला होता है । मेला एक मास रहता है । उसमें कपड़े, वर्तन आदि की दुकानें जाती हैं ।

भुवनेश्वर ।

कटक से दक्षिण जगन्नाथ-पुरी तक ५३ मील बैलगाड़ी की सड़क है । सड़क के किनारों पर मील के पत्थर लगे हैं । दो ढाई रुपये के किराये पर एक बैलगाड़ी कटक से पुरी तक जाती है ।

कटक से १९ मील दक्षिण भुवनेश्वर वस्ती है । कटक से चलने पर २ मील आगे एक चट्टी, (उसमें आगे १ मील तक नदी का बालू) ३½, ४½, ७½ और १३½ मील पर एक एक चट्टी मिलती है । पिछली चट्टी से आगे नदी

भोग मन्दिर के पूर्व सिंह दरवाजे पर सिंह की २ मूर्तियाँ हैं। घेरे के भीतर हिंदुओं के सिवाय दूसरा कोई नहीं जाने पाता है। भुवनेश्वर शिव की पूजा नीचे लिखे हुए क्रम से नित्य होती है;—

१ भोर को घंटी बजा कर यह जगाये जाते हैं।	१२ मिठाई का भोग लगाया जाता है।
२ आरती की जाती है।	१३ दोपहर के बाद स्नान कराया जाता है।
३ मुख धोलाया जाता है।	१४ वस्त्र पहनाये जाते हैं।
४ स्नान कराया जाता है।	१५ दूसरा भोग लगाया जाता है।
५ कपड़ा पहनाया जाता है।	१६ दूसरा स्नान कराया जाता है।
६ दाना, मिठाई, दही और नारियल का जलपान कराया जाता है।	१७ बहुमूल्य वस्त्र पहना कर पुष्प और इतर चढ़ाया जाता है।
७ पूरी आदि से प्रधान भोग लगाया जाता है।	१८ भोग लगाया जाता है।
८ छोटा जलपान कराया जाता है।	१९ एक घंटे बाद रात को भोग लगाया जाता है।
९ मामूली जलपान कराया जाता है।	२० डमरू लिए और नृत्य करते हुए पंचमुखी महादेव की मूर्ति रखी जाती है।
१० कच्ची और पकी भोग लगाया जाता है।	२१ सोने के समय आरती होती है।
११ दोपहर के बाद घाजा बना कर शिव जगाए जाते हैं।	२२ सोने के लिये सय्या बिछाई जाती है।

बहुतेरे यात्री नृत्यमंडप के भीतर जगन्नाथपुरी के समान सब वर्ण एकही चक्ती में बैठकर भोग लगी हुई कच्ची रसोई खातें हैं, पर मंडप से बाहर कोई नहीं खाता और बहुतेरे लोग पकी प्रसाद लेते हैं। पंडे लोग कहते हैं कि जमीन की आमदनी से भोग राग में नित्य २५ रुपया खर्च होता है। पुरी के यात्री पुरी जाने के समय या पुरी से लौटने पर भुवनेश्वर में जाते हैं।

घेरे के बाहर बहुतेरे छोटे मन्दिर और पूर्वोत्तर के कोने के पास चबूतरा है। उसके बाद पूर्व १०८ छोटे मन्दिरों से घेरा हुआ एक तालाब है। वड़े मन्दिर के दक्षिण २० एकड़ का जंगल है। लोग कहते हैं कि कलित इन्द्र-

के घाट का मैदान है, जिसमें आगे पुरी की सड़क और दहिने ओर भुवनेश्वर की राह गई है । पिछली चट्टी से लगभग ५१ मील भुवनेश्वर है ।

सूबे उड़ीसे के पुरी जिले में (२० अंश, १४ कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५२ कला, २६ विकला पूर्व देशांतर में) भुवनेश्वर, रामेश्वर, कपिलेश्वर और भास्करेश्वर के मंदिरों के मध्य में भुवनेश्वर नामक वस्ती है, जिसमें लगभग ४००० आदमी बसते हैं, जिनमें से आधे पंडे तथा पुजारी हैं । भुवनेश्वर क्षेत्र का नाम प्राणों में एकाम्र क्षेत्र लिखा है । यह एक समय उन्नति करता हुआ राज्य की राजधानी था । इसके आस पास दूर दूर तक पथरीली भूमि और जंगल है, जिसमें पहिले ७००० शिव-मंदिर थे, जिनमें से पांच छः सौ अतक विद्यमान हैं । इन मंदिरों का सुधार कभी नहीं हुआ । सब मंदिर प्रायः एकही प्रकार के हैं और सब में एकही ढंग का पत्थर लगा है । पत्थरों पर फूल और बेलदुंदों के अतिरिक्त पत्थर खोदकर अमंल्य मूर्तियां बनाई गई हैं । इनमें से अनेक मंदिर बड़े बड़े और सुन्दर हैं, किंतु भुवनेश्वर का मंदिर सबसे विशाल है । यहां के मंदिर दर्जर होगये हैं, इनके सुधार की बड़ी आवश्यकता है ।

मंदिर—भुवनेश्वर वस्ती के पास पुरी के जगन्नाथजी के मंदिर से पहिले का बना हुआ भुवनेश्वर का विशाल मंदिर है । यह मंदिर कारीगरी और घनावट में जगन्नाथजी के मंदिर से भी अच्छा है । प्रधान मंदिर १८० फीट ऊंचा है । इसके प्रत्येक ईंच खास करके खड़े हिस्से नकाशी के काम से पूर्ण हैं । मंदिर के शिखर पर तिशूल लगा है । इसके भीतर ८ फीट व्यास के अर्धे पर १ हाथ ऊंचे भुवनेश्वर शिवलिंग हैं, जिनको वहां के पंडे लोग हरिहरात्मक कहते हैं । मंदिर में अंधियारा रहता है इस लिये दिन में भी भीतर दीप जलाया जाता है ।

भुवनेश्वर का मन्दिर पूर्ण मुख का है । मन्दिर के आगे जगमोहन, जगमोहन के आगे नृत्यमंडप और उसके आगे भोगमन्दिर (एक दूसरे से लगा हुआ) है । मन्दिर के चारो तरफ बड़े बड़े पत्थरों से बनी हुई ७ फीट मोटी ऊंची दीवार है, जिसके भीतर देवताओं के बहुतरे छोटे मन्दिर बने हैं ।

केशरी का महल इसी जगह था । मत्स्येक जगह नेव और पाटनों की निशानियां देख पड़ती हैं ।

बड़े मन्दिर के उत्तर विन्दुसरोवर नामक बड़ा तालाब है । तालाब के जल के मध्य में एक मन्दिर और स्थान बना है, जहां उत्सवों के समय में देवतों की चल मूर्तियां बैठाई जाती हैं । तालाब के किनारे के पास वासुदेव अर्थात् कृष्णजी और अनन्त अर्थात् बलदेवजी का मन्दिर है । मंदिर के आगे जगमोहन, नृत्यमंडप और भोगमन्दिर क्रम से बने हैं । तालाब के पूर्व बगल में भुवनेश्वर के मन्दिर की शकल के (पर उस से छोटे) कई एक मन्दिर देख पड़ते हैं ।

वासुदेव के मन्दिर से १ मील पूर्वोत्तर ४० फीट ऊंचा कोटितीर्थेश्वर का मन्दिर है । कोटितीर्थेश्वर के मन्दिर से १ मील पूर्व एक टीले पर नवीं शदी के अंतका बना हुआ ब्रह्मेश्वर शिव का मन्दिर है । इसमें भीतर और बाहर बहुत नकासी का काम है । मन्दिर के पश्चिम ब्रह्मकुण्ड नामक एक तालाब है ।

बड़े मन्दिर के पूर्वोत्तर छठवीं शदी के आरम्भ का बना हुआ हीन दशा में भास्करेश्वर शिव का मन्दिर है । भास्करेश्वर से १ मील पश्चिम राजरानी का मन्दिर है, जो एक समय खूबसूरत था । मन्दिर के तारों में ३ फीट ऊंची मूर्तियां हैं । राज रानी के मन्दिर से ३०० गज पश्चिम आम के वृक्षों का एक कुंज है, जहां बहुतरे मन्दिर बने हैं, जिनमें २० से अधिक अभी तक पूरे हैं; इनमें मुक्तेश्वर, केदारेश्वर, सिद्धेश्वर और परशुरामेश्वर प्रसिद्ध हैं । मुक्तेश्वर का मन्दिर ३५ फीट ऊंचा बहुत खूबसूरत है; इसमें बहुत कारीगरी की मूर्तियां बनी हुई हैं । मन्दिर के पीछे एक तालाब और उस से ३० फीट दक्षिण मडलियों से भरा हुआ गोरीकुण्ड नामक छोटा तालाब है । पहिला तालाब का पानी इसमें आता है, परन्तु बहुत पानी बाहर निकलता है । गोरी कुण्ड के पास ४१ फीट ऊंचा केदारेश्वर का मन्दिर है, जिसके पास एक कोठरी में ८ फीट ऊंची हनुमान की और सिंहासन पर खड़ी एक दुर्गा की मूर्ति है । यह मन्दिर बहुत पुराना है । मुक्तेश्वर के पश्चिमोत्तर एक मन्दिर जगमोहन के साथ ४७ फीट ऊंचा सिद्धेश्वर का पुराना मन्दिर है । गोरी

तालाब के २०० गज पश्चिम सब मन्दिरों से अधिक पुराना परशुरामेश्वर का मन्दिर है। परशुरामेश्वर से पूर्वोत्तर सुर्व पत्थर से बना हुआ अलम्बुकेश्वर का मन्दिर है जिसको केशरी वंश के राजा अलम्बुकेशरी ने सन् ६७७ ई० में बनवाया था।

विन्दुसर तालाब के पश्चिम, सड़क के घगल पर नवीं शदी का बना हुआ वैताल-देवल है। वैताल-देवल के दक्षिण ३३ फीट ऊंचा और २७ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा उत्तम नकाशी किया हुआ सोमेश्वर का मन्दिर है।

इतिहास—एक समय भुवनेश्वर कसबा बहुत समय तक उड़ीसे की राजधानी था। केशरी वंश के नियत करने वाला राजा ययातिकेशरी ने, जिसने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसे में राज्य किया था, उड़ीसे पर आक्रमण करने वाले को खदेर कर राजा बना। उसने भुवनेश्वर कसबे को बसा कर उसको राजधानी बनाया और लगभग सन् ५०० ई० में भुवनेश्वर के वर्तमान बड़े मन्दिर (और जगमोहन) का काम आरंभ किया। उसके पीछे के २ राजा मन्दिर को बनवाते रहे; तीसरे राजा ललितकेशरी ने सन् ६५६ ई० में उसको तैयार किया। सन् ६७७ ई० में राजा अलंबुकेशरी ने अलंबुकेश्वर का मन्दिर बनवाया। केशरी वंश के राजा नृपतिकेशरी ने, जिसका राज्य सन् ९४१ से ९५३ ई० तक था, कटक शहर को बसाया और भुवनेश्वर को छोड़ कर कटक को अपनी राजधानी बनाया। केशरी वंश के एक राजा ने सन् १०९० और ११०४ ई० के बीच में मन्दिर के जगमोहन के आगे का नृत्यमंडप और भोगमन्दिर बनवाया। सन् ११३२ ई० में केशरी वंश के शैवराजा के राज्य का अन्त होगया; गंगा वंश का एक राजा दक्षिण से आकर उड़ीसे का राजा बन गया।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—भादि ब्रह्मपुराण—(४० वां अध्याय) संपूर्ण पार्ष्णी को हरने वाला कोटि लिंग से युक्त काशी के समान शुभ एकाग्र क्षेत्र है। पूर्व काल में वहां एक आम्र का वृक्ष था इस लिये वह तीर्थ एकाग्र क्षेत्र के नाम से विख्यात होगया। वह तीर्थ विद्वान गणों से पूर्ण, धन धान्य से समन्वित, अनेक मंकार के फलियों से आकीर्ण, गृहों के अग्रगण्य से

संकीर्ण, अष्ट राजाओं के गृहों में सुशोभित और शस्त्रों से पूरित है । श्रीमहादेवजी तर लोको के हित के लिये यहाँ विराजमान हैं । उन्होंने पृथ्वी के समस्त तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाब, बावली, कूप और समुद्रों से एक एक बून्द इकट्ठे करके लोक के हित के अर्थ सब देवताओं सहित उस क्षेत्र में विन्दुसर नामक तीर्थ रचा । जो मनुष्य अगहन मास के शुक्लपक्ष की अष्टमी को जितेंद्रिय हो उस क्षेत्र में जाकर विन्दुसर में स्नान करके भक्तिपूर्वक देवता, ऋषि, मनुष्य और पितरों को तिल और जल से विधान पूर्वक तर्पण करेगा उसको अश्वमेध यज्ञ का फल प्राप्त होगा । वहा ग्रहण और सकाति के दिन तथा सम रात्रि दिवकाल और युगादि तिथि अथवा अन्य शुभ तिथियों में ब्राह्मणों को दान देने से अन्य तीर्थों को अपेक्षा सौगुना फल मिलता है । उस तीर्थ में पिंडदान देने से पितरों की अक्षय तृप्ति होती है । वहा शिवजी के विधि पूर्वक पूजन और उनकी प्रदक्षिणा करने से मनुष्यका शिवलोक मिलता है और उसके २१ पुस्त का उद्धार होजाता है । वह क्षेत्र महादेवजी के चारो दिशाओं में ढाई योजन में विस्तृत है । उस क्षेत्र में भास्करेश्वर महादेव हैं, जिनको पूर्ण काल में सूर्य ने पूजा या । जो मनुष्य मुन्द में स्नान करके शिव की पूजा करता है वह शिवलोक में जाता है ।

जो पुरुष मुक्तेश्वर, सिद्धेश्वर, स्वर्णजालेश्वर, परमेश्वर, विख्यातेश्वर, सुक्ष्मभामूर्तिकेश्वर नामो से विख्यात इन शिव लिंगों का दर्शन और विदुसः तीर्थ में स्नान करता है वह सब पापों से विमुक्त हो कर विमान में बैठ शिव लोक में प्राप्त होता है । उस क्षेत्र में जिस जिस स्थानों में शिव लिंग स्थापित हैं सब की पूजा करना उचित है । जो मनुष्य वैशाख आदिक महीनों में उस क्षेत्र के विन्दुसर तीर्थ में स्नान करके महादेव तथा पार्वती, कार्तिकेय, गणेशजी और सान्निदी का दर्शन करता है उसको शिवलोक मिलता है । कपिल तीर्थ में स्नान करने वाला मनुष्य अपने सब मनोरथ प्राप्त करके शिव लोक में निवास करता है । एकाम्बक नामक शिव क्षेत्र काशीजी के तुल्य है । वहा शरीर त्यागने वाले को मोक्ष हो जाती है ।

स्फुपुशण—(उत्कलखण्ड) नीलगिरि (अर्थात् पुरुषाक्षपुर के नीलाचल)

से १ योजन दूर श्रीमहादेवजी की खेल एकामूक बन है। पूर्वकाल में महादेवजी पार्वती के सहित अपने ससुर हिमाचल के गृह में निवास करते थे। एक दिन उस नगर की कई एक स्त्रियों ने उपहास के साथ पार्वती से कहा कि हे देवी ! तुम्हारे पति अपने ससुर के गृह में अनेक भांति के सुख भोग करते हैं; तुम कहो वह अपने घर को कब जायेंगे ? । पार्वती की माता ने पूछा कि पुत्री ! तुम्हारे पति में कौन ऐसा अपूर्व गुण है कि तुम उनको इतना मिय समझती हो। पार्वती ने लज्जित हो कर महादेवजी के पास जाकर कहा कि हे स्वामिन् ! आप को समुराल में रहना उचित नहीं है; आप दूसरे स्थान में चलें। शिवजी पार्वती की बात का कारण समझ कर उनके साथ बैल पर सवार हो समुराल से चल दिये और भागीरथी के उत्तर तट पर वाराणसी नगरी बसा कर उसमें रहने लगे। ह्वापर युग में वाराणसी के काशिराज नामक राजा ने घोर तपस्या करके महादेव जी को प्रसन्न किया। महादेवजी ने राजा को ऐसा वरदान दिया कि में आवश्यकता होने पर युद्ध में तुम्हारी सहायता करूंगा। एक समय विष्णु भगवान ने क्रोध करके काशिराज पर अपना सुदर्शन चक्र चलाया। महादेवजी राजा की रक्षा के लिये अपने गणों के साथ रणभूमि में उपस्थित हुए। उन्होंने क्रोध करके पाशुपत अस्त्र छोड़ा, पर विष्णु के प्रभाव से वह व्यर्थ हो गया। उस पाशुपत अस्त्र से काशीपुरी ही दग्ध होने लगी। तब महादेवजी घबड़ा कर विष्णु भगवान की स्तुति करने लगे। उस समय भगवान ने कहा कि हे धूर्जटे ! तुम्हारा पाशुपतास्त्र अजेय है, किंतु मेरे चक्र के सामने उसकी शक्ति नहीं चलेगी। यदि वाराणसी को स्थिर रखने की तुम्हारी इच्छा है तो तुम पुरुषोत्तम क्षेत्र के नीलगिरि के उत्तर कोण में जाकर पार्वती के साथ निवास करो। ऐसा सुन महादेवजी नंदी, भृंगी आदि अपने गणों और पार्वतीजी को संग में लेकर एकामूरानन में चले गये, तबसे वह स्थान मुक्ति देने में काशी के समान प्रसिद्ध हुआ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) पूर्य देश में एकामूर नामक शिव तीर्थ है। जो मनुष्य उस तीर्थ में महादेवजी की पूजा करता है वह गणों

का स्वामी होता है । वहाँ-के शिवभक्त ब्राह्मणों को थोड़ी सी भूमि दान देने से सार्वभौम राज्य मिलता है । मुक्ति चाहने वाले मनुष्य को वहाँ जाने से मुक्ति मिलती है ।

दूसरा शिवपुराण—(उर्दू अनुवाद, ८ वां खंड, पहिला अध्याय) गुरु-पोत्तम सत्र में जगन्नाथजी के गुरु स्वरूप भुवनेश्वर महादेव विराजते हैं, जिनके दर्शन करने से सम्पूर्ण पाप विनष्ट हो जाता है ।

उदयगिरि और खंडगिरि के गुफा मन्दिर ।

भुवनेश्वर से ५ मील पश्चिम पुरी जिले में उदयगिरि और खंडगिरि दो पहाड़ी हैं । छोटे घुड़ों के जगल हो कर भुवनेश्वर से मार्ग गया है । दोनों पहाड़ियों के बीच में एक तंग घाटी है । दोनों पर पत्थर काट कर अनेक भाँति की बहुतेरी बौद्ध गुफा और मंदिर बनाये गये हैं, जो ईशा से लगभग ५० वर्ष पहले से ५०० वर्ष पीछे तक के बने हुए हैं । सबसे पहले की गुफाएँ उदयगिरि पर और उनसे पीछे की खंडगिरि पर हैं । बैशाख में खंडगिरि का मेला होता है ।

उदयगिरि—यह पहाड़ी ११० फीट ऊँची है । इस के कटि स्थान में भीतर से पत्थर निकाल कर जगह जगह गुफा मन्दिर बने हैं;—

रानीनूर (याने रानी का महल)—सब गुफाओं से नीचे एक दूसरे के ऊपर छोटी कोठरियों के २ कतार हैं, जिनके आगे पायेदार बरंडे और ४९ फीट लंबी तथा ४३ फीट चौड़ी पहाड़ी काटकर बनी हुई अंगन हैं । ऊपर के मंजिल में, जो पूर्व मुख का है, ८ दरवाजे हैं, जहाँ २ द्वारपाल खड़े हैं । बरंडा होरुर (जो ६३ फीट लम्बा है) ४ छोटी कोठरियों में जाना होता है । बरंडे के दोनों बगलों में २ मंदि हैं । वहाँ हाथी और मनुष्यों की बहुत सी मूर्तियाँ देखने में आती हैं । निचले मंजिल में भी ८ दरवाजे हैं । आगे जमीन के सतह पर ४४ फीट लम्बा सतूनदार बरंडा है, जिससे ३ कोठरियों में जाना होता है ।

मणेशगुफा—रानीनूर गुफा के प्रायः सीधा उत्तर उससे बहुत ऊँचाई

पर २ कमरे हैं जिनके आगे ५१ फीट ऊंचा १ वरंडा है। वरंडे की सौंदी के दोनों तरफ २ हाथी हैं।

स्वर्गद्वारी गुफा—रानीनूर गुफा से ५० गज पश्चिम एक सीढ़ी स्वर्गद्वार नामक दो मंजिली गुफा को गई है। उसके दोनों मंजिलों में दो कमरे और आगे एक वरंडा है। वरंडे के पाये अब टूट गये हैं।

जयविजय या हंसपुर की गुफा—यह ऊपर लिखे हुए गुफाओं के उत्तर है। इसमें छोटी बड़ी बहुत सी मूर्तियां देखने में आती हैं।

गोपालपुरा—पूर्वोत्तर में गोपालपुरा और मंचपुरा नामक गुफाओं के २ गुण्ड है। कमरे के पायों पर खोद कर बने हुए लाट अक्षरों में २ लेख हैं, जो अब पढ़े नहीं जाते।

वैकुण्ठ—यह गुफा और पाटलपुरा तथा जामपुरा दूसरी दो गुफाएँ, जो थोड़ा पश्चिमोत्तर हैं, अब बहुत बिगड़ गये हैं।

हाथीगुफा—७५ गज पश्चिमोत्तर हाथीगुफा है। वहाँ पत्थर के भीतर ५ फीट व्या और इतनाही चौड़ा खोखला है। उसके दरवाजे के ऊपर लाट अक्षर में १ लम्बा शिला लेख है, जिसमें कलगा के एरा राजाके यश का वर्णन हुआ है। वह राजा सन् ई० से करीब ४०० वर्ष पहले था। इसके अलावे उस गुफा में गुप्त अक्षर और कुटिला अक्षर में कई छोटे शिला लेख हैं। हाथी गुफा के चन्द गज उत्तर पवनगुफा है।

सर्पगुफा—पवनगुफा से ७५ फीट दक्षिण पश्चिम सर्पगुफा है। दरवाजे के सिर पर मोटे नकाशी का ३ सिरवाला एक साँप है, जिसके नीचे बैठकर भीतर जाने योग्य द्वार है। उससे होकर ४ फीट लम्बी, इतनी ही चौड़ी और इतनीही ऊंची गुफा में आदमी प्रवेश करता है। वहाँ १ शिला लेख है, जिसका हिन्दी अनुवाद “चूलाकर्म की कोठरी और कर्म ऋषि का मन्दिर” होता है। उसके समीप भजनगुफा और थोड़ा उत्तर अलकपुरा गुफा है। इन दोनों में से कोई मशहूर नहीं है।

ब्याचूगुफा—वह ५० फीट उत्तर पहाड़ी से बाहर निकली हुई नाक और आंखियों के साथ बाय के सिर के शकल की है। उसके दरवाजे पर दांत

लटके हुए हैं और सिरके ऊपर का हिस्सा ८½ फीट पहाड़ी से लगा हुआ है । वह गुफा भीतरी ९ फीट चौड़ी है, जिसका छोटा दरवाजा बाघ के हलक की जगह पर बना है । दरवाजे के दहिने लट अक्षर में समेकिन का गुफा लिखा है । वह गुफा ईशा से ३०० वर्ष पहले की होगी । बाघगुफा से उत्तर १२ फीट लम्बी और ६ फीट चौड़ी 'उर्ध्वगंध' नामक कोठरी है, जिसके आगे एक बरंडा बना है ।

खंडगिरि—यह पहाड़ी घने दररनों से ढिपी हुई १३३ फीट ऊंची है । खड़ी राह से ऊपर जाना होता है । करीब ५० फीट ऊपर २ रास्ते होगये हैं, एक बाएँ पहाड़ी के पूर्व भगन्त में काटे हुए गुफाओं को और दूसरा-दहिने 'अनन्ता गुफा को' गया है ।

अनन्तागुफा—उस गुफा के आगे ४ द्वार और एक पायादार बरंडा है । गुफा में पीछे की दीवार के पास बुद्ध की मूर्ति है । दीवार में मनुष्य, पशु और पक्षी की बहुत सी मूर्तियाँ बनी हैं, जहाँ लट अक्षर में और कुटिला अक्षर में २ शिला लेख हैं ।

बाएँ की गुफाएँ—अनन्तागुफा से दो मुहानी रास्ते के पास लौटकर बाएँ के रास्ते से जाना चाहिये । आगे की गुफाओं के पास १२ वीं शदी का संस्कृत लेख है, जिसमें लिखा है कि आचार्य कलाचन्द्र और उसका विद्यापी वालाचन्द्र का यह गुफा है । उसमें आगे दो हिस्सों में पूर्व मुख की गुफाओं का एक सिलसिला है । गुफाओं के भीतर पीछे की दीवार में अनेक बुद्ध की मूर्तियाँ और चन्द्र नई जैन देवताओं की नई मूर्तियाँ हैं । पूर्व छोर के पास एक चबूतरे पर बहुत जैन मूर्तियाँ हैं । दूसरी कोठरी भी पेंसीही है । पीछे की दीवार में एक फीट ऊंची ध्यान करती हुई बुद्ध की मूर्तियों का एक कचार है और नीचे बैठी हुई स्त्रियों की अनेक मूर्तियाँ हैं, जिनमें चन्द्र चतुर्भुजी और दूसरी सन ८ चौह वाली हैं ।

वहाँ से पहाड़ी के सिरें तक कबा चढ़ाव है । सिरो-भाग पर १८ वीं शदी का बना हुआ पारसनाथ का एक मन्दिर है । मन्दिर के दक्षिण पश्चिम १५० फीट व्यास का 'देवसभा' नामक एक स्थान है, जिसके १०० गज पूर्व

पत्थर खोद के बनाया हुआ आकाश गंगा नामक तालाब है। तालाब के नीचे एक गुफा है। ऐसा प्रसिद्ध है कि यहां उड़ीसे के राजा ललित इन्द्र बेशरी का रिमेन्स रक्खा है।



सोलहवां अध्याय।

(सूबे उड़ीसे में) जगन्नाथपुरी और कोणार्क।

जगन्नाथपुरी।

कटक कसबे से ५३ मील-दक्षिण जगन्नाथपुरी की सरकारी कचहरी है। जगन्नाथजी की सड़क, जो कटक से १३½ मील आगे भुवनेश्वर के यात्री को छूट जाती है, भुवनेश्वर से २ मील आगे छूटने की जगह से ८ मील पर फिर मिलजाती है। उस ८ मील के भीतर २ चट्टी और एक सूखी नदी मिलती है। सड़क से ५ मील तक भुवनेश्वर के मन्दिर देख पड़ते हैं। कटक से आगे २६½, ३०½, ३१½, ३४, ३५½, ३८½, और ४०½ मील पर एक एक चट्टी है। पिछली चट्टी से करीब १ मील दूर साक्षीगोपाल का सुन्दर शिखरदार मन्दिर है। मन्दिर के आगे जगमोहन वना है। नियत समय पर मन्दिर का पट खुलता है। वहां के पंडे यात्रा के साक्षी के लिये ताड़ के पत्र पर यात्रियों के नाम लिखते हैं और पुआ का प्रसाद देते हैं। मन्दिर के पास मोदियों की कई दुकानें हैं। कटक से ४२½ मील पर तालाब और वस्ती के पास चट्टी, ४५ मील पर सूखी नदी के दोनों किनारों पर वस्ती और चट्टी और ४८ मील पर एक छोटी चट्टी है। उसके २½ मील पहले से जगन्नाथजी का मन्दिर देख पड़ता है। उस चट्टी से आगे कोसों तक एक बड़ी क्षील है, इस लिये पुरी की सड़क बाएँ घूम कर गई है।

छोटी चट्टी से १ मील आगे कई मन्दिर, २½ मील पर 'अठारह नाला' का पुल और ३½ मील पर अर्थात् कटक से ५१½ मील दूर चन्दन तालाब है, जहां से

सब यात्री गाड़ी छोड़कर पैदल जाते हैं । कितने यात्री तो उस स्थान से कई मील पहिलेही अपने जूते को रख देते हैं । 'अठारहताला' का पुल जिसको मरहटा पुल भी कहते हैं, २७८ फीट लम्बा और ३८ फीट चौड़ा है; उसके नीचे १९ मेहरावियां बनी हैं और ऊपर से सड़क निकली है । यह पुल बहुत पुराना है ।

कटक और पुरी के बीच में जगह जगह केलों के बाग, फेवड़ों के जंगल और रुंधान, दीमकों के टीले (चल्मीक), जिनमें कोई कोई दो गज ऊंचे और चार गज घेरे के हैं और खजूर तथा नारियल के बाग देख पड़ते हैं । चट्टियों पर यात्रियों के टिकने के मकान और खानें पीने का सामान तैयार रहता है ।

जगन्नाथपुरी मूवे उड़ीसे में भारतवर्ष के पूर्व के समुद्र के किनारे पर (१९ अंश ४८ कला, १७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, ५१ कला ३९ विकला पूर्व देशांतर में) पुरी जिले का प्रधान कसबा और सदर-स्थान भारत वर्ष के ४ धर्मों में से एक पवित्र तीर्थ-स्थान है । जगन्नाथजी के कुछ यात्री कलकत्ता से कटक तक आगवोट द्वारा और कटक से सड़क द्वारा और कुछ लोग रानीगंज से बांकुडा, मेदनीपुर और कटक होकर पैदल सड़क द्वारा पुरी में पहुँचते हैं । दक्षिण-पश्चिम के यात्री भी पैदलही आते हैं; किन्तु अब दक्षिण पश्चिम बेंजवाड़ा, ब्रह्मपुर और भुवनेश्वर होकर कटक के पास तक रेलवे लाइन तैयार हो चुकी है और पूर्वोत्तर आसिनसोल से मेदनीपुर, बालेश्वर और कटक होकर पुरी तक कई बरसों में रेलवे खुल जायगी । पुरी की सीमा समुद्र से मधुपुर नदी तक ११ मील चौड़ी और बालिवंदा से लोकनाथ के मन्दिर तक ३१ मील लम्बी है । पुरी यात्रियों के टिकने का शहर है । यहाँ दस्तकारी और तिजारत बहुत कम है । मन्दिर की आमदनी और पूजा से यहाँ के लोग परवरिश होते हैं ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पुरी में २८७९४ मनुष्य थे, अर्थात् २८४७६ हिन्दू, २६९ मुसलमान, ४५ कृस्तान और ४ दूसरे । इनमें से १५९३० पुरुष और १२८६४ स्त्रियां थीं । लेकिन बड़े तिहवार पर १ लाख यात्री बढ़ जाते हैं । हर महीने में दिन और रात यात्रियों की झुन्ड पुरी में पहुँचते हैं । सालाना करीब ५० हजार से अधिक और कभी कभी साल में

तीन लाख यात्री पुरी में आते हैं। केवल स्थयात्रा के समय कभी कभी लगभग १ लाख यात्री इकट्ठे होजाते हैं । पंडे लोगों के हजारों नौकर या हिस्सेदार हिन्दुस्तान के हर जिले से यात्रियों को खोज कर पुरी में लें आते हैं । पंडे लोग उनके ठिकाने को मकान देते हैं।

जगन्नाथजी के मन्दिर से जन्नकपुर तक चौड़ी सड़क गई है उसके सिवाय सब सड़क तंग और कच्ची हैं । कसबा नीची जमीन पर बसा है । बीच में ऊंची घालूदार जमीन होने के कारण कसबे का पानी समुद्र में 'नहीं' गिरता, इस लिये कसबे का जलवायू रोग कारक रहता है । यहां के हर एक मकान करीब ४ फीट ऊंचे चबूतरे पर बना है । मकानों की दीवारें टट्टियों की हैं । टट्टियों पर मट्टी का लेवार दिया हुआ है । प्रतिवर्ष मैकड़ों यात्री पुरी में मरते हैं । उड़ीसे के जलवायू रोग वर्द्धक होने के कारण यात्रियों में से प्रति वर्ष हजारों मनुष्य पुरी और पैदल के रास्ते में मरजाते हैं; परन्तु अंगरेजी बन्दोवस्त से तन्दुरस्ती में अब तरक्की हुई है । टिकने वाले मकानों के लिये मकान के मालिक को लेसन्स लेना पड़ता है और मकानों में टिकने वालों की संख्या नियत की जाती है ।

पुरी जिले का सदर स्थान है; पर यहां की दिवानी कटक के जज के आधीन है । पुरी की सरकारी कचहरियां समुद्र के निकट बनी हैं । पंडो के मकानों के अतिरिक्त यहां बड़ा छत्तामठ, समाधिमठ, रामगोपालमठ, आचारीमठ, सन्यासीमठ, साधु वैष्णवमठ, गोड़ियामठ इत्यादि बहुतरे मठ हैं, जिनमें कई बड़े धनवान हैं । पंडे लोग यात्रियों से उनके नाम और पते अपनी स्याही कलम से वही में लिखवाते हैं, पर उड़ीसे के रीत्यनुसार वे लोग अपनी ताड़पत्र की वही पर काटों के कलम से उड़िया अक्षर में यात्रियों के नाम और पते लिखलेते हैं । (आदि ब्रह्मपुराण-उत्तरार्द्ध के प्रथम अध्याय में ताल पत्र पर देवाक्षरों में पुस्तक लिखने की कथा है) । पुरी में बन्दर बहुत है ।

मार्कण्डेय तालाब, चन्दनतालाब, श्वेतगंगातालाब, पार्वतीसागर (लोकनाथ के पास) और इन्द्रशुक्लतालाब को लोग पंचतीर्थ कहते हैं । पुरी में ५ महादेव प्रख्यात हैं; लोकनाथ, मार्कण्डेश्वर, कपालमोचन, यमेश्वर और नीलकण्ठ ।

जगन्नाथजी का मन्दिर—पुरी के बीच में प्रधान सड़क के अखीर पश्चिम संपुट से लगभग १ मील उत्तर आस पास की भूमि से लगभग २० फीट ऊंची जमीन पर, जिसको 'नीलगिरि कहते हैं', जगन्नाथजी का मन्दिर है। उसके भीतर, अन्य धर्मों और नीच जाति के मनुष्य तथा चमड़े की कोई चीजें नहीं जाने पाती हैं।

मन्दिर के बाहर का घेरा ६६५ फीट लंबा और ६४५ फीट चौड़ा है। इसकी कंगूरेदार दीवार लगभग २२ फीट ऊंची है, जिसके प्रत्येक बगल के मध्य में एक बड़ा फाटक बना है। उनमें से पूर्व का फाटक सब फाटकों से उत्तम है। उसका चौखट नकाशीदार काले पत्थर का और किवाड़ साल की लकड़ी का बना है; फाटक के ऊपर के चौखूटे मकान में संगतरोसी का उत्तम काम है, मणिमाओ में कई मूर्तियाँ आदमी के समान बड़ी हैं। दरवाजे के दोनों तरफ दो सिंह की मूर्तियाँ हैं, इससे इसका नाम सिंह दरवाजा पड़ा है। उत्तर के फाटक पर पत्थर के २ हाथी और काठ के ३ सारथी हैं, जो यात्रा के समय रथों पर बैठाए जाते हैं और दक्षिण के फाटक पर पत्थर के २ घोड़े थे जो अब नहीं हैं। दक्षिण का फाटक १५ फीट ऊंचा है जिसके ऊपर बहुतसी मूर्तियाँ बनी हैं। मन्दिर के घेरे के बाहर चारों तरफ ४२ फीट चौड़ी सड़क है।

सिंहदरवाजे के आगे काले रंग के एकही पत्थर का ३५ फीट ऊंचा १६ पहल का सुन्दर अरुणस्तम्भ खड़ा है, जिसके सिर पर सूर्य के साथी अरुण की मूर्ति है। लोग कहते हैं कि १८ वीं शदी के आरंभ में महाराष्ट्र लोक कोणार्क के सूर्य के मन्दिर से इस स्तम्भ को यहाँ लाए थे।

सिंहदरवाजे के पूर्व के मैदान में बाजार है, जिसमें सूखा भात का महा-प्रसाद और जगन्नाथ आदि के पट यात्री लोग खरीदते हैं और कोई कोई यहाँ से घेत तालपत्र का छाता और चन्दन भी प्रसाद ले जाते हैं।

बाहर के घेरे के भीतर ४५० फीट लंबा और ३०० फीट चौड़ा दूसरा घेरा है जिसके भीतर जगन्नाथजी और दूसरे देवताओं के बहुत से मन्दिर खड़े हैं। इसकी दीवार बाहर की दीवार से बहुत कम ऊंची है। इनमें भी चारों तरफ ८ फाटक हैं।

जगन्नाथजी के खास मन्दिर के आगे; अर्थात् पूर्व जगमोहन, जगमोहन के आगे नृत्यमन्दिर और इससे आगे भोगमन्दिर है; चारो परस्पर मिले हुए हैं। इतिहासों से जान पड़ता है कि जगन्नाथजी के वर्तमान मन्दिर को राजा अनंगभीमदेव ने, जिसने हुगली से गोदावरी नदी तक राज्य किया था, बनवाया। १४ वर्ष काम होने के उपरान्त सन् ११९८ ई० में मन्दिर तैयार हो गया। तबसे यह कई बार मरम्मत हुआ। इस समय भी मरम्मत हो रहा है; इसके लिये करीब १ लाख रुपया चन्दा हो चुका है। नृत्यमन्दिर पीछे का बना हुआ है। भोगमन्दिर को पिछले शतक में महाराष्ट्रों ने बनवाया।

जगन्नाथजी का निज मन्दिर १९२ फीट-ऊँचा, ८० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। चारो ओर मन्दिर और जगमोहन पर स्त्रियों और पुरुषों की बहुतसी प्रतिमाएँ बनी हुई हैं और लिखित चित्र भी हैं। मन्दिर के ऊपर अर्थात् इसके कटि स्थान पर दक्षिण की कोठरी में बलिराजा, पश्चिम वाली में नृसिंहजी और उत्तर की कोठरी में कलियुग की प्रतिमा है और शिखर के ऊपर नील चक्र और पताका लगा है।

मन्दिर के भीतर पश्चिम ओर ४ फीट ऊँची और १६ फीट लम्बी पत्थर की वेदी है, जिसको रत्नवेदी कहते हैं। रत्नवेदी के दहिने ओर बाएँ ४ फीट और उसके पीछे अर्थात् पश्चिम ३ फीट चौड़ी गली है, जिससे होकर सब यात्री लोग जगन्नाथजी आदि मन्दिर के देवताओं की परिक्रमा करते हैं। रत्नवेदी के ऊपर उत्तर तरफ ६ फीट लम्बा सुदर्शनचक्र है, जिससे दक्षिण जगन्नाथजी, सुभद्रा और बलभद्रजी क्रम से खड़े हैं। जगन्नाथजी के एक तरफ लक्ष्मीजी और दूसरी ओर सत्यमामा और आगे राजा इन्द्र-चुम्न की धातु प्रतिमा है। बलभद्रजी ६ फीट ऊँचे गौरवरण, जगन्नाथजी बलभद्रजी से एक अंगुल छोटे श्याम रंग और सुभद्राजी ४ फीट ऊँची पीत वरण हैं। तीनों मूर्तियाँ काष्ठमय हैं, इनके हाथ और पांव दूँटे और नासिका पड़े हैं। देखने में सुभद्रा की पाँह नहीं है, पर वे कपड़े के भीतर छटकी हैं। जगन्नाथजी और बलभद्रजी के ललाट पर एक एक हीरा लगा है। तीनों मूर्तियों को नित्यही समय समय पर और उत्सवों के समय भाँति भाँति की

पोशाक और रंग-वस्त्र की पगड़ियां तथा मुनहले हाथ और दूसरी पोशाकें पहनाई जाती हैं और अनेक प्रकार के शृङ्गार होते हैं । बहुत सकाले जाग्रन के समय मंगला आरती का सादा शृङ्गार होता है । तब अवकाश वेप, वाद-महर वेप और उसके बाद चन्दन लगा वेप बनाया जाता है । सब से प्रसिद्ध बड़ा शृङ्गार वेप है, जो गोधुली के बाद सन्ध्या-धूप के तुरन्तही पीछे बनाया जाता है । इनके अतिरिक्त समय-समय पर जगन्नाथजी का दामोदर वेप, वामन वेप, बुद्ध वेप, गणेश वेप आदि बनाये जाते हैं ।

मूर्तियों को पोशाक पहनाने और शृङ्गार हो जाने के उपरान्त मन्दिर का फाटक खुलता है और यात्रीगण दर्शन करते हैं । मन्दिर में अन्धियारा रहने के कारण दिन में भी दीप जलाया जाता है, मंगला आरती के समय पहर दिन चढ़ने पर प्रधान भोग लगाने पर और गोधुली के बाद के बड़े शृङ्गार के समय नित्य ३ बार यात्रीगण खास मन्दिर में जाकर रत्नवेदी की परिक्रमा करते हैं और मूर्तियों के चरण के पास अपना सिर नवाते हैं; बाकी समयों में जगमोहन से दर्शन होता है ।

मन्दिर के आगे का जगमोहन १२० फीट ऊँचा, ८० फीट लम्बा और इतनाही चौड़ा है । इसके मध्यमें चौखूटे ४ पाये और वगल में दो बाजू हैं । जगमोहन में ३ तरफ बड़े दरवाजे हैं । उत्तर के बाजू में जगन्नाथजी का असबाब रहता है । यात्रीगण जगमोहन में इकट्ठे होकर जगन्नाथ आदि देवताओं का दर्शन करते हैं; नियत समयों में वे लोग खास मन्दिर के भीतर जाते हैं ।

जगमोहन से पूर्व नृत्यमन्दिर है । इसके उत्तर और दक्षिण के वगल में चार-चार चौखूटे पाये और भीतर चार-चार पायाओं के ४ कक्ष हैं । पायाओं में देवताओं के चित्र बनाए गए हैं । नृत्यमन्दिर भीतर से ६९ फीट लम्बा और ६७ फीट चौड़ा है । इसके पश्चिम के द्वार पर, जो जगमोहन के पास है, जय और विजय की मूर्तियाँ और पूर्व के हिस्से में एक स्तंभ पर गरुड़ की मूर्ति है । इस मन्दिर में समय-समय पर स्त्रियाँ नाचती हैं और बाजा बजता है ।

नृत्यमन्दिर के पूर्व १२० फीट ऊंचा, ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा भोगमन्दिर है, जिस पर नीचे से ऊपर तक पत्थर खोद कर अमंख्य मूर्तियाँ बनाई गई हैं। लोग कहते हैं कि पिछले शतक में महाराष्ट्रों ने कोणार्क के काले मन्दिर के हिस्से का पत्थर लाकर ४० लाख रुपये के खर्च से इसको बनवाया। पाकशाले से भोगमन्दिर तक एक पाटा हुआ रास्ता है। भोग की सामग्री पाकशाले से तैयार करके इसमें लाई जाती है।

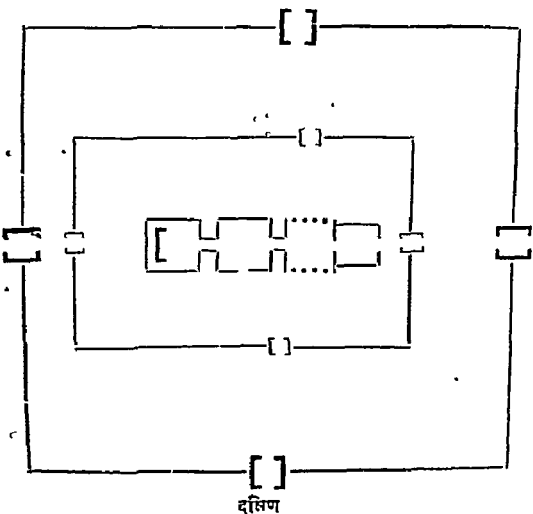
भीतरीवाले हाते में जगन्नाथजी के मन्दिर से दक्षिण एक पीपल का वृक्ष है। उसके पास ३८ फीट लंबा और इतनाही चौड़ा, जिसमें पाये लगे हुए हैं, मुक्ति मंडप है, जहाँ पंडित लोग शास्त्रार्थ करते हैं। उसके बाद अक्षयवट है, जिसको यात्रीगण अंकमाल करते हैं। उसके पास प्रलयकाल के विष्णु की बालमूर्ति है, जिसको बालमुकुन्द कहते हैं। उसी तरफ रोहिनीकुंड नामक एक बहुत छोटा कुंड, जिसके पास पत्थर का चतुर्भुजी काक है और विमला देवी, नृसिंहजी, लक्ष्मीजी, एकादशी आदि बहुत देव देवियों के मंदिर हैं। बड़े मन्दिर से पश्चिम सरस्वती, कर्मावाइ, कर्मलिखने वाला विधाता, काली आदि देव मूर्तियाँ हैं। उत्तर के दरवाजे के पास सीतला की मूर्ति है। इनके अतिरिक्त घेरे के भीतर शिव, सूर्य, हनुमान, गणेश, मंगला आदि देवदेवियों के बहुत से मन्दिर हैं। उस हाते में लगभग ५० स्थान और मंदिर बने हुए हैं।

बाहर के हाते में सिंहदरवाजे पर घेरे के भीतर २१ सीढ़ियों के ऊपर मन्दिर का फर्श है। दरवाजे से प्रवेश करने वालों के दहिने महाप्रसाद बेंचने वाली की दूकानें हैं, जहाँ बहुतरे लोग महाप्रसाद खरीदते हैं। फाटक की मेहराबी के एक ताक में जगन्नाथजी की छोटी मूर्ति है, जिसको लोग पतितपावन कहते हैं। चमार इत्यादि नीच जानि के लोग, जो मन्दिर के हाते में नहीं जाने पाते, इसी मूर्ति का दर्शन करते हैं। इसी जगह ११ हाथ के ताक में २२ भुजवाले ठाकुरजी हैं। सिंहदरवाजे से उत्तर स्नान की वेदी है, जहाँ ज्येष्ठ में जगन्नाथजी स्नान के लिये लाये जाते हैं। दरवाजे के पास एक इमारत है, जिसमें स्नान देखने के लिये लक्ष्मीजी बैठती है और दरवाजे के दक्षिण एक दूसरी इमारत है, जिसमें भगवान के फिरने पर स्वागत के लिये लक्ष्मीजी

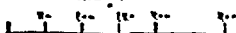
जाती हैं। बाहर के हाते के पूर्व-दक्षिण के कोने के पास जगन्नाथजीकी पाक शाला है, जिसमें सैकड़ों चूल्हे बने हुए हैं; एक एक चूल्हे पर कई एक भांड़े चढ़ते हैं। उत्तर के हाथी फाटक से पश्चिम-दक्षिण बैकुण्ठ नामक छोटा मकान है, जहाँ बहुतेरे पंडे अपने यात्रियों से अटका संकल्प कराते हैं।

जगन्नाथजी का मन्दिर ।

उत्तर



फीट का स्केल



२ इंच का १५० फीट

कपालमोचन और यमेश्वर—जगदीश के मन्दिर के कोट के बाहर उसके पश्चिम-दक्षिण गहड़ी जमीन पर कई एक मन्दिरों के साथ तीन मुख वाले कपालमोचन शिवका मन्दिर है । कपालमोचन से १ मील दक्षिण एक मन्दिर में यमेश्वर शिवलिंग है । यमेश्वर से थोड़ा दक्षिण गोपीनाथ का मन्दिर है ।

श्वेतगंगा—जगन्नाथजी के मन्दिर से पश्चिम-दक्षिण स्वर्गद्वार के रास्ते के पास श्वेतगंगा नामक एक पक्का तालाब है, जिसके पूर्व किनारे पर श्वेतकेशव का मन्दिर बना हुआ है । श्वेतकेशव की मूर्ति जगन्नाथजी के समान काष्ठमय है । जगन्नाथजी के कलेवर बदलने के समय इनका भी कलेवर बदलता है ।

स्वर्गद्वार—जगन्नाथजी के मन्दिर से १ मील दक्षिण-पश्चिम समुद्र के किनारे पर एक चौथाई मील की लंबाई में स्वर्गद्वार है, जहां यात्री लोग समुद्र की लहर में स्नान करते हैं । बड़े तेहवारों के समय लगभग ४० हजार आदमी समुद्र की लहर में गोता मारते हैं । समुद्र को नारियल और रत्नों की धेठ दी जाती है । एक छोटे मन्दिर के पास ४ फीट ऊंचा एक स्तंभ है, जिसपर पूजा रक्खी जाती है । समुद्र के किनारे के पास बालू पर बहुतरे छोटे छोटे मठ हैं । मल्लूदास के मठ में उनकी मूर्ति का दर्शन होता है और हुकड़ा अर्थात् छीटी और साग प्रसाद मिलता है । कबीरदास के मठ में कबीरदास के चौरा का दर्शन होता है और तुरानी अर्थात् भात का पानी प्रसाद मिलता है । वहां नानक शहियों का भी एक मठ है । बहुतरे लोग मरने के समय स्वर्गद्वार में जाते हैं । वहां समुद्र में पानी बहुत कम है, किनारे से १ मील से अधिक निकट आगबोट नहीं आ सकते हैं ।

लोकनाथ महादेव—जगन्नाथजी के मन्दिर से १ मील पश्चिम लोकनाथ का मन्दिर है । सड़क कच्ची और बालूदार है । लोकनाथ के मन्दिर में जल की भरि फूटी है । मन्दिर सर्वदा अथाह जल से पूर्ण रहता है । जल के भीतर शिवलिंग है । यह जल एक नाला होकर पार्यती तालाब में गिरा करता

है। पानी का नाला एक दूसरे मन्दिर तक है। फाल्गुन वदी ११ से उस दूसरे मन्दिर से पानी बाहर निकाला जाता है; शिवरात्री के दिन सम्पूर्ण जल निकल जाने पर लोकनाथ का दर्शन होता है। पीछे मन्दिर में फिर दस हाथ ऊँचा जल होजाता है। सैकड़ों यात्री शिवरात्री की रात्री में मन्दिर के आस पास अपने अपने आगे दीप जला कर रात्री भर जागते हैं। उस दिन करीब २० हजार मनुष्यों का वहाँ मेला होता है। मन्दिर से थोड़ी दूर पर पार्वती तालाब पक्का बना हुआ है।

मार्कण्डेयतालाब—जगन्नाथ के मन्दिर से १ मील उत्तरमार्कण्डेय तालाब है। पश्चिम के फाटक से तालाब तक सड़क गई है। तालाब के चारो तरफ पक्की सिढ़ियाँ और दीवारें हैं; दक्षिण किनारे पर मार्कण्डेश्वर शिव का बड़ा मन्दिर और दूसरे कई देव मन्दिर बने हैं। सम्पूर्ण यात्री वहाँ स्नान करके जगन्नाथजी का दर्शन करते हैं।

चन्दनतालाब—मार्कण्डेय तालाब से पूर्व कटक की सड़क के पास लगभग २२५ गज चौड़ा और इससे अधिक लंबा चन्दनतालाब नाम का बड़ा पोखरा है। उसके चारो तरफ पक्की सिढ़िया बनी हैं और मध्य में चबूतरे के साथ एक मन्दिर है। नाव द्वारा उस मन्दिर में जाना होता है। बैशाख की अक्षय तृतिया को देवताओं की चल मूर्तियों को नाव पर चढ़ा कर उस तालाब में जलकेलि कराई जाती है और वे उस मन्दिर में वैठाई जाती हैं।

जनकपुर—जगन्नाथजी के मन्दिर से १ मील दक्षिण-पूर्व जनकपुर है, जिसका नाम पुराण में गुडिच क्षेत्र लिखा है। उसी जगह काष्ठ मूर्तियाँ रची गई थीं इस लिये उसको जनकपुर (जन्म स्थान) कहते हैं। एक चौड़ी सड़क, मन्दिर से जनकपुर तक गई है। सड़क के दक्षिण बगल पर पुरी के राजा मुकुन्द-देव का मकान है।

जनकपुर के मन्दिर के चारो तरफ दोहरी कोट है। बाहर की कंगूटेदार दीवार करीब २० फीट ऊँची है। मन्दिर का प्रधान फाटक पश्चिम तरफ है, जिसके पास पत्थर के २ सिंह खड़े हैं। पुरी के मन्दिरों के समान वहाँ भी खास मन्दिर, जगमोहन, नृत्यमन्दिर और भोगमन्दिर लगातार बने हुए हैं; पर वहाँ के मन्दिर पुरी के मन्दिरों से दर्जे में बहुत कम हैं। खास

मन्दिर में ४ फीट ऊंची और १९ फीट लम्बी पत्थर की स्तनवेदी (सिंहासन) है, जिसपर रथयात्रा के समय पुरी के जगन्नाथ, बलभद्र और सुभद्रा बैठाई जाती हैं। घेरे के भीतर एक जगह पाकशाला और दूसरे कई स्थान और मकान बने हुए हैं। जनकपुर के मन्दिर बहुत पुराने हैं।

इन्द्रद्युम्न तालाब—जनकपुर के मन्दिर से थोड़ा पूर्व मार्कंडेय तालाब में कुछ छोटा इन्द्रद्युम्न तालाब है। उसके चारो वगलों में पत्थर की सिद्धियां बनी हैं। तालाब में कछुए बहुत रहते हैं। तालाब के पास एक मन्दिर में नीलकंठ महादेव और इन्द्रद्युम्न और दूसरे मन्दिर में पद्मनाभ भगवान हैं।

जगन्नाथजी के मंदिर का प्रबंध—मन्दिर की वार्षिक आमदनी जागीर आदि से लगभग ५ लाख रुपये और यात्रियों की पूजा से करीब ६ लाख रुपये हैं। मन्दिर के पुजारी, पंडे, मठधारी, नोकर और दूसरे देशों से यात्रियों को ले जाने वाले गुमास्ते तथा नोकर सब मिलकर ६ हजार से अधिक मनुष्य हैं। २० हजार से अधिक पुरुष स्त्री और लड़के जगन्नाथजी से परवरिश पाते हैं। जिनमें से लगभग ६५० आदमी मन्दिर के कामों में मोकर रहे हैं। इन में से कोई जगन्नाथजी का विस्तर लगाता है, कोई उनको जगाता है, कोई पानी, कोई भोजन, कोई पान देता है, कोई कपड़ा धोता है, कोई पोशाक गिनता है इत्यादि। ४०० रसोईदारों के घर के लोग, १२० नृत्य करने वाली लड़कियां और कई एक हजार पुजारी और पंडे हैं। उनमें बहुतरे वड़े धनी हैं। मन्दिर के प्रधान प्रबंधकर्ता पुरी के राजा हैं।

जगन्नाथजी की नित्य की सेवा—सुबह की घंटी बजाकर जगन्नाथ, बलभद्र आदि देवता जगाये जाते हैं। चाद कपाट खोला जाता है और उनको धूप दिखलाया जाता है। ११ बजे आराम के लिये उनकी मार्थना की जाती है और भोजन की संपूर्ण सामग्री सिंहासन के आगे लाकर रखी जाती है। समय समय के भोगों में सकाल भोग, द्विपहर भोग, सन्धा भोग और (उसके पीछे का) शृंगार भोग प्रधान हैं। बहुतसी सामग्री तैयार करके भोग मन्दिर में रखी जाती है और फाटक खोलकर भोग लगाई जाती है। साधुओं

की खास सामग्री भी भोग मन्दिर में रखी जाती है। राजा की सामग्री खास मन्दिर में भोग लगती है। राजा की गोपाल बल्लभ नामक एक खास सामग्री और महल की धनी हुई मिठाई नित्यही भोग लगाने के पीछे बँच दी जाती है; उनका दाम राजा के खानगी हिसाब में रखा जाता है। चारों भोगों के समय एक एक घंटे तक पट बन्द रहता है।

ऐसा प्रसिद्ध है कि कर्माचाई नामक एक स्त्री घातक उपासक हुई। वह नित्य प्रातःकाल उठ कर बिना प्रातःकाल की क्रिया किए हुए अंगारों पर एक छोटे पात्र में खिचड़ी बना कर अत्यंत प्रीति और प्यार से भगवान को भोग लगाती थी। जगन्नाथजी पुरुपोत्तमपुरी से आकर उस खिचड़ी को खाते थे। एक दिन एक साधु आकर आचार पूर्वक भोग लगाने के लिये कर्माचाई को शिक्षा देकर चला गया। ज्ञा कर्माचाई स्नानादिक क्रिया करके आचार पूर्वक भोग लगाने लगी, तब जगन्नाथजी के भोजन में विघ्न होने लगा। भगवान की आज्ञानुसार उनके पंडे ने उस साधु को ढुंढ कर उससे कहा कि तुम कर्माचाई को उपदेश देओ कि वह प्रथमही के समान बिना आचार का रुबरे भोग लगाया करें। साधु ऐसीही शिक्षा दे आया, तब कर्माचाई अति प्रसन्न होकर पहले की भांति बिना स्नानादि क्रिया किए हुए सबेर खिचड़ी बनाकर भोग लगाने लगी। अब तक पुरुपोत्तमपुरी में सब भोगों से पहले कर्माचाई के नाम से जगन्नाथजी को खिचड़ी का भोग लगाया जाता है।

महाप्रसाद—भोजन की सामग्री में भोग लगने से पहले स्पर्शका भेद माना जाता है। सम्पूर्ण सामान पाकशाले से भोग लगने के स्थान पर बड़े नियम से लाया जाता है, पर भोग लग जाने के उपरान्त कूली लोग मन्दिर से महाप्रसाद निकालते हैं। भोग लग जाने पर वह बड़ा पवित्र हो जाता है। हिन्दुस्तान के सब प्रदेशों के यात्री सुल्हाहुआ भातका महाप्रसाद अपने घर ले जाते हैं। सभी जाति सभी को भात परोसता है। उच्छिष्ट प्रसाद भोजन करने में भी छोम दोष नहीं मानते हैं। परोसनवाले जूठे पत्तल को स्पर्श करके भात परोसते हैं और किसी किसी यात्री के मुखमें एक ग्रास खिचा देते हैं या उसमें से एक ग्रास आप खाते हैं, परन्तु यवन आदि अन्य धर्मी और चमार आदि

नीच जातियों से पंक्तिभेद और स्पर्शदोष माना जाता है। वे मन्दिर के हाते के भीतर नहीं जाने पाते हैं। वहाँ के लोग कहते थे कि पुरी के राजा की ओर से २५० रुपये की सामग्री नित्य भोग लगाई जाती है। पंडे लोग अपने यात्रियों के भोजन के लिये, दूकानदार लोग घेचने के लिये और कोई २ यात्री ब्राह्मण भोजन के लिये पाकशाले में भोग की सामग्री तैयार कराकर के भोग लगवाते हैं। और पाक बनाने वालों को नियत हिस्सा देते हैं। पुरी के लोगों के घर जो रसोई बनती है—वह—मन्दिर—में भोग नहीं लगती उसमें स्पर्श भेद माना जाता है।

पुरी का उत्सव—(१) स्नान यात्रा—यह यात्रा रथयात्रा को छोड़ कर पुरी के सब उत्सवों में प्रधान है। ज्येष्ठ की पूर्णिमा को जगन्नाथजी, बलभद्रजी और सुभद्राजी बाहरी हात्ते में पूर्वोत्तर के कोन के पास स्नान घेदी पर लाई जाती है। अक्षयवट के पास के पवित्र कुूप से जल लाकर दो पहर दिन के समय इनको स्नान कराया जाता है और सुन्दर पोशाक पहना कर मंत्रों को पढ़कर इनकी पूजा की जाती है। इसके उपरान्त जगमोहन के बगल की कोठरियों में से एक में, जिसका नाम अन्दर घर है, जगन्नाथजी आदि देवता १५ दिन रहते हैं। इतने दिन भोग नहीं लगता, पाकशाला और बाहर का फाटक बन्द रहता है। कहा जाता है कि बहुत स्नान करने से वे लोग बीमार हैं। ऐसे समय में किसी दूजा आपाढ़ में इनके कलेवर बदलते हैं। उस वर्ष की रथयात्रा के समय यात्रियों का बहुत भारी मेला होता है। (२) रथयात्रा पुरी का प्रधान उत्सव है। जगन्नाथजी, बलभद्रजी, और सुभद्राजी रथ में बैठ बड़े सामान और तैयारी के साथ जनकपुर के अपने विश्राम बाटिका में जाते हैं। जगन्नाथजी का रथ ४५ फीट ऊँचा और ३५ फीट लम्बा तथा इतनाही चौड़ा है, जिसमें ७ फीट व्यास के १६ पहिये लगे हैं। बलभद्रजी का रथ ४४ फीट ऊँचा १४ पहियेवाला और सुभद्राजी का रथ ४३ फीट ऊँचा १२ पहिये का है। आपाढ़ सुदी २ के दिन तीनों प्रतिमा सिंहराजे पर लाकर रथ में बैठाई जाती है। उस समय तीनों देवताओं को सुनहरे हाथ और पाव लगाये जाते हैं। उसके बाद पुरी

के राजा हाथी, घोड़े, पालकी, आदि अस्त्रपाशों के साथ वहाँ आते हैं। अगले रथ-से लगभग १०० गज दूर आने पर वह गाड़ी से उतर कर पैदल चलेते हैं और रथके आगे की भूमि को रत्न लगे हुए झाड़ू से बहारते हैं और मूर्तियों की पूजा करते हैं। सबसे पहिले राजा क्रम से तीनों रथकी डोरी पकड़ कर छोड़ देते हैं; तब पड़ोस के जिलों के ४२०० कुली, जिनको इस कामके लिये बिना लगान की जमीन मिली है, रथको खींचते हैं और बहुतदे यात्री भी बड़े प्रेम उत्साह से इस काम में लगते हैं। रथों के पहिए वालू में गड़ जाते हैं, मार्ग में कई दिन लग जाते हैं। जगन्नाथजी जितने दिन मार्ग में रहते हैं, उतने दिन पक्षी सामग्री भोग लगती है। जनकपुर पहुँचने पर तीन दिन कच्ची भोग की तैयारी होती है। चौथी रात को लक्ष्मीजी बहुत जलूस के साथ अपने स्वामी के दर्शन-के लिये मन्दिर से आती हैं। उस तिथी को लोग हरिपंचमी कहते हैं। जगन्नाथजी आदि देवता चार पाँच दिन तक जनकपुर में रह कर दसमी को लौटते हैं और विजय द्वारद्वार वाहर होते हैं। फिरने के समय यात्रीलोगों के कम हो जाने के कारण मार्ग में विडम्ब होता है। सिंहदरवाजे पर रथ पहुँचने पर लौट आने का उत्सव होता है। मन्दिर के सिंहासन पर आने के पीछे स्पर्श दीप मिटाने के लिये मूर्तियों के संस्कार होते हैं।

(३) हरि सयनी एकादशी—आषाढ़ शुक्ल एकादशी को भगवान के सयन का उत्सव होता है। (४) झूलन उत्सव—श्रावण शुक्ल एकादशी से पूर्णिमा तक मदनमोहनजी झूलन पर रहते हैं। उस समय नाच गान से आनन्द मनाया जाता है। (५) जन्माष्टमी का उत्सव—भादों कृष्ण-अष्टमी को जन्म का उत्सव होता है। (६) पार्श्व परिवर्तन—भादो शुक्ल एकादशी को विष्णु के करवट फेरने का उत्सव होता है। (७) कालिय दमन—कृष्ण ने कालिय नाग का दमन किया था, उसका उत्सव होता है। (८) वामन जन्म—भादो शुक्ल द्वादशी को वामनजी के जन्म के दिन जगन्नाथजी को पोशाक पहनाये जाते हैं और वामनजी के मानिन्द इनको एक छाता और कमण्डलु दिया जाता है। (९) शरत्पूनों—आश्विन की पूर्णिमासी को शरत्पूनों का उत्सव होता है।

(१०) देवोत्थान—कार्तिक शुक्ल एकादशी को विष्णु के जागने का उत्सव होता है।
 (११) गरम कपड़े पहनाने का उत्सव—मार्गशीर्ष में जिस दिन मूर्तियों को
 जाड़े के कपड़े पहनाये जाते हैं; उस दिन उत्सव होता है। (१२) पुण्या-
 भिषेक—यह उत्सव पौष की पूर्णिमा को होता है। (१३) मकरकी संक्रान्ति—
 मकर के सूर्य होने के दिन उत्सव होता है। (१४) फूलदोल—रथयात्रा
 और स्नान यात्रा को छोड़ कर होली पुरी में सब से अधिक प्रसिद्ध उत्सव
 है। धुलहड़ी के दिन मदनमोहनजी झूलते हैं। यात्रीगण अवीर गुलाल मढ़ाते
 हैं। उसी दिन जगन्नाथजी का राजभेंट उत्सव होता है। (१५) राम
 नवमी—रामचन्द्र के जन्म के दिन जगन्नाथजी को रामचन्द्र के समान पोशाक
 पहनाई जाती है। (१६) दमनभंजिका यात्रा—दमन नामक वैश्य के वध
 का उत्सव होता है। (१७) चन्दन यात्रा वैशाख की अक्षय तृतीया को चन्द-
 नतालाव पर यात्रा होती है उस समय देवताओं की चल प्रतिमाओं को
 नाव में बैठा कर चन्दनतालाव में जल क्रीड़ा कराई जाती है और फूलों का बड़ा
 शृंगार किया जाता है। लतावृक्षों से वृन्दावन बनाया जाता है। (१८)
 रुक्मिणी हरण। इनके अतिरिक्त बीचबीच में कई बार पुरी में महोत्सव
 होता है।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—पद्मपुराण—(पाताल खण्ड, १७ वां अध्याय) .

शत्रुघ्नजी ने अश्व की रक्षा करते हुए जाते जाते एक पर्वताश्रम देखकर अपने
 मंत्री से पूछा कि यह क्या है। सुमति नामक मंत्री बोला कि यह नील
 पर्वत पुरुषोत्तम जगन्नाथजी से शोभित है। यहां पुरुषोत्तमजी सदा टिके
 रहते हैं। इस पर्वत पर चढ़ कर पुरुषोत्तमजी को नमस्कार कर उनकी पूजा
 करके नैवेद्य भोजन करने से प्राणी चतुर्भुज हो जाता है। इस विषय में
 पंडित लोग यह पुराना इतिहास कहते हैं,—

लोक में प्रसिद्ध कांची नामक पुरी है। उसमें महाराजा रत्नग्रीव राज्य
 करता था। उसने अपने पुत्र को राज्य देकर तीर्थयात्रा का विचार किया।
 एक दिन राजा ने अपनी सभा में एक तपस्वी ब्राह्मण को देख कर उससे
 तीर्थों का वृत्तान्त पूछा। ब्राह्मण बोला कि हम पर्यटन करते हुए एक

समय 'गंगासागर' के जल से प्रक्षालित नील नामक पर्वत पर गये । वहाँ हमने चतुर्भुजी मूर्तियाँ और शंख, चक्र, गदा पद्म धारण किये हुए भीलों की देखा, तब उनसे चतुर्भुज होने का कारण पूछा । (१८ वां अध्याय) किरातो ने कहा कि हम लोगों का एक छोटा बालक अन्य बालकों के साथ खेलता हुआ इस पर्वत के शृंग पर चढ़ गया । तब उसने वहाँ मणियों से खचित सुरण की दीवारों से बना हुआ एक अद्भुत देवालय देखा । वह एक मन्दिर में लक्ष्मी नारदादिकों से सेवित श्रीहरि को देखकर समीप चला गया । जब देवगण पूजा करके नैवेद्य लगाकर अपने अपने लोकों को चले गए तब उस लड़के ने नैवेद्य के एक भात का सीप पड़ा हुआ पाया और श्रीहरि का दर्शन करके भात का सीप खालिया, जिससे वह चतुर्भुज हो गया । उस बालक से यह समाचार पाकर हमलोग भी इकट्ठे होकर देवदेव का दर्शन किया और स्नातु युक्त वहाँ का भात आदि नैवेद्य भोजन करके हम लोग चतुर्भुज रूप हो गए । (१९ वां अध्याय) ऐसा कह ब्राह्मण ने रत्नग्रीव से कहा कि हम भी गंगासागर के संगम में स्नान करके उस शृंग पर चढ़ें । वहाँ देव देवादिकों से वन्दित महाराज को देख मैं ने नमस्कार किया और वहाँ के भात के भोजन से शंख चक्रादिकों से विहित चतुर्भुजत्व पाया । (२१ वां अध्याय) ऐसा ब्राह्मण का उचन मुन राजा रत्नग्रीव ब्राह्मण की आज्ञा से पुरुषोत्तमजी के दर्शन को चला और गंगासागर संगम में पहुँच कर ब्राह्मण से बोला कि नीलपर्वत कितनी दूर है । तब ब्राह्मण ने विस्मित होकर कहा कि नीलपर्वत का स्थल तो यही है, यहाँ ही भील दिखाई दिये थे और इसी मार्ग होकर हम पर्वत पर चढ़ेंगे । हे राजन् ! जब तक पुरुषोत्तमजी का दर्शन नहीं तब तक आप यही ठहरे रहें । राजा श्रीहरि का ध्यान करने लगा । जब राजा को परमेश्वर के गुणगान करते पाँच दिन बीत गये तब भगवान् त्रिदण्डी का वेष धारण किये हुए राजा के समीप आकर बोले कि हे राजन् ! कलह मध्याह्न समय में श्रीहरि तुमको अपना दर्शन देंगे । तुम तुम्हारा मंत्री, तुम्हारी स्त्री, यह तपस्वी ब्राह्मण और तुम्हारे पुरका करम्ब नामक बौरी, जो बड़ा साधु है, ये सब नील पर्वत पर जायें और वहाँ श्रीहरि के पाप की

केने ने । (२२ वां अध्याय) दूसरे दिन मध्याह्न के समय नीलपर्वत राजा को दिखाई दिया, जो चान्दी के शृंगों से अति शोभित हो रहा था । तब पांचो आदमी विजय मुहूर्त में नीलपर्वत पर चढ़े । उसके एक शृंगके ऊपर मुवर्ण से चने हुए देवमन्दिर में, मुवर्ण के सिंहासन पर विराजमान, चतुर्भुजो मूर्ति धारण किये हुए श्रीहरि को देख कर सबों ने मणाम किया । उसके अनन्तर सब लोग चतुर्भुजरूप हो शंख, चक्र, गदा, पद्म हाथों में लिये हुए विमानों पर चढ़ कर विष्णु लोक को चले गये ।

(८० वां अध्याय) महादेवजी ने पार्वतीजी से कहा कि ज्येष्ठ मास में विष्णु भगवान् को यत्न से स्नान कराने से ब्रह्महत्यादि सदस्यों पाप नष्ट होते हैं । आपाढ़ में रथयात्रा और आपाढ़ के शुक्र पक्षकी एकादशी को विष्णु शयन का महोत्सव करना उचित है । श्रावण में श्रवण नक्षत्र अर्थात् पूर्णिमा से श्रावण में श्रवण नक्षत्र के दिन तक श्रावणी उत्सव अर्थात् झूलनोत्सव होना चाहिए । भादो मास में जन्माष्टमी और वामन द्वादशी को उपवास में तत्पर होना उचित है । भाद्रपद की शुक्लाद्वादशी को शयन किये हुए भगवान् का परिचर्तन कराना चाहिए । आश्विन के शुक्र पक्ष में महामाया की पूजा, कार्तिक में दामोदरजी के लिए दीपदान, मार्गशीर्ष के शुक्र पक्षकी पष्ठी को श्वेत बस्त्रों से जगदीश की पूजा, पौष मास में पुष्य जल से भगवान् को स्नान, माघ मास में संक्रान्ति के दिन गुड़ मिश्रित तण्डुल और तिल से भगवान् की पूजा और माघ शुक्लापञ्चमी को केशवजी को स्नान कराना उचित है । मनुष्य को चाहिए कि फाल्गुन मास की चतुर्विंशी को अठवें पहर में अथवा पौर्णमासी में जब प्रतिपदा का संयोग होजाय तब विविध प्रकार के कुंकुमादि चूर्णों से परमेश्वरको तृप्त करें; एकादशी से इस दोलोत्सव का आरम्भ करके फिर पंचमी को समाप्त करे अथवा ५ दिन वा ३ दिन दोलोत्सव करे । दोला पर चढ़े हुए कृष्णचन्द्र को एक बार भी देखकर मनुष्य अपराध समूहों से छूट जाते हैं । वैशाख मास में दमनारोपण करके सब पदार्थ कृष्णचन्द्र को समर्पण करना चाहिए । वैशाख मास की शुक्ल तृतीया को जल के मध्य में बैठा कर अथवा दमनारोपण मंडल में श्रीहरि की विशेष पूजा करनी चाहिए । गंधाष्टक को अन्य सुगंधित

वस्तुओं से युक्त करके विष्णु के अंगों में लगावे, वहाँ पर वृन्दावन बनावे और उसमें सब प्रकार के फलित वृक्ष लगावे इत्यादि ।

(पद्मपुराण, उत्तरखंड, ८३ वा अध्याय) चैत्र मास की शुक्ल एकादशी को उत्सव के साथ दोलाफड़ श्रीमृण्ण भगवान की पूजा करनी चाहिए । दोला पर चढ़े हुए भगवान के दर्शन करने से मनुष्य हजारों पाप से विमुक्त होता है और उनको झुलाने से करोड़ों जन्म के पाप छूट जाते हैं । चैत्र और वैशाख में दोलोत्सव के समय संपूर्ण देवता और पृथ्वी के सब प्राणी भगवान के दोलोत्सव में आते हैं । उस समय दोला में स्थित विष्णु भगवान के दर्शन करने वाला मनुष्य अतः काल में विष्णु के साथ आनंद करता है । दोला में भगवान के पास श्रीलक्ष्मीजी को और उनके आगे नारद आदि सुरर्षि और विष्णुर्मेन आदिक यत्नों को स्थापित करके प्रत्येक महर पर यत्न से उनका पूजन करना चाहिए ।

(८४ वा अध्याय) चैत्र मास की शुक्ल द्वादशी को अच्छी मिथि से दमनोत्सव करना उचित है । देवताओं के आनंद से उत्पन्न दिव्य दमनमंजरी है । उत्सव करनेवाले मनुष्य को उचित है कि बागीचे में जाकर रति समेत दमनमंजरी का पूजन करें और गीत और वाजा के शब्द के सहित उसको अपने घर लावे, एकादशी की रात्रि में सर्वतोभद्र घना कर रति के सहित दमन अर्थात् कामदेव को स्थापित करके उसको पूजे, उसके पश्चात् दमनक मुष्टि को ग्रहण कर लक्ष्मीजी और विष्णु आदि देवताओं को अर्पण करे और फिर चंदन आदि पदार्थों से महती पूजा और गीत, वाजा तथा नाचों से भारी उत्सव करे । ब्रह्मघाती आदि बड़े पापी मनुष्य भी दमनकोत्सव के दर्शन करने से निःपाप हो जाते हैं । जो मनुष्य मंजरी से दमनक की पूजा करता है उसका सब तीर्थों के करने का फल लाभ हो जाता है । चैत्र और वैशाख में दमनक के उत्सव करने वाले मनुष्य को हजार गोदान का फल मिलता है । (भविष्यपुराण—उत्तरार्द्ध के १२१ वें अध्याय में दमनकोत्सव और दोलोत्सव का और १२२ वें अध्याय में रथयात्रा का विधान है) ।

(८५ वा अध्याय) वैष्णवों को उचित है कि वैशाख की पूर्णिमा को

जल में स्थित भगवान की पूजा, एकादशी में धड़े उत्साह से भगवान का दर्शन करे। वह सोना, चांदी, तांबे या मट्टी के वर्तन में ठंडे सुगंध युक्त जल में विशेष करके गोपाल जी अथवा शालिग्रामशिला को स्थापन करे। मनुष्य जेष्ठ मास में जल में स्थित भगवान के दर्शन करने से प्रलय पर्यन्त ताप रहित हो जाता है। मियुन और कर्क राशि के सूर्य में अर्थात् चान्द्र मास के आपाढ़ और श्रावन में विशेष करके द्वादशी तिथि में जल में स्थित भगवान की पूजा करने से सौ किरोड़ यज्ञ करने का फल लाभ होता है।

(८६ वां अध्याय) सावन मास में पवित्रारोपण विधि करना चाहिए। विष्णुजी के पवित्रारोपण करने से आत्मा को सुख होता है, इत्यादि।

अग्निपुराण—(८० वां अध्याय) दमनकारोहण विधि इस भांति जगत में प्रचलित हुई,—पूर्व काल में शंकरजी के क्रोध से भैरव की उत्पत्ति हुई। जब वह देवताओं का दमन करने लगे तब महादेवजी ने उनको शाप दिया कि तुम वृक्ष हो जाओ। पीछे भैरवजी की प्रार्थना से प्रसन्न होकर शिवजी ने कहा कि हे भैरव ! जो मनुष्य सप्तमी और त्रयोदशी को दमनक वृक्ष का पूजन करेगा, उसको संपूर्ण फल प्राप्त होगा। पूजा के अंत में प्रार्थना करनी चाहिए कि हे हरमसाद संभूत ! तुम इस स्थान पर सन्निहित हो। अपने गृह पर भी दमनक के आहुत करके पूजन के उपरांत सायंकाल में विसर्जन करना उचित है।

आदि ब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) उत्कल देश में पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं। उस देश में बसनेवाले मनुष्य धन्य हैं। पुरुषोत्तम पुरी में निवास करनेवाले का जन्म सुफल हो जाता है। जो पुरुष तीर्थराज के जल में स्नान करके पुरुषोत्तम भगवान का दर्शन करता है, उसका सदा स्वर्ग में निवास होता है। जो उस क्षेत्र में शरीर छोड़ता है, उसका जीवन सफल है।

(४२ वां और ४३ वां अध्याय) पृथ्वी में सब नगरियों में उत्तम अवन्ती नामक नगरी है। कृतयुग में उस नगरी का राजा इन्द्रधुम्न था। वह एक समय विष्णु की आराधना की इच्छा से बहुतसी सेनी, भृत्य और पुरोहितों को संग ले अवन्तीपुरी से चल कर लवणोदक समुद्र के तीर पर

पहुँचा । राजा ने दम योजन लम्बा और ५ योजन चौड़ा घटुत आश्रयों में युक्त तीन लोक में पूजित उस दुर्लभ क्षेत्र को देख कर वहाँ निवास किया ।

(४४ वां अध्याय) पुरुषोत्तम के दहिने एक घट का वृक्ष है, जो कल्पांतर में भी विनाश नहीं होता । घट को देखने और उसकी छाया में प्राप्त होने में ब्रह्म इत्या भी दूर होजाती है । उस वृक्ष की प्रदक्षिणा और उसको नमस्कार करने में संपूर्ण पाप छूट जाते हैं । घट के उत्तर दिशा में केशव के मासाद अर्थात् धर्ममय स्थान में भगवान की रची हुई मूर्ति है । एक समय मूर्त्य के पुत्र धर्मराज ने घट के समीप विष्णु भगवान की स्तुति की और प्रणाम करके उनसे कहा कि हे नाथ ! उस निर्यात और पवित्र पुरुषोत्तम स्थान में सब कामना देनेवाली एक मूर्ति है । उसके दर्शन और उसमें श्रद्धा करने वाले संपूर्ण मनुष्य श्वेतभुवन को चले जाते हैं; इस कारण से यमपुरी शून्य हुई जाती है, हे देव ! तुम मुझ पर प्रसन्न होकर इस प्रतिमा को हर लो । धर्मराज का ऐसा वचन सुन विष्णु ने उस इन्द्रनील की मूर्ति को पुरुषोत्तम क्षेत्र के बालू में गुप्त कर दिया । उसके पश्चात् इन्द्रधुम्न का आगमन हुआ ।

(४५ वां अध्याय) राजा इन्द्रधुम्न पुरुषोत्तम क्षेत्र में जाकर विचार करने लगा कि विष्णु भगवान का मन्त्रूपी पुरुषोत्तम क्षेत्र है । कल्पवृक्ष के समान यहा घटवृक्ष स्थित है । इन्द्रनील प्रतिमा को भगवान ने गुप्त कर दिया है, विष्णु भगवान की अन्य कोई सुन्दर मूर्ति यहा नहीं देख पड़ती, इस लिये जिससे भगवान प्रत्यक्ष मुझको दर्शन दें, मैं प्रयत्न करता हूँ । (४६ वां अध्याय) ऐसा कह राजा ने उत्तम शास्त्र के जानने वाले गणको को बुलाकर यत्न से भूमि का शोधन करवाया और उस पर सोने और रत्नों से सुशोभित और सुन्दर भीतों तथा सोने के स्तंभों से युक्त भगवान का मन्दिर बनवाया । (४७ वां अध्याय) उसके उपरांत राजा इन्द्रधुम्न ने भगवान के प्राप्ति के लिये बड़े विधान से अश्वमेध यज्ञ समाप्त किया ।

(४८ वा अध्याय) राजा की स्तुति से प्रसन्न हो रामदेव भगवान ने उन्हे स्वप्न में दर्शन दिया और उसने कहा कि हे राजन् ! जो तू सनातनी राज पूज्य प्रतिमा को यहाँ स्थापित करने की इच्छा करता है तो मैं उसका

उपाय तुझ से कहता हूँ; जब राति व्यतीत हो जावेगी और निर्मल मूर्ध्यादय होगा, तब अनेक प्रकार के वृक्षों से सुशोभित समुद्र के तट के समीप लवणोदधि समुद्र से जल बहेगा । उस समय कोलात्थी नामक महा वृक्ष समुद्र की वेला से हन्यमान होने पर भी न कापे गा; उस समय जब तू हाथ में कुल्हाड़ा ले कर वहाँ अकेले गमन करे गा तब उस वृक्ष को देखे गा, निदान तुम इन चिन्हों को देख कर अशंकित हो उस वृक्ष से दिव्य प्रतिमा बनाना । राजा इन्द्रद्युम्न प्रभात होने पर समुद्र में स्नान कर ब्राह्मणों को दान के अकेला समुद्र के तट पर गया और अति तेजमान महान शाखों वाला करड़ा मंजीठ के वरण के समान कान्तिवाला विष्णु के उस पुण्य वृक्ष को जल में स्थित देख कर प्रसन्न हुआ । जब वह कुल्हाड़े से उसे छेदन करने लगा और उसने बीच से छेदन करने की इच्छा की तब उस निरीक्ष्यमान काष्ठ में उस को अद्भुत दर्शन हुए । उस समय प्रकाशमान हो महात्मा लोग राजा के पास आकर उससे बोले कि तू किसलिये इस वृक्षको काटता है। राजाने कहा कि हे ब्राह्मणों! मैं जगत के पति देवदेव के आराधना के लिये इस से मूर्ति बनाऊँगा । यह सुन कर उनमें से एक बोला कि हे महामाग ? तू इस वृक्ष की छाया में हमारे संग स्थित हो, शिल्प कर्मियों में श्रेष्ठ यह दूसरा ब्राह्मण, जो सब कर्मों में विश्वकर्मा के समान है, तेरे उद्देश के अनुसार प्रतिमा बना देगा । यह सुन राजा ने वृक्षकी छाया में बैठ कर उस ब्राह्मण से कहा कि तुम कृष्ण, वलदेव और सुभद्रा इन तीनों की तीन प्रतिमा बनाओ । शिल्प कर्मों में निपुण ब्राह्मण वेपधारी विश्वकर्मा ने शुभ लक्षणों से युक्त दिव्य वृक्षों को पहिनी हुई अनेक रत्नों से अलंकृत मनोहर प्रतिमाओं को बनाया । यह देख कर राजा परम विस्मय को प्राप्त हो बोला कि तुम दोनों देवताओं के समान आचरण करने वाले कौन हो । (४९ वां अध्याय) ब्राह्मणों में से एक पुरुष बोला कि तुम मुझ को पुरुषोत्तम भगवान् जानों; जब तक समुद्र, पर्वत और स्वर्ग में देवता रहेंगे, तबतक इन्द्रद्युम्न नामवाला और यज्ञांग से संभव यह तीर्थ रहेगा । मनुष्य एक बार यहाँ स्नान करने से इन्द्रलोक में प्राप्त हो जावेगा । जो मनुष्य इस सरोवर के तट पर पिंडदान करेगा उसके २१ कुलका उद्धार

हो जावेगा । इस सरोवर के दक्षिण भागके निकृत्य कोन में एक वट का वृक्ष है; उसके समीप एक सुन्दर मंदप बना है । ऐसा कह विश्वकर्मा समेत हरि भगवान् अन्तर्धान हो गये । राजा श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा को विमान के समान रथमें बैठा कर लाया और शुभ तिथि तथा सुन्दर मुहूर्त में ब्राह्मणों के सहित अपने उत्तम मन्दिर में इन की प्रतिष्ठा की । (५० वां अध्याय) मार्कण्डेय मुनि महामलय के समीप महाघट्टि को देख कर मयसे व्याकुल होकर पृथ्वी में भ्रमता फिरा । जब उसे कहीं विश्राम न मिला तब वह पुरुषेश के पास सनातन वटराज के समीप जाकर उसके मूल में स्थित हुआ, जहाँ न कालामि का ही भय था और न शरीर को खेद होता था । (५१ वां अध्याय) जब पृथ्वी जलार्णव होगई तब डूबते हुए मार्कण्डेय मुनिने उस वट की शाखा पर पलंग के ऊपर बाल कृष्ण भगवान् को देखा । उस बालक के कहने पर मुनि उसके मुख में प्रवेश कर गया । (५२ वां अध्याय) और बालक के मुखमें सम्पूर्ण ब्रह्मांड को देख कर अन्त में बाहर निकला । (५३ वां अध्याय) उसने बाहर निकल वट वृक्ष के ऊपर पलंग पर स्थित उस बालक को फिर देखा । बालक बोला कि हे मुने ! सुख से यहाँ विश्राम कर; जब ब्रह्मा उत्पन्न होंगे, तब मैं पृथ्वी, आकाश और सब जीवों को रचूंगा । मार्कण्डेय बोले कि हे भगवन् ! मैं परमात्मा शंकर को स्थापन करूंगा; तुम कहो मैं किस स्थान में उन को स्थित करूँ । जगन्नाथजी बोले कि हे मुने ! तुम शीघ्रही शिवालय बना कर शिव की स्थापना करो । शिव के स्थापना से मेराही स्थापन हो जावेगा; क्योंकि हमारे और शिव में कुछ अन्तर नहीं है । हे विम ! पुरुषोत्तम देव के उत्तर दिशा में अपने नाम से चिन्हित शिवालय बनाओ । यह मार्कण्डेय नामक तीर्थ करके लोक में विख्यात होगा ।

(५५वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि मार्कण्डेय हृद में स्नान कर शिवालय में जाकर तीन बार शिव की प्रदक्षिणा करे और मार्कण्डेय तथा केशव भगवान् के पूजन करके उनकी स्तुति और उनको प्रणाम करे और कल्पवृक्ष के समीप जाकर तीन प्रदक्षिणा करके उस वटवृक्ष का पूजन करे । जो मनुष्य कृष्ण के आगे स्थित गरुड़ का दर्शन करता है वह विष्णुलोक में जात होता है और

जो घट, गरुड़, पुरुषोत्तम, बलदेव, और सुभद्रा का दर्शन करता है; उसको परम गति लाभ होती है। (५६ वां अध्याय) जहाँ इन्द्रनील मय विष्णु भगवान् रेत से आवृत हो कर छिपे हैं, उस स्थान के दर्शन करने से मनुष्य विष्णु पुर में जाता है। जिस भगवान् ने नृसिंह रूप धर हिरण्यकशिपु वैत्य को मारा था वही वहाँ स्थित है।

(५७ वां अध्याय) सतयुग में श्वेत नाम से विख्यात एक राजा था। वह कई हजार वर्षों तक राज्य करके अन्त काल में इस लोक की कामनाओं से विरक्त हो दक्षिण दिशा के समुद्र के तट पर गया। वहाँ उसने एक अति उत्तम देवमन्दिर बनवा कर उसमें चन्द्रमा के समान कान्तिवाली माधव की मूर्ति को स्थापित किया। राजा की स्तुति से प्रसन्न हो विष्णु भगवान् प्रकट होकर बोले कि हे राजन्! तेरी यह भक्ति तीनों लोकों में प्रकाशित होगी और श्वेत गंगा का यश सम्पूर्ण नर तथा देवता गान करेंगे। जो मनुष्य श्वेत-गंगा के जल को कुशा के अग्रभाग से स्पर्श करेगा उस का निवास स्वर्ग में होगा। जो कोई माधव की प्रतिमा का दर्शन करेगा, वह मेरे लोक में जायगा।

(५८ वां अध्याय) चतुर्दशी को मार्कण्डेय ह्रद में और पूर्णिमा को समुद्र में स्नान का बड़ा पुण्य है। मार्कण्डेय घट, रोहिण्याह्रद, कृष्ण, महोदधि और इन्द्रद्युम्न सरोवर ये पांच पंचतीर्थ हैं। ज्येष्ठ मास की पूर्णिमा को जो ज्येष्ठा नक्षत्र हो तो तीर्थराज में स्नान करने से महान फल लाभ होता है। मनुष्यों को उचित है कि घट को नमस्कार करके उससे ३०० धनुष दक्षिण ओर समुद्र के निकट, जहाँ मन को रमण करने वाला स्वर्ग के द्वार का चिन्ह देख पड़ता है, गमन करे। वह पहले उग्रसेन को देख कर स्वर्ग द्वार से समुद्र पर जाय और (६१ वां अध्याय) पश्चात् यज्ञांग संभव तीर्थ में जाकर इन्द्रद्युम्न नामक पवित्र सरोवर में आचमन कर मंत्र का उच्चारण करे। जो एकादशी के दिन व्रतकर ज्येष्ठ की पूर्णिमा के दिन पुरुषोत्तम को देखता है वह भगवान् के लोक में जाता है। पृथ्वी पर जितने तीर्थ, नदी, सरोवर, तालाब, बावली, कुँए और ह्रद हैं, वे सब ज्येष्ठ के महीने में पुरुषोत्तम तीर्थ में शयन करते हैं और ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन प्रत्यक्ष होते हैं। यह दशमी दस पापों का नाश करती

हैं, इस लिये इसका नाम दशहरा पड़ा है । वैशाख शुक्ल तृतीया के दिन जो मनुष्य चतुर्दश से विभूषित श्रीकृष्ण का दर्शन करता है वह भगवान के स्थान में प्राप्त होता है । (६३ वां अध्याय) ज्येष्ठ के महीने में ज्येष्ठा नक्षत्र सहित पूर्णिमासी के दिन सदा हरि का स्नान कराया जाता है । (६४ वां अध्याय) जो मनुष्य “गुडिच क्षेत्र” में जाते हुए रथ में स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा के दर्शन करते हैं, वे हरि के भवन में प्राप्त होते हैं । जो पुरुष वहाँ ७ दिन तक मंडप में स्थित श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा का दर्शन करते हैं, वे विष्णुलोक में जाते हैं । पूर्व काल में राजा इन्द्रधुम्न ने हरि की प्रार्थना करके उसने कहा कि हे प्रभो ! मेरी इच्छा है कि सरोवर के तीर आपकी यात्रा हो । तब पुरुषोत्तम भगवान ने उसको वरदिया कि “गुडिच क्षेत्र” में सरोवर के तीर ७ दिन तक मेरी यात्रा रहेगी । आपाढ़ शुक्ल में गुडिचा नामवाली यात्रा के समय श्रीकृष्ण, बलदेव और सुभद्रा के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ से भी अधिक फल होता है (आगे ७० वां अध्याय तक पुरुषोत्तमक्षेत्र की कथा है) ।

पुरुषोत्तम माहात्म्य—(चौरासी हजार वाला स्कन्दपुराण, उत्तर खण्ड, पहिला अध्याय) समुद्र के किनारे पर पुरुषोत्तमक्षेत्र १० योजन में विस्तृत है । उसके मध्य में नीलाचल नामक बड़ा पर्वत सुशोभित है । सृष्टि के आदि में ब्रह्मा ने विष्णु भगवान की स्तुति की; तब भगवान ने प्रकट होकर ब्रह्माजी से कहा कि समुद्र के उत्तर और महानदी के दक्षिण का प्रदेश सब तीर्थों के फल को देनेवाला है । उस देश में बड़े पुण्यवान् मनुष्य जन्म लेते हैं और निवास करते हैं । एकामृक वन से दक्षिण समुद्र के तीर तक की भूमि पद पद में श्रेष्ठ और पवित्र है । समुद्र के तीर पर पृथ्वी में अत्यन्त गुप्त नील पर्वत विराजमान है । मैं वहाँ सर्वदा निवास करता हूँ । उस स्थान की कभी सृष्टि अथवा लय नहीं होता है । नीलगिरि पर षट्बृहत् के मूल से पश्चिम सुप्रसिद्ध रोहिणीकुण्ड के तीर पर मैं स्थित रहता हूँ । जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान करके मेरा दर्शन करता है; उसको मुक्ति मिलती है । तुम वहाँ ही जाकर मेरा ध्यान करो । हमारी प्रसन्नता से शुभ और प्रबल सम्पूर्ण विषय तुमको ज्ञात हो जायगा ।

(दूसरा अध्याय) ब्रह्मानं पुरुषोत्तम क्षेत्र में जाकर भगवान् का दर्शन किया । उसी समय एक काक ने रोहिणीकुण्ड में गोता मारा और नीलमाधव अर्थात् नीलमणि की भगवान् की मूर्ति का दर्शन कर अपने शरीर को छोड़ चतुर्भुज हो कर भगवान् के पास चला गया । काक की ऐसी गति देख कर ब्रह्मा विस्मित हो गये । उसी समय यमराज ने श्वास लेते हुये वहाँ आकर माधव और लक्ष्मी की स्तुति की और उसने कहा कि मैं अपने अधिकार से रहित हुवा जाता हूँ, अर्थात् सबलोग तुम्हारे दर्शन करने से स्वर्ग को चले जाते हैं । लक्ष्मी ने कहा कि जिस लिये तू मेरी स्तुति करते हो वह नहीं हो सकेगा । हम दोनों पुरुषोत्तमक्षेत्र को नहीं छोड़ सकते हैं । यहां के वसे हुये मनुष्य तुम्हारे वसमें कभी नहीं हो सकेंगे । नीलेन्द्रमणि के नारायण की मूर्ति के दर्शन करने वाले वन्दन से छूट जाते हैं ।

(तीसरा अध्याय)—लक्ष्मीजी कहने लगी कि जिस समय प्रलय में सब चराचर लीन हो रहा था, यह क्षेत्र और भगवान् के वक्षस्थल में मैं शेष रह गई थी । उस समय सप्तर्षय जीने वाला मार्कण्डेय मुनि प्रलय के समुद्र में बहता हुआ पुरुषोत्तम क्षेत्र में आया । उसने वहाँ एक वट वृक्ष और उसके ऊपर पत्र के दोने में मेरे सहित बालरूप चतुर्भुज भगवान् को देखा । बालक ने कहा कि हे मुने । तुम हमारे मुख में पैठ कर बैठ जावो । मार्कण्डेय ने बालक के मुख द्वारा उसके उदर में जाकर भीतर ब्रह्मादिक देवता और नदी पर्वत समुद्र इत्यादि वस्तुओं को देखा । पीछे वह बाहर आकर भगवान् की वड़ी स्तुति करके उनसे बोला कि आप ऐसा उपाय करें जिससे मैं मृत्यु को न प्राप्त होऊँ । भगवान् ने मुनि के मनोरथ सिद्ध करने के लिये वटवृक्ष के वायुकोण में अपने चक्र से एक तालाब खोदा । मार्कण्डेय मुनि ने उस तालाब के समीप महादेवजी की आराधना करके मृत्यु को जीत लिया । उसी मुनि के नाम से सरोवर का नाम मार्कण्डेय तालाब हुवा, जिसमें स्नान करके मार्कण्डेयेश्वर शिव के दर्शन करने से अश्वमेध यज्ञ का फल मिलता है । पुरुषोत्तम क्षेत्र समुद्र के तट पर पांच कोस में विस्तृत है । समुद्र के निकट यमेश्वर शिव स्थित हैं, जिनके दर्शन और पूजन करने से कोटि लिङ्ग के दर्शन और पूजन का फल मिलता है ।

(चौथा और पांचवा अध्याय) पुरुषोत्तम क्षेत्र शंख के आकार का है । इसकी पश्चिम सीमा अर्थात् मस्तक स्थान पर वृषभध्वज महादेव और अग्रभाग में (अर्थात् पूर्य) नीलमठ महादेव हैं । समुद्र से लेकर के बट के मूल तक शंख का उदर भाग है । शंख के दूसरे भाग में कपालमोचन शिव हैं । जब महादेवजी ने ब्रह्मा का, पांचवां सिर काट लिया था; उस समय वह सिर उनके हाथ में लपट गया । तब शिवजी पृथ्वी पर भ्रमण करते हुये पुरुषोत्तम क्षेत्र में आये । यहां आने पर वह सिर इनके हाथ से छूट गया, तबसे इस स्थान का नाम कपालमोचन पड़ा । कपालमोचन शिव के दर्शन करने से ब्रह्महत्यादिक पाप छूट जाते हैं । शंख के तीसरे चक्र में त्रिमला देवी की मूर्ति की पूजा करने से मुक्ति होजाती है । कपालमोचन से अर्द्धाशिनो देवी तक शंख का मध्य भाग है । यह देवी महाप्रलय के समय समुद्र के आधे जल को पी जाती है । समुद्र के किनारे से वटवृक्ष तक की भूमि में जितने कीट पर्यन्त जीव मरते हैं, सबकी मुक्ति होजाती है । इस अन्तर्वेदी को देवतालोक भी इच्छा करते हैं । रोहिणीकण्ड के जल स्पर्श करने से प्राणीमात्र की मुक्ति होजाती है । जगन्नाथजी के दक्षिण ब्रह्मस्वरूप नरसिंह भगवान् विराजते हैं, जिन्हें दर्शन करने से मुक्ति मिलती है । समुद्र में स्नान करने और कल्पवृक्ष अर्थात् वट की छाया में जाने वाला मनुष्य किसी स्थान में मरे, उसकी मुक्ति होजाती है । गौरी की आठ मूर्तियां इस क्षेत्र की रखा करती हैं,—वट के मूल में मंगला, पश्चिम में विमला, शंख के पृष्ठभाग में सर्वमंगला, उत्तर दिशा में अर्द्धाशिनो और लम्बा, दक्षिण में कालरात्रि, पूर्व में मरीचिका और कालरात्रि के पीछे चण्डरूपा । शिवजी भी रुद्राणी के आठ रूप देखकर आठरूप धारण कर यहां स्थित हुए,—कपालमोचन, क्षेत्रपाल, यमेश्वर, मार्कण्डेयेश्वर, ईशान, विल्वेश, नीलकण्ठ, और वट के मूल में वटेश ।

(६ वां अध्याय)—दक्षिण के समुद्र के तीर पर ऋषिकुल्या से लेकर के दक्षिण के समुद्र में जान वाली स्वर्णरेखा अर्थात् सुवर्णरेखा नदी तक परम पवित्र उत्कल देश है, जिसमें बहुत से तीर्थ विद्यमान हैं ।

(७ वां अध्याय) सतयुग में ब्रह्मा के पांचवें पीढ़ी में इन्द्रधुम्न नामक

सूर्यवंशी राजा मालवदेश के अवनतीनगरी में निवास करता था । एक समय उसने अपनी सभा में लोगों से पूछा कि ऐसा कौन उत्तम क्षेत्र है, जिसमें हम साक्षात् भगवान् का दर्शन कर सकेंगे । एक ब्राह्मण, जिसने बहुतरे तीर्थों में भ्रमण किया था, राजा से बोला कि महाराज ! भारतवर्ष में विख्यात ओढ़ देश में दक्षिण समुद्र के निकट पुरुषोत्तम क्षेत्र है । वहां नीलगिरि पर्वत के ऊपर चारों ओर से १ कोस में विस्तृत कल्पवृक्ष है, जिसके पश्चिम दिशा में रोहिणीकुण्ड है । उसके पूर्व तट पर नीलेन्द्रमणि की वामुदेव की प्रतिमा है । जो मनुष्य उस कुण्ड में स्नान करके पुरुषोत्तम का दर्शन करता है उसको १००० अश्वमेध का फल मिलता है और मुक्ति मिलजाती है । तुम विष्णु के भक्त हो, इसलिए यह बात कहने को मैं तुम्हारे पास आया हूँ । ऐसा सुन राजा इन्द्रद्युम्न ने अपने पुरोहित को वहां भेजा । वह अपने भाई के साथ महानदी को पार करके एकामूर्क वन में पहुँचा और आगे जाकर नीलाचल पर चढ़कर भगवान् को ढूँढ़ने लगा । जब उसको मार्ग नहीं मिला, तब वह कुशों को बिछाकर वहाँही सो गया, किन्तु उसका छोटा भाई विद्यापति ऊपर चढ़कर एक स्थान में चुपचाप बैठ गया । उस समय विश्वावसु नामक एक शवर पुरुषोत्तम की पूजा करके उस स्थान पर आया । उसने ब्राह्मण से पूछा कि तुम कहां से आये हो । ब्राह्मण ने अपने आने का सब वृत्तान्त सुनाकर उससे कहा कि तुम मुझको भगवान् का दर्शन करावो ।

(८ वाँ अध्याय)—शवर ब्राह्मण का हाथ पकड़ कर विषम अन्धकार मार्ग से ऊपर जाकर रोहिणीकुण्ड और कल्पवृक्ष के बीच के कुञ्ज में पुरुषोत्तम भगवान् के पास पहुँचा और ब्राह्मण के साथ भगवान् का दर्शन करके सायंकाल अपने घर लौट आया । उसने अपने घर में ब्राह्मण को राजदुर्लभ भोग भोजन करवाया और ब्राह्मण के विस्मित होने पर उसने कहा कि इन्द्रादि देवता नित्यही दिव्य पदार्थ लाकर जगन्नाथजी को अर्पण करते हैं; इसी को हम छे आते हैं । विष्णु के निर्माल्य भोजन करने से हम लोगों की जरा और रोग नष्ट होगया है । हमने सुना है कि राजा इन्द्रद्युम्न यहाँ आवेगा, किन्तु उसको भगवान् का दर्शन नहीं होगा । भगवान् की पूर्ति सुवर्ण की चालुका में

दण्ड कर अन्तर्द्धान होजायगी । यह वृत्तान्त तुम राजा से मत कहना । भोर होने पर शवर और ब्राह्मण ने समुद्र में स्नान और भगवान् का दर्शन करके इन्द्रधुम्न के रहने का स्थान निर्णय किया । ब्राह्मण रथ पर चढ़ अवन्तिकापुरी में लौट आया ।

(९ वां अध्याय)—ब्राह्मण के चले जाने पर सायंकाल में, जिस समय देवता लोग पूजा करने आये थे, बड़ी आधी चली, जिसमें भगवान् की प्रति और रोहिणीकुण्ड बालू के राशि में ढप गया ।

विद्यापति ब्राह्मण ने अवन्तीपुरी में आकर राजा से वहाँ का सब वृत्तान्त कह सुनाया ।

(१० वां अध्याय) उसने कहा कि पुरुषोत्तमक्षेत्र का विस्तार ५ कोस का है । वहाँ १ कोस का लंबा चौड़ा एकटंठ वृक्ष सुशोभित है, जिसमें फल फूल-कुल नहीं लगता । पूर्व की वेदी के मध्य में वटवृक्ष के नीचे पीत वस्त्र पहने हुए बहुमूल्य भूषणों से भूषित ८१ अङ्गुल परिमित इन्द्रनील पत्थर की भगवान् की प्रतिमा है । उनके वाम पार्श्व में लक्ष्मीजी, पीछे छत्ताकार शैपजी और आगे सुदर्शन चक्र है और पीछे हाथ जोड़े हुए गरुड़ खड़े हैं । उसी समय महर्षि नारद राजा के पास आ गये ।

(११ वां अध्याय) राजा इन्द्रधुम्न ने नारद और सब पुरजनों तथा चतुरगिणी सेना के सहित ज्येष्ठ शुक्ल पंचमी बुधवार के पुष्प नक्षत्र में पुरुषोत्तम क्षेत्र को प्रस्थान किया । अवन्तिकापुरी जनों से शून्य हो गई । राजा ने उत्कल देश की सीमा पर चर्चिका देवी को देखकर रथ से उतर उसकी स्तुति की और वहाँ से चल चित्तोत्पला नदी के तीर पहुँच कर धानुकन्दर में अपनी सेना को विश्राम कराया । उत्कल देश का राजा, जिसको ओद्र देशपति भी कहते हैं, वहाँ आकर इन्द्रधुम्न से मिला । इन्द्रधुम्न ने ओद्रपति से क्षेत्र का वृत्तान्त पूछा । ओद्रपति ने कहा कि दक्षिण समुद्र के पास वा नीलाद्रि पर्यन्त और उस पर के देवता नहीं देख पड़ते हैं । मैंने सुना है कि पवन के चलने से वे बालू में ढप गये हैं । इसी कारण से हमारे राज्य में बुर्भिस पड़ गया है । यह वृत्तान्त सुनकर इन्द्रधुम्न बहुत दुःखी हुए । नारद ने कहा कि

हे राजन् ! भगवान् तुम्हारे लिये पृथ्वी में फिर अवतार लेंगे । ब्रह्माजी ने इसी काम के लिये मुझको तुम्हारे पास भेजा है ।

(१२ वां अध्याय) राजा इन्द्रधुम्न प्रातःकाल होने पर आगे चले । ओड्ड देश का राजा आंगेर मार्ग चलाने लगा । इन्द्रधुम्न ने वैगवती शीततोषा नदी के पार हो एकाम्रक क्षेत्र में पहुँच कर नारद से पूछा कि यह कौन सा क्षेत्र है । नारद ने कहा कि यहाँ से ३ योजन आगे नीलगिरी है । यह गौरी-पति का एकाम्रक नामक क्षेत्र है ।

राजा के पूछने पर मुनि कहने लगे कि पूर्व काल में महादेवजी गौरी से विवाह करके अपने श्वसुर हिमालय के गृह रहने लगे । एक समय गौरी की माता ने परिहास से उस से कहा कि हे पुत्रि ! तुमने महत् तपस्या करके ऐसा निष्कूल और निर्गुण वृद्ध धर को प्राप्त किया, तुमने कौनसा गुण अपने पति में देखा था; वह तो हमारे ही यहाँ रहते हैं । पार्वती ने शिव के पास जाकर उनसे कहा कि श्वसुर के घरमें रहना उचित नहीं है; तुम किसी दूसरे स्थान में चल कर निवास करो । ऐसा मुन महादेवजी पार्वती के साथ वैल पर सवार हो वहाँ से चल दिये और गंगा के उत्तर तट पर वाराणसीपुरी बसाकर उसमें रहने लगे । बहुत काल बीतने पर वह कैलास पर चले गये । द्वापर युग में काशी के राजा ने महादेव को प्रसन्न किया । शिवजी ने कहा कि समय आने पर मैं युद्ध में तुम्हारी सहायता करूँगा । विष्णु की आवा से सुदर्शनचक्र ने काशिराज का सिर काट डाला । महादेवजी ने अपने गणों सहित वहाँ आकर अपना पाशुपति अस्त्र चलाया । जब उनका अस्त्र विफल हो गया और काशी जलने लगी तब शिवजी विष्णु की स्तुति करने लगे । विष्णु भगवान् मकट हो कर बोले कि हे महादेव ! तुम काशी को बचाने चाहते हो तो दक्षिण समुद्र के पास नीलाचल से उत्तर एकाम्रक वन में जाकर कोटि लिंगों के राजा बनो; ब्रह्मा तुमको स्थापित करेंगे । ऐसा मुन पार्वती के साथ शिवजी वहाँ चले गये । राजा इन्द्रधुम्न ने एकाम्रक क्षेत्र के विन्दु तीर्थ में स्नान करके उसके तीर पर स्थित पुरुषोत्तम का पूजन किया और कोटिलिंगेश्वर के द्वार पर ब्राह्मणों को वहुतसा धन दिया ।

राजा इन्द्रधुम्न ने वहाँ से दूसरे दिन कपोतस्थली में आकर समुद्र की पूर्ण सीमा पर विल्वेश और कपोतेश का पूजन किया।

(१४ वां अध्याय) राजा इन्द्रधुम्न विद्यापति पुरोहित के साथ नीलकण्ठ क्षेत्र के समीप आये। (१५ वां अध्याय) उन्होंने वहाँ नीलकण्ठ और दुर्गा को पूजन किया और नीलपर्वत पर चढ़कर नीलचन्दन के वृक्ष के नीचे नृसिंहजी की दिव्य मूर्ति को देखा। उस समय राजाने भगवान् को दण्डवत करके बड़ी स्तुति की। तब आकाशवाणी हुई कि हे राजन् ! तुम चिन्ता मत करो, हम तुमको दर्शन देंगे, तुम नारद के उपदेश से चलो।

(१६ वां अध्याय) नारद की आज्ञा से विश्वकर्मा के पुत्र सुवदक ने चन्दन के वृक्ष के नीचे ४ दिनों में नृसिंहजी के लिये पत्थर का मन्दिर तैयार कर दिया। ज्येष्ठ शुक्ल द्वादशी को स्वाति नक्षत्र में पृथ्वी और लक्ष्मी की मूर्ति के साथ नृसिंह की दूसरी मूर्ति स्थापित की गई।

(१७ वां अध्याय) राजा ने यज्ञ कर्म के लिये अनेक देवता, ऋषि, ब्राह्मण, राजा और अन्य मनुष्यों को बुलाया। विश्वकर्मा ने यज्ञशाला बनाई। राजाने यज्ञ आरंभ करके अन्ध को छोड़ा। इन्द्रधुम्नपुर स्वर्ग से भी अधिक मनोहर हो गया। ९९९ यज्ञ समाप्त हो जाने पर सहस्रवें यज्ञ के समय राजा की दिव्य गति हो गई। उसने सात दिन के पीछे रात्रि के चतुर्थ महर के स्वप्न में स्फटिक का बना हुआ श्वेतद्वीप देखा, जिसको चारों ओर से सौर सागर घेरे हुए था। उसने वहाँ भगवान् को देखकर उनकी स्तुति की।

(१८ वां अध्याय) राजा के सेवकों ने आकर उनसे कहा कि मंजिष्ठ वर्ण का एक बड़ा वृक्ष समुद्र के तीर में पड़ा है। उसका मूल जल में तैरता है। नारद ने कहा कि हे राजन् ! तुमने श्वेतद्वीप में विष्णु की जिस मूर्ति को देखा था उसी के अङ्ग का गिरा हुआ १ रोम से यह वृक्ष हुआ है। तुम यज्ञान्त स्नान कर के बड़ी बेदी के ऊपर वृक्षरूपी यज्ञ भगवान् का स्थापन करो। राजा ने समुद्र के किनारे आकर ४ साखाओं से युक्त उस वृक्ष को देखा, तब ब्राह्मणों को बुला कर मंगल पूर्वक उसको बाहर निकलवाया और माला, गंध, तथा चन्दन से भूषित कर उसको महाबेदी पर रखवा। उस

समय आकाशवाणी हुई कि वेदी में भगवान् आप उतर आवेंगे, तुम पंद्रह दिनों तक वेदी को ढांक कर गुप्त रखो। इस वृद्ध बड़ई को भीतर रख कर द्वार बन्द कर दो। बाहर बाजा बजवाओ जिसमें कोई मूर्ति बनने का शब्द न सुने। कोई मनुष्य घेरे के भीतर न जावे। जब भगवान् बन जायेंगे तब अपने आप संपूर्ण काम की आज्ञा देंगे। उसी समय एक बड़ई ने आकर राजा से कहा कि तुमने जिनको स्वप्न में देखा था हम उन्हीं को दिव्य रूपी काष्ठ से बनावेंगे। ऐसा कह वह वेदी पर अन्तर्धान हो गया। (११ वां अध्याय) राजा आकाशवाणी के आज्ञानुसार सब कार्य करने लगा। दिन-दिन दिव्य गंध का अनुभव होने लगा। १५ दिन बीत जाने पर बलदेव, सुभद्रा और सुदर्शनचक्र के साथ दिव्य मिंहासन पर बैठी हुई भगवान् की मूर्ति प्रगट हुई। भगवान् के हाथ में शंख, चक्र, गदा और पद्म और बलभद्र के हाथ में गदा, भूसल, चक्र और कमल और ऊपर ७ फन फैलाये हुए सर्प का मुकुट था। सुभद्रा के हाथों में वर, अभय और कमल था। इनके पास सुदर्शनचक्र बना हुआ था। इस भांति वृद्ध बड़ई द्वारा चार मूर्तियां प्रकाशित हुईं। उस समय आकाशवाणी हुई कि हे राजन् ! नीलपर्वत पर कल्प वृक्ष के वायव्य दिशा में १०० हाथ आगे और नृसिंह जी से १००० हाथ उत्तर ऊंचे स्थान पर एक वृद्ध मन्दिर बनवाकर उस में इन मूर्तियों की प्रतिष्ठा करो। तुम्हारे पुरोहित और विश्वावसु श्वर की सन्तान सर्वदा इनके लेप संस्कार कर्म करेंगी।

(२० वां अध्याय) — राजा इन्द्रद्युम्न के दान देने के जल से जो स्थान भर गया वही इन्द्रद्युम्नसर के नाम से प्रसिद्ध हुआ। मनुष्य उसमें पितरों को पिण्डदान देते हैं। उसकी महिमा गंगा के समान है।

(२१ वां अध्याय) — इन्द्रद्युम्न ने असंख्य धन लगाकर अद्वितीय वृद्ध मन्दिर बनवाया और मन्दिर के काम पूर्ण होने के पहले ही नारद के साथ विमान पर चढ़कर वह ब्रह्मलोक में गये। (२३ वां अध्याय) राजा ने ब्रह्मा से कहा कि काष्ठ की वेद धारण कर भगवान् प्रकट हुए हैं; तुम ब्रह्म कर उनकी प्रतिष्ठा करो। ब्रह्मा ने कहा कि ७१ मन्वन्तर बीत गये, तुम्हारे कड़ोरों वंश

का नाश होगया; किन्तु तुम्हारा बनाया हुआ मन्दिर विद्यमान है, चलो मैं तुम्हारे पीछे आऊंगा । (२४ वां अध्याय) राजा ब्रह्मलोक से पुरुषोत्तम पुरी में आये । उनके पीछे देवता लोग भी आकर उपस्थित हुए । राजा ने मन्दिर का काम पूरा हुआ देख कर विचार किया कि मेरे स्वर्ग के जाने के समय मन्दिर आधा बना था, किन्तु भगवान् के प्रसाद से अब पूरा होगया है । (२५ वां अध्याय) विश्वकर्मा ने एकही दिन में ३ रथों को बनाया,—जिनमें से भगवान् का रथ १६ पहिये का; सुभद्रा का चारह पहिये का और बलमद्र का १४ पहिये का था । जिस रथ में जितने पहिये थे उसका विस्तार उतनेही हाथ का था । (२६ वां अध्याय) विश्वकर्मा ने राजा की आज्ञा से एक बड़ी सभा बनाई । प्रतिष्ठा की संपूर्ण सामग्री एकत्र की गई । ब्राह्मण लोग प्रतिष्ठा कार्य में नियुक्त हुए । राजा के ब्रह्मलोक में जाने पर गाल नामक एक राजा ने माधव की पाषाणमयी प्रतिमा को बना कर उसी वृद्ध मन्दिर में स्थापित कर दिया था । पीछे इन्द्रशुभ्र ने एक छोटा मन्दिर बनवा कर उस मूर्ति को मन्दिर से निकाल कर उसमें स्थापित कर दिया । (२७ वां अध्याय) ब्रह्माजी ब्रह्मलोक से आकर तीनों मूर्तियों और सुदर्शनचक्र को देखकर नीलाचल पर्वत पर मन्दिर और यज्ञशाला के पास चले गये । प्रतिष्ठा का काम प्रारंभ हुआ । वैसाख के शुक्ल पक्ष की अष्टमी को पुण्य नक्षत्र में ब्रह्मा ने मूर्तियों को मन्दिर में स्थापित किया । जो मनुष्य उस तिथि में जगन्नाथजी की पूजा करता है उसके कोटि जन्म का पाप छूट जाता है ।

(२९ वां अध्याय) भगवान् की काष्ठ प्रतिमा राजा ने बौली कि तुम्हारी भक्ति से मैं प्रसन्न हूँ । मन्दिर के मङ्गल होजाने पर भी मैं इस स्थान को नहीं त्याग करूँगा । कालान्तर में दूसरा मन्दिर बन जाने पर भी उसमें तुम्हारा ही नाम चटैगा । पट के उत्तर का कूप मट्टी से ढप गया है, उसको तुम प्रबट करो । जो मनुष्य ज्येष्ठ की पूर्णिमा को उस कूप के जल से हम लोगों को स्नान करावेगा, उसको हमारा लोक मिलैगा । ईशान दिशा में एक मण्डप बनाकर वहां हम लोगों को स्नान करा कर ले चलो । उसके बाद १५ दिनों तक भुक्तो कोई न केवै । गुह्य नामक महापाता को करो । पाप शुद्ध

पञ्चमी और चैत्र शुक्ल अष्टमी को गुड़िच यात्रा का उत्तम समय है; किन्तु पुष्य नक्षत्र से युक्त आपाद शुक्ल द्वितीया इस यात्रा का सर्व प्रधान दिन है। उस दिन हम लोगों को रथ में बैठ कर गुड़िच क्षेत्र में, जहाँ हम लोगों की उत्पत्ति हुई है, ले जाना चाहिये। वह स्थान मुझको अत्यन्त प्रिय है। उत्थान परिवर्तन, मार्ग प्रावरण, पुष्पाभिषेक, और फाल्गुन में दोळोत्सव का उत्सव करना उचित है। चैत्र शुक्ल १४ को दमनों से मेरी पूजा करनी चाहिये। वशाख की अक्षय ३ को जो मनुष्य गन्ध से मेरा लेपन करेगा उसको चारो वर्ग मिलेगा। ऐसा कह जगन्नाथजी मौन होगये। ब्रह्मादिक देवता अपने २ लोक को चले गये।

(३० वां अध्याय) मनुष्यों को उचित है कि ज्येष्ठ शुक्ल १० को पञ्चतीर्थों का विधान करें। मार्गण्डेय स्थान में, शिव की पूजा कर नारायण के पास जावें। उसमें दक्षिण के घट का दर्शन और प्रदक्षिणा करके भगवान् के आगे के गुरु को प्रणाम करें। उसके पश्चात् मन्दिर में जाकर भगवान् की तीन प्रदक्षिणा और पूजा करें। उसमें पीछे समुद्र में स्नान करके स्वर्ग द्वार पर जावे, जिस स्थान से देवता लोग भगवान् के दर्शन के लिये नित्य आते हैं। वहाँ समुद्र में पितरों को तिलोदक दें। (३१ वां अध्याय) उसके अनन्तर नृसिंह तीर्थ और इन्द्रधनु तीर्थ में क्रम से जाकर पितरों का तर्पण करें। (३२ वां अध्याय) एकादशी को कमल की माला और खीर के नैवेद्य से चतुर्भुज भगवान् का पूजन करें। १२ को यज्ञवाराह की, १३ को प्रद्युम्न की और १४ को नृसिंह भगवान् की पूजा करके पांच दिन का ज्येष्ठपंचकव्रत समाप्त करें।

(३७ वां अध्याय) भगवान् के नैवेद्य खाने से मद्य पानादिक महापातक जन्म हो जाते हैं। नैवेद्य से पितरों के कर्ष करने से पितर वृत्त होकर विष्णु लोक में चले जाते हैं। प्रसाद से बढ़ कर कोई वस्तु पवित्र नहीं है।

तैत्तिर्युग में श्वेत नामक राजा ने पुरुषोत्तमपुरी में १०० वर्ष पर्यन्त घोर तप किया। नृसिंह भगवान् ने प्रगट होकर राजा से कहा कि तुम वर मांगो। राजा बोले कि हे भगवन् ! मैं आप के सारूप्य को प्राप्त होऊँ और मेरे राज्य

में अर्काल पृथु न हो । भगवान् बोले कि तुम सहस्र वर्ष पर्यन्त राज्य करके दक्षिण भाग में मेरे रूप को प्राप्त होगे और वटवृक्ष और समुद्र के मध्य में मत्स्यावतार के संमुख तुम स्फटिक प्रतिमा रूप से श्वेतमाधव के नाम से विख्यात होगे । तुम्हारे उत्तर के तालाब में स्नान और तुम्हारा दर्शन करने से मनुष्यों की मुक्ति होगी

(३८ वां अध्याय) भगवान् का उच्छिष्ट संपूर्ण पापों का नाश करने वाला है । विष्णु के मन्दिर में भोग लगे हुए निर्माल्य को पतित लोग भी स्पर्श करें तो वह अशुद्ध नहीं होता । द्रती लोग भी प्रसाद को भोजन कर सकते हैं । किसी यात्री को विष्णु के निर्माल्य के खाने में अभिमान नहीं करना चाहिये । किसी प्रकार से निर्माल्य भोजन करने से पातक छूट जाते हैं । जो मनुष्य उसकी निन्दा करता है उसको भगवान् स्वयं दण्ड देते हैं । बहुत काल का मूखा हुआ, बहुत बुरा लगया हुआ, सब निर्माल्य उपकारी है । कुत्ते के मुख से गिरा हुआ भी प्रसाद को यदि ब्राह्मण भी भोजन करे तो दोष नहीं है ।

(४५ वां अध्याय) वारह यात्राओं में एक दमनभंजिका यात्रा है । मनुष्यों को उचित है कि चैत्र शुक्ल १३ को मूल सहित दमनक वृण को छाकर गण्डप में रख कर उसकी पूजा करें और अर्द्धरात्रि में लक्ष्मी और सत्य भामा को पूजें । पूर्वकाल में भगवान् ने इसी तिथि की अर्द्धरात्रि में दमनाम्बुर को मारा था और उसके अङ्ग से निकला हुआ दमनक वृण को खाकर वह प्रसन्न हुए थे । उस तिथि में उस वृण को वैश्य समझना चाहिये और उसके घघ करने के लिये भगवान् के हाथ में उसको देना चाहिये ।

(४८ वा अध्याय) राजा इन्द्रपुत्र नारद के साथ ब्रह्म लोक में चले गये ।

कूर्मपुराण—(उपरिभाग, ३४ वां अध्याय) पूर्वदिक्षा में, जहां महानदी और विरजा नदी हैं, पुरुषोत्तम तीर्थ में पुरुषोत्तम भगवान् निवास करते हैं । वहां तीर्थ में स्नान करके पुरुषोत्तमजी की पूजा करने से मनुष्य विष्णुलोक को प्राप्त करता है ।

भविष्यपुराण—(१२५ वा अध्याय) सप्त षेवताओं की प्रतिमा ७ प्रकार

की होती है;—सुवर्ण की, चांदी की, ताम्र की, पाषाण की, मृत्तिका की, काष्ठ की और चित्र में लिखी हुई।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्म खंड, ३७ वां अध्याय) विष्णु निवेदित समस्त वस्तु शुद्ध रहती हैं। पंडितगणों को उचित है कि विष्णुनिवेदित अन्न से समस्त देव और पितरों की पूजा तथा अतिथियों का सत्कार करें। (७५ वां अध्याय) जो पुरुष विष्णु का प्रसाद भोजन करता है उसके १०० पूर्व पुरुष पवित्र हो जाते हैं। जो मनुष्य रथ में स्थित जगन्नाथजी का दर्शन और पूजन करता है वह भवबंधन से विमुक्त हो जाता है।

नरसिंहपुराण—(१० वां अध्याय) मार्कंडेय मुनि ने पुरुषोत्तमपुरी में जाकर स्नान करने के उपरान्त गंध पुष्पादिकों से पुरुषोत्तमजी की पूजा करके उनकी घड़ी स्तुति की। विष्णु भगवान् प्रकट हो कर बोले कि हे मुनिश्वर ! तू मेरा चिरजीवी हो; यह तीर्थ आज से तुम्हारे ही नाम से (मार्कंडेयक्षेत्र) प्रसिद्ध होगा।

इतिहास—इतिहासों में लिखा है कि सन् ३१८ ई० में जगन्नाथजी की मूर्ति प्रगट हुई। उड़ीसे के राजा ययाति केसरी ने, जो सन् ४७४ में उड़ीसे का राजा बना, जगन्नाथजी की मूर्ति को जंगल से ढूँढ़ कर पुरी में स्थापित किया। धार्मिक हिंदूओं ने कई बार विधर्मियों से उस मूर्ति को बँचाया। उड़ीसे के गंगावंश के पाँचवें राजा अनंगभीमदेव ने, जिसका राज्य सन् ११७४ से १२०२ ई० तक था, जगन्नाथजी के वर्तमान मंदिर को बनवाया। मंदिर का काम सन् ११८४ से आरंभ हो कर सन् ११९८ ई० में समाप्त हुआ। उस राजा का राज्य उत्तर में हुगली नदी से दक्षिण में गोदावरी तक और पश्चिम में मध्य देश के सोनपुर के जंगल से पूर्व ओर बंगाळ की खाड़ी तक फैला हुआ था। राजा से मारबधवस एक ब्रह्महत्या हो गई; अर्थात् उसने एक ब्राह्मण को मार डाला। ऐसा प्रसिद्ध है कि उसने जगन्नाथजी के मन्दिर के अलावे बहुतेरे देवमंदिर, १० चौड़ी नदियों पर पुल और १५२ घाटों को बनवाया था। सन् १५३२ ई० में गंगावंश के राजा की मृत्यु हो जाने पर उसका दीवान गंगावंश के लोगों को मार कर उड़ीसे का राजा बन गया।

वाद उड़ीसा कई आदिमियों के आधीन हुआ । सन् १८०३ में पुरी जिले पर अंगरेजी अधिकार हुआ । सन् १८०४ ई० में जब खुरदा का स्वाधीन राजा भागी हुआ, तब अंगरेजी सरकार ने उसका राज्य छीन लिया; किन्तु मंदिर का प्रबन्ध अब तक खुरदा के राजा के, जिन का महल अब पुरी कसबे में है, आधीन है। वर्तमान राजा के पिता निर्दयता से खून करने के अपराध में डंडित होकर सन् १८७८ ई० में कालापानी भेजे गए । हिंदू लोग पुरी के राजाओं को मंदिर का प्रबंधकर्त्ता समझ कर उनका बड़ा मान करते हैं । बहुतेरे यात्री राजा का दर्शन करते हैं और उनके निकट भेंट रखते हैं ।

पुरी जिला—उसके उत्तर बांकी सरकारी मिलकियत और अठगढ़ का मालगुजार राज्य, पूर्व और पूर्वोत्तर कटक जिला; पूर्व-दक्षिण और दक्षिण बंगाल की खाड़ी और पश्चिम बंदरासहाते में गंजाम जिला और उड़ीसे के रानापुर का मालगुजार राज्य है । जिले का सदर-स्थान सन् १८२८ से पुरी कसबा है । पुरी जिले में भार्गवी, दया और नूर ये तीन नदियां प्रधान हैं, जो चिलका झील में मिल गई हैं । ये बरसात में भयंकर प्रवाह को धारणा करती हैं, किन्तु सूखी ऋतुओं में स्थान स्थान पर सूख कर पानी के कुण्ड बन जाती हैं । गवर्नमेंट ने बाढ़ से देश को बचाने के लिये बहुत रुपये खर्च करके अनेक बांध बनवाये हैं ।

पुरी, कसबे से पंद्रह बीस मील दक्षिण-पश्चिम मूने उड़ीसे के दक्षिण-पश्चिम के कोन में समुद्र के निकट प्रसिद्ध चिलका झील है, जो तंग ऊंची जमीन द्वारा समुद्र से अलग हुई है । झील के पश्चिम ऊंची पहाड़ियां हैं । झील की लंबाई ४४ मील और इसके उत्तरी भाग की औसत चौड़ाई २० मील और दक्षिणीय भाग की औसत चौड़ाई ५ मील है । इसका क्षेत्रफल मूखी ऋतुओं में ३४४ वर्गमील और वर्षा काल में लगभग ४५० वर्गमील रहता है । इसकी औसत गहराई ३ फीट से ५ फीट तक रहती है । प्रतिवर्ष झील में लगभग २००००० मन नमक बनता है ।

पुरी जिले में सरकार को मालगुजारी मिलने योग्य कोई जंगल नहीं है; किन्तु पधू. मोप, गून्दी नामक रंग, रेन्गम और अनेक भांति की दवा वृत्ती

बहुत होती हैं। पुरी और कटक कसबे के बीच में खंडगिरि और उदयगिरि पहाड़ी पर बहुत बौद्ध गुफाएँ और पुरी कसबे से पूर्वोत्तर और समुद्र के किनारे पर कोणार्क का पुराना मंदिर है। जिले के पश्चिमोत्तर भाग में भुवनेश्वर के मंदिरों के झूड़ और उससे सीधे दक्षिण जगन्नाथपुरी है। पुरी जिले के साधारण निवासी गरीब हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय पुरी जिले के २४७३ वर्गमील क्षेत्रफल में ८८८४८७ मनुष्य थे, अर्थात् ८७३६६४ हिंदू, १४००३ मुसलमान, ८१९ कृस्तान और १ सिक्ख। हिंदुओं में २१७४०६ चासा, ८८६९२ ब्राह्मण, ६९३०७ बाउरी, ६६६६२ ग्वाला, ३८९१६ तेली, २९३५७ शूद्र, २८७३८ कान, २८४७६ केंवट, २००९४ नापित, १८७४२ खंडाईत, १६७३९ खंडारा, १४०५४ बनिया, ३८९८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। पुरी जिले में पुरी कसबे को छोड़ करके किसी कसबे में ५००० से अधिक मनुष्य नहीं थे।

कोणार्क ।

पुरी कसबे से १८ मील पूर्वोत्तर पुरी जिले में समुद्र से २ मील दूर सूर्यनारायण का तीर्थ कोणार्क है, जिसको सर्वसाधारण लोग कनारक कहते हैं। कोणार्क का अर्थ (उड़ीमे के) कोनेका सूर्य है। यह १९ अंश, ५३ कला, २५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, ८ कला, १६ विकला पूर्व देशान्तर में स्थित है। बेलगाड़ी, पालकी और टट्टू वहाँ जा सकते हैं। रास्ता पहले दो मील उत्तर तब दहिने फिर कर घास के मैदान हो कर सीधा पूर्व जाता है। मार्ग में पुरी से १३ मील पर कुशभद्रा नामक छोटी नदी के पास केवल एक झोपड़ा मिलता है। खाने की सामग्री साथ ले जाना चाहिये। माघ शुक्ल-सप्तमी को कोणार्क का मेला होता है। वह सप्तमी रविवार को पड़े तब जातियों की अधिक भीड़ होती है। चंद्रभागा नदी, जिसको चनाय कहते हैं, काश्मीर और पंजाब में बहती है, किन्तु कोणार्क का एक खाल चंद्रभागा करके प्रसिद्ध है। यात्री लोग प्राची सरस्वती और खाल में स्नान करते हैं।

कोणार्क में सूर्य का विचित्र और भसिद्ध एक पुराना मंदिर है। उड़ीसे के लेख में जान पड़ता है कि राजा नरसिंहदेव लंगोरे ने उड़ीसे की १२ वर्ष की आमदनी खर्च करके सन् १२३७ और सन् १२८२ ई० के बीच में वर्तमान मन्दिर को बनवाया था। मन्दिर का शिखर गिरगया है। जो बाकी है वह बाहर से ९० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा तथा १२४ फीट ऊंचा है। याते उसकी खड़ी दीवार ६० फीट और उसका शिखर ६४ फीट है। उसली दीवारें सुन्दर छियों, हाथी, घोड़सवारों और दूसरी मूर्तियों से पूर्ण हैं और उसका शिखर भी हाथी, घोड़े, घोड़सवार, और पैदल सेना से छिपा हुआ है। यह मन्दिर भीतरी ४० फीट लंबा तथा चौड़ा है। मन्दिर का जगमोहन ६० फीट लंबा और इतनाही चौड़ा है। इस की दीवारे बीस बीस फीट तक मोटी हैं। मंदिर खाली पत्थर से बना है। पत्थर के टुकड़े छोटों से एक दूसरे में जड़ दिए गए हैं। यह इस समय अतिशय हीन दशा में पड़ा हुआ है। मन्दिर के उजाड़ स्थानों पर जंगल लग गया है। मन्दिर के पीछे ४५ फीट ऊंचा और करिव ७० फीट लम्बा मन्दिर के तवाहियों का ढेर है। मन्दिर के बाहर के हाते की दीवार अब नहीं है। उस के पत्थरों को महाराष्ट्रों के अफसर लोग पुरी में ले गए।

जगमोहन के दक्षिण एक बहुत बड़ा वृक्ष, जिसके पास बहुतेरे छोटे दरखत और खजूर का कुंज है और एक बाग में एक मठ और बिना मूर्ति का एक मन्दिर है।

कोणार्क के पास के समुद्र में पानी बहुत कम है। वहां बहुतेरे जहाज डूब गये हैं; परन्तु गैवई के लोग इसका कारण ऐसा कहते हैं कि मन्दिर के शिखर के ऊपर बड़े चूम्बक की एक तह थी, जो जहाजों को चालू पर खींच लेती थी। जब एक मुसलमान मल्लाह ने मन्दिर पर चढ़ कर चूम्बक को उतार दिया तब पुजारी लोग अपने देवता के संग पुरी में चले गये।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—आदिब्रह्मपुराण—(२७ वां अध्याय)
दक्षिण के समुद्र के समीप में ओद्र देश विख्यात है, जिसमें कोणादित्य नाम से विख्यात सूर्य निवास करते हैं। यह क्षेत्र समुद्र के तट पर ७ योजन

विस्तार में है। मनुष्यों को उचित है कि प्रति मास के शुक्लपक्ष की सप्तमी में वहां समुद्र में स्नान कर सूर्य का स्मरण और पितर आदि का तर्पण करें। ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य, शूद्र और स्त्रियां सबलोग सूर्य को अर्घ्य दे कर परम गति को प्राप्त होंगे। जब तक सूर्य को अर्घ्य निवेदन न करें तब तक विष्णु और महादेव का पूजन न करना चाहिये। सूर्यगंगा के जल में स्नान करने से मनुष्य को स्वर्ग मिलता है। परम भक्ति से कोणार्क की पूजा करनी चाहिये। चैत्र मास के शुक्लपक्ष में, सूर्य के शयन में, स्थापन में, संक्रांति में, अयन में, रविवार में और सप्तमी तिथि में सूर्य की यात्रा का विशेष दिन है। समुद्र के तीर पर वामदेव नाम से विख्यात महादेव स्थित हैं।

ब्रह्मवैवर्तपुराण—(कृष्णजन्म खंड, ७६ वां अध्याय) जो व्यक्ति उत्तरायण सूर्य के समय सूर्य का दर्शन और पूजन करेगा, उसका जन्म संसार में फिर नहीं होगा।

भविष्य पुराण—(पूर्वाह्न ६८ वां अध्याय) जम्बूद्वीप में सूर्यनारायण का स्थान मुख्य है;—इन्द्रवन, पुंडार और कालप्रिय। इस द्वीप में और भी एक स्थान चन्द्रभागा नदी के तट पर साम्बपुर है, जहां साम्बकी भक्ति से लोकानुग्रह के लिये सूर्यनारायण मितरूप से निवास करते हैं। जो भक्ति से उनका पूजन करता है, उसको वह ग्रहण करते हैं।

राजा शतानीक के प्रश्न करने पर मुमंतु मुनि कहने लगे कि श्रीकृष्ण की जाम्बवती नाम भार्या से साम्ब नामक पुत्र हुआ। वह पिता के शाप से जब बूढ़ी होगया तब सूर्यनारायण के आराधन करके रोग से मुक्त हुआ। उसीने अपने नाम से नगर बसाकर उसमें सूर्यनारायण को स्थापन किया है।

(१२१ वां अध्याय) साम्ब चन्द्रभागा नदी के तट पर मितवन नामक सूर्य के क्षेत्र में जाकर तप करने लगा। सूर्य ने प्रकट होकर साम्बका रोग दूर किया और चन्द्रभागा के तट पर अपनी प्रतिमा स्थापन करने के लिये उसको आज्ञा दी। (१२३ वां अध्याय) साम्बने नदी में बही जाती हुई सूर्य की प्रतिमा को पाया, जिसको विश्वकर्मा ने कल्पवृक्ष के काष्ठ से बनाकर नदी

में बहाया था साम्बने मितवन में मन्दिर बनाकर विधिपूर्वक प्रतिमा को स्थापन किया । (१३३वां अध्याय) उसने शाकद्वीप से मग ब्राह्मणों के कुमारों को लाकर सूर्य का पूजक (पुजारी) बना दिया ।

(६९) राजा के प्रश्न करने पर सुमंतु मुनि पूर्व का वृत्तांत कहने लगे कि एक समय नारदजी ने श्रीकृष्णचन्द्र के पास जाकर कहा कि आपका पुत्र साम्ब अति रूपवान है, इस लिये आपकी सोलहों हजार रानी इसपर मोहित हैं। कृष्णचन्द्र की स्त्रियों के समीप जब साम्ब बुलाया गया तब उसका रूप देख स्त्रियों का चित्त चलायमान होगया। उस समय श्रीकृष्णभगवान् ने स्त्रियों को शाप दिया कि तुमको पतिलोक और स्वर्गकी प्राप्ति न होगी और अन्त में तुम लोग चोरों के वश में पड़ोगी। इसी शाप से श्रीकृष्ण के वैकुण्ठ जाने के पीछे अर्जुन के देखते देखते सब स्त्रियों को चोर हर लेगये। इसके पीछे श्रीकृष्णचन्द्र ने साम्ब को भी शाप दिया कि तू कुप्टी होजा। (बाराहपुराण के १७१ वें अध्याय, पद्मपुराण, सृष्टि-खंड के २३ वें अध्याय और मत्स्यपुराण के ६९ वें अध्याय में भी शाप की कथा है)।

(७१ वां अध्याय) चन्द्रभागा नदी के तट पर सूर्यनारायण का सनातन स्थान है । साम्ब ने पीछे वहां सूर्य को स्थापित किया । उस स्थान में परब्रह्म स्वरूप जगत् के स्वामी सूर्यनारायण ने मित रूप से तप किया था। वह तप देवता तथा मनुष्यों की सृष्टि कर आप १२ रूप धर अदिती के गर्भ से उत्पन्न हुए, जिनमें से मित नामक बारहवें सूर्य की मूर्ति चन्द्रभागा नदी के तट पर विराजमान है। साम्बपुर और साम्बके शाप की कथा साम्बपुराण के तीसरे अध्याय में है)।

(११८ वां अध्याय) मलय के समय जब सब जीव नष्ट होगए और सर्वत अंधकार व्याप्त होरहा था उस समय पहिले बुद्धि उत्पन्न हुई, बुद्धि ने अहंकार, अहंकार से महाभूत और महाभूतों से अंड उत्पन्न हुआ, जिसमें सातों सधुओं सहित सात लोक स्थित हैं। उसी अण्ड में ब्रह्मा, विष्णु और शिव स्थित थे; परन्तु वे सब अन्धकार से व्याकुल होरहे थे। उस समय जब वे परमेश्वर का ध्यान करने लगे तब अन्धकार को हरने वाला एक तेज उत्पन्न हुआ, जिसको देख वे सब स्तुति करके कहने लगे कि आप के इस प्रचंडरूप

को कोई देख नहीं सकता, इस लिये आप सौम्यरूप धारण करें। ऐसा सुन सूर्यनारायण ने सब लोकों को सुख देने वाला उत्तम रूप धारण किया।

(बाराहपुराण (२६ वें अध्याय), मत्स्यपुराण (२ रे अध्याय) और मार्कण्डेय पुराण (१०२ रे अध्याय) में भी सृष्टि के आदि में सूर्य की उत्पत्ति की कथा है। भविष्यपुराण के ४२ वें अध्याय और बाराहपुराण में लिखा है कि सूर्यभगवान सप्तमी तिथि में प्रगट हुए, इस लिये जो पुरुष वा स्त्रियां सप्तमी व्रत करके सूर्य की पूजा करती हैं वे अन्त में सूर्य लोक को जाती हैं।)

भविष्यपुराण—(उत्तरार्द्ध, ४६ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी को अवच्छा सप्तमी का व्रत होता है।

पद्मपुराण—(स्वर्गखण्ड, ४५ वा अध्याय) ब्रह्मा की आज्ञा से सूर्य के कहने पर विश्वकर्मा ने सूर्य के किरणों का बहुतसा भाग काटहाळा (यह कथा भविष्यपुराण के ४२ वें अध्याय में भी है)।

आदिब्रह्मपुराण—(३१ वां अध्याय) अदिती ने दैत्यों से देवताओं का पराजय देख कर सूर्य भगवान् की स्तुति की, जिससे सूर्यनारायण अदिती को बरदान देने के उपरान्त उसके गर्भ में स्थित हुए। सूर्य के जन्म होने पर इन्द्र ने युद्ध के लिये दैत्य और दानवों को बुलाया। असुर और देवताओं का घोर युद्ध हुआ। उस समय सूर्य ने अपने तेज से दैत्यों को भस्म करदिया। सब देवता अपने अधिकार को प्राप्त हुए। मार्तण्ड ने भी अपने अधिकार को पाया (सूर्य के कश्यप मुनि से उत्पन्न होने की कथा मत्स्यपुराण के ६ वें अध्याय में, मार्कण्डेयपुराण के १०५ वें अध्याय में और पद्मपुराण—स्वर्ग खंड के ४५ वें अध्याय में भी लिखी हुई है)।

(पद्मपुराण में लिखा है कि सूर्य चारहों मासों में चारह राशियों पर जाते हैं, इसी से इनका द्वादशात्मा नाम है; क्योंकि चारहों पर चारह नाम से सूर्य रहते हैं)

मत्स्यपुराण—(१७ वां अध्याय) माघ शुक्ला सप्तमी मन्वन्तरादि तिथि है, उसमें सूर्य रथ में बैठते हैं, इसी से वह रथसप्तमी कहलाती है।

महाभारत—(वन पर्व, ३ रा अध्याय) युधिष्ठिर ने कहा कि हे सूर्य ! जो मनुष्य सप्तमी वा छठ को तुम्हारी पूजा करता है, उसकी सेवा लक्ष्मी करती है।

(शान्ति पर्व २०८ वां अध्याय) द्वादशादित्य कश्यप के पुत्र हैं; उनके नाम ये हैं;—भग, अंशु, अर्य्यमा, मित्त, वरुण, सविता, धाता, विवस्वान, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु । (अनुशासन पर्व, १५० वां अध्याय) द्वादशादित्य के नाम ये हैं;—अंशु, भग, मित्त, जलेश्वर, वरुण, धाता, अर्य्यमा, वैजयंत, भास्कर, त्वष्टा, पूषा, इन्द्र और विष्णु ।

सूतसंहिता—(पुरपोत्तम माहात्म्य, प्रथम अध्याय) जो मनुष्य कोणार्क तीर्थ में चंद्रभागा नदी के जल से स्नान करके सूर्य का दर्शन करता है उसका सम्पूर्ण पाप विनाश हो जाता है ।



सत्रहवां अध्याय ।

(सूवे उड़ीसे में) जाजपुर, वालेश्वर; और
(सूवे बंगाल में) मेदनीपुर ।

जाजपुर ।

एक सड़क कटक शहर से पूर्वोत्तर जाजपुर, भद्रक और वालेश्वर होकर मेदनीपुर को और मेदनीपुर से उत्तर बांकुड़ा कसबा होकर रानीगंज को और दक्षिण कलकत्ते को गई है । उस सड़क से जगन्नाथजी के बहुत से यात्री आते जाते हैं । स्थान स्थान पर सड़क के निकट यात्रियों के टिकने के लिये मोदियों की दुकानें बनी हुई हैं । सम्वत् १९२० में मेरे बड़े भाई धावू मेवालाजी उसी मार्ग से बांकुड़ा, मेदनीपुर, वालेश्वर, जाजपुर, और कटक होकर जगन्नाथपुरी में गए थे । मैं कटक से पूर्वोत्तर कलकत्ते की ओर चला ।

कटक शहर से ४४ मील पूर्वोत्तर (२० अंश, ५० कला, ४५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, २२ कला, ५६ विकला पूर्व देशांतर में) वैतरनी नदी के दहिने किनारे पर कटक जिले में एक तीर्थ स्थान और उस जिले के सपदिबीगन का सदर-स्थान जाजपुर एक छोटा कसबा है, जो एक समय

बड़ा प्रसिद्ध शहर था। कटक और जाजपुर के बीच में ब्राह्मणी नदी के पार उत्तरना होता है। जाजपुर से १२ कोस पूर्व चांदवाली है।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय जाजपुर में ११९९३ मनुष्य थे; अर्थात् ११३१२ हिन्दू, ६६९ मुसलमान, १ कृस्तान और १० अन्य।

जाजपुर में मामूली सरकारी इमारतें, एक खैराती अस्पताल, बहुतेरे शैवमंदिर, जिनमें अधिकांश हीन दशा में पड़े हैं, और बहुत से शैव ब्राह्मण हैं। जाजपुर पार्वतीजी का स्थान है। पुराणों में उस स्थान का नाम चिरज झेल लिखा है। उड़ीसे के ४ पवित्र स्थानों में से वह एक है, उसके अतिरिक्त उड़ीसे में पुरी, भुवनेश्वर और कोणार्क के ३ तीर्थ स्थान हैं।

जाजपुर के पास बैतरनी नदी के सुप्रसिद्ध घाट पर पादगया तीर्थ में यात्री लोग स्नान और पिंडदान करते हैं। वहां बहुत पड़े रहते हैं। घाट पर सोढ़ियां बनी हैं। विष्णुस्वामी और बाराहजी का मंदिर है। फाटकों पर सूर्य की प्रतिमा बनी हुई हैं। नदी के निकट एक दालान में ६ फीट ऊंची ७ पुरानी मूर्तियां हैं, जिनमें से एक नृसिंहजी और ६ चतुर्भुजी देवियों की मूर्तियां हैं। उसके पास एक मंदिर में गणपतिजी की बड़ी मूर्ति है। उसके सामने जंगल लगा हुआ नदी के टापू में बाराहजी का बड़ा मन्दिर और अन्य बहुतेरे छोटे मन्दिर हैं। मजिष्टर की कोठी के हाते में हाथी पर चढ़ी हुई चतुर्भुजी इन्द्रानी, बाराही और चामुंडा की नक्कासीदार सुन्दर ३ मूर्तियां हैं। घाट से ११ मील दक्षिण एकही पत्थर का ३२ फीट ऊंचा गरुडस्तंभ है। ब्रह्मकुण्ड तालाब के समीप विरजादेवी का शिखरदार मन्दिर बना है। उस तालाब का घाट पत्थर से बना हुआ है। जाजपुर में वर्ष में एक मेला होता है, उस समय बैतरनी में स्नान करने के लिये बहुत से यात्री वहां एकत्रित होते हैं।

इतिहास—राजा ययातिकेशरी ने, जिस ने सन् ४७४ से ५२६ ई० तक उड़ीसे में राज्य किया था, बिहार से आते समय जाजपुर को प्रसिद्ध स्थान पाया और कुछ समय के लिये उसको अपनी राजधानी बनाया। वह ११ वीं शदी तक केशरी वंश के राजाओं के आधीन उड़ीसे का प्रधान कसबा

या । १६ वीं शदी में हिंदू और मुसलमानों के परस्पर झगड़े के कारण जाजपुर की दशा हीन हो गई ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—महाभारत—(वनपर्व, ११४ वां अध्याय) युधिष्ठिर आदि पांडवगण महर्षि कौमश के सहित पर्यटन करते हुए गंगासमर में स्नान करके समुद्र के तीर तीर चले । उन्होंने कलिंग देश में वैतरणी नदी के पार उतर कर वहां पितरों का तर्पण किया ।

आदिब्रह्मपुराण—(४१ वां अध्याय) विरजक्षेत्र में ब्रह्मा की मतिष्ठा की हुई विरजा माता है, जिसके दर्शन करने से दर्शकजनों के ७ पुण्य पवित्र हो जाते हैं । एक बार उनके दर्शन, पूजन तथा प्रणाम करने से मनुष्य अपने कुल का उद्धार करके ब्रह्मलोक में निवास करता है । उस क्षेत्र में सब पापों के हरने वाली और वर को देने वाली अन्य भी अनेक देवी स्थित हैं और संपूर्ण पापों को विनाश करने वाली वैतरणी नदी बहती है । वहां क्रोडरूपी हरि हैं, जिनके दर्शन और प्रणाम करने से विष्णुपद प्राप्त होता है । कपिक, गोगृह, सोम, क्रोड, वालुक और सिद्धेश्वर इन तीर्थों में जितेंद्रिय होकर स्नान करके वहां के देवताओं को नमस्कार करने से मनुष्य सब पापों से विमुक्त होकर ब्रह्मलोक में जाता है । विरजक्षेत्र में पिंडदान करने से पितरों की उत्तम वृत्ति होती है । ब्रह्मा के विरजक्षेत्र में शरीर त्याग करने से मोक्ष मिलती है । समुद्र में स्नान करके कपिल हरि भगवान और वाराही देवी के दर्शन करने से देवलोक में निवास होता है । वह गुह्य क्षेत्र समुद्र के उत्तर भाग में १० योजन विस्तार का है, जिसमें जाने से पापों का नाश होजाता है और मुक्ति मिलती है । उस पवित्र उत्कल देश में पुरुषोत्तम भगवान निवास करते हैं और अन्य भी अनेक तीर्थ हैं । उत्कल देश में निवास करने वाले मनुष्य धन्य हैं ।

वालेश्वर ।

जाजपुर से ५६ मील (कटक शहर से १०० मील) पूर्वोत्तर (२१ अंगु, ३० कला, ६ विकला उत्तर अर्धराशि और ८६ अंगु, ५८ कला, ११ विकला

पूर्व देशांतर में) घुड़ीवलंग नदी के दहिने किनारे पर समुद्र से सीधा ७ मील और नदी के मार्ग से लगभग १६ मील पश्चिम सूबे उड़ीसे में जिले का सदर-स्थान और प्रधान बंदरगाह वालेश्वर कसबा है, जिसको वालासोर भी कहते हैं। जाजपुर से लगभग २० मील पूर्वोत्तर भद्रक नामक बड़ी बस्ती मिलती है।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय वालेश्वर कसबे में २०७७६ मनुष्य थे, अर्थात् १६९१२ हिंदू, ३३६२ मुसलमान और ५०१ कृस्तान।

वालेश्वर में मामूली सरकारी इमारतें हैं। जेवर और पीतल आदि-धातु के बर्तन अच्छे बनते हैं। तंबाकू, तेल, चीनी, गल्ले इत्यादि चीजें दूसरे स्थानों से वालेश्वर में आते हैं और चावल इत्यादि रकम वालेश्वर से दूसरे स्थानों में भेजे जाते हैं। बंदरगाह की आमदनी, रफतनी बढ़ती जाती है। वालेश्वर में प्रतिवर्ष चड़क पूजा होती है।

वालेश्वर जिला—इसके उत्तर में मेदनीपुर जिला और मोरभंज का देशी राज्य; पूर्व बंगाल की खाड़ी; दक्षिण बैतरनी नदी, बाद कटक जिला और पश्चिम क्योँशोर, नीलगिरि और मोरभंज का राज्य। जिले का सदर स्थान वालेश्वर कसबा है। समुद्र के किनारे की नमकदार भूमि पर बहुत नमक तैयार किया जाता है। सुवर्णरेखा, पंचपाड़ा, घुड़ावलंग, कांसबांस और बैतरनी जिले की प्रधान नदियाँ हैं और वालेश्वर, चुरामन, ठमरा इत्यादि उस जिले में ७ प्रधान बंदरगाह हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वालेश्वर जिले का क्षेत्रफल २०६६ वर्ग मील था, जिसमें ९४५२८० मनुष्य थे, अर्थात् ९१५७९२ हिंदू, २३८०४ मुसलमान, ८१५ कृस्तान, ४७ सिक्ख, ४ बौद्ध, १ यहूदी और ४८१७ अन्य। जातियों के खाने में १८२९४८ खंडाइट, ११९३७३ ब्राह्मण, ४८१९२ पान, २४४५५ कंडारा, ८४४४ चमार, ६२९० गोंड, २७६७ भूमिज और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

इतिहास—वालेश्वर एक समय प्रसिद्ध तिजारती स्थान था। सन् १६४२ ई० में वहाँ अरेजी कोठी नियत हुई। डचकी कोठी भी वहाँ थी। फ्रांसीसी लोग अब तक वालेश्वर के पास १०० एकड़ भूमि अपने कब्जे में रखाते हुए हैं।

सन् १८०३ में उड़ीस के दूसरे जिलों के साथ अंगरेजों ने बालेश्वर को अपने अधिकार में किया । सन् १८०५ से १८२१ तक कटक से बालेश्वर का संबंध होता था । सन् १८२७ में यह स्वाधीन कलक्टर के आधीन हुआ ।

मेदनीपुर ।

बालेश्वर से लगभग ८० मील (कटक से १८० मील) पूर्वोत्तर (२२ अंश, २४ कला, ४८ विकला उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, २१ कला १२ विकला पूर्व देशांतर में) कसाई नदी के बाएँ अर्थात् उत्तर किनार पर सूरे बगाल के वर्धमान विभाग में जिले का सदर स्थान और जिल में प्रधान कसबा मेदनीपुर है । बालेश्वर और मेदनीपुर के मार्ग में सुवर्णरेखा नदी को लाघना पड़ता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मेदनीपुर कसबे में ३२२६४ मनुष्य थे, अर्थात् १६२५३ पुरुष और १६०११ स्त्रियाँ । इनमें २४७१५ हिंदू, ६७६५ मुसलमान, ३९३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जंगली लोग, ३६९ कृस्चान और २२ बौद्ध थे ।

मेदनीपुर कसबे में सरकारी कचहरिया और यूरोपियन लोगो के रहने के लिये सुन्दर मकान बने हुए हैं । एक सरकारी और दूसरा एडेड स्कूल, सन् १८५१ का बना हुआ एक गिरजा; सन् १८३५ का बना एक अस्पताल, बड़ा बाजार और यात्रियों के टिकने के लिये मकान हैं । वहाँ पीतल तथा लोहे के वर्तन इत्यादि चीजें तैयार होती हैं ।

मेदनीपुर सड़को का केंद्र है । वहाँ से दक्षिण पश्चिम बालेश्वर और जाजपुर होकर कटक को; पश्चिम कुछ दक्षिण बर्योशोर, मभलपुर रायपुर, राजनदगांव, और भंडारा को और भंडारा के आगे से पूर्वोत्तर जयलपुर, कटनी, री धा और मिर्जापुर तक और दक्षिण पश्चिम पैठन, अहमदनगर और घग्गई तक, मेदनीपुर से पूर्व ६८ मील का मार्ग चलनडिया होकर कलकत्ते को; और उत्तर अमसिद्ध सड़क बांरुड़ा होकर रानीगंज को गई है । आगोट मेदनीपुर से चलनडिया तक नहर में और चलनडिया से १५ मील कलकत्ते के आरमैनियन घाट तक भागीरथी गंगा में नित्य आते जाते हैं । रेलवे का

काम आरंभ होगया है; मेदनीपुर से रेलवे की कई लाइन कई तरफ निकलेंगी;—एक लाइन पूर्व ओर उलरइया होकर हवड़े को; दूसरी दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर, भद्रक, कटक, भुवनेश्वर इत्यादि होकर पुरी को और तीसरी लाइन पश्चिम ओर आसनसोल और नागपुर की लैन के सीनी स्टेशन को जायगी ।

मेदनीपुर जिला—यह वर्धवान विभाग के दक्षिण का जिला है । इसके उत्तर बांकुड़ा और वर्धवान जिला; पूर्व हुगली और हवड़ा जिला और भागीरथी नदी; दक्षिण बंगाल की खाड़ी; दक्षिण-पश्चिम बालेश्वर जिला; पश्चिम मोरभंज का राज्य और सिंहभूमि जिला और पश्चिमोत्तर मानभूमि जिला है । जिले की प्रधान नदी भागीरथी है, जिसकी सहायक रूपनारायण, रसूलपुर और हलदी नदी है ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय मेदनीपुर जिले के ५०८२ वर्गमील क्षेत्रफल में २५१७८०२ मनुष्य थे, अर्थात् २२३५५३५ हिंदू, १६४००३ मुसलमान, ११७४३६ पहाड़ी और जंगली, जिनमें ११२०६२ संथाल थे, ७४० कुस्तान, ४४ सिक्ख, ३६ बौद्ध, ६ ब्राह्मों और २ पारसी । हिंदुओं में ७५३४३५ बैरत, ११७४१४ ब्राह्मण, १२७२६० सदगोप, ९२१७८ कायस्थ ७४४९७ बागडी, ६८२३९ तेली, ५७५६२ तांती, ५३९९४ ग्वाला, ४६०७२ नापित, ४५२९० कुमी, ४१६०७ घोवी, २३५०७ वनिर्या, १९५७३ राजपूत, १२७४६ बाउरी, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय मेदनीपुर जिले के कसबे मेदनीपुर में ३२२६४, घटाल में १३९४२, चद्रकोना में ११३०९ और खरवार में १००८३ मनुष्य और सन् १८८१ में रामजीवनपुर में १०९०९ और तमलूक में ६०४४ मनुष्य थे ।



अठारहवां अध्याय ।

(सूवे बंगाल में) श्रीरामपुर, तारकेश्वर, चंदरनगर,
हुगली, वर्दवान, खानाजंकशन, सिउड़ी, रानोगंज;
(सूवे छोटानागपुर में) पुरुलिया; (सूवे बंगाल में)
बांकुड़ा; (छोटानागपुर में) रांची, हजारीबाग,
पारसनाथ और (सूवे बिहार में) वैद्यनाथ ।

श्रीरामपुर ।

मैं नहर और भागीरथी के मार्ग से आगवोट द्वारा मेदनीपुर से लगभग ७० मील पूर्व कलकत्ते में आया और हवड़े में इण्डियन रेलवे की गाड़ी में सवार हो आगे चला । कलकत्ते के पास के हवड़े से १२ मील उत्तर श्रीरामपुर का रेलवे स्टेशन है । सूवे बंगाल के हुगली जिले में हुगली नदी के पश्चिम किनारे पर पारकपुर के सामने (२२ अंश, ४५ कला, २६ विकला उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २३ कला, १० विकला पूर्व देशान्तर में) सय-दिवी-जन का सदर-स्थान श्रीरामपुर बसता है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय श्रीरामपुर की म्युनिसिपल्टी में ३५९५२ मनुष्य थे; अर्थात् २०२०० पुरुष और १५७५२ स्त्रियाँ । इनमें ३०१८१ हिंदू, ५४५५ मुसलमान, ३०४ कृत्तान, ११ एनिमिष्टिक और १ बौद्ध थे ।

श्रीरामपुर में डेनमार्कवालों का एक चर्च है, जो सन् १८०५ ई० में १८ हजार रुपये के खर्च से तैयार हुआ था । हुगली अर्थात् भागीरथी के किनारे पर सुंदर कालिज बना हुआ है; उसकी डेवदी में ६० फीट ऊँचे ६ स्तंभ लगे हैं और उसके ऊपर का म्यान कमरा १०३ फीट लंबा और ६६ फीट चौड़ा है । इनके अतिरिक्त श्रीरामपुर में स्मूथ, अस्पताल, बाग, पक्का बूट का

पेच और उसके पास जूट आदि के कई कल कारखाने हैं और कागज बहुत तैयार होता है। कसवे होकर बहुतेरी सड़कें गई हैं।

इतिहास—श्रीरामपुर सन् १७५५ ई० में डेनमार्कवालों के अधिकार में था। सन् १७९९ ई० में श्रीरामपुर के पादरियों ने पहले पहल महाभारत और रामायण छपवा कर एक बंगला अखबार भी निकला, पछि बंगला पुस्तकें भी छपने लगीं। सन् १८४५ ई० में इष्ट इंडियन कंपनी और डेनमार्क के बादशाह की एक संधि हुई। उसके अनुसार डेनमार्क के बादशाह ने हिंदुस्तान के अपने आधीन की संपूर्ण भूमि अर्थात् दांकूवार, फूडरिक्स नगर और बालासोर के पास के छोटे टुकड़े के साथ श्रीरामपुर को १२५००० पाउंड लें कर इष्ट इंडियन कंपनी के हाथ बेंच दिया।

तारकेश्वर ।

श्रीरामपुर से २ मील (हवडे से १४ मील) उत्तर मेवडाफूली का रेलवे स्टेशन है। वहां से २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर एक रेलवे शाखा तारकेश्वर को गई है।

तारकेश्वर हुगली जिले में टट्टी और फूस के मकानों की बस्ती है, किंतु तारकेश्वर-शिव के मन्दिर के अधिकारी महन्त माधवचन्द्र गिरि का मकान दो मंजिला पक्का बना हुआ है। यात्री लोग पंहे या मोदियों के मकानों में टिकते हैं। बहुतेरे मोदी रेलवे स्टेशन से यात्रियों को ले जाते हैं; पूजा की सामग्री भी वही लोग देते हैं। पूजा के समय ब्राह्मण जाकर यात्रियों को पूजा करवाते हैं। सब लोग पोखरे का जल पीते हैं। तारकेश्वर में कई एक कच्चे पोखरे हैं, जिनमें से तारकेश्वर के मन्दिर के निकट का दूधगंगा नामक पोखरा प्रधान है। मन्दिर से दक्षिण पश्चिम छोटा बाजार, दूधगंगा से दक्षिण और पश्चिम बाग और दक्षिण-पश्चिम के कोने के समीप महन्त का मकान है।

दूधगंगा के पूर्ण किनारे पर घेरे के भीतर तारकेश्वर शिव का शिखरदार मंदिर दक्षिण मुख से स्थित है। मन्दिर के जगमोहन से दक्षिण एक सुंदर मण्डप बना है, जिसके दो ओर पांच पांच ओर दो ओर तीन तीन मेहरावियां बनी हुई हैं।

मंडप में 'संगमर्रर' का फर्श लगा है और दक्षिण भाग में नंदीश्वर की सुंदर मूर्ति है । मंदिर और मंडप से पूर्व महंतों के आठ दस समाधि मंदिर, पूर्वोत्तर-कालीजी का मन्दिर और पश्चिमोत्तर पाकशाळा है, जिसमें तारकेश्वरजी के भोग की सामग्री तैयार होती है । बहुतेरे रोगग्रस्त लोग, जिनमें 'मुसलमान' भी होते हैं, अपना दुःख छूटने के लिये तारकेश्वर के मन्दिर के आस पास घरना बैठते हैं ।

मंदिर का प्रबंध तारकेश्वर के महन्त के आधीन है । जमीन्दारी की आमदनी से मंदिर का खर्च चलता है और यात्री लोग भी बहुत पूजा चढ़ाते हैं । वहां साल में दो बड़ा मेला होता है । फाल्गुन की शिवरात्री के मेले का जमाव तीन दिनों तक रहता है उस समय लगभग बीस पचीस हजार आदमी वहां आते हैं और मेघ की संक्रांति का मेला, जो चड़क पूजा का मेला कहलाता है, छः सात दिनों तक रहता है, उस मेले में लगभग १५ हजार मनुष्य आते हैं ।

चंदरनगर ।

सेवड़ाफुली जंक्शन से ७ मील (हवड़ा से २१ मील) उत्तर चंदरनगर का रेलवे स्टेशन है । फ्रांसीसियों के राज्य में (२२ अंश ५१ कला, ४० विकला, उत्तर अक्षांश और ८८ अंश, २४ कला, ५० विकला, पूर्व देशांतर में) हुगलीनदी के दहिने किनारे पर चंदरनगर एक सुन्दर छोटा शहर है । वहां फ्रांसीसी गवर्नर की उत्तम कोठी बनी है । गंगा के किनारे पर सन् १७२६ ई० का बना हुआ इटली के मिशनरी का चर्च अर्थात् गिरजा है । फ्रांसीसी राज्य की सीमा के पासही बाहर हुगली जिले में रेलवे स्टेशन बना है ।

फ्रांसीसियों का गवर्नर जनरल मदरास हाते के पांडीचरी में रहता है । उसी के आधीन चंदरनगर का स्वगवर्नर है (फ्रांसीसियों के हिन्दुस्तान के राज्य का नियंत्रण भारत-भ्रमण-के चौथे खंड में पांडीचरी के वर्तान में देखो) । अगरेजी गवर्नमेंट इस शर्त पर चंदरनगर के गवर्नर की प्रतिनर्प ३०० सन्द्क अफियून देती है कि फ्रांसीसियों की प्रजा पोस्ते का काम न करें ।

इतिहास—फ्रांसीसी लोग सन् १६७३ ई० में चंद्रनगर आए और सन् १६८८ में उन्होंने इसको पाया । फ्रांसीसियों के गवर्नर दुर्गु क समय (१७३१—१७४१) चंद्रनगर में २००० से अधिक ईंटों के मकान बनाए गए । उस समय वहां भारी सौदागरी होती थी । सन् १७४० में चंद्रनगर उस समय के कलकत्ते से अधिक मालदार और खनकदार था । सन् १७५७ में अङ्गरेजों ने चंद्रनगर को जीत कर किले बंदी को तोड़ दिया; किंतु सन् १७६३ की सन्धि के अनुसार वह फिर फ्रांसीसियों को मिला । सन् १७९४ में फिर इष्ट ईंडियन कंपनी ने चंद्रनगर को फ्रांसीसियों से छीन लिया; परंतु संधि होजाने पर सन् १८१६ में यह फिर फ्रांसीसियों को मिल गया; तब से अब तक वह उनके अधिकार में है ।

हुगली ।

चंद्रनगर के रेलवे स्टेशन से ३ मील (हवडे से २४ मील) उत्तर हुगली का रेलवे जंक्शन है । सूबे बंगाल के बर्धमान विभाग में रेलवे स्टेशन से २ मील दूर हुगलीनदी के दहिने अर्थात् पश्चिम किनारे पर जिले का सदर स्थान हुगली एक कसबा है । उसके दक्षिण चिमुरा बस्ती है । दोनों मिल कर एक म्युनिसिपल्टी बनती है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय हुगली और चिमुरा में ३३०६० मनुष्य थे, अर्थात् १७०१८ पुरुष और १६०४२ स्त्रियां । इन में २६९३६ हिन्दू, ५९०३ मुसलमान, १९८ कृस्तान, १८ एनिमिष्टिक, ३ जैन और २ बौद्ध थे ।

हुगली कस्बे में देखने की प्रधान वस्तु इमामबाड़ा है, जिसको करामत अलीने महम्मद मुशिन के धन से, जो सन् १८१४ ई० में मरा ३ लाख रुपये खर्च करके बनवाया था । इमामबाड़े का अगवास्त २७७ फीट लंबा और ३६ फीट चौड़ा है । बीच में फाटक लगा है । ऊपर ११४ फीट उंचे दो मीनार खड़े हैं । इमामबाड़े का आंगन १५० फीट लंबा और ८० फीट चौड़ा है; फर्श मार्बल का लगा है, प्रधान कमरा बहुत सुन्दर है और चारों ओर कोठरिया बनी हुई हैं । इमामबाड़े के पास सबक के दूसरे बगल पर सन् १७७६—१७७७ ई० का बना हुआ एक पुराना इमामबाड़ा है ।

विंसुरा में इंद्रे का एक पुराना गिर्जा है, जिसको सन् १७६८ ई० में डच के गवर्नर ने बनवाया था । गिर्जा से दक्षिण सन् १८३६ ई० का बना हुआ हुगली कालिज है, जिसके बनाने में ८ लाख रुपये से अधिक खर्च पड़े थे । यह हिंदुस्तान के अधिक प्रसिद्ध कालिजों में से एक है, इसमें लगभग ६०० विचारार्थी पढ़ते हैं ।

हुगली का पुल—५ मील की रेलवे शाखा हुगली नदी के पुल को लांघ कर हुगली से नइहाटी में जा कर “ ईष्टर्न बंगाल स्टेट रेलवे ” से मिली है, जहाँ से दक्षिण २४ मील कलकत्ता का सियालदह स्टेशन और उत्तर ओर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिंग है । हुगली गंगा, जिसको भागीरथी भी कहते हैं, गंगाजी की पश्चिमी शाखा है । हुगली कसबे और नइहाटी के बीच में हुगली नदी पर १२१३ फीट लंबा और (पायाओं के नीचे के छोरों से) ९८१ फीट ऊँचा जुबली पुल है । उसपर २ लाइन बनी हैं । पुल के दूसरे भाग की लंबाई ३२७८ फीट है । इस पुल को सन् १८८७ ई० में जुबली के समय भारतवर्ष के गवर्नर जनरल लार्ड-डर्रिन ने खोला, इसके बनाने में ५२ लाख रुपये खर्च पड़े थे ।

हुगली जिला—इसके उत्तर बर्दवान जिला; पूर्व हुगली नदी, जो नदियाँ और चौबीस परगना जिले से इसको अलग करती है, दक्षिण हवड़ा जिला और पश्चिम बर्दवान जिला है । जिले का सदर-स्थान हुगली कसबा है । इस जिले में हुगली, दामोदर, इत्यादि नदियाँ और राजापुर टाकनी, सामची इत्यादि झीलें हैं । इनमें से सामची झील का क्षेत्रफल ३० वर्गमील में है । इस जिले से होकर उलरदिया और मेदनीपुर नहर गई है और जिले में दूसरी कई एक छोटी नहर हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय हुगली जिले का क्षेत्रफल १२०३ वर्गमील था, जिसमें १०१२७६८ मनुष्य बसते थे, अर्थात् ८२२९७२ हिंदू, १८८७९८ मुसलमान, ६५५ कृस्तान, २९० बौद्ध, १६ ब्राह्म और ३७ दूसरे । जातियों के खाने में १४२५२६ कंररत, १३४१३५ बागड़ी, ७६२७१ ब्राह्मण, ६१०२१ सदगोप, ४६१३४ ग्वाला, ३८७१७ तेली, २५४८४ कायस्थ, १७३१२ घनियाँ, ५५३० राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के कसबे श्रीरामपुर में ३५९५२, हुगली और चिंसुरा में ३३०६०, और वैद्यवटी में १८३८० मनुष्य थे। इन के अलावे हुगली जिले में कई छोटे कसबे हैं। इसी जिले के भीतर फ्रांसीसियों के चंदरनगर का राज्य है।

हुगली कसबे से १ मील उत्तर बंदेल गांव में पोर्चुगीजों की १ पुराना मठ, सन् १५९९ का बना हुआ, एक गिरजा और हिंदूओं का पवित्र स्थान त्रिवेणी है।

हुगली कसबे से ३ मील उत्तर बांसबड़िया बस्ती में एक जमींदार की स्त्री रानी शंकरीदासी का बनवाया हुआ देवी हंमेश्वरी का एक प्रसिद्ध मंदिर है, जिसमें १३ कलश और १३ शिव स्थापित हैं। मंदिर की रक्षा के लिये एक किला और खाई बनी थी; जिसमें वहां के लोगों ने महाराष्ट्रों की चढ़ाई के समय शरण लिया था।

इतिहास—पोर्चुगीजों ने सन् १५३७ ई० में हुगली कसबे को बसाया और पीछे हुगली के वर्तमान जेलखाने के निकट एक किला बनवाया, जिसके चिन्ह अब तक विद्यमान हैं। सन् १६३२ ई० में दिल्ली के बादशाह शाहजहाँ ने पोर्चुगीजों की शिकायत सुन कर हुगली में एक बड़ी सेना भेजी। किला तोपों से उड़ा दिया गया, १००० से अधिक पोर्चुगीज मारे गए और लगभग ४०००, पुरुष, स्त्री और लड़के पकड़ कर आगरा भेजे गए, जो घरजोरी से वहां मुसलमान बनाए गए। “सातगांव” से, जो हुगली से ६ मील दूर है, आफिस और दफ्तर हुगली में लाए गए। हुगली बंगाल के शाही बंदरगाह हुई।

सन् १६४० ई० में इस्टइंडियन कंपनी ने शाहजहाँ के पुत्र मुलतान शुजा से, जो बंगाल का गवर्नर था, फरमान हासिल करके हुगली में एक कोठी कायम की। सन् १६६९ में कंपनी को हुगली में जहाज घोड़ने की आज्ञा मिली। सन् १६८५ में बंगाल के नवाब साइस्तावा और कंपनी के कर्मचारियों में झगड़ा खड़ा हुआ। उस समय अङ्गरेजों ने इंग्लैंड और मदरास से हुगली में अपनी फौज भेजी; किन्तु मोगलों के पलके सामने उनमें क्या हो सकती था; सन् १६८६ में अंगरेजों को हुगली छोड़ कर वहां से २६ मील दूर सतानती को,

जो नीची जगह में एक गांव था, चला जाना पड़ा । वह जगह अब कलकत्ते के उत्तरीय विभाग में शामिल है । सन् १७४२ में महाराष्ट्रों ने हुगली कस्बे को लूटा ।

लगभग सन् १६४६ ई० में चिन्मुरा डच के आधीन हुआ । सन् १८२६ ई० में अंगरेजी सरकार ने चिन्मुरा को उदले में उसको जावा का टापू ठेकर उसमें चिन्मुरा को ठेलिया ।

वर्धवान ।

हुगली कस्बे से ४३ मील (कलकत्ते से ६७ मील) पश्चिमोत्तर और खाना जक्शन से ८ मील दक्षिण वर्धवान का रेलवे स्टेशन है । सूरे घंगाल में दामोदर नदी से २ मील उत्तर वांका नदी के निकट किस्मत और जिले का सदर-स्थान वर्धवान एक सुंदर कस्बा है, जिसका शुद्ध नाम वर्द्धमान है ।

सन् १८९१ की जन-संख्या के समय वर्धवान कस्बे में ३४४७७ मनुष्य थे, अर्थात् १८५२७ पुरुष और १५९५० स्त्रियां । इनमें २४१७९ हिंदू, १००८१ मुसलमान, २०७ कृस्तान, ६ बौद्ध और ४ जैन थे ।

वर्धवान में महाराज का महल, गुजराती, अष्टोत्तर शत शिवालय और पौर बहराम का दरगाह इत्यादि उल्लेखनीय वस्तु हैं । महाराज के महल के दक्षिण वाले फाटक से पश्चिम नवतूनगंज नामक सुंदर चौक बना हुआ है । उसके चारो बगलों पर पक्की कोठरियां, जिनके आगे ओसारे हैं, बनी हैं और मध्य भाग में ४ कोठरी और टीन से छाई हुई ८ चांदनी और चारो बगलों पर ४ फाटक हैं । महाराज की कचहरी से पूरवड़ा याजार है, जिसमें कपड़े और चादी, सोने आदि की बड़ी बड़ी दुकानें रहती हैं । वर्धवान में कई सड़कें लगे हैं और जल कल बनी हुई है । कस्बे से २ मील दक्षिण पश्चिम कंचननगर से कल का पानी आता है । कस्बे के निकट मृण्मसागर नामक तालाब और एक शिव मंदिर और जिलखाने के पास रानीसागर नामक एक बड़ा तालाब है । रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील दक्षिण कमीशनर, जज, मजिस्ट्रेट आदि की कचहरियां बनी हुई हैं ।

राजा का महल—रेलवे स्टेशन से १ मील से अधिक पश्चिम दक्षिण वर्धवान में राजा का उत्तम महल है। दरखास्त करने पर महल देखने का हुकम मिलता है। राजवाड़ी के बड़े घेरे के अन्दर पश्चिम तरफ महल के दरवाजे के पास पूर्व और पश्चिम दो कमरे हैं, जिन में मार्बुल का फर्श लगा है और मार्बुल की बहुतेरी मूर्तियां रखी हैं। पूर्व वाले कमरे से पूर्व एक बड़े कमरे में मार्बुल का फर्श लगा है, बड़े बड़े झाड़ लटके हैं और उत्तम कुर्सियां रखी हुई हैं। बड़े कमरे से पूर्व एक बारहदरी के मध्य में चालरूम अर्थात् अंगरेजी नाचघर है, जिसके ऊपर के मंजिल पर लाउजरी है और कई एक उत्तम कमरे तस्वीर इत्यादि उत्तम असवार्थों से सजे हैं। बारहदरी के पूर्व माहताव मंजिल के दक्षिण दिळाराम और दिळाराम के पूर्व आईनामहल है। बारहदरी से थोड़ेही दूर पर ऐसमंजिल में अनेक भांति के बहुतेरे हयियार रखे हुए हैं और बहुतेरी तस्वीरें टंगी हैं। आईनामहल से पूर्व राजा की कचहरी है। आमन के चारो बगलों पर दो मंजिले दाखान और दो मंजिले कमरे बने हुए हैं।

लक्ष्मीनारायण का मन्दिर—राजमहल के पास लक्ष्मीनारायण का सुंदर मन्दिर है, जिसको लोग लक्खीनारायण का मन्दिर कहते हैं। मन्दिर के आगे के दाखान में मार्बुल का फर्श लगा है और चान्दी जड़े हुए ३ सिंहासन रखे हुए हैं, जिनपर समय समय में मन्दिर की देव मूर्तियां बैठाई जाती हैं।

मन्दिर से थोड़ी दूर पर एक मुन्दर पूजावाड़ी है, जिसमें स्वभाओं की पांच छ पंक्तियां हैं और सफेद तथा काले मार्बुल के तख्तों से फर्श बना है।

बड़ा बाजार से दक्षिण पूर्व मंगला महारानी का मन्दिर और एक शिवाला है।

गुलाबबाग—रेलवे स्टेशन से करीब २ मील और राजवाड़ी से १ मील दूर वर्धवान के महाराज का गुलाबबाग है। राजवाड़ी और गुलाबबाग के बीच में सड़क के पास श्यामसागर नामक एक बड़ा तालाब है। गुलाबबाग में भांति भांति के फल फूलों के वृक्ष लगे हैं, जगह जगह सड़कें बनी हैं और स्थान

स्थान पर जंगली जानवरों, जलचरों और पक्षियों के रहने के लिये अनेक मकान होज, झुंड और घेरे बनाए गए हैं । यद्यपि यह चिड़ियाखाना पहले के समान नहीं है, तिस पर भी यहा देखने योग्य बहुतेरे जीव जन्तु हैं । इस में थोड़े थोड़े सब प्रकार के पशुपक्षी और बहुतेरे वाघ तथा हरिन देखने में आते हैं । बाग के घेरे के भीतर कई तालाब हैं । बाग के मध्य में एक उत्तम तालाब के चारो तरफ पत्थर की सीढ़ियां और उसके चारों कोनों के पास मार्बुल की ४ प्रतिमा हैं । तालाब के उत्तर और दक्षिण गुलाबकी फूलवाड़ी हैं, जिनमें क्यारियो के वगलों पर गच के रास्ते बने हैं । तालाब के पश्चिम किनारे पर रसोई घर, जनाना, अटाघर, बैठकखाना आदि कई सुन्दर इमारते बनी हैं । गुलाबबाग के वगलों में नहर बनाई गई है ।

अष्टोत्तरशत शिवालय—राजवाड़ी से ३ मील पश्चिमोत्तर एक चौगान के चारो धगलों पर एकही प्रकार के १०८ शिखरदार शिवमन्दिर हैं, अर्थात् ३८ पूर्व, ३८ पश्चिम, १४ उत्तर, १४ दक्षिण और ४ चारो कोनों पर । प्रत्येक मन्दिर बाहर से ३ गज लम्बा और इतनाही चौड़ा है । चौगान के पूर्व और पश्चिम वगल में दो फाटक और उसके भीतर २ कच्ची दिग्गी हैं ।

वर्धवान जिला—इसका क्षेत्रफल २६९७ वर्ग मील है । इसके उत्तर संयालपरगना, वीरभूमि और मुर्शिदाबाद जिले, पूर्व नदिया जिला, दक्षिण हुगली, मेदनीपुर और बाकुडा जिले और पश्चिम मानभूमि जिला है । वर्धवान जिला भारतवर्ष के सबसे अधिक उपज होने वाले जिलों में से एक है । इस जिले में केवल पश्चिमोत्तर कोने में संयाल परगने जिले से लगी हुई नीची उंची भूमि है, जहां जंगलों में कुछ भालू, तेंदुए, भेड़िया इत्यादि वन जंतु रहते हैं, नदी तो सरल समतल भूमि पर धान की बड़ी खेती होती है । जगह जगह ताड़, केला और आम के बागों में श्लोपडियों की वस्तियां देखने में आती हैं । जिले में कोई पहाड़ी नहीं है । दामोदर, खारी, बांरा इत्यादि बहुतेरी नदियां जे भागीरथी में मिल गई हैं, बहती हैं । उस जिले में तशर बहुत होता है और जहरीले सर्प बहून रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय वर्धवान जिले में १३९१८२३ म

मुप्य थे; अर्थात् ११२०६७६ हिन्दू, २६३८१६ मुसलमान, ६४१८ संथाल, ९१० कस्तान और ३ यहूदी। जातियों के खाने में १४८७८८ भंगी, ११२१११ सद्-गोप, १०७६८४ ब्राह्मण, ८२२५४ वाउरी, ७०२६२, ग्वाला, ४९२२९ चमार, ३१०३० डोम, ३५३०५ वनियां, ३३०६९ कायस्थ, ३१५९२ कैवर्त, २८९७८ तेली, ७२१८ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के मनुष्य थे। सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय उस जिले के कसबे वर्धवान में ३४४७७ और रानीगंज में १३३७२ और सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय कलना में १०४६३ और कतवा में ६८२० मनुष्य थे। वर्धवान जिले में भागीरथी के किनारे पर जिले में सौदागरी का प्रधान स्थान कलना है, जो मुसलमानों के राज्य के समय एक प्रसिद्ध स्थान था। वहां मुसलमानों के एक बड़े किले का चिन्ह अब तक विद्यमान है और वर्धवान के महाराज का एक महल बना हुआ है। रानीगंज सबडिवीजन में कोयले की बहुत सी खानियां हैं। भागीरथी और अजयनदी के संगम के निकट कतवा एक तिजारती स्थान है; उसी स्थान पर चैतन्य महामु ने तप किया था, इस लिये वैष्णव लोग उसको पवित्र समझते हैं।

इतिहास—राजमहल में दाउदखां के परास्त होने के पीछे सन् १५७४ ई० में बादशाह अकबर की सेना ने उसके वंशधरों को वर्धवान में पकड़ा। सन् १६२४ में शाहजादे खुर्रम ने, जो पीछे शाहजहां के नाम से बादशाह बना, वर्धवान कसबे और उसके किले को ले लिया। उसके थोड़े ही पीछे वर्धवान-राजवंश के नियत करने वाले आवूराय खत्री पंजाब से बंगाल में आकर वर्धवान में बस गए। वह सन् १६५७ में चौधरी हुए और उसके पीछे मुसलमानी गवर्नमेंट के आधीन फौज के कमांडर होगए। उनकी मिलकियत बहुत शीघ्र बढ़ गई। आवूराय के पोते कृष्णरामराय ने बादशाह औरंगजेब से एक फरमान हासिल किया। सन् १६९५ में वर्धवान के एक तालुकदार मूधामिंद ने अफगान प्रधान रहीमखां की सहायता से वर्धवान के राजा को रण-भूमि में मार डाला और राजा के पुत्र जगतारामराय को छोड़ कर राजवंश के सब लोगों को पकड़ लिया। उसके थोड़े ही दिनों के पश्चात् राजा की

पुत्री ने सूबासिंह को मार डाला। जगतारामराय उत्तराधिकारी हुए, जिन्होंने अठारहवीं शदी के आरंभ में महाराष्ट्रों के आक्रमण के समय नवाब की सहायता की थी। उनके पीछे उनके पुत्र कीर्तिचन्द्रराय वर्डवान के राजसिंहासन पर बैठे। उन्होंने चन्द्रकोना, बरदा और बेलगछा के राजाओं को परास्त करके उनकी मिलकियतों को अपनी जमींदारी में मिला लिया। कीर्तिचन्द्रराय के पश्चात् महाराज तिलकचन्द्रराय ने सन् १७४४ से सन् १७७० तक राज्य किया। उनके समय में आक्रमण करने वालों ने वर्डवान को लूटा और उस देश को नष्ट कर दिया। सन् १७७० के बड़े अकाल के समय महाराज तिलकचन्द्र मर गए। उस समय उनके घर वालों को श्राद्ध के खर्च के लिये घर का जेवर बेचना और सरकार से कर्ज लेना पड़ा। उनके उत्तराधिकारी महाराज तेजचन्द्र सन् १७९३ के दाएमी बन्दोवस्त के पीछे कुछ अच्छे हालत में हुए। वर्तमान शदी में वर्डवान राज्य की उन्नति हुई है। सन् १८३३ ई० में महाराज माहतावचन्द्र राजसिंहासन पर बैठे, जिन्होंने सन् १८५५ में संघातों की घगावत के समय और सन् १८५७ के बल्ले में भारत गवर्नमेंट की बड़ी सहायता की। सन् १८७९ में महाराज माहतावचन्द्र का देहांत हो गया। उनके गोद लिया हुआ लड़का महारानी का भतीजा महाराज आफतावचन्द्र माहताव बहादुर ने सन् १८८१ में वालीग होने पर राज्य का संपूर्ण अधिकार प्राप्त किया। इस समय वर्डवान के महाराज की मिलकियत की वार्षिक आमदनी ३० लाख रुपये से अधिक है।

खाना जंक्शन।

“खाना जंक्शन से “इंटरइण्डियन रेलवे” की लाइन ३ तरफ गई है। तीसरे दरजे का महमूल फी मील २५ पाई लगता है।

(१) खाना जंक्शन से पश्चिमोत्तर काई

लाइन पर।

मील प्रसिद्ध स्टेशन—

४७ अण्डाल जंक्शन।

४६ रानीगंज।

५७ आसनसोल जंक्शन।

६३ सीतारामपुर जंक्शन।

१०८ मधुपुर जंक्शन।

१२६ बैद्यनाथ जंक्शन ।

१६० गिद्धौर ।

१६९ जमुई ।

१८७ लक्ष्मीसराय जंक्शन ।

अण्डाल जंक्शन से २४
मील पश्चिमोत्तर गौरागढ़ी ।

आसनसोल जंक्शन से
पश्चिम दक्षिण बंगाल नाग-
पुर रेलवे पर ४७ मील पुरु-
लिया, २२१ मील वामरा
और २४४ मील झारमूगढ़
जंक्शन ।

सीतारामपुर जंक्शन से
पश्चिम ५ मील बराकर और
३९ मील रुदरसगढ़ ।

मधुपुर जंक्शन से २३
मील पश्चिम थोड़ा दक्षिण
गिरिडी ।

बैद्यनाथ जंक्शन से ४
मील पूर्व दक्षिण बेषघर ।

- (२) लूपलाईन पर खाना जंक्शन से
उत्तर साहबगंज और साहबगंज
पश्चिम लक्ष्मीसराय—
मील प्रसिद्ध स्टेशन—
४४ साईगिया ।
६१ रामपुरहाट सत्रडिवीजन ।
७० नलदाटी जंक्शन ।

८० मुराडोई ।

९४ पकउड़ ।

१२० तीनपहाड़ जंक्शन ।

१४४ साहबगंज ।

१७० कहलगांव ।

१९० भागलपुर ।

२०५ मुलतानगंज ।

२२३ जमालपुर जंक्शन ।

२४१ कजरा ।

२४८ लक्ष्मीसराय जंक्शन ।

नलदाटी जंक्शन से २७
मील पूर्व मुर्शिदाबाद के
पाम अजीमगंज ।

तीनपहाड़ जंक्शन से ७
मील पूर्वोत्तर राजमहल ।

साहबगंज के उसपार के
मनिहारीघाट से उत्तर ओर
पश्चिमोत्तर को झुक्ता हुआ
' ईष्टर्न बंगालस्टेट रेलवे '
पर ७ मील मनिहारी, २३
मील कठिहर जंक्शन, ४०
मील पूर्निया, ८२ मील,
फारिसगंज और ९६ मील
कोशीनदी के बाएं किनारे
पर अचराघाट ।

जामालपुर जंक्शन से ५
मील पश्चिमोत्तर मुंगेर ।

(३). खाना जंक्शन से पूर्व-दक्षिण—

मील-प्रसिद्ध स्टेशन—

८ बर्बवान ।

४६ मुगरा ।

५१ हुगली जंक्शन ।

५४ चन्दरनगर ।

६१ सेवड़ाफुली जंक्शन ।

६३ श्रीरामपुर ।

७५ हवड़ा ।

हुगली जंक्शन से ५ मील

पूर्व-दक्षिण हुगली अर्थात् भागीरथी नदी के बाएँ न-इहाटी जंक्शन ।

नइहाटी से दक्षिण २४ मील सियालदह और उत्तर २२० मील पार्वतीपुर जंक्शन और ३५५ मील दार्जिलिंग ।

सेवड़ाफुली जंक्शन से २२ मील पश्चिम कुछ उत्तर तारकेश्वर ।

सिउड़ी ।

खाना जंक्शन से ४४ मील उत्तर लूपलाइन पर सांझिया का रेलवे स्टेशन है । सांझिया से बारह चौदह मील पश्चिम मूरे बंगाल के बर्बवान विभाग में मोर नदी से लगभग ३ मील दक्षिण एक सड़क के पास (२३ अंश, ५४ कला, २३ विकला, उत्तर अक्षांश और ८७ अंश, ३४ कला, १४ विकला, पूर्व देशांतर में) वीरभूमि जिले का सदर-स्थान सिउड़ी एक छोटा कसबा है ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय सिउड़ी में ७८४८ मनुष्य थे; अर्थात् ५८३८ हिन्दू, १९९१ मुसलमान और १९ दूसरे ।

वीरभूमि जिला—जिले का क्षेत्रफल १७५६ वर्गमील है । इसके पश्चिमोत्तर संथालपरगना जिला, पूर्व पुरिदागाद और बर्बवान जिला और दक्षिण अनयनदी, जिसके बाद बर्बवान जिला है । वीरभूमि का अर्थ जंगली भूमि है; संथाली भाषा में जंगल को वीर कहते हैं । इस जिले का सदर-स्थान सिउड़ी कसबा है । इस जिले में कोई शील वायरा नहर या सर्पदा नाव चलने योग्य कोई नदी नहीं है । जिले में कोयले और लोहे की खान हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वीरभूमि जिले में ७२४४२८ मनुष्य थे; अर्थात् ६१७३१० हिन्दू, १६२६२१ मुसलमान, १४४४९ पहाड़ी और जंगली इत्यादि और ४८ कुस्तान । जातियों के खाने में ७९६२१ सद्गोप, ४००१२ वागड़ी, ३९७२४ ब्राह्मण, ३६३१६ डोम, ३०९७५ चमार, २७२६८ बाजरी, २३२८६ हाड़ी, २०७८३ कालू, १८१०३ वनियां, ८९०२ कायस्थ, ८३४४ राजपूत और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे ।

वीरभूमि जिले में सिउड़ी, रामपुरहाट, नागौर, एलमवाजार और महमूद बाजार प्रसिद्ध गांव हैं ।

वाकेश्वर स्थान—वीरभूमि जिले में तांतीपाड़ा गांव से लगभग १ मील दक्षिण वाकेश्वर नामक नाले के किनारे वाकेश्वर स्थान पर तप्त जल के कई एक झरने हैं । झरनों के मास बहुतेरे शिव-मन्दिर बनाए गए हैं; वहां बहुत से यात्री जाते हैं ।

जयदेवजी का जन्म-स्थान—उपरोक्त सिउड़ी कसबे से १८ मील दूर अजयनदी के उत्तर जयदेवजी का जन्म स्थान केंदुली गांव है । पूर्व समय उस गांव में भोजदेव ब्राह्मण बसता था । उसकी पत्नी रामादेवी के गर्भ से जयदेवजी ने जन्म लिया । किस संवत् में उनका जन्म हुआ यह निश्चय नहीं है । किसी किसी प्रमाण से सन् ईस्वी की ग्यारहवीं शदी के आदि में और किसी के मत से बारहवीं शदी के मध्य भाग में उनका जन्म हुआ था । एक ब्राह्मण की पद्मावती नामक पुत्री से जयदेवजी का विवाह हुआ । उन्होंने अपने जीवन का अर्द्धभाग उपासना और धर्मोपदेश में धिताया । जयदेवजी के रचे हुए गीतगोविन्द के सरस पदों को देख कर बड़े बड़े कवि मोहित और विस्मित होते हैं । वास्तव में उन्होंने इस काव्य में अपनी रसशालिनी रचना शक्ति का एक अद्वितीय प्रदर्शन किया है ।

केंदुली गांव में जयदेवजी का सुंदर समाधि-मंदिर बना हुआ है । उस स्थान पर अब तक जयदेवजी के स्मरणार्थ प्रति वर्ष मकर की संक्रांति को एक बड़ा मेला होता है । उसमें लगभग ७५ हजार वैष्णव एकत्रित होते हैं और समाधि-मंदिर के चारों ओर संकीर्तन करते हैं ।

लगभग ६०० वर्ष हुए नाभाजी ने पद्यभाषा में भक्तमाल ग्रन्थ बनाकर भक्तों का यज्ञ वर्णन किया था । उसका ४४ वां छप्पै यह है, — जयदेव कवि नृपचक्र वै खंडमंडलेश्वर आनि कवि ॥ प्रचुर भयो तिहुलोक गीतगोविंद उजागर । कोक काव्य नवरस सरस शृङ्गारको आगर ॥ अष्टपदी अभ्यास करे तिहि वृद्धि बढ़ावै । राधारमण प्रसन्न सुनत हैं निश्चै आवै ॥ मंतसरोरह खडकोपदमावतिसुखजनकरवि । जयदेवकवि नृपचक्रवै खडमंडलेश्वर आनि कवि ॥ ४४ ॥ अर्थात् जयदेवजी कवियों के महाराजा थे । उनका बनाया हुआ गीतगोविंद तीनो लोक में प्रसिद्ध हुआ, जो कोकशास्त्र, काव्य और नवरसा में सरस शृङ्गाररस का भंडार है । उसकी अष्टपदी में अभ्यास करने से बुद्धि की वृद्धि होती है और उसका गान सुन कर निश्चय करके श्रीकृष्णभगवान् प्रसन्न होकर उस स्थान पर चले आते हैं । मंत रूपी कमलों और (अपनी पत्नी) पदमावती को सुख देने में जयदेवजी सूर्य के तुल्य थे । भक्तमाल के टीका में (जो भाषापाद्य में बना है) लिखा है कि किंदुनिल्वग्राम में जयदेवजी का जन्म हुआ । वह घृष के नीचे प्रतिदिन नए नए स्थानों में रहते थे । उनके पास एक गुदरी और एक कमंडलु था । एक दिन एक ब्राह्मण ने अपनी कन्या के सहित जाकर जयदेवजी से कहा कि जगन्नाथजी की आज्ञा से मैं आया हूँ, तुम इस कन्या से अपना ब्याह करो; यदि उनकी आज्ञा का प्रतिपालन तुम नहीं करोगे तो तुमको दोष लगेगा । अनेक बातें करने के पश्चात् जयदेवजी ने जगन्नाथजी की आज्ञा से विवस होकर उस कन्या को स्वीकार किया और अपने रहने को एक झोपड़ी बनाई । उसके पश्चात् उन्होंने सुप्रसिद्ध गीतगोविंद बनाया । जयदेवजी अपने स्थान से १८ कोस दूर गंगाजी की धारा में नित्य जाकर स्नान करते थे । वृद्ध होने पर भी उन्हो ने अपना नित्यनेम नहीं छोड़ा, तब गंगाजी ने उनसे स्वप्न में कहा कि अब तुम यहाँ मत आओ, मैंहीं तुम्हारे लिये वहाँ चक्की आऊंगी । उसके उपरांत गंगाजी जयदेवजी के आश्रम में चक्की आई, जो अब तक (अजयनदी के नाम से) वहाँ विद्यमान है ।

रानीगंज ।

खाना जंक्शन से ४६ मील पश्चिमोत्तर (हवड़ा से १०१ मील) कार्देलान

पर रानीगंज का रेलवे स्टेशन है। सूबे बंगाल के बर्धमान जिले में दामोदर नदी के उत्तर किनारे पर सबडिवीजन का सदर-स्थान रानीगंज एक कसबा है। प्रथम यह स्थान बर्धमान की रानी का था, इस लिये कसबे का नाम रानीगंज पड़ा।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय रानीगंज में १३७७२ मनुष्य थे; अर्थात् ११३६४ हिंदू, २१४७ मुसलमान, १८३ कृस्तान, ६४ एनिमिष्टिक, १३ जैन और १ यहूदी।

रानीगंज अर्ध बर्धमान जिले की सौदागरी के प्रधान स्थानों में से एक हुआ है। वहाँ 'बर्नकंपनी' का कारखाना, बंगाल पेपर मिल्स, एक अस्पताल और सरकारी कचहरियाँ हैं।

कोयले की खान—रानीगंज कोयले की खानों के लिये प्रसिद्ध है। वहाँ के कोयले का मैदान भारतवर्ष के सम्पूर्ण कोयले के मैदानों से बड़ा और सब से अधिक प्रसिद्ध है। सन् १८२० ई० में मिष्टर जोन्स ने अकस्मात् वहाँ कोयले के खानों को पाया, वच से सरगर्मी से खानों से कोयला निकाला जाता है। रानीगंज सबडिवीजन में रानीगंज, माधवपुर, शंखतरिया, धौसाळ, नियामतपुर, वेसागढ़, धदका, बेलरोह, वरिया, आसनसोल, चांदपुर, लखीपुर, शिवपुर इत्यादि के पास कोयले की खान हैं। कोयले के मैदान रानीगंज के चंद मील पूर्व से बराकर नदी के कई एक मील पश्चिम तक नीचे ऊँचे सतह पर फैलते हैं। बर्धमान जिले में कोयले के मैदानों का क्षेत्रफल लग भग ५०० वर्गमील है। उसकी सबसे अधिक लंबाई पूर्व से पश्चिम को लगभग ३९ मील और सबसे अधिक चौड़ाई उत्तर से दक्षिण को लगभग १८ मील है। भूमि के सतह से नीचे कोयला है। कूप के समान सुण्ड बनाकर भूगर्भ से काट कर कोयला निकाला जाता है। नीचे स्थान स्थान पर स्तंभों के तुल्य मोटे मोटे पाये छोड़ दिये जाते हैं। ऊपर खेती होती है। सन् १८८३ ई० में वहाँ के कोयले की ५० खानों में लगभग १२००० पुरुष, स्त्रियाँ और लड़के काम करते थे। कोयला दामोदर नदी तथा रेलवे द्वारा कलकत्ता तथा दूसरे स्थानों में भेजा जाता है।

पिंजरापोल—कलकत्ते के मारवाड़ियों ने सोदपुर के समान रानीगंज

के निकट के वारिया वस्ती में भी पिंजरापोल स्थापित किया है, जिसमें सन् १८९० ई० में २११ गो, जैल और बछड़े, और १० घोड़े रक्षित थे ।

जगन्नाथजी का मार्ग—जगन्नाथपुरी में पैदल जानेवाले यात्रियों की प्रधान सड़क रानीगंज से दक्षिण घाकुडा, और मेदनीपुर और मेदनीपुर से दक्षिण पश्चिम चालेश्वर जाजपुर जैतरनी और कटक होकर पुरी को गई है । सड़क के पास स्थान स्थान पर चढ़िया बनी हुई हैं ।

पुरुलिया ।

रानीगंज से ११ मील (खाना जक्शन से ५७ मील) पश्चिमोत्तर और लक्षीसराय जक्शन से १३० मील दक्षिण पूर्व वर्धवान जिले के रानीगंज सपडिवीजन में कार्डेलाइन पर आसनसोल रेलवे का जक्शन है । वहाँ 'बंगाल नागपुर रेलवे' आकर 'इष्टइंडियन रेलवे' से मिली है और कोयले की बड़ी खान तथा ए जिन का बड़ा कारखाना है ।

बंगाल नागपुर रेलवे के निकट आसनसोल से ५ मील पश्चिम दामोदर स्टेशन के समीप दामोदर नदी पर रेलवे का पुल और ४७ मील पश्चिम दक्षिण पुरुलिया का रेलवे स्टेशन है । छोटा नागपुर विभाग में (२३ अंश, १९ कला, ३८ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश २४ कला, ३५ विकला पूर्व देशांतर में) मानभूमि जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा पुरुलिया है । वहाँ रेलगाड़ी बरतक ठहरती है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय पुरुलिया में १२१२८ मनुष्य थे, अर्थात् ९८८२ हिंदू, १६२५ मुसलमान, ५०८ कृस्तान और ११३ एनिमिष्टिक अर्थात् पहाड़ी जातिया ।

पुरुलिया में डिपोटीकमिशनर का आफिस, कचहरियों के मकान, घाना, जेलखाना, गिरजा, अस्पताल और स्कूल हैं । वहाँ के बाजार में गन्ने, नमक इत्यादि वस्तुओं की सौदागरी होती है । पुरुलिया से पश्चिम एक अच्छी सड़क रांची को गई है ।

मानभूमि जिला—यह छोटा नागपुर विभाग के पूर्व भाग में ४१४७

वर्गमील में फैला हुआ है । इसके पूर्व बर्बवान और बांकुड़ा जिला, दक्षिण सिंहभूमि और मेदनीपुर जिला; पश्चिम लोहारडागा और हजारीबाग जिला और उत्तर हजारीबाग और संथाल परगना जिला हैं । जिले के पश्चिम और दक्षिण लोहारडागा और सिंहभूमि की सीमा पर सुवर्णरेखा नदी और उत्तर तथा पूर्वोत्तर की सीमा के बड़े हिस्से पर वराकर और दामोदर नदी बहती है । इस जिले का सदर-स्थान पुरुलिया है । जिले में बहुतेरी पहाड़ियाँ हैं, जिनमें से प्रधान पहाड़ियाँ लगभग ३४००, २२०० और १६०० फीट ऊँची हैं । कसाई नदी जिले होकर बहती है ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय मानभूम जिले में १०५८२२८ मनुष्य थे; अर्थात् ९४६२४७ हिंदू, ६५९४८ पहाड़ी और जंगली जातियाँ, ४५४५३ मुसलमान, ५५२ कृस्तान, २३ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी । इस जिले में संपूर्ण आदि निवासी अर्थात् पहाड़ी और जंगली, कौमे ३०७५९२ थीं, जिनमें से बहुत लोग हिंदुओं में लिखे गए थे । उनमें १२९१०३ संथाल, ६९२०७ बाउरी, ५७६९५ कोल, २६१६४ भुइया, ९०१७ खरवार थे । हिंदुओं में ४९१९० ब्राह्मण, ३९०८१ ग्वाला, ३१५६९ कुंभार, २६९१५ लोहार, २६८३८ बनियाँ, २४१६४ कालू, १९१२५ राजबाड़, १८९४३ डोम; १८४५० मदक, १७७३७ सण्डी, १५९४२ राजपूत और बाकी में दूसरी जातियों के लोग थे । इस जिले के रघुनाथपुर कसबे में ५६१५ मनुष्य थे ।

बांकुड़ा ।

पुरुलिया के रेलवे स्टेशन से ५० मील से अधिक पूर्व कुछ दक्षिण (२३ अंश, १४ कला, उत्तर अर्धश और ८७ अंश, ६ कला, ४५ विकला पूर्व देशांतर में) दलकिशोर नदी के बाएँ अर्थात् उत्तर सूबे बंगाल के बर्बवान विभाग में जिले का सदर-स्थान बांकुड़ा एक कसबा है । पुरुलिया से बांकुड़ा कसबे को एक सड़क गई है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय बांकुड़ा कसबे में १८७४३ मनुष्य थे; अर्थात् १७९३१ हिंदू, ६९२ मुसलमान, ७७ कृस्तान और ४३ पार्लियामेण्ट ।

• बांकुड़ा में एक सराय और मामूली सरकारी इमारतें हैं। सौदागरी बहुत होती है। रेशमी कपड़े अच्छे बुने जाते हैं। रेशम के कपड़े लाह, चावल, अनेक भांति के तेल के बीज इत्यादि वस्तु बांकुड़ा से अन्य स्थानों में भेजी जाती हैं और नमक, तंबाकू, मसाले, अंगरेजी चीजें दूसरे जगहों से वहां आती हैं।

• जगन्नाथजी के पैदल जानेवाले यात्री रानीगंज से बांकुड़ा, विष्णुपुर मेदनीपुर, बालेश्वर, जाजपुर और कटक होकर पुरी में जाते हैं।

• बांकुड़ा जिला—यह जिला त्रिभुजाकार है। इसके उत्तर और पूर्व वर्दवान जिला और दामोदर नदी; दक्षिण मेदनीपुर जिला और पश्चिम मानभूमि जिला है। जिले में दामोदर और दलकिशोर इत्यादि नदियां बहती हैं। कोई झील या नहर नहीं है। पहाड़ियों से लोहे का ओर और मकान बनाने के लिये पत्थर निकाले जाते हैं। पश्चिम की सीमा के पास बाघ, तेंदुए, भालू, भेड़िये इत्यादि वनैले जन्तु होते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय बांकुड़ा जिले का क्षेत्रफल २६२१ वर्गमील था, जिसमें १०४१७५२ मनुष्यों की गिनती हुई थी, जिनमें ९१०८६५ हिंदू, ८४५५७ आदि निवासी इत्यादि, ४६२७४ मुसलमान, और ५६ कृस्तान थे। जातियों के खाने में ११७५४८ वाउरी, ८४३२३ ब्राह्मण, ७४१२७ तेली, ५९६५२ ग्वाला, ४७१४६ वागड़ी, ४५२१६ सदगोप, ३७८३५ लोहार, ३१३३७ बनियां, २९३२० तांती, २५२५० कैयरत, २१३०८ कालू, २१३५० सूंड़ी, २०५७५ कायस्थ, २०३२५ वैष्णव, १३९८७ राजपूत, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय बांकुड़ा जिले के बांकुड़ा कसबे में १८७४३, विष्णुपुर में १८१९० और सोनामुखी में १३४६२ मनुष्य थे।

इतिहास—पहले बांकुड़ा के चारो ओर का देश विष्णुपुर कहलाता था। बांकुड़ा कसबे से लगभग २५ मील पूर्व दक्षिण पुराने समय की राजधानी विष्णुपुर है। विष्णुपुर के एक राजा ने कई तालाब और दूसरे ने कई मंदिर बनवाये। ग्यारवीं शदी के आरंभ में विष्णुपुर प्रसिद्ध शहर था। १८ वीं शदी में विष्णुपुर के राजपराने का पेटवर्ष घट गया। राजा इतना निर्धन हो

गया कि उसने अपने घर के इष्टदेव मदनमोहनजी की प्रतिमा को कलकत्ते के गोकुलचंद्र मित्र के पास बंधक रखवा । कुछ दिनों के पश्चात् राजा ने रुपये इकट्ठे करके गोकुलचंद्र के पास भेजा । गोकुलचंद्र ने रुपया लेकर मूर्ति को देने से इन्कार किया । मुकुदमा दायर होने पर राजा की डिगरी हुई; तब गोकुलचंद्र ने उसी भांति की एक मूर्ति बनवाकर राजा को बेदी । विष्णुपुर का राजमहल अब नहीं है । पुराने किले के भीतर जंगल लग गया है । बीच में एक बड़ी तोप पड़ी है । सन् १८३५—१८३६ में बांकुड़ा एक जिला बनाया गया ।

रांची ।

पुरुलिया से लगभग ८० मील पश्चिम रांची को एक अच्छी सड़क गई है । “छोटा नागपुर” विभाग और लोहारडागा जिले का सदर-स्थान और उस जिले में प्रधान कस्बा रांची है । (यह २३ अंश, २२ कला, ३७ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २२ कला, ६ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से २१०० फीट ऊपर स्थित है ।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय रांची में २०३०६ मनुष्य थे; अर्थात् ९९९१ हिंदू, ५०४२ मुसलमान, २८९५ क्रिस्तान, और २३७८ एनिमिष्टिक ।

रांची की प्रधान इमारतें कमीशनर साहब और डिप्टीकमिशनर के आफिसें, कचहरी के अनेक मकान, स्कूल, एक खैराती अस्पताल और २ गिरजे हैं । कसबे की छोटी छोटी बस्ती अलग अलग बसी है । वहां थोड़ी तिजारत होती है, कृस्तान लोग बहुत रहते हैं । रांची से कई एक देहाती मार्ग कई तरफ गये हैं ।

रांची से ६ मील दूर जगन्नाथपुर बस्ती के निकट एक पहाड़ी पर जगन्नाथजी का मंदिर है । प्रति वर्ष आपाढ़ सुदी २ को वहा मेला होता है ।

लोहारडागा—रांची से ४५ मील पश्चिम लोहारडागा को एक सड़क गई है । लोहारडागा एक छोटा म्युनिस्पाल कस्बा है, जिसमें सन् १८८१

की मनुष्य गणना के समय ३४६१ मनुष्य थे । वह सन् १८४० ई० तक लोहारडागा जिले का सदर स्थान था । लोहारडागा से लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर-पालामऊ है, जिसको पलामू भी करते हैं ।

लोहारडागा जिला—इसका क्षेत्रफल १२४५ वर्ग मील है । इसके उत्तर सोन नदी, जो हजारीबाग, गया और शाहाबाद जिले से इसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर और पश्चिम मिर्जापुर जिला और सरगुजा, जशपुर, और गाँयपुर के देशी राज्य और दक्षिण पूर्व और पूर्व सिंहभूमि और मान भूमि जिला है । जिले का सदर स्थान राँची है । उस जिले की पहाड़ियों में सबसे ऊँची पहाड़ी राँची से पश्चिम ३६५० फीट ऊँची है । जिले की नदियों में सुवर्णरेखा और कोयल नदी प्रधान हैं । खानों से लोहे के ओर और कुछ कुछ ताँबा निकलता है । जिले के दक्षिण भाग में दरिद्र लोग नदियों के बालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं । जिले में एक प्रसिद्ध कोयले का मैदान २०० वर्ग मील में फैलता है और २ सुन्दर जलमपात अर्थात् झरने हैं,—एक राँची से लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर जशपुर परगने में, जिस की ऊँचाई ३२० फीट है और दूसरा राँची से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व । जिले के जंगल और पहाड़ियों में बाघ, तेंदुए, बनेलें सूअर, बालू इत्यादि वन जंतु रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय लोहारडागा जिले में १६०९२४४ मनुष्य थे, अर्थात् ८६८८४२ हिंदू, ६२६६६१ आदि निवासी (जिनमें ५९१८५८ कोल थे), ७७४०३ मुसलमान, २६२८१ कृस्तान, ५६ जैन और १ बौद्ध । जातियों के खाने में ५९१८५८ कोल, ७८६७७ अहीर, ७७३४१ खरवार, ५८४१९ भुइया, ४७४७१ राजपूत, ४३७६६ बुर्मी, ४२४३९ ब्राह्मण, ३७०३४ दुसाध, ३४७०० कदार, ३४३४१ लोहार, ३२८३५ तेली, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे । लोहारडागा जिले के कसबे राँची में १८४४३, पालामऊ सन दिवीजन के सदर स्थान दलदोनगंज में ७४४०, गरगा में ६०४३ और लोहारडागा में ३४६१ मनुष्य थे ।

सूबे छोटानागपुर—इसको लोग चटियानागपुर भी कहते हैं। बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये ४ सूबे हैं। इनमें से सूबे छोटानागपुर का सदर-स्थान रांची है। सूबे छोटानागपुर के उत्तर मिर्जापुर, शाहाबाद और गया जिला, पूर्व मुंगेर, मंथालपरगना, बाँकुडा और मेदनीपुर जिला; दक्षिण उड़ीसा के मालगुजार राज्य और पश्चिम संभलपुर जिला और रीवा का राज्य है। इस सूबे में हजारीबाग, लोहारडागा, सिंहभूमि और मानभूमि ये चार अंगरेजी जिले और ९ छोटे देशी राज्य हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस सूबे के अंगरेजी जिलों और देशी राज्यों का क्षेत्रफल ४३०२० वर्गमील था, जिसमें ४९०३९९१ मनुष्य थे, अर्थात् २४३८८०७ पुरुष और २४६५१८४ स्त्रियाँ। इनमें ३८५८८३६ हिन्दू, ७६८८०६ पहाड़ी और जंगली, (जिनमें ६०१६८८ कोल और १००१५७ संथाल थे), २३५७८६ मुसलमान, ४०४७८ कृस्तान, ६६ जैन, २४ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी थे।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय इस सूबे के नीचे लिखे हुए कसबों में १०००० से अधिक मनुष्य थे,—लोहारडागा जिले के रांची में २०३०६ हजारीबाग जिले के हजारीबाग कसबे में १६६७२ और चतरा में १०७८३ और मानभूमि जिले के पुरुलिया में १२१२८।

इस सूबे के पश्चिमी भाग में छोटे छोटे ९ देशी राज्य हैं। इनके उत्तर रीवा का राज्य और मिर्जापुर जिला; पूर्व लोहारडागा और सिंहभूमि जिला; दक्षिण उड़ीसे के देशी राज्य और मध्यदेश का संभलपुर जिला और पश्चिम मिलासपुर जिला और रीवा का राज्य है। इस देश में ऊँची भूमि है और पहाड़ियाँ बहुत हैं। पश्चिम में गोंड और पूर्व में कोल अधिक बसते हैं। इनके अलावे भूँइया और संथाल आदि पहाड़ी जातियाँ भी हैं।

की मनुष्य-गणना के समय ३४६१ मनुष्य थे । वह सन् १८४० ई० तक लोहारढागा जिले का सदर स्थान था । लोहारढागा से लगभग ५० मील पश्चिमोत्तर-पालामऊ है, जिसको पलामू भी कहते हैं ।

लोहारढागा जिला—इसका क्षेत्रफल १२४५ वर्ग मील है । इसके उत्तर सोन नदी, जो हजारीबाग, गया और शाहाबाद जिले से इसको अलग करती है; पश्चिमोत्तर और पश्चिम मिर्जापुर जिला और सरगुजा, जशपुर, और गांगपुर के देशी राज्य और दक्षिण-पूर्व और पूर्व सिंहभूमि और मानभूमि जिला है । जिले का सदर-स्थान रांची है । उस जिले की पहाड़ियों में सबसे उंची पहाड़ी रांची से पश्चिम ३६५० फीट उंची है । जिले की नदियों में सुवर्णरेखा और कोयल नदी प्रधान हैं । खानों से छोटे के ओर और कुछ कुछ तांबा निकलता है । जिले के दक्षिण भाग में दरिद्र लोग नदियों के बालू धोकर कुछ सोना निकालते हैं । जिले में एक प्रसिद्ध कोयले का मैदान २०० वर्ग मील में फैला है और २ सुन्दर जलप्रपात अर्थात् झरने हैं,—एक रांची से लगभग २५ मील पूर्व कुछ उत्तर जशपुर परगने में, जिसकी ऊंचाई ३२० फीट है और दूसरा रांची से लगभग २० मील दक्षिण-पूर्व । जिले के जंगल और पहाड़ियों में बाघ, तेंदुए, बर्नले सूअर, मालू इत्यादि वन जंतु रहते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य गणना के समय लोहारढागा जिमे में १६०९२४४ मनुष्य थे, अर्थात् ८६८८४२ हिंदू, ६२६६६१ आदि निवासी (जिनमें ५९१८५८ कोल थे), ७७४०३ मुसलमान, २६२८१ कृस्तान, ५६ जैन और १ बौद्ध । जातियों के खाने में ५९१८५८ कोल, ७८६७७ अहीर, ७७३४१ खरवार, ५८४१९ भुइया, ४७४७१ राजपूत, ४३७६६ कुर्मी, ४२४३९ ब्राह्मण, ३७०३४ दुमाध, ३४७०० कहार, ३४३४१ लोहार, ३२८३५ तेली, और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे । लोहारढागा जिले के कमरे रांची में १८४४३, पालामऊ सत्र डिवाजन के सदर-स्थान दल्टोनगंज में ७४४०, गरवा में ६०४३ और लोहारढागा में ३४६१ मनुष्य थे ।

सूवे छोटानागपुर—इसको लोग चट्टिपानागपुर भी कहते हैं। बंगाल के लेफ्टिनेंट गवर्नर के आधीन बिहार, बंगाल, उड़ीसा और छोटा नागपुर ये ४ सूवे हैं। इनमें से सूवे छोटा नागपुर का सदर-स्थान रांची है। सूवे छोटेनागपुर के उत्तर मिर्जापुर, शाहाबाद और गया जिला, पूर्व मुंगेर, मध्यालपरगना, बांकुडा और मेदनीपुर जिला; दक्षिण उड़ीसा के मालगुजार राज्य और पश्चिम संभलपुर जिला और रीवा का राज्य है। इस सूवे में हजारिबाग, लोहारडागा, सिंहभूमि और मानभूमि ये चार अंगरेजी जिले और ९ छोटे देशी राज्य हैं। सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय इस सूवे के अंगरेजी जिलों और देशी राज्यों का क्षेत्रफल ४३०२० वर्गमील था, जिसमें ४९०३९९१ मनुष्य थे, अर्थात् २४३८८०७ पुरुष और २४६५१८४ स्त्रियां। इनमें १८५८८३६ हिन्दू, ७६८८०६ पहाड़ी और जंगली, (जिनमें ६०१६८८ कोल और १००२५७ संथाल थे), २३५७८६ मुसलमान, ४०४७८ कुस्तान, ५६ जैन, २४ बौद्ध, ३ ब्राह्म और २ यहूदी थे।

सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस सूवे के नीचे लिखे हुए कस्बों में १०००० से अधिक मनुष्य थे,—लोहारडागा जिले के रांची में २०३०६ हजारिबाग जिले के हजारिबाग कस्बे में १६६७२ और चतरा में १०७८३ और मानभूमि जिले के पुरुलिया में १२१२८।

इस सूवे के पश्चिमी भाग में छोटे छोटे ९ देशी राज्य हैं। इनके उत्तर रीवा का राज्य और मिर्जापुर जिला; पूर्व लोहारडागा और सिंहभूमि जिला; दक्षिण उड़ीसे के देशी राज्य और मध्यवेश का संभलपुर जिला और पश्चिम निलासपुर जिला और रीवा का राज्य है। इस देश में ऊंची भूमि है और पहाड़ियां बहुत हैं। पश्चिम में गोंड और पूर्व में कोल अधिक घसते हैं। इनके अलावे भुइया और संथाल आदि पहाड़ी जातियां भी हैं।

छोटानागपुर के देशी राज्यों का विज्ञान—

नं०	देशीराज्य,	क्षेत्रफल वर्गमील	मनुष्य-संख्या सन् १८८१ ई०	मालगुजारी रुपया ।
१	सरगुजा ...	६१०३	३७.३३६	६११४७
२	गांगपुर ...	२४८४	१०७९६५	२००००
३	यशपुर ...	१९६३	९०२४०	१२०००
४	कोरिया ...	१६२५	२९८४६	
५	बोनाई ...	१३४९	२४०३०	
६	छोटाबदयपुर ...	१०५५	३३९५५	
७	चंगभकर ..	९०६	१३४६६	
८	सरायकाला ...	४३८	७७०६२	
९	खरसवान ...	१४५	३११२७	
	जोड़ ...	१६०५८	६७८०२७	

हजारीबाग ।

रांची से लगभग ५० मील उत्तर हजारीबाग की अच्छी सबक गई है । छोटाणागपुर विभाग में (२३ अंश, ५९ कला, २१ विकला उत्तर अक्षांश और ८५ अंश, २४ कला, ३२ विकला पूर्व देशांतर में) समुद्र के जल से लगभग २० फीट ऊपर जिले का सदर स्थान और जिले में प्रधान कसबा हजारीबाग है । कई एक छोटे-गांव मिल कर यह एक कसबा बना है ।

सन् १८९१ की मनुष्य गणना के समय हजारीबाग कस्बे में १६६७२ मनुष्य थे, अर्थात् १२१२९ हिंदू, ४०९९ मुसलमान, २२९ कुस्तान, १६३ ख्रिश्चियन, ४३ जैन और ९ बौद्ध ।

हजारीबाग में सरकारी कचहरियां, पुलिस स्टेशन, अस्पताल, और स्कूल हैं। वहां सन् १७८० में फौजी छावनी और सन् १८३४ में दीवानी कचहरी नियत हुई। कसबे के दक्षिण-पूर्व फौजी छावनी में थोड़ी सी अङ्गरेजी सेना रहती है। पहिले उसमें बहुत फौज रहती थी; किन्तु सन् १८७४ में घोखार से बहुत लोगों के मरने के कारण वहां से फौज हटा दी गई।

हजारीबाग जिला—इसका क्षेत्रफल ७०२१ वर्गमील है। इसने पूर्व संयालपरगना और मानभूमि-जिला; दक्षिण छोहारढागा जिला; पश्चिम छोहारढागा और गया और उत्तर गया और मुँगेर जिला है। जिले में बहुतेरी पहाड़ियां हैं। सबसे ऊंची पहाड़ी समुद्र के जल से ४५०० फीट से अधिक ऊंची नहीं है। इस जिले में कई पर्वत अवरक की खानीयां हैं, डिवोर, कोदमा, चीरकुंडी इत्यादि वस्तियों के पास खानों से अवरक निकाला जाता है; प्रतिवर्ष हजारीबाग से आठ दस लाख रुपये का अवरक बाहर जाता है। सूबे छोटानागपुर में हजारीबाग का जल वायु अच्छा है। जिले की प्रधान नदी दामोदर है। इस जिले के पांच सात स्थानों में पवित्र झरने हैं, जहां कुछ कुछ यात्री जाते हैं। जंगलों में बाघ, तेंदुए, भालू इत्यादि वनजन्तु पाए जाते हैं।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय हजारीबाग जिले में ११०४७४२ मनुष्य थे, अर्थात् ९२४८११ हिंदू, १०६०९७ मुसलमान, ७३२८२ आदिनिवासी और ५५२ कृस्तान। इनमें से लगभग ५००० जैन हिंदुओं में लिखे गए थे। जातियों के खाने में १२९४४५ ग्वाछा, ९२८४९ भुइयां, ६२७६१ कुमी, ५६५९८ संयाल, ४२६०२ कोइरी, ४३५७४ बनार, ४२३१९ तेकी, ३८४४१ घाटवाल और भोगता, ३७४०४ राजपूत और बंडादत, ३६८९३ खरवार, ३३४१९ कर्हार, २९५४० भूमिहार, २८४२२ ब्राह्मण, २७२७७ बनिया, २४८२७ दुसाध, २३६७१ नापित, ९२३२ कायस्थ, ८८१५ कोल और शेष में दूसरी जातियों के लोग थे। सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय इस जिले के हजारीबाग कसबे में १६६७२, चतरा में १०७८३, और इचाक में दस हजार से कम मनुष्य थे।

पारसनाथ ।

हजारीबाग कसबे से लगभग ७० मील पूर्व कुछ उत्तर गिरिडी का रेलवे स्टेशन है । इण्डियन रेलवे के मधुपुर जंक्शन से दक्षिण-पश्चिम २३ मील की रेलवे लाइन गिरिडी को गई है । आसनसोल जंक्शन से ५१ मील पश्चिमोत्तर मधुपुर जंक्शन है । गिरिडी से पश्चिम-दक्षिण पारसनाथ पहाड़ी के पादमूल के पास तक १८ मील की पक्की सड़क घनी है ।

छोटे नागपुर विभाग के हजारीबाग जिले के पूर्वी भाग में (२३ अंश, ५७ कला, ३५ विकला उत्तर अक्षांश और ८६ अंश, १० कला, ३० विकला पूर्व देशांतर में) जैन लोगों का पवित्र तीर्थ स्थान पारसनाथ नामक पहाड़ी है । पहाड़ी के सिरोभाग तक एक अच्छी पगडंडी गई है । पहाड़ी जंगल से हरी भरी है । वहाँ का जल वायु ठंडा और साफ है । स्लेट के चट्टानों पर वांस के जंगल होकर मार्ग निकला है । ऊपर साळ इत्यादि वृक्षों के सघन घन होकर पगडंडी निकली है । राह में जल के कई एक झरने देखने में आते हैं ।

पारसनाथ पहाड़ी की ऊपर वाली चोटी, जिसको जैन लोग “अस्मिद क्षिप्र” कहते हैं, समुद्र के जल से ४४८८ फीट ऊंची है । उसके ऊपर छोटे छोटे २० जैन मंदिर बने हैं, जिनमें कई एक बहुत सुंदर हैं । खास करके उनमें मार्बुछ का एक छोटा स्थान है, जिसके बनाने में ८०००० रुपया खर्च पड़ा था ।

जैन लोगों के २४ संत हैं, जिनमें से १० संतों ने इसी पहाड़ी पर निर्वाणपद पाया और १९ संतों की इसी पर समाधि दी गई; २३ वें संत पारसनाथ की भी समाधि इसी पर दी गई थी । उन्हीं के नाम से इस पहाड़ी का नाम पारसनाथ पड़ा । पारसनाथ का जन्म काशीजी में हुआ था । वह १०० वर्ष तक रहे । प्रति वर्ष लगभग १० हजार जैन यात्री पारसनाथ पहाड़ी पर जाते हैं ।

भारतवर्ष में जैन लोगों की ५ पवित्र पहाड़ी हैं;—काठियावार में शत्रुंजय और गिरनार, राजपुताने में आवू, मध्य भारत में ग्वालियर और छोटा नागपुर के हजारीबाग जिले में पारसनाथ पहाड़ी । इन पाँचों में शत्रुंजय पहाड़ी सब से अधिक पवित्र समझी जाती है । जैन लोगों के मत और उन लोगों की रीति का यथान भारत-भ्रमण के चौथे खंड के शत्रुंजय के वृत्तांत में मिलेगा ।

जैन मत बहुत पुराना है; क्योंकि पुराणों में इस मत के बहुत वृत्तांत मिलते हैं। मत्स्यपुराण के २४ वें अध्याय में लिखा है कि वृहस्पतिजी ने रत्नि के पुत्रों के पास जाकर उनको मोहा और उनको आज्ञा दी कि तुम सब जैनधर्म के आश्रय हो जाओ और पद्मपुराण के सृष्टिविन्द के १३ वें अध्याय में भी सरावगियों का वृत्तांत है।

वैद्यनाथ ।

मधुपुर जंक्शन से १८ मील (खाना जंक्शन से १२६ मील) पश्चिमोत्तर और लक्ष्मीसराय जंक्शन से ६१ मील (पटना से १३१ मील) पूर्व दक्षिण कार्ड लाइन पर वैद्यनाथ जंक्शन है । जंक्शन से ४ मील पूर्व कुछ दक्षिण एक रेलवे शाखा वेवगढ़ को गई है । रेलवे स्टेशन से लगभग १ मील दूर सूबे बिहार के भागलपुर विभाग के संथाल परगना नामक जिले में सबडिवीजन का सदर-स्थान और पवित्र तीर्थ स्थान वेवगढ़ कसबा है, जिसको वेवधर और वैद्यनाथ भी कहते हैं । पंडे लोग स्टेशन से यात्रियों को ले जाते हैं ।

सन् १८८१ की मनुष्य-गणना के समय वैद्यनाथ में ८००५ मनुष्य थे; अर्थात् ७७०४ हिन्दू, २९७ मुसलमान और ४ दूसरे । मनुष्य-गणना के अनुसार यह उस जिले में सब से बड़ा कसबा है ।

कसबे से पश्चिम सबक के निकट बैजू का मंदिर, कसबे से बाहर सबडी धीजन की कचहरियां और कसबे के आस पास जगह-जंगल और कई छोटी पहाड़ियां हैं । कसबे के पास राजा मदनपाल शिविर के उजड़े पजड़े अनेक मीनार और मूर्तियां देखने में आती हैं । वैद्यनाथ में कोदियों का बड़ा जमाव रहता है वे लोग रोग से मुक्ति होने की आशा करके वहां पड़े रहते हैं । वहां गिद्धोर के महाराज रावणेश्वरप्रसादसिंह की जमीन्दारी है ।

कसबे में एक बड़े घेरे के भीतर पत्थर से पाटा हुआ बड़ा आंगन है । लोग कहते हैं कि इसको पाटने में मिर्जापुर के एक धनी महाजन का एक लाख रुपया खर्च पड़ा था । आंगन के बीच में वैद्यनाथ शिव का शिखरदार पूर्य मुख का बड़ा मन्दिर और चारों ओर छोटे बड़े २१ मन्दिर हैं । मन्दिरों में से

संध्या, गौरी, गायत्री, सूर्य, लक्ष्मीनारायण, गणेश, और देव आदि के मन्दिर हैं, बाकी बहुतैरे मन्दिरों में शिवलिंग स्थापित हैं ।

वैद्यनाथ शिवलिंग शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है । लगभग ३०० वर्ष हुए इनके वर्तमान मन्दिर को पूर्णमूल ने बनवाया था । वैद्यनाथ शिवलिंग ११ अंगुल ऊंचा है, लिंग के सिर पर थोड़ा गहड़ा है । नित्य समय समय पर वैद्यनाथजी के शृङ्गार और पूजन होते हैं । बहुतैरे यात्री लोग गंगोत्तरी हरिद्वार, मयाग, यक्सर, जहागिरा इत्यादि स्थानों से गंगाजल लाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं, और बहुतैरे लोग शिव पर चढ़ाने के लिये वहां के पंढाओं से गंगाजल मोल लेते हैं । माघ और फागुन में सैकड़ों कोस से हजारों यात्री कावरों में गंगाजल लाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं । श्रीपंचमी और फाल्गुन की शिवरात्रि को वैद्यनाथजी पर जल चढ़ाने की बड़ी भीड़ होती है । मंदिर से उत्तर कसने से बाहर शिवगंगा नामक एक बड़ी सरोवर है; उसके किनारों पर पत्थर के घाट बने हैं- और एक मन्दिर है । सरोवर में यात्री-गण स्नान करते हैं ।

संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानमहिता, १८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिंग हैं—(१) सौराष्ट्रपेश में सोमनाथ, (२) श्रीगैल पर मलिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकालेश्वर, (४) ओंकार में अमरेश्वर, (५) हिमालय में कैदार, (६) डांकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेश, (८) गोदावरी के तट में हयम्बक, (९) चित्तामूमि में वैद्यनाथ (१०) दारुकावन में नागेश, (११) सेतुबंध में रामेश्वर, और (१२) शिवालय में घुश्मेश्वर स्थित हैं । इनलिंगों के दर्शन करने से शिवलोक प्राप्त होता है । इनकी पूजा करने का अधिकार चारों वर्णों को है । इनके नैवेद्य भोजन करने से सम्पूर्ण पाप का नाश होता है, इस लिये इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिए । नीच जातियों में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होता है और उस जन्म के पश्चात् मुक्ति लाभ करता है ।

(५५ वां अध्याय) एक समय लंकापति रावण कैलास पर्वत पर जाकर शिवजी की आराधना करने लगा । उसके पश्चात् शिवजी के प्रसन्न होने पर

वह हिमालय पर्वत के दक्षिण भाग के वृक्षखंड नामक देश में पृथ्वी में गढ़ों करके उसमें अग्निस्थापन कर और उसके निकट शिवजी को स्थापित करके हवन करने लगा। जब हवन से शिवजी प्रसन्न न हुए तब उसने अपने सिरों को काट कर उससे हवन करना प्रारम्भ किया। जब वह अपने नव सिर हवन कर चुका तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे राक्षसों में श्रेष्ठ ! तुम अपना मनोवाञ्छित वरदान मांगो। रावण बोला कि हे भगवन् ! मेरा अतुल पराक्रम होवे और मेरे सिर पूर्ववत् होजावें। शिवजी ने एवमस्तु कहा और रावण के सम्पूर्ण सिर पूर्ववत् हो गए। तब वह अपने गृह को जाने लगा। देवताओं को दुःखी देखकर महर्षि नारद ने मार्ग में रावण से पूछा कि तुम किस कार्य के लिये कहाँ गए थे। रावण ने कहा कि मेरे तप से प्रसन्न होकर शिवजी ने मुझ को अतुल बलवान होने का वरदान दिया है और हमारे प्रार्थना से हिमवान के दक्षिण वृक्षखण्ड में वह वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। मैं उनको नमस्कार कर धुवन के जय करने के लिये जाता हूँ। (५६ वां अध्याय) नारदजी हँस कर बोले कि हे रावण ! शिवजी भंग आदि खाकर कुछ का कुछ कह देते हैं; उनके वचन का प्रमाण नहीं है। तुम जाकर कैलाश पर्वत को उठावो, यदि उनके वरदान से तुम महाबली हुए होगे तो पर्वत तुम से उठ जायगा। नारद के ऐसे वचन सुन कर बलदर्पित रावण ने जाकर कैलासगिरि को उठाया, जिस से पर्वत पर रहने वाले सब जीव जन्तु न्याकुल हो गए। तब शिवजी ने रावण को शाप दिया कि अब शीघ्रही तुम्हारे बल का ह्रास हो जावेगा। उसके उपरान्त रावण पर्वत को रख कर लौट आया। रावण का शाप सुनकर नारद और वेद गण हर्षित हुए। इस भाँति रावण ने वैद्यनाथ महादेव से वर लाभ कर बलवान हुआ। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक वैद्यनाथ शिव का पूजन करते हैं, उनको संपूर्ण मनोवाञ्छित फल मिलता है।

दूसरा शिवपुराण—उरदू अनुवाद, ८ वां खंड, ४३ वां अध्याय) एक समय रावण ने हिमालय पर्वत पर शिव लिंग स्थापित करके शिवका बड़ा तप किया। जब शिव प्रसन्न न हुए तब अपने ९ सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ा दिया, जब वह अपना १० वां सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ तब शिवजी ने प्रगट होकर

संध्या, गौरी, गायत्री, सूर्य, लक्ष्मीनारायण, गणेश, और धैरव आदि, के मन्दिर हैं, बाकी बहुतेरे मन्दिरों में शिवलिंग स्थापित हैं ।

वैद्यनाथ शिवलिंग शिव के १२ ज्योतिर्लिंगों में से एक है । लगभग ३०० वर्ष हुए इनके वर्तमान मन्दिर को पूर्णमल ने बनवाया था । वैद्यनाथ शिवलिंग ११ अंगुल ऊंचा है, लिंग के सिर पर थोड़ा गहड़ा है । नित्य समय समय पर वैद्यनाथजी के शृङ्गार और पूजन होते हैं । बहुतेरे यात्री लोग गंगोत्तरी हरिद्वार, मयाग, वक्सर, जहांगिरा इत्यादि स्थानों से गंगाजल ढाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं, और बहुतेरे लोग शिव पर चढ़ाने के लिये वहां के पंढाओं से गंगाजल मोल लेते हैं । माघ और फाल्गुन में सैकड़ों कोस से हजारों यात्री कांवरों में गंगाजल ढाकर वैद्यनाथजी पर चढ़ाते हैं । श्रीपंचमी और फाल्गुन की शिवरात्रि को वैद्यनाथजी पर जल चढ़ाने की बड़ी भीड़ होती है । मंदिर से उत्तर कसबे से बाहर शिवगंगा नामक एक बड़ी सरोवर है; उसके किनारों पर पत्थर के पाट बने हैं- और एक मन्दिर है । सरोवर में यात्री-गण स्नान करते हैं ।

• संक्षिप्त प्राचीन कथा—शिवपुराण—(ज्ञानमंदिता, ३८ वां अध्याय) शिव के १२ ज्योतिर्लिंग हैं—(१) सौराष्ट्रदेश में सोमनाथ, (२) श्रीगैल पर मल्लिकार्जुन, (३) उज्जैन में महाकालेश्वर, (४) ओंकार में अमरेष्वर, (५) हिमालय में केदार, (६) डांकिनी में भीमशंकर, (७) वाराणसी में विश्वेश, (८) गोदावरी के तट में लक्ष्मण, (९) चिताभूमि में वैद्यनाथ (१०) दारुकावन में नागेश, (११) सेतुबंध में रामेश्वर, और (१२) शिवालप में घुश्मेश्वर स्थित हैं । इनलिंगों के दर्शन करने से शिवलोक प्राप्त होता है । इनकी पूजा करने का अधिकार चारों वर्गों को है । इनके नैवेद्य भोजन करने से सम्पूर्ण पाप का नाश होता है, इस लिये इनका नैवेद्य अवश्य खाना चाहिए । नीच जातिपों में उत्पन्न मनुष्य भी ज्योतिर्लिंग के दर्शन करने से दूसरे जन्म में शास्त्रज्ञ ब्राह्मण होता है और उस जन्म के पश्चात् मुक्ति लाभ करता है ।

(५५ वां अध्याय) एक समय लंकापति रावण बैलास पर्वत पर जाकर शिवजी की आराधना करने लगा । उसके पश्चात् शिवजी के मत्तन होने पर

वह हिमालय पर्वत के दक्षिण भाग के वृक्षखण्ड नामक देश में पृथ्वी में गढ़ा करके उसमें अग्निस्थापन कर और उसके निकट शिवजी को स्थापित करके हवन करने लगा। जब हवन से शिवजी प्रसन्न न हुए तब उसने अपने सिरों को काट कर उससे हवन करना प्रारम्भ किया। जब वह अपने नव सिर हवन कर चुका तब शिवजी प्रसन्न होकर बोले कि हे राक्षसों में श्रेष्ठ ! तुम अपना मनोवाञ्छित वरदान मांगो। रावण बोला कि हे भगवन् ! मेरा अतुल पराक्रम होवे और मेरे सिर पूर्ववत् होजावें। शिवजी ने एवमस्तु कहा और रावण के सम्पूर्ण सिर पूर्ववत् हो गए। तब वह अपने गृह को जाने लगा। देवताओं को दुःखी देखकर महर्षि नारद ने मार्ग में रावण से पूछा कि तुम किस कार्य के लिये कहां गए थे। रावण ने कहा कि मेरे तप से प्रसन्न होकर शिवजी ने मुझ को अतुल बलवान होने का वरदान दिया है और हमारे प्रार्थना से हिमवान से दक्षिण वृक्षखण्ड में वह वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए हैं। मैं उनको नमस्कार कर धुवन के जय करने के लिये जाता हूँ। (५६ वां अध्याय) नारदजी इस कर बोले कि हे रावण ! शिवजी भंग आदि खाकर कुछ का कुछ कह देते हैं; उनके वचन का प्रमाण नहीं है। तुम जाकर कैलाश पर्वत को उठावो; यदि उनके वरदान से तुम महाबली हुए होगे तो पर्वत तुम से उठ जायगा। नारद के ऐसे वचन सुन कर बलदर्पित रावण ने जाकर कैलासगिरि को उठाया, जिस से पर्वत पर रहने वाले सब जीव जन्तु व्याकुल होगए। तब शिवजी ने रावण को शाप दिया कि अब शीघ्रही तुम्हारे बल का ह्रास हो जावेगा। उसके उपरान्त रावण पर्वत को रख कर लौट आया। रावण का शाप सुनकर नारद और देव-गण हर्षित हुए। इस भाँति रावण ने वैद्यनाथ महादेव से वर लाभ कर बलवान हुआ। जो मनुष्य भक्ति पूर्वक वैद्यनाथ शिव का पूजन करते हैं, उनको संपूर्ण मनोवाञ्छित फल मिलता है।

दूसरा शिवपुराण—उरद्वं अनुवाद, ८ वां खंड, ४३ वां अध्याय) एक समय रावण ने हिमालय पर्वत पर शिव लिंग स्थापित करके शिवका बड़ा तप किया। जब शिव प्रसन्न न हुए तब अपने ९ सिर काटकर शिवलिंग पर चढ़ा दिया; जब वह अपना १० वां सिर चढ़ाने को उद्यत हुआ तब शिवजी ने प्रगट होकर

उसके सिरीं को उसके धड़ों में जोड़ दिया और उससे कहा कि हे रावण ! वरदान मांगो । रावणने कहा कि मैं बड़ा बलवान होऊँ और तुमको अपने नगर में ले जाकर स्थापित करूँ । शिवजी बोले कि तुम मेरे लिंगों को ले जाव, किन्तु मार्ग में किसी स्थान पर तुम रुखो मे तो लिंग वहीं रह जायेंगे । ऐसा कह वह दो लिंग रूप हो गए । रावण दोनों लिंगों को मंजूषों में करके कांवर पर ले चला । शिव की माया से रावण को मार्ग में बड़े वेग से लघुशंका लगी । वह एक मुहूर्त के लिये एक गोप को कांवर धमाकर मूत्र करने लगा और दोघड़ी तक मूत्र करता रहा । (४४वां अध्याय) जब उसका मूत्र न रुका तब अहीर ने थक कर कांवर को धरती पर रख दिया । तब दोनों लिंग पृथ्वी में स्थित होगये । रावण के बहुत बल करने पर जब लिंग न उठे तब वह अपने अगुठे से दोनों लिंगों को दबाकर अपने घर चला गया । जो लिंग कृतं पर में रावण के आगे था, वह गोकर्ण में चंद्रभाल के नाम से विख्यात हुआ और जो पीछे था वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध होकर चिताभूमि में विराजमान हुआ । तब विष्णु आदि देवताओं ने वहाँ जाकर वैद्यनाथ का पूजन किया और ऐसा कहा कि तुम वैद्य के समान मनुष्यों को आनंद देने वाले हो इससे तुम्हारा नाम वैद्यनाथ होगा । जो तुम पर गंगाजल लाकर चढ़ावेगा, वह परम पद लाभ करेगा ।

कांवर थांभनेवाला ग्वाला का नाम वैजू था । उसका यह नियम था कि बिना शिवलिंग के पूजन किए भोजन नहीं करता । एक दिन एक उत्सव में उसको शिव पूजा की सुधि विसर गई । जब वह अपने बधुवर्गों के सहित भोजन करने बैठा तब उसको शिवपूजा याद पड़ी । उसने शीघ्र भोजन छोड़ कर वैद्यनाथ के पास जाकर उनकी पूजा की । शिवजी वैजू की ऐसी भक्ति और नियम देख कर गिरिजा सहित उस स्थान में प्रकट हुए और वैजू से बोले कि तुम अपना इच्छित वर मांगो । वैजू ने कहा कि हे महादेव ! तुम वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हो जाओ । शिवजी एवमस्तु कह कर उसी लिंग में प्रवेश कर गए और वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए ।

संथाल परगना जिला—यह जिला भागलपुर विभाग के दक्षिण भाग में ५४६६ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर भागलपुर और

पुर्निया जिला; पूर्व मालदह, मुर्शिदाबाद और बीरभूमि जिला; दक्षिण बर्धमान और मानभूमि जिला और पश्चिम हजारीबाग, मुंगेर और भागलपुर जिले हैं। इस जिले का सदर स्थान दुमका है; किंतु आवादी में जिले में सेव से बड़ा देवगढ़ अर्थात् वैद्यनाथ कसबा है। राजमहल की पहाड़ियों, जो गंगा की घाटी से आरम्भ होती है, २००० वर्गमील फैली है; उनमें से १३६६ वर्गमील घामनीकोट के गवर्नमेंट मिलकियत में है। वे किसी जगह २००० फीट से अधिक ऊंची नहीं हैं। उनकी औसत उंचाई बहुत कम है। घामनीकोट के बाहर राजमहल पहाड़ियों के सिलसिले में बहुतेरी पहाड़ियों के ऊपर राघन चन लगे हैं और उन पर चढ़ना कठिन है।

जिले के उत्तर और कुछ दूर पूर्व की सीमा पर गंगा हैं। जिले में ब्राह्मणी इत्यादि बहुतेरी छोटी नदियां बहती हैं। नीचा ऊंचा देश के बहुतेरे भागों में जंगल लगा है; किंतु उसमें कीमती लकड़ियां नहीं होती हैं। गवर्नमेंट घामनीकोट में जलावन के लिए लकड़ी काटने का ठीका देकर थोड़ी मालगजारी प्राप्त करती है। जिले के जंगलों में खास कर शाल के वृक्ष हैं। इस जिले का प्रधान जंगली पैदावार लाही है, जो पलाश, बैर और पीपल के वृक्षों से निकाली जाती है और महाराजपुर के रेलवे स्टेशन से दूसरी जगह भेजी जाती है। संयाल और पहाड़ी लोग बहुत रेशम के कीड़ों को पालते हैं। इस परगने में कोयले और लोहे की खानियां हैं। जिले में कई एक पहाड़ी झरने हैं और घाघ, तेंदुए, भालू, हरिन, जंगली सूअर इत्यादि वनके जंतु रहते हैं। पहले हाथी और गेंडे थे; किंतु अब प्रायः सब मर गए।

इस जिले में सन् १८९१ की मनुष्य-गणना के समय १७४३७६३ और सन् १८८१ में १५६८०९३ मनुष्य थे; अर्थात् ८४७५९० हिन्दू, ६०८३५३ आदिनिवासी, १०८८९९ मुसलमान, ३०५७ कुस्तान, १३२ बौद्ध, ५४ सिख, ६ यहूदी और २ जैन। जातियों के ग्वाने में ८८५४४ ग्वाला, ३८०३२ घाटवाल, ३६०७५ ब्राह्मण, ३५७२३ डोम, ३३५४६ घमार, २८१२४ राजपूत, २८१२४ बनियां, २६४३३ लोहार, शेष में वाजरी, धानर, काळू, बैरठ, हाथी, तांती इत्यादि जातियों के लोग थे। आदि

उसके सिरी को उसके घड़ों में जोड़ दिया और उससे कहा कि हे रावण ! वरदान मांगो । रावणने कहा कि मैं बड़ा बलवान होऊँ और तुमको अपने नगर में ले जाकर स्थापित करूँ । शिवजी बोले कि तुम मेरे लिंगों को ले जाव, किन्तु मार्ग में किसी स्थान पर तुम रुखो गे तो लिंग वहीं रह जावेगे । ऐसा कह वह दो लिंग रूप हो गए । रावण दोनों लिंगों को मंजूषों में करके काँवर पर ले चला । शिव की माया से रावण को मार्ग में बड़े वेग से लघुशंका लगी । वह एक मुहूर्त के लिये एक गोप को काँवर धभाकर मूत्र करने लगा और दोघड़ी तक मूत्र करता रहा । (४४वां अध्याय) जब उसका मूत्र न रुका तब अहीर ने धक कर काँवर को धरती पर रख दिया । तब दोनों लिंग पृथ्वी में स्थित हो गये । रावण के बहुत बल करने पर जब लिंग न उठे तब वह अपने अगुठे से दोनों लिंगों को दबाकर अपने घर चला गया । जो लिंग काँवर में रावण के आगे था, वह गोकर्ण में चन्द्रपाल के नाम से विख्यात हुआ और जो पीछे था वह वैद्यनाथ के नाम से प्रसिद्ध होकर चिताभूमि में विराजमान हुआ । तब विष्णु आदि देवताओं ने वहाँ जाकर वैद्यनाथ का पूजन किया और ऐसा कहा कि तुम वैद्य के सम्मान मनुष्यों को आनंद देने वाले हो इसके तुल्य नाम वैद्यनाथ होगा । जो तुम पर गंगाजल लाकर चढ़ावेगा, वह परम पद लाभ करेगा ।

काँवर थांभनेवाला ग्वाला का नाम वैजू था । उसका यह नियम था कि बिना शिवलिंग के पूजन किए भोजन नहीं करता । एक दिन एक उत्सव में उसको शिव पूजा की सुधि विसर गई । जब वह अपने वधुपुर्णों के सहित भोजन करने बैठा तब उसको शिवपूजा याद पड़ी । उसने शीघ्र भोजन छोड़ कर वैद्यनाथ के पास जाकर उनकी पूजा की । शिवजी वैजू की ऐसी शक्ति और नियम देख कर गिरिजा सहित उस स्थान में श्रुत हुए और वैजू से बोले कि तुम अपना इच्छित वर मांगो । वैजू ने कहा कि हे महादेव ! तुम वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हो जाओ । शिवजी एवमस्तु कह कर उसी लिंग में प्रवेश कर गए और वैद्यनाथ नाम से प्रसिद्ध हुए ।

संथाल परगना जिला—यह जिला भागलपुर विभाग के दक्षिण भाग में ५४५६ वर्गमील क्षेत्रफल में फैला है । इसके उत्तर भागलपुर और

निपतसियों में ५५,९६०२ मंषाल, ११९,९५ कौल और जेप में दूसरे थे ।
 कै. कसबे देनगढ़ में ८००५, साहबगंज में ६५,१२, राजमहल में ३८३०,
 दुमका में २०७५ मनुष्य थे । साहबगंज उन्नति करता हुआ तिनारती का
 है; उसमें बढ़ते बढ़ते सन् १८९१ में ११,२०७ मनुष्य हो गए ।

वैष्णाय जंक्शन से पश्चिमोत्तर ६१ मील लक्ष्मीसराय जंक्शन
 लक्ष्मीसराय से पश्चिम २० मील मोकामा जंक्शन, ७० मील पटना,
 भीरु बाँकीपुर जंक्शन, १०६ मील आरा और १२० मील बिहिया का
 स्टेशन है । मैं बिहिया में रेलगाड़ी से उतर कर, उसमें १२ मील उत्तर
 के दूसरे पार अपने जन्म स्थान चरजपुरा चला आया ।

साधुचरणप्रसाद ।

भारत-भ्रमण तीसरा खंड समाप्त ।

